श्री हरि

श्री प्रागट्य सिद्धांत ग्रंथ

रचयिता : श्री गोपालदासभाई
व्यारानिवासी
अनुग्रह महेश्वर
श्री रमणलालजी महाराज

संपादक : वैष्णवदास कमलवाला

सहायक : डी. पी. गुप्ता
रामरतन अग्रवाल
निर्मला शर्मा
कीशन स्वरूप
बालुभाई शर्मा

प्रसिद्धकर्ता : रमणभाई रामजी राजा

मुद्रक : शैलेष प्रिन्टरी, रतनबाई मस्जिद सामे,
जामनगर. फोन : (०२८८) २६७१२१२
मोबाईल : ९८२५० ५३३३२

अनुक्रमणिका

मांगल्य

विषय सूचि

।। श्री गोकुलेशो जयति ।। " श्री प्रागट्य सिद्धांत " " राग सुहो "

मांगल्य - १ - पहेलुं

श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल ग्रंथ लखीअे छीअे
श्री सर्वतोधिक प्रागट्य सिद्धांतनुं प्रथम मांगल्य गुजराती भाषामां
जन्म प्रकरण श्रीस्वरूप सिद्धांत

कृपा शक्तिजीना पद कमल हुं पद वंदु वारंवार
चरण रेणु माथे धरी करूं वचन उच्चार ।१।
कृपावंत अनुदिन निकट रहो प्रभुने साथ
रूची उपजावो प्रेमसुं अे सर्वे तुमारे हाथ ।२।
तम वस व्हाला वसे तमो अंतरंगत अनुराग
सर्व सखीमां मुगट मणी तमने अधिक सोहाग ।३।
ते गुण केम वर्णन करूं ज्यां प्रभुनुं सनमान
करी विनती जीव हित कीधुं अद्‌भुत दान ।४।
अेह विसद करवा तणो मनोरथ छे मन मांह
जो कृपा दृष्टे सन्मुख थई साहो मारी बांह ।५।
कर जोडी उद्यम करी करूं तुमारी आश
विघ्न भाव क्षति सकल दुख हरी सुखनिधि करो प्रकाश ।६।
हुं कविगति जाणु नहीं छंद प्रबंधनी रीत
गीत कवित न गुण लहुं नहीं अंतरगत प्रीत ।७।
हुं अयोग्य अति हीन मति उगत जुगत नहीं सार
वचन कला नहीं चातुरी नहीं वाणी उच्चार ।८।
दोषावधि परमीत नहीं ते वचने केम कहेवाय
प्रभुना रसमा शुं कहुं कहेता मन सकुचाय ।९।
हीन वचन केम उचरूं आप्युं प्रभुअे शरण
लौकिकथी अलगो करी कीधुं मारूं वरण ।१०।
तमो स्वतः करूणा करी कीधो अंगीकार
तेह बले मनोरथ हवो मनमां मोद अपार ।११।
पुरूषोत्तम आनंद घन निरावरण रस रूप
जेह स्वतंत्र परम चित्त परमाद्‌भुत परम अनूप ।१२।
गुण अगाध परमित नहीं करूणा सागर आप
शरणागत जे अनुसरे तेना हरो सद्य संताप ।१३।
दिनबंधु वात्सल्य भक्त सर्वज्ञ मुगट मणी राय
सुंदर रसिक शिरोमणी सुंदर वर रसदाय ।१४।

नित्य रमणीय पराकाष्टा अेहवा कहीये जेह
ते प्रगट्यानुं कारण कहुं परम अव्यक्त छे तेह ।१५।
एहोना उद्यमने करुं तमने प्रथम प्रणाम
तम बलथी मारा थशे पूरण सघला काम ।१६।
करूणाअे करूणा करी कीधुं मुजने दान
ते अनुभवे प्रारथुं सुंदर कृपा निधान ।१७।
जै जै श्री विट्ठल सुवन जै केली कला सुखदाय
जै जै महा नायक नवल जै सुंदर वर रस राय ।१८।
जै जै रसिक शिरोमणी जै जै रसिक रस भर रूप
जै जै रस दायक अमय जै जै श्री गोकुल भूप ।१९।
जै महा उदार आनंद भर जै रोम रोम रसधार
जै रमणीक महा रसमय रमण जै स्वकीय सकल श्रृंगार ।२०।
जै अदेय दान दायक अखिल जै कृपाभर करूणाल
जै स्वकीय भाव पूरक सदा जै स्वकीय जन प्रतिपाल ।२१।
जै जै द्वीज वर वेस वपु जै आरत हर अभीराम
जै सोहाग सकल सुंदरी सोहाग तिलक जै महा मंगल धाम ।२२।
जै जै मोहक रूप रस जै रसमय रस वस अंग
जै आनंद मात्र कर पाद मुख जै उदर आदि सर्वांग ।२३।
जै जै गोकुलैक जन जीवन प्रभु जै गोकुलमणि राय
जै गोकुल प्रिय आत्मा जै गोकुल सुखदाय ।२४।
जै जै श्री गोकुलनाथजी जै गोकुल सुख धाम
जै जै लीला नित नवी जै श्री पूरण काम ।२५।
कर जोडी चरणे नमुं श्री वल्लभ रस रास
अभिलाषा जे जे मन धरूं ते करवी पूरण आस ।२६।
जेम राजे पोते थकी प्रथम तेडी पास
दासत्त्व दान देइ कराव्यो निज चरणे निवास ।२७।
त्यांहा वचन सुधा सिंचन करी महेद सृष्टि सुखसार
तेहोने संगे हुं पण रहुं समे समे तेणी वार ।२८।
कल अव्यक्त मुख माधुरी रसधारा अविछिन्न
ते पामे सौभाग्य सृष्टि सहु रहे प्रफुल्लित अनुदिन ।२९।
ते महेद अनुग्रहथी मुने लागी तेहनी छींट
वली स्वतः सींचन कर्युं प्रोढ करी करूणामय द्रीष्ट ।३०।
तेणे अंकुरित अंतर गत हवा पुष्ट पुष्ट जे भाव
पल्लवित चित चंचल थयुं कुसुमित नयणे चाव ।३१।
स्वरूप विषे स्थाई भाव जे ते फल संपन्न प्रकार
स्व योग्य योग्यताअे करी सोभाग्य सकल अनुसार ।३२।

ते सौभाग्य मदे मन मारे भाव न अन्य प्रवेश
स्वरूप संबंधी वारता वर्णन केरुं उद्देश ।३३।
पहेलुं पोतानी ओरथी जेम कीधुं मारे काज
तेम अभिलाष अे आरंभनी पूरण करवी राज ।३४।
महा प्रागट्य श्री राजनुं मर्म न जाणे कोई
स्वतः श्री मुख वचने करी प्रगट कर्युं छे सोई ।३५।
अे कहेवा उलट भर्युं रहे मन अेणी रीत
इच्छाअे महाराजनी मने पूरण हवी प्रीत ।३६।
पछी बुध्ध प्रकाश मारी तणो थयो इच्छाने अनुहार
हृदयमांथी रस भर्या वचन नीकले बहार ।३७।
बुद्धिने बल वाध्युं घणुं राज इच्छा रूची जोइ
मन इच्छीत आयास विन प्रगट हशे सहु सोई ।३८।
पण इच्छा तुमारी कृपा विना केम रहे मुज पास
अवगुण शरीर सुभावना ते देखी पामे त्रास ।३९।
अे स्थिर थईने तो रहे जो करो कृपा रसरास
तो मनोरथ अदभुत मनतणा ते होनी पहोंचे आस ।४०।
अे आस पूरण कृपा विना फल रस रमण समेत
करवा कोइनुं सामर्थ नहीं कृपा सहुनुं हेत ।४१।
रमण अेकांते रस समे रसनुं पूरण पात्र
सहाय थकी सर्वे थशेअे काज हेला मात्र ।४२।
पछी सुणी सुंदरवर सुखनिधी प्रसन्नता नहीं पार
निज तत्त्व जणावी माधुरी न गण्यो पात्र विचार ।४३।
मारा अे मनोरथ मनतणा पूर्या करी सनमान
अति अंतरंग कृपा तणुं कर्युं कारूणिक दान ।४४।
विज्ञप्ती मानी मारी गोकुल पति नव नाह
निःदर्शन ते निश्चय तणुं मन मुदित अति उत्साह ।४५।
अंतःकरण ने आत्मा अे परस्पर प्रमुदित होय
युक्त संयुक्त जोया विना अे प्रभु विन करे न कोय ।४६।
में बुद्धि अनुसारे मागीयुं पण अगाधता अेहो पास
उदार राय तेथी अधिक ढलणी ढल्या सुख रास ।४७।
कृपा रूप सुंदर अनूप अति गंभीर गुणवंत
ते सामर्थ्य सहित अंग आपीया कर्या मनोरथ अंत ।४८।
प्रभु उपकार अनिरवचनी ते जाणे मननुं मन
अंतरगत आनंदते कहे न प्रीछे अन्य ।४९।
स्नेह भरे महातम रहित कृपा कर्या संघोड
तेह कृपा में प्रारथीया नमन करी कर जोड ।५०।

कृपा मोद मनमां धर्यो सुणी भाव भावतुं जेह
आश्चर्या आनंद भर उत्तर पूछयो अेह ।५१।

जे नहीं प्रागट्य लेखनमां जे नहीं वेद पूराण
जे सिधान्ते नहीं स्वप्नमां ते केम करीस वखाण ।५२।

अेहनो उत्तर अेक कहुं जेम थाशो तमो प्रसन्न
हारद म्हारा हैया तणुं सांभळजो धरी मन ।५३।

अेक भरोसो भावनो बीजो स्वकीय सहाय
त्रीजी इच्छा अेहोनी तो कां सिध्ध न थाय ।५४।

हुं जद्यपी छुं हीन अति तमो तो चतुर सुजाण
यथारथ करसो जोइने अेह तमारी बाण ।५५।

पण माथे दीधुं मारे धन्य मम जीवन प्राण
तम बले बल सूचवी कहुं बजाडी निशान ।५६।

प्रथम स्वरूप निरधार करी कहुं जे अति उदभट
वलतु विस्तारे कहुं जेम हवुं प्रागट्य ।५७।

जो करी करूणा मम हृदयमां धर्या चरण सुखसार
हवे रस निधी रसना उचरूं महा प्रागट्य प्रकार ।५८।

अे अतुल प्रागट्य अभनवुं ते निगम न जाणे लेश
निजजनने ज्ञापित कर्युं अन्य नहीं प्रवेश ।५९।

फल प्रगट्युं महा रस तणुं रस रस मय रस रूप
रस दायक रस पात्र ने प्रगट्या श्री गोकुलभूप ।६०।

अनादी स्वरूप अचल लीलायुत महा नायक नवरंग
अद्भुत वेश विशेष रंज आनंद अंग तरंग ।६१।

परम उदार प्रमेय रस पूरण विलसे विना विचारी
नि:साधन फल सदा भक्तना स्वत:थी हितकारी ।६२।

अविच्छिन्न लीला अेहनी ते अणु न जाणे ईश
वागीश वर्णन केम करे ज्यां नहीं प्रवेश जगदीश ।६३।

अेहवुं प्रागट्य भक्त हित कर्युं स्वतंत्र सार
तेहवुं कोइ समजे नहिं प्रभु मन अेह विचार ।६४।

ते आसय मनमां धरी जगत हितारथ काज
प्रगट करी पोते कह्युं जेम समजे सर्व समाज ।६५।

प्रहसित वदने प्रेमसुं बहुवार कह्युं छे जेह
अेसो प्रागट्य आजलों हुओ न हुअे अेह ।६६।

अे प्रागट्य पोता तणुं कह्युं करी निरधार
अनुभवी अेह स्वरूपनां ते समज्या तेणी वार ।६७।

पोते कह्युं अे कारणे तेहनो आशय अेह
पुरूषोतमना स्वरूपने पुरूषोतम जाणे जेह ।६८।

ते सर्वतोधिक परमाविधि अति अगाध महासार
वचनातीत जे अपरमित कोइ न जाणे पार ।६९।
अेहवुं प्रागट्य प्रगट अति अदभुत भूयल अेह
श्री मुखे प्रगट कह्या विना समजे नहीं कोइ तेह ।७०।
जे स्वरूपमां आपथी विस्मय थाय ज्यांहा
ते स्वरूप कहेवा तणुं केहेनुं सामर्थ्य त्यांहां ।७१।
ते माटे करूणा थकी कह्युं विसद करी जेह
जे अेसो प्रागट्य आजलों हुओ न हुअे है अेह ।७२।
अे वचने प्रागट्यनो सर्वतोधिक कह्यो धर्म
अंगीकृत जे आपणा तेने जणाववा मर्म ।७३।
मर्म वचन महाराजना स्वतः सिद्ध केम थाय
आस्वादी अेह स्वरूपना तेहो संग जाण्या जाय ।७४।
जे अनुभव विना समजे नहिं आसय प्रभुनो अेह
तेहना समाधान हित निःदरशन कहुं तेह ।७५।
अनिरवचनी प्रागट्य ते केम करुं वचने भाख
परमाविधि प्रमाण ने स्वरूप संबंधी शाख ।७६।
जे अनुभवीअे अनुभव करी कीधो वचन विलास
अे अनुभव सिद्ध प्रमाणवा कहुं छुं करी प्रकास ।७७।
अनिरवचनी प्रागट्यने उपपत्य अन्य न होय
स्वतः स्वरूप प्रमाणवा कहुं जेम समजे सहु कोइ ।७८।
अेक समे प्रभुना तनुज सुखद शिरोमणी सार
मनवरतीसुं मन मेलवे नहीं कोइ अनुहार ।७९।
इच्छा अनुसारे अनुसरे अनुदिन अेह विचार
स्नेह रीत पूरण लहे पूरित भाव अपार ।८०।
प्रेम सहित हीत विषे प्रभु सुख पूरित पात्र
परम चतुर चित्तवृत लहे न रहे अलगा क्षणुमात्र ।८१।
प्रभु हारद्र हेते करी करे वचन वृष्टी जे वार
ते पान करे रस माधुरी जीयुं जीयुं करी उच्चार ।८२।
सामग्री अति सुखद सहु जे प्रभु अंगे उपयोग
मन राखी रचना करे जेम आवे विनियोग ।८३।
प्रभु संबंधी जे सहु ते शुं बहु विधि हेत
तेहो संगे फूल्या रहे आनन अंग समेत ।८४।
अंगे अगणित वाधती नित प्रती फूल अपार
प्रभु संगे फूले घणुं अने वली चित सुचार ।८५।
अति प्रपन्न मन वच कर्मे आज्ञा अनुवरती बाल
श्री गुंसाईजीनुं प्रतिबिंब अेहवा श्री गोपाल ।८६।

स्वरूपानंदे भरे थकी इच्छाने अनुसार
सभा मध्ये नि:शंक थई बोल्या तेणी वार ।८७।

अवतारातीत आचार्यजीअे पूरण तेह स्वरूप
जाण्युं कह्युं अने लख्युं श्रीनाथजीनुं रुप ।८८।

जेवुं स्वरूप श्री आचार्यजीनुं सामर्थ सहित प्रताप
तेहवुं श्री गुंसाईजीअे लख्युं ने जाण्युं आप ।८९।

हीत संबंधे श्रीजीने कही काका अभिधान
श्री गुंसाईजीना स्वरूपनुं पूरण अेहोने ज्ञान ।९०।

पण यथारथ प्रागट्य अे काका तणु अनूप
को जाणे को कही सके अेहवुं अे स्वरूप ।९१।

अे प्रमाण सिद्ध उपपत्य सहित कह्युं करी अनूप
परम पुरूषोतम रसात्मक रस निधी अेह स्वरूप ।९२।

अे द्रष्टांत कह्युं अेह कारणे जे अनुभवी अनुदिन अनुभवे
अन्य समत अेह स्वरूपने अनुभव विन केम संभवे ।९३।

लौकिक द्रष्टांते रंक जेम कहे राजाने मा बाप
चंद्रने साखा पर कही देखाडे सहु आप ।९४।

क्यांहां राजा क्यांहां रंक क्यांहां साखा क्यांहां चंद्र
क्यांहां द्दष्टांत अने क्यांहां गोकुलपति राजेन्द्र ।९५।

ते लोक समाधान अर्थने कह्युं प्रमाण तणु निर्माण
अे प्रमाण अपेक्षित स्वरूप नहीं अहीं अनुभव अेह प्रमाण ।९६।

श्रीजीअे विवरण कर्युं श्री वल्लभाष्टकमां जेह
अनुभव निगम प्रमाण छे अे अनुभवी जाणे तेह ।९७।

ते माटे महा प्रभुजीअे कह्युं भक्त हीतारथ भाख्य
वचनातीत प्रागट्यने अनुभव कीधी साख्य ।९८।

ते अनुग्रह बल सामर्थथी कह्यो अनुभव तणो आस्वाद
पण स्वरूपानंद संयोग विना को केम करी जाणे स्वाद ।९९।

कहेता वियक्त विसद करी मन मारूं सकुचाय
अदभुत अनुभव साध्य ते लिखित पदारथ केम थाय ।१००।

पण तोये मन रहेतुं नथी कहेवा अति अकुलाय
जे उठे उमंग उरमा थकी ते पाछी त्यां न समाय ।१।

ते माहेंनो अंकुर कहुं सांभळजो रस पात्र
श्री गुंसाईजीअे ज्ञापित कर्युं ते कहुं कांई छाया मात्र ।२।

अेक समे श्री गुंसाईजीने कहयु चाचा हरिवंश
स्वकीयताना बल थकी थई अतिशे निसंश ।३।

राज पोतानुं आप जो प्रागट्य ना करत आंहां
त्यारे अमारी कोण गति थाती आ जुग मांहां ।१०४।

त्यारे श्री गुंसाईजीअे पोतानुं सर्वस सार
अंतरंग सत पात्र लेइ देखाडयुं तेणी वार ।१०५।
श्री वल्लभ हे सब मुकुट मणी अेह समान नहीं कोई
जो जानो हित आपनो जानी लीजीयो सोई ।६।
वली अेक वार चाचाजीअे पूछयुं अेणी रीत
राज अमारी कोण गति कहयुं करी बहु प्रीत ।७।
कहा तुमारी औरकी अरू अेतन मारग साथ
मेरी और श्रीनाथजीकी दोरी इनके हाथ ।८।
तो का चलत हे औरकी श्री गुंसाईजीअे कहुं तेणी वार
अे वचन स्वरूप सिध्धांतने कहयां करी विस्तार ।९।
वली अेक कारण कहुं करवा अेह प्रमाण
जग विदित सहुको लहे जाणे राणो राण ।१०।
श्री गुंसाईजी पधारीया वन यात्राने काज
पिता वचन पालक प्रभु साथ छे महाराज ।११।
अेक स्थले श्री गुंसाईजी चरण पखाले ज्यांहां
अलगेरा उभा रहया महाप्रभुजी त्यांहां ।१२।
त्यांहा आवी रूपे सेवके छाया लीधी हाथ
घाम निवारणने धरी श्री गुंसाईजीने माथ ।१३।
त्यारे तेहने अेम कह्युं करी गुंसाईजीअे रीश
कहा धरत है मोही उपरे धर श्री वल्लभ के शीष ।१४।
जेह सबनको मूल है अरू जगको आधार
अे सब जिनके हाथ है सकल सृष्टि निस्तार ।१५।
वलता जई ते सेवके छाहया राखी त्यांहा
पिता वचन कारण लही जाणी रहया मन मांहां ।१६।
अेक समे श्री गुंसाईजी गादी बेठा ज्यांहां
राघव भट ब्राह्मण तेणे करी विनंती त्यांहां ।१७।
अंतर हिते भगवदी अेह प्रसंगनो जेह
गायत्व ऊंचे श्लोक खर कारिका कही छे तेह ।१८।
शब्दोही धूम वल्लोके अेहनो पूछयो अर्थ
तेह कुटील कांइ नवी लहे ने फरी फरी पूछे व्यर्थ ।१९।
प्रथम श्री महाप्रभुजीअे कहयो करी विस्तार
ते सुण्युं श्री गुंसाईजीअे प्रसन्नता नहीं पार ।२०।
अविश्वास अति घणो मनने नहीं निरधार
प्रभुने पूछ्या उपरे पूछ्यो बीजी वार ।२१।
श्री गुंसाईजीअे सद्पुत्रने पूछ्युं अति सुखसार
में सुन्यो हे जे याहीकुं तुम अर्थ कहयो विस्तार ।१२२।

त्यारे मोदसुं संकोचसुं कहयो ते मुख मुसकाय
अेक वेर में याहीकुं कहयो प्रगट समजाय ।१२३।

त्यारे श्री गुंसाईजीअे पूछयुं राघवदास
ते श्री वल्लभ पासते सुन्यो हे श्लोक प्रकास ।२४।

पछी श्री गुंसाईजी आगल अेम बोल्यो निरधार
हा जी अेहोने पासथी सुण्यो छुं अेकवार ।२५।

त्यारे श्री गुंसाईजीअे अेम कह्युं तो का पूछत हे मोहे
इनके कहे समज्यो नहीं सो मेरे कहे कहा होये ।२६।

अेम उत्कर्ष अनंत छे कहेता नावे पार
हवे अगाधतानो आसय कहुं करी प्रगट विस्तार ।२७।

अेक समे श्रीमहाप्रभुजी पौगंड लीला मांह
आवरण रहित आनंद युत खेले आंगण ज्यांह ।२८।

कंठ मध्य मुक्ता तणो सुभग सुशोभित हार
छटा छबीली अभिनवी कांती तणो नहीं पार ।२९।

पदक जटित मणी गण खचित तेहनी अनुपम ज्योत
नील पीत आरक्त युत असित श्वेत उद्योत ।३०।

हीरोटी हथ सांकळा क्यां लगी कहुं विवेक
जे अंगे जे शोभिता धर्या विचित्र अनेक ।३१।

लंगोटी युत लहलह्यो करे ते बाल विनोद
ते जोइने श्री गुंसाईजीने प्रगटे अतिसे मोद ।३२।

त्यांहां चाचाजीने अेम कह्युं श्री गुंसाईजीअे तेणी वार
अनुभवने अधिक्यथी सहित भाव अनुसार ।३३।

खेलत लंगोटी कीये लडेतो आंगण मांही
सबको हारद जाणीये पण इनको जाणुं नांही ।३४।

जे रीझवेगो याहीकु इनकी मनोवृत जान
वाकी हुं वंदु हुं सदा तिन समात नहीं आन ।३५।

अेह वचन सर्वज्ञना कह्यां प्रगट करी सोय
जग विदित सहु अेम कहे अे समान नहीं होय ।३६।

अेहवुं धीरूं स्वरूप अे गहेरूं परम अथाह
ते रसिकने ज्ञापित कर्युं अन्य न जाणे थाह ।३७।

ते मांहे पोते दूराववा मुक्षे करे प्रमाण
अे भूलवनी अेहोनी ते केम जाणे को जाण ।३८।

जाण युक्त को केम लहे अेहोनुं विचार्युं अेह
समग्र भार अग्रम करी प्रमाण प्रमाण्युं तेह ।३९।

जे प्रमाण कहयुं पोते थकी सेवा रीते ज्यांहां
कोण न भूले अे भेदथी अे भूलवणी मांहां ।१४०।

पान कर्युं श्री अंगथी जेणे वारंवार
अे रस स्वाद माधुर्यथी भूले नहीं निरधार ।१४१।
स्वरूपानंदे जेहने स्वतः कर्युं निजदान
प्रतीत प्रमाणे केम होये विना प्रमेय रसपान ।४२।
पण गोपनमा रस अति घणो तेहनुं नहीं निरमाण
ज्ञापित होय न सर्वने अंतरंग करे पान ।४३।
स्वकीयने रस वाधवा ने हीत प्रगटावा काज
दूरावे रस अभिनवे ते अनुभव अेह समाज ।४४।
कृपा तणे बलथी लह्युं अनुभवी जे अंतरंग
जेहने अनुभव आपथी कराव्यो अंग संग ।४५।
अनुभव वीण अे स्वरूपने सम्यक लहे न कोई
सर्वात्म भावने दानथी भाव बले लहे सोइ ।४६।
अे भाव तणुं आधिक्य जेमांहे प्रभु आधीन
साधनथी स्वतंत्र सदा भावे रहे न भीन्न ।४७।
पुष्टी मारगी थई अने प्रवाह आचरे कोई
यथारथ स्वरूपनुं ज्ञान न तेहने होय ।४८।
जेहने जेह स्वरूपशुं अनन्यता नीरधार
ते भावे रस अनुभवे जेहने ज्यां होअे भार ।४९।
ते शुं जाणे अेहने जेहने होय प्रमाद
स्वरूपास्क्त वेधी रसिक ते जाणे अे स्वाद ।५०।
ते स्वादे श्री मुख थकी प्रगट कराव्युं जेह
स्वकीय भाग्य विस्तारवा विसद करूं छे तेह ।५१।
अेक समे उत्थापनने पोढी उठया आप
बेठो सेजया उपरे हरे विरह संताप ।५२।
अध मलता अति रस भर्या अरूण अनुपम नयण
आलस वस अंग थकी बोले मधुरा वेण ।५३।
तुलसी गुंजा शोभती माला उपटी अंग
उपरेणो लपटी रहयो अधिक अधरनो रंग ।५४।
जंभा युत विकसित वदन भक्त तणुं आभरण
उलटो कर मुख पर धरी पछे स्पर्श करे कर्ण ।५५।
जलपान करी बीडुं लई बेठा थई प्रसन्न
ते समय जे कोइ जुअे भाग्य तेहोना धन्य ।५६।
अेहवुं प्रगट स्वरूप जोइ ध्यानदास मन रंग
तेह समय त्यां उपज्यो मनमां अधिक तरंग ।५७।
सनमुख रह्या प्रश्न पूछवा काज
अब ठाकुर कहो कहां हे कहीये मोकुं राज ।१५८।

त्यारे श्री मुखथी कह्युं सेजे कर प्रसराय
अब तो ठाकुर यहां हे अेम बोल्या मुख मृदु ।१५९।

अेहोने अेह स्वरूपमां नथी कांइ संदेह
पण श्री मुखमांथी सांभलवानु मनोरथ मनमां अेह ।६०।

तेसो वैष्णव अरू गुणी जाण्यो नहिं शास्त्र प्रकार
जेना महाप्रभुअे कहया अेह वचन बहु वार ।६१।

अे सर्व थकी अलगो करी आण्यो प्रभुअे शरण
कृपा करी अेहोनो कर्यो पुष्टी मार्गे वरण ।६२।

स्वरूप नेष्टिक अति भलो अेहवो आप अनन्य
प्यार करे सहु भगवदी हित आंणीने मन ।६३।

अेकवार चटाइने समय सुंदर बेठक मांह
चरण पखालीने पछी आवी बेठा त्यांहा ।६४।

स्वरूप रसात्मक रस भर्युं शोभानो नहीं पार
अंग अंग प्रति अनंग पर कोटि काम बलीहार ।६५।

केशर तिलक ललाट पर रेखा बेहु संघोड
ओढी उपरेणा ऊपरे तोस पामरी जोड ।६६।

पीठ दइ पूर्व दीसे पश्चिम सनमुख थई
आसपास सहु श्रृष्टि अेतो उभी आनंद मय ।६७।

शीत विषे रस अभीनवो सुंदर धाम सोहाय
ते जोइ नटवर निपुणनी उपमा कहीअ न जाय ।६८।

श्री अंगथी पछी पामरी न्यारी कीधी हाथ
लटकाशुं थांभी थकी सरकी बेठा नाथ ।६९।

पीठ उपरेणा परे कीधो केस प्रसार
श्याम स्निग्ध कोमल सरल कोण करूं अनुहार ।७०।

आरंद्र परम सोहयामणा विरल करे निजहाथ
अटके त्यां बीजे करे निवारे छे नाथ ।७१।

लीला केस प्रसारनी माहा मोहक आनंद कंद
युवती जन मन फंदवा अेकअेक लट फंद ।७२।

वलतो जुडो दइ ने हस्त पखाले त्यांहां
अटकी बेठा खांभीअे गादी राखी ज्यांहां ।७३।

त्यां पात्र विचारी रूची सहित आपे अदभुत दान
गोप्य प्रगट बहु भांतना तेहनुं नहीं कंइ मान ।७४।

तेह समे रस अभिनवो लीला अनेक प्रकार
वचने संक्षेपे करी केम थाय विस्तार ।७५।

भाग्यवान तेणे समे भगवानदास जे नाम
प्रभुनी करुणानी बले बेठो तेणे धाम ।१७६।

करी विनती आपुयी प्रभु प्रसन्न छे ज्यांहां
जमुनाजी जमुनावते पहेला वहेता त्यांहां ।१७७।
हां हां करी महाप्रभुजीअे कर्यो वचन सत्कार
त्यारे तेणे अे वली पूछ्युं बीजी वार ।७८।
हमणां अहींया केम आवीआ श्री गोकुल अनुकूल
उतर अेक वचने करी कारण कह्युं समूल ।७९।
ज्यांहां ठाकोर लीला करे त्यां जमुनाजी पास
पोते अति मुसकाइने अेम बोल्या सुखरास ।८०।
त्यां भट कल्याण खंभालीअे कह्युं राज राज महाराज
जमुनाजी त्यांहां राज ज्यांहां सहित सकल रस साज ।८१।
अे बोले माहाप्रभुशुंसदा ते सनमुख थई
वचन सुणी श्री प्रभुना होये आनंद मइ ।८२।
सावधान अतिसे निपुण जाणे बहु मनुहार
प्रभुना वचन सुणी करे विवेक अनेक प्रकार ।८३।
रीझे ने वली रीझवे बोले मीठा बोल
उपजावे रस प्रभुने नहीं कोइ अेहनी तोल ।८४।
सभा चतुर रस रसात्मक सरस दिन सहित रहे अेह
प्रसंग चलावे प्रेमशुं अनुमोदन करी तेह ।८५।
वाणी विलास जोइ स्वकीयना फूले अतिसे मन
उपदिन रस तेह समे होअे सहुने संपन्न ।८६।
कृपा थकी कारण लइ कहयुंजी राज राज महाराज
जमुनाजी त्यांहां राज ज्यांहां सहित सकल रस राज ।८७।
अेम दूराव रस वस थकी प्रगट करावे नित्य
ते करतां श्री गुंसाईजीअे प्रगट करी कह्युं प्रित्य ।८८।
नि:साधन फल आत्मा अे प्रादुर्भूतोस्ती गोकुले
अतो वयं सुनिश्चिंता जाता सर्वत अेह बले ।८९।
प्राचीन पर अे श्लोक नहीं अे अंगुली निर्देष
नरेस निपुण महा मुगटमणी देखाडया गोकुलेस ।९०।
अेहवुं अलौकिक स्वरूप अे भक्त सहित नीरधार
सर्वोधिक सर्वोपरे लीलानो नहीं पार ।९१।
निज सृष्टीशुं लीला करे भूतल प्रगटी आप
प्रगट करीने प्रगटीया हरवा ते परीताप ।९२।
अतिरिक्त आधिदैविक थकी लेखनथी अतिरिक्त
अेहवुं स्वरूपने सृष्टि अे वचने परम अव्यक्त ।९३।
तेह सृष्टि प्रगट्या तणुं कारण कहुं विवेक
अन्य अनेक प्रकारनी सृष्टि ते भांत अनेक ।१९४।

हिरण्य गर्भ अने ब्राहमी भाईक सृष्टि अनंत
तेह विशद क्यां लगी कहुं गणना नावे अंत ।१९५।

तेहथी अलगी जेह छे तेहनो कहुं विस्तार
सानुभाव ने स्वरूप सम्बन्धी तेहना त्रण प्रकार ।९६।

प्रवाह सृष्टि इच्छा थकी प्रगट करी निरधार
मर्यादानी वचनथी वेद मार्ग अनुसार ।९७।

पुष्टी सृष्टी अंगे थकी प्रगटी परम अनूप
अंग जेह सर्वांगथी निर्मित अति रसरूप ।९८।

तारतम्यने पहेली करी प्रवाह ने मर्यादा
सर्वोपर रस स्वरूपने अेह जाणवा स्वाद ।९९।

जद्यपी इच्छाथी हवी रमण करे निशदिन
ते प्रवाह सृष्टिने आसुरी भुकते फल संपन्न ।२००।

मर्यादी सत्संगते तेहने मुक्ति संबंध
भक्ति रसथी अतिरिक्त ते त्यांहां स्वरूप संबंधी न गंध ।१।

संबंध नहीं से कारणे जे मर्यादी महातम ज्ञान
प्रेम विना नहीं नेमशुं जे स्वरूप रमण रसदान ।२।

संबंध रस गेहेरो घणो जे महा अपरमित वित
ते प्रगट कर्यो अति प्रेमशुं पुष्टज भक्त निमित ।३।

मुक्ति मारगी भक्तने भजन ते ब्रह्मानंद
स्वपने सुख नहीं स्वरूपनुं जे महा रमण रस कंद ।४।

मर्यादा पुरूषोतम शुं मन मग्न अे ज महा व्यापत
कदापी नहीं कोइ समय स्वरूप रमण रस प्राप्त ।५।

पुष्टि सृष्टि ते प्रेमयुत केवल आनंद कंद
स्वरूपात्मक रसमय सदा तेहने फल स्वरूपानंद ।६।

पुष्टी भक्त इच्छा करे नित्य लीला रस पान
स्वरूप विषे अनुरक्त रहे अन्य न अनुसंधान ।७।

अेहवुं जे कोइ आचरे तेहनुं नाम नीरोध
निरोध रूप पोते प्रभु अे फल रस उदबोध ।८।

अे ठाकोरना कृत्यने कहीअे भगवद काज
परपंचथी पोता विषे प्रोजे सकल समाज ।९।

धर्म मार्गी धर्मे करी सेवा साधन भेर
रस मार्गी रसे प्रोजीया व्यक्त करी बहु पेर ।१०।

अे आसये निरोध प्रकरण आचार्य लख्यो निरधार
ते सौभाग्य सभामां श्री मुखे महाप्रभुजीअे कर्यो विस्तार ।११।

ते दुर्बोध लिखन अनुभव विना कहेवा कोइ नहीं योग्य
ते कर्युं प्रगट गोकुलपति सर्वदा जेहने भोग ।२१२।

ज्ञाता दाता पुष्टता पुष्ट रसे अनुकूल
पुष्टि श्रृष्टी प्रगट करी परम पुष्टनुं मूल ।२१३।
ज्यारे रमण इच्छा करी प्रभुओ निज उरमांह
भावानुभाव सामर्थथी सिद्ध थयुं सहु त्यांह ।१४।
इच्छा ते नारायण स्थल कमल ते स्थाई भाव
विचित्र भाव ते पांखडी करी रचना बहु चाव ।१५।
ते मध्ये रमण सबंधना भाव जे अनिरवचन
ते ते करता सृष्टीनो कीधो त्यांहां संपन्न ।१६।
जो संपन्न कर्युं पोते थकी तो नारायणनुं शुं काम
ज्यां अन्य तणो अधिकार नहीं तो कां कह्युं अे नाम ।१७।
नमामि हृदये शेशे तेहनो अर्थ जेह
श्री गुंसाईजीअे टीपणीमां विवरण कर्युं छे तेह ।१८।
नारायणने नाभीथी ब्रह्मा उपज्यो जेह
ते ब्रह्माथी सृष्टी प्रगटी साम्यता करी छे अेह ।१९।
साम्यता विना संदेह नव्य भागे वस्तु उग्रता तेहनी
बलथी बल परीक्षा अर्थे पटतर कीधी अेहनी ।२०।
आत्मानुभावे करी जगत प्रगट कर्युं जेह
स्वरूप रसानंद आपणु तेहवा तेहना देह ।२१।
नारद पंचरात्रनुं वचन श्रीमुखथी कह्युं अेह
हरी भक्त मय साक्षाततस्मात भक्तोपि तन्मय अेह ।२२।
वली निबंध मांहे कहयुं शास्त्रा प्रकरण
पाद समूल रूप ताद्रस सर्वे अनुकरण ।२३।
ते माटे आनंद मय पूरण गुण निर्दोष
प्रभु जेहवा तेहवी करी सृष्टि महा रस कोष ।२४।
सेवा अर्थे स्वारथी प्रिय प्रभुने अेह
पुष्टी प्रवाहे विसद करी श्रीमुखथी कही तेह ।२५।
जे समान सृष्टी पाखे प्रभु लीला करे न आप
कहयुं संदेह निवारवा परीहरवा परिताप ।२६।
प्रिय संबंध रहितथी सर्व मनोरथ व्यर्थ
अे प्रगट कर्युं श्रीमुख थकी स्नेह तणे सामर्थ ।२७।
अेहवी सृष्टी साथे करे रमण अखंडित नित्य
तेमांथी महाप्रभुने आव्युं ज्यारे चित ।२८।
अदभुत प्रागट दशानी हवी रमण इच्छा
त्यारे प्रथम प्रगटीयो मारग अतिय अथाह ।२९।
लीला उपीयोगी त्यांहां प्रगट करी सृष्टी
वलता पोते प्रगटीया करी कृपानी वृष्टी ।२३०।

ते भक्त अलौकिक सृष्टी सहु निःसाधन फलमात्र
अंतरंग आनंद मय जेशुं लीला दिन रात्र ।२३१।
अेक सृष्टीने आपणुं निज स्वरूप समजाय
त्यारे रस भासे नहीं रसाभास थई जाय ।३२।
पोते जीव करी लहे माने प्रभुनो उपकार
जे अम अर्थे प्रागट्य हवुं अेह रसनो नहीं पार ।३३।
अेह सृष्टीने जाणवा अेहनुं अेह स्वरूप
परस्परे अेहज लहे अन्य न जाणे रूप ।३४।
तेह विसद करीने कहयुं श्रीजीअे श्रीजीद्वार
कल्याणभट्ट खंभालीअे पूछयुं जेणी वार ।३५।
यहांकी सामग्री सबे जावदीक हे सोय
सबे लीला उपयोगनी समजे नहीं कोय ।३६।
अे वचने करी आधुनिक सृष्टि स्पष्ट केम थाय
ते वचनामृते पोषण कर्युं महा रसिक शिरोमणी राय ।३७।
अेक समे वली अेहसुं बोल्या वचन विलास
वातने प्रेमशुं वितर्क करी सुख रास ।३८।
हम जेसे पुरूषोतम है तेसे सेवक अेह
हमारे हम सरखे कही संबंध सूचव्यो जेह ।३९।
अे साभिप्राय श्रीमुख वचन ते अन्य न जाणे गंध
भक्त प्राबल्य करीने अे प्रगट कर्यो संबंध ।४०।
ते संबंध तणुं लक्षण कहुं ते सहेज सुभावी धर्म
अनुभवथी अनुभव कर्यो तेहनो कहुं छुं मर्म ।४१।
निरोध निरविधि नेहनी जे प्रभुने प्रिय अपार
अवस्था भूले अंगनी अलगो अेक लगार ।४२।
विण दीठे आवी व्याकुल थई लीला उपयोगीनी बाल
धर्म संयुक्त रस श्रवण पंथे नीरोधाइ तत्काल ।४३।
सहु समाज काज अेतदरसे प्रगटाव्यो छे आप
अन्यो अन्य आकर्षण करी स्वरूप सुगंध प्रताप ।४४।
दरशन स्पर्श न संभाषणे रमण तणे प्रतिबोध
पूरणता विन को करे प्रगट पराग निरोध ।४५।
अनुरागे प्रागट्य अे अंतर हित अंतरंग
आगमसंकेत स्वकीयने प्रगट हवो रस रंग ।४६।
पूरण रस महीतल प्रगट फेली रहयो मकरंद
थई सहू प्रगट पराग युत मुदितानन अरविंद ।४७।
प्रागट्य अभिलाषीयने प्रगट्यो अंग सोहाग
मन साखी आरत भर्या अंतरने अनुराग ।२४८।

अे प्रागट्य थया पहेलीय जे सृष्टी सोहागी दूर
रसे छीत अंतरंगते अंग भरी आव्या पूर ।२४९।
स्नेहातुर संभ्रम नहीं प्रीछया अेक लगार
अग्रजानुं जे गीधा हता तेहनी कीधी सार ।५०।
अन्य थकी अलगा करी साध्यो ते वली अर्थ
तेहोना वली वरण कर्या पोताने सामर्थ ।५१।
प्रौढ पराक्रम प्रमेयं बल कोण करे अे पेर
शोभाने बल आणीया पोता केरे घेर ।५२।
हृदय कमल ते भक्तना फूल्या उर न समाय
वदनांबुज विकसित थया दीठा गोकुल राय ।५३।
स्वरूप सुंदरता थकी थया तेह अनुरक्त
श्री अंग समीपे राखीया करी अतिशे आसक्त ।५४।
आधिदैविक अखिल गुण प्रागट्य गोकुल राय
हाथ कंकण शी आरसी अे अहीं पूरणताय ।५५।
अेम विनोद मन मोद भरी मनमां अनुभव कर्ण
भाव भक्तना करी अने नारी नेह अनुसरण ।५६।
गुण निरगुणे आश्रित करी जे ज्यांनो अधिकार
कांइ अेक सृष्टी न्यारी करी स्व रमण योग्य अनुसार ।५७।
ते माटे श्रीमुखे कह्युं करी कृपानी वृष्टी
जेवा पुरूषोतम अमो तेहवी अमारी सृष्टी ।५८।
अेह सृष्टीने जाणवा सामर्थ केहेनुं नहीं
अेह प्रागट करी छे जेहवी तेहवी पोते कही ।५९।
अेह वचने अे सृष्टीने प्रमाण करवा जेह
रघुनाथदासे करी विनती विसद कहुं छुं तेह ।६०।
अेक समे जल ग्रहमा प्रभुजी अती अेकांत
रघुनाथदास सनमुख त्यांहां बेठा नेष्ठावंत ।६१।
परम निपुण बहु गुण लहे वचन कला सामर्थ
पद कवित बहु श्लोकना पूछे प्रभुने अर्थ ।६२।
स्नेह जाण समजे घणुं जे रसनी मर्याद
करी करावे प्रभुने भगवद् रस आस्वाद ।६३।
गुण कवित पोते थकी कर्या प्रभुना बहु
रीझया छे प्रभु सांभळी ते जाणे छे सहु ।६४।
टेक तर्क वचने करी हारद्र जे हीत मात्र
ते सहु प्रभु अेहोने कहे लही गूढ रसपात्र ।६५।
प्रश्न वारता प्रेमसुं पूछे प्रभुने जेह
निश्चे नि:संदेह करी कहे अेहोने तेह ।२६६।

प्रश्न करे प्रेम सहित त्यां प्रभु करे उच्चार
तेह मिसे सहु जगतना होय भाग्य विस्तार ।२६७।

अेहवा अनेक प्रकार छे क्यां लगी कहीअे तेह
अनुभव सहु साथे कर्या भाग्यवान छे अेह ।६८।

ते भाग्यवान भावे सहित महा भाग्यवानने अर्थ
प्रश्न कर्यो महाप्रभुने लही कृपा सामर्थ ।६९।

महाराज पहेली सृष्टी जेह कोण भांत्यनी तेह
पुरूषोतमकी सृष्टी ते कहयुं प्रभुअे अेह ।७०।

सृष्टी आधुनिक कोण अे विचरे भूतल मांह
अेहू पुरूषोतम तणी कहयुं प्रभुअे त्यांह ।७१।

वली पूछयुं त्रुटियुगा आंहांने तो ते नहीं
समय नहीं इच्छा नहीं समजाव्या अेम कही ।७२।

वेसा भाव समय विना अब क्यों करी प्रगटाय
समय विरूद्ध संसारमें कछुको कछु हो जाय ।७३।

त्यारे कीधी विनती अमारो कोण विचार
तुम मेरे बल आपुथे सोओं पांव पसार ।७४।

भुज परसी बल सूचवी अेम बोल्या महासुर
फल सीध्य करी साधन तणो संसय कीधो दूर ।७५।

कही सृष्टी अलौकिक नित्यनी रमण संबंधी जेह
अे प्रभु विन अलगी केम रहे समाधान कहुं तेह ।७६।

वली अेकवार उत्थापने चरण पखाले ज्यांहां
भाग्यवान सहु भगवदी आवी उभा त्यांहां ।७७।

धोती सुंदर शोभिती उज्जवल तेहनी कान्त
कटीकर खोसी कसवटमां मुद्रीका राखी रूडी भांत ।७८।

उपरेणो अंगी कर्यो प्रीते पहेलो जेह
अवला सवला पेच दइ मस्तके राख्यो तेह ।७९।

बेहु चरण मध्ये धर्यो गडुओ पीढा पास
जमणे मुकी मृतीका कोमल परम सुवास ।८०।

जमणे कर लेइ मृतीका डाबेमें महेले नाथ
कोपरसे गडुओ करी प्रथम पखाले हाथ ।८१।

वलतो गडुओ त्यां थकी राख्यो दक्षिण पास
चरण पखाले जे जुअे उपजे सुखनी राश ।८२।

करे कोगळा अति धणा करे आचमन सार
पछे जनोइ कर्णनी उतारे तेही वार ।८३।

उपरेणो मस्तक थकी छोडयो वेगे ज्यांहां
श्रीमुख उपर फेरवी लुही निजकरे त्यांहां ।२८४।

फेरी बेठा कर मुद्रिका पहेरे परम उदार
अति प्रसन्न दीठा प्रभु मनमां मोद अपार ।२८५।
त्यां पंचोली प्रेम सहित मुदित माल्जी नाम
प्रभुनी करूणा बल थकी प्रश्न पूछयानी हाम ।८६।
समे समे सनमुख नीकट बेसे प्रभुनी साथ
नाम लेइ पोते थकी पूछे अेहोने नाथ ।८७।
गूढ भाव रस वस थकी प्रभु आनंद उर न समाय
मोद भर्या अेहोने कहे अेथी नही संकोचाय ।८८।
अेम प्रभुनो अनुभव करे श्रीमुख सुणे वचन
प्रश्न कर्यानी योग्यता थई अेहोने संपन्न ।८९।
प्रश्न वारता समय जोइ पूछे प्रभुने जेह
आधुनिक प्रागट्यमां क्यांहां रहे छे तेह ।९०।
श्रीमुखथी अेहने कहयुं करी कृपा अति वृष्टि
अन्यत्र कहुं कछुं अे नहीं सबे यहां हे सृष्टी ।९१।
अेह वचन श्री मुख थकी कहया जे सभा समेत
ते कारण प्रभुना मन तणुं केवल स्वकीयने हेत ।९२।
अेणे प्रकारे स्वरूप कहयुं लीला भक्त समेत
हवे प्रागट्यनुं कारण कहुं जे प्रागट्यनुं हेत ।९३।
अेम प्रागट्य स्वरूप लीला सहित कहयुं फरी सिध्धांत
पण जे प्रकार प्रगट्या तणो कोइ न जाणे प्रात ।९४।
ते उपरथी इच्छा करी प्रगट कर्यानो चाव
उपजाव्यो मन भक्तने प्रश्न करवानो भाव ।९५।
ते भावात्मक भक्तनो प्रेमे कर्यो सत्कार
प्रश्न करेथी प्रभुजीअे कहयुं तेणी वार ।९६।
अे प्रागट्य परम विचित्रतर सार तणुं जे सार
कृपा रस वस थकी पधार्या तेहनो कहुं विस्तार ।९७।
जल ग्रहमां श्री मुख थकी प्रगट कर्युं छे जेह
भाग्यवान तेणे सांभल्यु विसद करूं छुं तेह ।९८।
अेक समे गोकुलपति आनंद वदन उदार
बेठकथी पधारीया भीतर भवन मंझार ।९९।
आगल पाछल भक्तनी भीड तणो नहीं पार
भाग्यवान श्रीमुख जुअे करे ते जयजयकार ।३००।
अेह जुथसुं परवर्या आव्या जलग्रह मांह
पीढे गादी मखमली आवी बेठा त्यांह ।१।
संध्याना आरंभने सुंदर अभिनव वेश
दक्षिण कर अंबोडलो छोडी लटक्या केश ।३०२।

बेहु करे केश संवारता विकसित वदन रसाल
अंबोडो वाल्यो अलवसुं प्रेमे निरखे बाल ।३०३।

भाल तिलक रेखा भली कुंडल जोत्य अपार
नयण चपल उपमा रहिय अधर अरूण रस सार ।४।

नासा स्वास सुवास रूची भुजा दंड आजान
उर उतंग अति रसभर्युं भक्त भाव नहीं मान ।५।

दुलरी माला शोभती गुंजा माल विशेष
क्यारे मुक्ता हेमनी राजे कंठ सुदेस ।६।

उदर नाभी कटी जंघ जुग रसात्मक रस रूप
मनोरथ पूरण मन तणा धरे जे भाव अनूप ।७।

चरण शरण दाता सदा अभय दान अति दक्ष
विरहातुर जे अनुसरे तेहनो करे ते पक्ष ।८।

धोती श्वेत सोहामणी उपरेणो अति सोहे
लसे जनोई ललित गति दीठे मनडुं मोहे ।९।

कनक मुद्रीका नंग जडी प्रीते पहेरी जेह
भक्त मनोरथ मन धरी जाणी तेहनो नेह ।१०।

प्रहसित वदने मृदु वचन अमीय निरूपम वृष्टि
तेहनी उपमा शी कहुं संजीवन निज सृष्टि ।११।

रयणी रसे संध्या समय कामागम रस वेश
रति पति कोट ओवारीये सुंदर रूप सुदेश ।१२।

वाम भागे गडुओ धर्यो आचमन कीधुं नाथ
स्पर्श चपलताशुं करे सर्वांगे निज हाथ ।१३।

गडुआ ढांपण उपरे जल भरी राखे भूप
निज करशुं उछालता अे छबी नवल अनूप ।१४।

बेहु करे देइ थापडी जमणो कर लेइ ज्यांह
मस्तक पाछळ फेरवी ग्रहे नासिका त्यांह ।१५।

चलण वलण चंचल पणे करे ते भाव विचित्र
फरी बेसे सनमुख फरे अद्भुत अेह चरित्र ।१६।

वाम पाण्य स्कंधे धरी जमणो रूदीया वार
सहज नित्य सुमरण करी फरके अधर ते सार ।१७।

अंगुली नाम अनामिका भूमि परस करे हाथ
तेह पछी भ्रकुटी वच्चे स्पर्श करे छे नाथ ।१८।

त्यांहा निकट बेठक रची गादी तकिया सार
संध्याथी पहोंची करी बेठा प्राण आधार ।१९।

अति प्रसन्न आनंदसुं करे ते हास्य विनोद
तेह समय जे अनुभवे तेहने मन अति मोद ।३२०।

त्यांहां माहा पात्र रस प्रेमनू गूढ भाव गंभीर
योगत्व रस ग्रहणने मोहनभाई धीर ।३२१।
नमन दिनतासुं रहे सहुसुं सरखी रीत
प्राणनाथ पद कमलसुं दिन दिन अधिक प्रीत ।२२।
पुष्ट पुष्ट अंतरंग ते प्राण प्रभुशुं नेह
स्वाभाविक मन शीलता प्रगट देखीअे अेह ।२३।
स्वरूप नेष्टीकने विषे अति अनन्यता मन
महारसिक रस रसिकनो ते अेहोने संपन्न ।२४।
अंतरंग अंतर लहे प्रभुना मननुं हेत
इच्छाथी अेणे लहयो अंकितनो संकेत ।२५।
स्वमनो रूपा अेह छे पण कारूणिक करी आश
सुणीये प्रागट्य प्रभु तणुं जे पोते करे प्रकास ।२६।
पण रसभावे पुरित थकी संकुचे अति मनमा
पोते प्रश्न करी न सके सन्मुख प्रभुने त्यांहां ।२७।
वली विचार्युं पात्र कोइ होअे मार्ग प्रवीण
तेहशुं प्रश्न करावीअे जे प्रभु करे रस वृष्टि ।२८।
समान सील सहु स्वकीयने अेतदभाव संपन्न
रस भावे संकुचे घणुं बोले कोण वचन ।२९।
त्यांहां भट कल्याण सनमुख रहे महाप्रभुने अनुकूल
कथा प्रसंगे रीझवे प्रभु अेना पर सानुकुल ।३०।
अति गुणज्ञ समजे घणुं पंडीत कला प्रवीण
नमन युक्त सहुसुं रहे सहित सर्वदादिन ।३१।
अेह द्वारा उतम भगवदी प्रश्न करावे जेह
प्रभु प्रसन्न थईने कहे करे ते निःसंदेह ।३२।
वात हंसारू करीयने प्रभुने करे प्रसन्न
दोहरावे फरी फरी कहे रीझे सहुको मन ।३३।
अे आशये लेइ आग्यना करी ते तेणी वार
त्यांहां प्रश्न कराव्यो प्रभुने मोहनभाईअे सार ।३४।
ते समय जोइ दंडवत करी प्रश्न कर्यो छे अेह
जे कलीयुगमां प्रागट्य हवुं कारण कहीअे तेह ।३५।
भक्तराज उपदेशथी प्रश्न कर्यो अति सार
ते आशय प्रभुअे लही कर्यो प्रगट विस्तार ।३६।
जेह वचन श्रीमुख थकी कहया ते जेणी वार
ते हीत दायक शीतल सुभग कहुं प्रगट विस्तार ।३७।
भक्त आशय अंतर लही प्रभु मन मोद न माय
भावांतर रस वस थकी बोल्या मुख मुसकाय ।३३८।

पुरूषोतम रस रूप जे सबे करण सामर्थ

आनंद मात्र कर पाद मुख उदर आदी रस अर्थ ।३३९।

सत्य ज्ञान आनंद घन सबे पराजीत जोय

कर्तुमकर्तुमन्यथा करण करन कहत है सोय ।४०।

आधार शक्ति आधारके श्री गोकुल है ज्यांहां

सर्वोपर राजीत सदा रमण निरंतर त्यांहां ।४१।

अपनी सर्व सृष्टी सहित कृपापात्र हे पास

दूर भये कर जोडीके रहे सकल निजदास ।४२।

सबे शक्ति अवतार सब अवतारी सब अंश

सबे कला विभुति सब अधिकारी करेही प्रसंस ।४३।

ब्रह्मादिक सातो प्रकृति त्रीगुण तत्व चौवीस

चौद लोक ब्रह्मांड सहु रहेत नमाये शीष ।४४।

सबे वेद पूराण सब शास्त्र सबे अरू धर्म

आगम ज्ञान वैराग्य सब और अज्ञान अधर्म ।४५।

जय तप अष्ट महा सीधी नवनिधी पुरूषारथ चार

लौकिक अलौकिक सबे त्यांहां ठाडे सहित परिवार ।४६।

आज्ञा परीकर जोरीके सेवा अर्थ तींही वार

सनमुख सब ठाडे निकट योग्यता के अनुसार ।४७।

कोइ निकट कोइ अति निकट कोइ दूर अति दूर

अभिलाषा मनमां धरे देखन जीवन मुर ।४८।

अे वैभव सामग्री सबे रस लीलाकी ओट

भीतर कोइ देखे नहीं कहा बडो कहा छोट ।४९।

प्रभु सबकुं देखे प्रगट ज्यांहां चक्र अनुहार

बाहेर सुनीअे गानवत पे पावे नहीं पार ।५०।

लीला उपयोगी त्यांहां महा रूतु राज वसंत

ये सदा निकट रहे शरद रूतु अन्य प्रवेश नहीं रत ।५१।

ज्यांहां गुण निधान अच्युत अरू अमोघ वीरजवान

पुष्ट पुष्ट जे सृष्टीसुं लीला करे निदान ।५२।

त्यांहां ओरन को अधिकार नहीं या लीला के पास

अेसी नित्य नौतन करे लीला परम विलास ।५३।

सात शक्ति सब ते निकट रहत प्रभु के पास

रस उपयोगी काजकुं उपजावत सुख रास ।५४।

कृपा शक्ति इच्छा शक्ति प्रभुता शक्ति अरू ज्ञान

भक्ति शक्ति आनंद अरू काज शक्ति पहेचान ।५५।

मुख्य भक्तसुं रस रमण ज्यां विलसे महाराज

त्यांहां सबे ठाडी रहे तत्पर सेवा काज ।३५६।

अेक समय स्वामिनीजी सहित विलसत प्राण आधार
हसीत वदन आनंदमें बहु विधि करता विहार ।३५७।
यहुं देखी करूणां करी जाणी जगत उपकार
अेसी भूतलमें करे लीला प्रगट अपार ।५८।
कृपा शक्ति मनमां धरी अेसी अंतर जान
समय पाय विनती करूंजो माने कृपा निधान ।५९।
जब कृपा शक्ति आनंद भर देखी अपने ईश
निकट जाइ दंडवत करेय चरण नमाये शीश ।६०।
महाराज गुण जाणत तुम कृपासिंधु हितकार
दिन बंधु करूणा समुद्र करन सबने उपकार ।६१।
कर जोडी विनती करूं तुमहो कृपा निधान
कली मांहां दैवी जीवकुं तुम विन गंती नहीं आन ।६२।
जीव दैवी सृष्टि माहां बहोत दुखी अरू छीन
इनको को आधार नहीं तुमहो जान प्रवीण ।६३।
असाधारण लीला सहित प्रगटो भूतल आप
अे अदभुत प्रागट्य प्रगट करी हरो सबको परीताप ।६४।
अेह काज श्री महाप्रभु तुमकुं हे कर्तव्य
करूणा सिंधो शिरोमणी बहोत कहयां विगतव्य ।६५।
कृपा शक्ति की विनती कृपा शक्ति मन भाय
कृपा हेत करूणा करी आनंद मुख मुसकाय ।६६।
जो मेरी इच्छा हती कृपा शक्ति कही सोय
अब भूतल दैवी जीवके काज ततक्षण होय ।६७।
अे विचार कीयो प्रभु आपुथे कृपाधीन व्हे चित
कां को कृपाधिक्य क्यों जानीये विना कछुक निमित ।६८।
तब निज कर बीरां लीधो प्रमुदित वदन प्रसन्न
सबनी ओर चितयो प्रभु बोले मधुर वचन ।६९।
तब इच्छा शक्ति आई निकट देखे रूची महाराज
कह्यो आज्ञा देओ अवतारकूं जाय करे अे काज ।७०।
प्रभु कर ते बीरा लीओ प्रमुदित वदन सुचारू
दंडवत करे आई त्यांहां ज्यांहां ठाडे अवतारू ।७१।
बोली लीअे अवतार सब इच्छा अपुने पास
आज्ञाथी प्रभुके वचन उनकुं कीअे प्रकाश ।७२।
कोइ जाय संसार में करो जीव उध्धार
अेक अेकते तुम वडे करत सबन उपकार ।७३।
अेह वचन सुणी संकुचे सबे उतर दीयो न जाय
मौन ग्रही मौचक रहे नीचो शीश नमाय ।३७४।

तुमकुं सब सामर्थ है तुमते सब कछु होय
तुम सब चुपकरि क्यों रहे उतर देहोन मोहे ।३७५।
फिरी वचन इनके सुन्यो उतर दिने आय
चरण लागी विनती करी भीत सहित संकुचाय ।७६।
तुम हो अति करूणा प्रबल कृपासिंधु हितकार
हमही तुमारो बल सदा तुमही प्राण आधार ।७७।
जो मले जीव संसार हे सुधर्म के अनुसार
हम ताही भलाइ करी सके करे ताही उपकार ।७८।
अेतां दैवी सृष्टि हे कली जीवनकी अनुहार
सो कलीमे कलीको जीवसुं मिले अे हे संसार ।७९।
महा दुष्ट कली काल जे ना जप तप नहीं याग
योग ध्यान सन्यास नहीं ना इनके वैराग्य ।८०।
धर्म नेम कछुअे नही न साधन इनके होय
ता संगीको उद्धार कहो हमथी क्यों करी होय ।८१।
तुम मुक्ष मुक्ष अे प्रभुके अडतालीस अवतार
निकट बोली लीने सबे कीनी अति मनुहार ।८२।
तुम भगवत अवतार हो सबते बडे कृपाल
तुम ही वेद उधारके करी सबनी प्रतीपाल ।८३।
रसातल ते भेदन कीयो वेद उधार
हिरण्य कश्यप मार्यो प्रगट हर्यो सकल भू भार ।८४।
सेतु बांधी रावण हण्यो अनेक पतित निस्तार
तुम परबत हुं रज करो रज परवत करत न वार ।८५।
अेसो कोन प्रकार हे जो तुमथी नाहीं होय
जो मनमां इच्छा करो होय ततक्षण सोय ।८६।
साधन विन साधन करी तुमते कुछ होय
यहु वेग कारज करो बोहोत भरोसो मोअे ।८७।
सुने जबे मुख मृदु वचन तब बोले अवतार
तुम दई बडाई दासकुं कही प्रगट प्रकार ।८८।
जो बल तुम हमकुं दीओ ताते कीयो काज
सबे बडाई राजकुं हमपे कछु न साज ।८९।
इच्छा शक्ति विनती सुनो अपनी ओर विचार
अेह कलीयुग जो जीवकी हम क्यों करी करे उद्धार ।९०।
जीव सबे साधन रहित न वर्ण धर्म आचार
यज्ञ दान नहीं ज्ञान कछु न धर्माधर्म विचार ।९१।
तीर्थ स्नान नहीं भक्ति रूची आश्रम धर्म न लेष
दुष्ट बुध्ध अहर्निश रहे साधन कछु न शेश ।३९२।

सदा भ्रष्ट कामी कुटिल दंभी लोभ अपार
दूराचार अरू मछरी करे न कछु विचार ।३९३।
अभक्षा भक्षण करे अगम्या गमन अरू चोर
पाप प्रवर्तक आदिते को चितवे अेही ओर ।९४।
सदा वेद निंदा करे तीरथ माने नहीं
धर्म शास्त्र जुठो करे अधम संग मांह ।९५।
धर्म लोप पापी निपट नीच हीन आचार
पाखंडी कृतघ्नी सदा कहेता न आवे पार ।९६।
सागर बिन्दु अरू नभ उडग धरा रेणु को मान
तदपि अेही कली जीवके दोष न होय प्रमाण ।९७।
अधम जीव उधारको हमकुं साहस नाहीं
नाम याहीको लीजीये तो हमही इनके जाहीं ।९८।
अेसे कलीयुग जीवमें दैवी मीले जो आय
हम अपने सामर्थथी न्यारे कीये न जाय ।९९।
और आज्ञा शीश धरी करी हो देहो सोय
पे यहु कारज जीवको सो हमथी नाहीं होय ।४००।
जबे वचन अेसे सुने तब उनते मुख मोर
सबनी मुख्य अवतार हे चित उनकी ओर ।१।
वैकुंठनाथ बोले निकट वासुदेव नारायन
इनकुं यही आज्ञा दई दीयो बोहोत सनमान ।२।
महा दुष्ट कली कालमें हमकुं नांहीं शक्य
करी विनती आपनी बोहोत कही अशक्य ।३।
अशक्यता सुनी सबनकी इच्छा शक्ति फिर आई
करी विनती आइके प्रभुसुं शीश नमाई ।४।
उनते कछु होनो नहीं सो सुनीये महाराज
सामर्थ नांहीं काहुमें सिध्ध न होये काज ।५।
तब महाप्रभु मुशकायके विहंसित वदन विलास
बोली लई प्रभुता शक्ति निकट अपने पास ।६।
करहु काज यह जीवको यों बोले महाराज
तोकुं सब सामर्थ है तोते व्है है काज ।७।
अेह सुनीके सनमुख रही प्रभुता अचरज मान
प्रतिदिन विचार प्रागट्यको अरू समजावत कछु आन ।८।
चरण लागी विनती करी बोली प्रभुता शक्ति
तुम बलेथी सब कुछ करुं मोंते नाहीं अशक्य ।९।
अबलों जो आज्ञा दइ कीनी शीश चढाय
काज कोउ अटक्यो नांहीं केतिक करी हुं बडाई ।४१०।

तुम बलेथी बोहोत भयो मेरो जस विस्तार
यह कारज सब ते बडो ताते मानत हार ।४११।

करी विनती आपनी बोहोत दीनता कीन
और सबनीते आपकु करी देखाडयो छीन्न ।१२।

आशंका दई आपुते प्रभुता शक्ति अपार
इच्छा शक्ति पे जाय के पूछ्यो अेही प्रकार ।१३।

विनती करी प्रागट्यकी अरू आज्ञा देइ अवतार
असंभवित आवत नहीं सो करी के कहो विस्तार ।१४।

तब इच्छा इत्तर आपते अेही दिनो तेही वार
प्रभु अद्‌भुत प्रागट्यको करे सहसा अेह संसार ।१५।

असाधारण कारज विना प्रागट्य होअे न सार
प्रागट्य करनी कली जीवमें रहस्य रमण अपार ।१६।

पुरूषोतम विन प्रेम युत करे न कोइ उधार
कारन कारज रूप सब आपु भये तेही वार ।१७।

यद्यपि अति सर्वात्मना इच्छा हे मन मांह
तदपि आदर विन कीये स्वत करे कछु नांह ।१८।

यह केवल उध्धार नहीं अे रस युत अंगीकार
या मों काहु और को नाहीं न नेक प्रचार ।१९।

अेह मनोरथ सबनके मनमें भयो अनूप
प्रगटे प्रागट्य अवनि पर महा परम रस रूप ।२०।

प्रभु आज्ञा सामर्थथी करी सके सब कोय
अशक्य देखाइ आपनी कृपा शक्ति रूची जोइ ।२१।

इच्छाशक्ति के वचन सुणी फरी प्रमुदित प्रभुये आइ
प्रभुता शक्ति कर जोडी के कहयो अेह वचन बनाइ ।२२।

जो राजे आज्ञा देइ शीश चढाय करूं सोय
पे विनु प्रागट्य प्रभु आप तुम अेहो काज कोन पें होय ।२३।

तब श्री पुरूषोतम अेह वचन सुणी इनथे श्री मुख फेर
अंतरंग अपनी कृपा तिन पर देख्यो हेर ।२४।

कृपा द्रष्टि सनमुख करी कृपा शक्ति की ओर
देखी प्रभुकी चितवनी सनमुख आइ दौर ।२५।

तब निज सौभाग्य मदे मुदित आई बीरा लेन
प्रभुता आदी अवतारलों सुने अशक्य उनके वेन ।२६।

कृपा आसे अेही भांत्यको जानी अपने मन
मोही विन तो रहेंगे नहीं, बोली मधुरवचन ।२७।

तब कृपा शक्ति विनती करी मों ते सब कछु होय
मेरे और सहायकुं चाहीअे नाहीन कोय ।४२८।

हुं दासी महाराजकी दइ राजकी शक्य

न मोहे अपेक्षा काहुकी ना मोकुं कछु अशक्य ।४२९।

श्री गोकुलके प्राणपति केतीक वात हे अेह

यह कारज सब में करूं मोकुं बीरा देहु ।३०।

अेह वचन श्रवणे सुनी प्रभु अति भये प्रसन्न

विदा करी बीरा दीयो रीझे अपने मन ।३१।

विदाय होन विनती करी चरण छोहावन शीश

कृपा नाथ करूणा प्रबल पुरूषोतम जगदीश ।३२।

तब सनमुख चीतही रहे कही न सके वचन

उमडयो प्रेम समुद्र उर भरी आये नयन ।३३।

स्नेह सहित श्री मुख कहयो संदेह नांहीं मोहे

हुं जाणत हुं तोहीकुं तो ते सब कछु होय ।३४।

पे क्यों हुं अकेलो तुम विना मों पे रहयो न जाय

तुम मेरे अति प्राण प्रिया तुम बिन क्षणु न सोहाय ।३५।

मेरो यह सुभाव हे प्रगट करत हुं सोय

मेरे प्रिय जन निकटथी न्यारे करूं न कोय ।३६।

तेरे संग में चलुं तुं करे सो में कर्तव्य

में तेरे आधीन हुं और कहा विगतव्य ।३७।

तुं कही हे करी हे सोय तुं करी हे सो में कीन

जो मेरे संपति सकल सो तेरे आधीन ।३८।

श्रीमुख के यह वचन सुणी कृपा शक्ति मन फूल

वारंवार दंडवत कीअे देह सुरति गई भूल ।३९।

रोमांचित गदगद सहित सनमुख रही निहार

कृपानाथ करूणा निधी तुमही प्राण आधार ।४०।

आज सफल जीवन थयुं भाग्य सफल मारूं आज

दासी पर करूणा करी स्नेह वचन कहे राज ।४१।

तुम श्री पुरूषोतम प्राणपति श्री गोकुल प्राण आधार

आनंद मात्र कर पाद मुख उदर आदी रस सार ।४२।

सर्वोपर राजत सदा वृज जीवन सामर्थ

निरावरण धर्मी स्वतः अंतरयामी अर्थ ।४३।

हुं निपट तुछ अधमा अधम साधारण ओर छीन

और सखीनथे नीच हुं अप्रयोजक ओर हीन ।४४।

अति निकृष्ट त्रण तुल्य हुं दासी वृज अवतंश

प्रभुशुं द्रष्ट कीयो जोग तो मोय नांहीं अंश ।४५।

स्वतः कृपा करी मेघ ज्यों वरसत सब संसार

तेसे तुम मोहे पर करी न पात्रा पात्र विचार ।४४६।

दासी पर करूणा करी अपने सहेज सुभाओ

वृष्टी अनुग्रहकी करी करी कृतार्थ मोओ ।४४७।

जब ते सब संसार ये प्रभु तुम कृतार्थ कर्यो

धन्य अबे कलीयुग भयो सतयुग उपर पग धर्यो ।४८।

अब कलीयुगमें जीव सब सृष्टीनीथे उपर भये

कलीमल कलीमें रहे नांहीं सबे धर्म सरवत्र छये ।४९।

दोष भये गुण ते अधिक अज्ञान ज्ञानता लीन

कलीमा आप प्रागट्यको यहु विचार जब कीन ।५०।

जो प्रगट यों करी रहया श्रीमुख अेह वचन

मोहे पठवत जो काजकुं सो सबे भयो संपन्न ।५१।

अबके कलीमें जीवकु कहा सो अब सृष्ट

उध्धार सबनीको भयो तुम कीन्ही करूणा दृष्ट ।५२।

कृपानाथ करूणा निधि भली विचारी राज

जो जीयमें अे शीष धरी ते वेग करूं यह काज ।५३।

प्रगट होय संसारमें अे दुःखी नव रहे कोय

लीला देखे गुन रटे सहेज कृतार्थ होय ।५४।

बोहोत भांती साधन सबे कष्ट मीटायो त्यांह

विन साधन फल दानकुं आप पधारे ज्यांह ।५५।

कृपाशक्ति पर कृपाभर देखे प्राणआधार

तब बोली प्रभुता शक्ति आदर समय विचार ।५६।

कृपानाथ करूणा करी भले निवाजी नाथ

आप यही वस हे चले कृपाशक्ति के साथ ।५७।

जा के वश प्रभु तुम भये ताके वस सब कीन

सबे शक्ति वैभव सहित में तिनकी आधीन ।५८।

में इनकी रूचीमें रहुं आज्ञा करुं न भंग

ज्यांहां यहु प्रभुके संग चले त्यां में चलु संग ।५९।

ज्यां महाप्रभु आप चलो ज्यां चले हे सब कोय

कृपाशक्ति पाछे चली जेतिक संपति सोय ।६०।

यह विनती सुनी महाप्रभु फिर चितयों इत मांह

श्री गोकुल आपु स्वरूप धरी दंडवत कीने त्यांहां ।६१।

तबे श्री गोकुलकी विनती प्रभुता शक्ति प्रभुसों कही

विनय वचन बहु भांती कीये सुनिये प्रभुजी चीत धरी ।६२।

तुम पुरूषोतम मुकट मणी सब तुमारे हाथ

तुम श्री गोकुलके प्राणपति तुम श्री गोकुल के नाथ ।६३।

ज्यां ज्यां महाप्रभु चलो त्यां संग प्रभुके आहे

तुम विन श्री गोकुल क्यों रहे जो रहे तो गोकुल नांहीं ।४६४।

फिर चितयो श्री गोकुलपति कृपा शक्ति के पास
तब यह दोउ कर जोडी के बोली वचन विलास ।४६५।
श्री गोकुलकी विनती प्रभुता शक्ति उचित करी
तिनमें संदेह नांहीं कछु सुनिये प्रभुजी चित धरी ।६६।
श्री गोकुलकुं सब शक्तिकुं सब स्वामिनी अरू भक्त
अवतारी अवतारकुं श्री गोकुलेश तुम गत्य ।६७।
तुम सर्वस्व आनंद तुम आधार प्राण धन जीव
तुम वियोग क्षणुं अेकमें सब होय निर्जीव ।६८।
सो तुम विनुं केसे रहे जाके सर्वस्व नाथ
लीला उपयोगी सबे ज्यांहां प्रभु त्यांहां साथ ।६९।
तब ज्ञान शक्ति आइ निकट कृपाशक्ति के पास
वचन कहे हरवरायके ज्यों प्रभु न सुने प्रकाश ।७०।
कृपाशक्ति विनती सुनो तुम परम भगवत राज
जाही प्रसन्न श्री गोकुलपति तिन सरवर को आज ।७१।
तुम कीने प्रभु आप सम और सोंप्यो अधिकार
तुम प्रसन्नथी पाइअे प्रभु सेवा सुखसार ।७२।
तुम संगत इच्छा शक्ति चली वेहे परीवर्त
मुख देखे प्रभुता शक्ति ततपर कारज अर्थ ।७३।
तुम आज्ञामें परवर्ती हुं भक्ति शक्ति हम दोय
आनंद शक्ति रूची देखी के आनंद देही सब कोय ।७४।
करी हे काज कृपा शक्ति सबे मीली बनी आइ
प्रभु प्रसन्न तुम पर ढरे सबहीन के मन भाइ ।७५।
हुं अपुने अज्ञानथी अभिलाष करती हुं अेह
कर जोडी विनती करूं ज्यां तुम आज्ञा देह ।७६।
कृपाशक्ति बोली तबे धन्य धन्य हुं आज
अति प्रसन्न मुज पर भये श्री गोकुलेश महाराज ।७७।
ताते तुमसे भगवदी कृपा पात्र अनुराग
करत अनुग्रह अे मोहेकुं मेरो महा बडभाग ।७८।
सो बडभागी जगतमें जाको दरस तुम देह
स्वरस परस आज्ञा करो करो जहां तुम नेह ।७९।
प्रभु प्रसन्न मों पर भये न मोहे योग्य अनुसार
तुमसे पूरण भगवदी तिनकी कानी विचार ।८०।
हुं आज्ञाकारनी सबनकी तुमारी सबते विशेष
जो आज्ञा देहो मोहे हुं करूं चढाइ शीष ।८१।
तुम मेरी सखी सहाय हो तुम आज्ञा में कर्तव्य
जो मोहेकुं तुम पूछी अेसो मेरे विगतव्य ।४८२।

तब ज्ञान शक्ति बोली वचन सुनिये करी के नेह
तुम विन हुं कासो कहुं मेरो यह संदेह ।४८३।
जब सामग्री संग ले प्रगट प्राण आधार
तब केसे ठेहेरायगो मुक्ष अेह संसार ।८४।
जब दिनकर सब किरण ले प्रगटे भूतल आय
तब अंधकार सब जगतमें कहो कैसे ठहेराय ।८५।
में अेक समय इच्छा शक्ति कहेत सुन्यो हे ते वार
असुर जीव संसारके करे न प्रभु उध्धार ।८६।
श्रीजी देखे जस सुने नाम प्रभुको लेहींगे
अबतो असुर जीव सब सहेज कृतार्थ होयेंगे ।८७।
जेसे अगनी मुिखकुं शित निवारण जु करे
जदपि सूर्य विमुख को तदपि तिमिर तिन को हरे ।८८।
सूर्य अग्नि अेक सम कहु न बेर अपनाये
तिमिर शित सबको हरे अपने सहेज सुभाये ।८९।
जेसे प्रभु प्रगट भये नाम सुने जश गाय
असुर जीव कलि कालके सब उध्धार हो जाय ।९०।
अधिकारी संसार के ब्रह्म रुद्र और शेष
नारद इंद्रादी सबे त्यांहां क्यों रहे निमेश ।९१।
तबे काज संसारके क्यों कर चली हैं त्यांह
वाकी उपस्थित कर्तव्य है सृष्टी साधनकी मांह ।९२।
अपराधी असुर सबही देन दंड और भेद
दूर भये सेवत नीती प्रभु क्यों करी हे उछेद ।९३।
जब प्राण प्रभु परीवारसुं भूतलमां पधारीअे
सनकादिक श्रीमुख चहे योग युक्ति सब छांडीअे ।९४।
कोइ न देव पूजा करे कोइ न तीरथ जाये
योगादिक करीये नहीं वेद आदरे नांहीं ।९५।
विन साधन रस रूप फल जबे भयो संपन्न
अेसो श्रीमुख छोडीके को करीअे साधन अन्य ।९६।
तब साधन की सृष्टी सबे वृथा होय क्षण मांह
मर्यादाको को अनुसरे सब पुष्टि है जाय ।९७।
देवांतर अवतार को सेवक अति बहीरंग
तिन देखत प्रभुको करीअे लीला गोप्य प्रसंग ।९८।
श्री गोकुल के प्राण धन जीवन अति सकुमार
अति सुंदर कोमल मधुर अपरमित मंगलकार ।९९।
पुरूषोत्तम प्रेमाविधि सबे सार को सार
सबे भक्त और स्वामिनी अस्मादादिक आधार ।५००।

ऐसे वल्लभ प्राण प्रभु अति अनुचित होय
जब चित बहीरंगकी द्रष्ट परे जो कोय ।५०१।
मुजे बडो संदेह यहु ताते पूछती तोहे
ठाडी होय विनती करूं उत्तर दीजे मोहे ।२।
ज्ञानशक्ति के वचन सुनी निकत आइ प्रभुताशक्ति
बोली जो प्रभु ना सुने कछु सुने ही कृपाशक्ति ।३।
तुं सोच पोच कछु मति करो प्रभु ते सब कुछ होय
समाधान संदेह को जो करी राख्यो है सोय ।४।
मेरे अेक दासी रहे माया शक्ति हे नाम
ताकु यह कारज दीयो वे करी है सब काम ।५।
तु कछु चिंता मती करो वे करी हे सब काज
माया संगी अति प्रबल अगणित बहोत समाज ।६।
अविश्वास दोष स्फूर्ति लौकिक द्रष्टि संदेह
पूर्व पक्ष अन्याश्रय मिथ्या बुध्धी छे जेह ।७।
मनुष्य द्रष्टी दुःसंगनी लौकिक जे संताप
भक्त द्रोह विषे वस अरुची अनादर पाप ।८।
स्त्री पुत्र आदि सकल करत सबनी आशक्ति
तुच्छ फलनी अभिलाष करी देवांतर की भक्ति ।९।
काम इर्षा लोभ मद मत्सर क्रोध विचार
कोइ रूप तारूण्यकुं कोइ कुल अहंकार ।१०।
अहंकार बल चातुरी कहुं विद्या अहंकार
कहुं सेवा अहंकार करी कहुं धनको अहंकार ।११।
अेसे संगी बहोत हे मायाके आधीन
वे सब यहु कारज करे कर जोरी निशदिन ।१२।
मेरे बल प्रभुको दीयो अपरमित कृपा अपार
तेह बल करी मायाशक्ति राखि है सब संसार ।१३।
जबे श्री गोकुलपति संसारमें प्रागट्यको मनमें कीयो
तबे याही संसारकुं प्रभु अपनो बल दीयो ।१४।
ताते यह संसार सब रहि है नीकी भांत
दुष्ट न दर्शन करी सके कही रहयुं अे प्रभुते हांत ।१५।
संगी माया शक्ति के मनुष्य दुष्यादिक आदि
वे प्रभु सबंध नहीं होन दे करि है कछुअ उपवाद ।१६।
लौकिक कछु उपजायके मनुष्य द्रष्ट करवाय
तब वे आसुरी जीव सबको उद्धार हो जाय ।१७।
अधिकारी संसार के ब्रह्मादिक जो आहे
ता पग बेडी व्यासंगकी भूतल अे हे नाहै ।५१८।

जब आगमन न होय हे तब दर्शन क्यों होय
तबे अेह संसारको काज करेंगो सोय ।५१९।

सनकादिकने अन्याश्रयीन देखन न दे यह स्वरूप
मनुष्य द्रष्टते को लहे पुरूषोतम स्वरूप ।२०।

तुछ फलनी अभिलाषा मिली असुर विमुख हो जाय
देवांतर पूजा करे प्रभु दर्शनको पाय ।२१।

साधन सब करवाय हे स्त्री पुत्र आसक्ति
असुर यहु अनुरोध करी होय न अे प्रभु आसक्ति ।२२।

अविश्वास के कीये ते विमुख होयेंगे सोअे
वज्र चित बहीरंगको क्यों करी दर्शन होय ।२३।

काम क्रोध मद लोभ करी करी हे अपुने भाय
सबदिन याहीमों रहे कोइ निकट न प्रभुके जाय ।२४।

सोई जाये सोइ देखि हे सोइ जानि है स्वरूप
सकल पदार्थ तब मिले जब देखे प्रभुको रूप ।२५।

लीला अनुभव तब करे जब हरीअे सब संताप
कृपाशक्ति अपनी कृपा करी हे जिन पर आप ।२६।

अेक दूर रहे तै देखीये अेक निकट न देखे अे होय
कृपाशक्ति जोइ करे सोइ पें भली होय ।२७।

जाको जे मारग वरण करी अे प्रभु सांप्रत्य
सो तिन मारगमें सदा भअे हे त्यां प्रवर्त्य ।२८।

भक्ति शक्ति बहु वचन सुनी मनमें अति सुखरास
निकट आइ ठाडी भइ ज्ञान शक्तिके पास ।२९।

ज्ञानशक्ति तुम कह्यो दुष्ट चित बहीरंग
ताही द्रष्टी प्रभु पर पडे होये त्यां रस भंग ।३०।

अेह वचन अति स्नेहको तुम्ह कह्यो अपने जान
ये दोष सुरती ते दुष्टको होअे न प्रभु पहेचान ।३१।

कृपाशक्ति जा उपरे करी हे जब शुभ द्रष्टी
जीनकुं हुं नवनीत करि करीहुं अमृत वृष्टी ।३२।

अयोग्य योग्यता में करूं बहीरंगकु अंतरंग
वचन रूप बदलायके उपयोगी करूं अंग ।३३।

तुम कछु चिंता मति करो यामे केतिक वात
ये सेवा में करी सकुं यह सब मेरे हाथ ।३४।

तब कृपाशक्ति बोली वचन जेतीक प्रभुकी शक्ति
सखी परस्पर आपमें सब स्नेह अनुरक्त ।३५।

विरूद्ध धर्म सोइ करे जोइ बहीरमुख होइ
भगवदीको काज यह प्रभु सेवा तत्पर सोय ।५३६।

जो कछु कारज में करूं तुमारो संमत जाणी
तुम प्रसन्न जामो रहे विन रूची न करूं आन ।५३७।
कबहुक प्रभु रूची जानीके विन संमंत करीहु कोय
सोउं तुम संतोष करी मानी लेयेंगे सोय ।३८।
अब प्रभु और इच्छाशक्ति को समंत मनमें जाण
सावधान कारज सबे कीजो रूची पहेचान ।३९।
समे समे सब ठोरहुं तेह प्रकार तेह रूप
अपने अपने काज पर प्रगटत हे सब स्वरूप ।४०।
ज्यां ज्यां सब चरित्रकुं प्रगट होयेंगे नाथ
त्यां त्यां सब निमित हम प्रगट होयेंगी साथ ।४१।
सबे भक्त श्री स्वामिनी सखी दास परिवार
संमत इच्छा शक्ति के प्रगट होउं संसार ।४२।
कृपाशक्ति जब यह वचन कह्यां सबनी सुखकंद
तब आनंद शक्ति सब जगतकुं देन भइ आनंद ।४३।
कार्यशक्ति सब कार्यकुं भइ अपने जान
मायाशक्ति परीवारसुं अपने काज विधान ।४४।
यह कलीकाल संसारमें मध्य देश नर गात
पुरूषोतम प्रागटय भयें कृपाशक्ति के साथ ।४५।
अेम बोल्या श्रीमुख थकी ज्यांहां भयो प्रागट्य
शोभा चतुरन आनंद उर अरू अतिशे उलट ।४६।
मातृचरण महीमा अविधी पावे नहीं कोइ पार
श्री गोकुलेश प्रागट्य भयो अजन जनम एह द्वार ।४७।
त्यांहां श्री गोकुल प्रगट वपु आधिदैविक अंग
सामग्री उपयोगी सहु प्रगटी प्रभु के संग ।४८।
पुरूषोतम पूरण प्रगट श्री गोकुलके भूप
सबनि जाय दंडवत किये पे जान्यो नांहीं स्वरूप ।४९।
मायाशक्ति सब लोक पर कीयो आवरण सोय
ताते प्रभु स्वरूपको क्यों कर चीन्हे कोय ।५०।
त्यांहां भक्त समाजको भयो सबे मन भायो
अति प्रसन्न वे जीवकुं कृपा शक्ति समजायो ।५१।
जो प्रथमे प्रागट्य कीयो लीला करण समाज
ते फूले फले प्रेमसुं हरे सकल परिताप ।५२।
तिनके परमानंद भये आनंद मंगल चार
जय जय जय करी कीयो दंडवत वारंवार ।५३।
अति प्रसन्न मन विवसते कीनी अतिशे नृत्य
फूले अंग न समाय और फूली मनकी वृत्य ।५५४।

सकल काम पूरण करण देखे प्राण आधार
तेही छीनुं न्योछावर कीयो सर्वस्व वारंवार ।५५५।
वरसत नयन हरख जल भये शिथल गति पंग
कंठ पूरी गदगद भये रोमांचित सब अंग ।५६।
सबे जन्म अरू भाग्यकी सफल मानीके लीन
धन्य धन्य अपनो जीयो हमकुं प्रभु सुख दिन ।५७।
अगणित आनंद प्रगट भयो बजवाये वाजिंत्र
कीअे गान बहु भांत्य करी करे श्रींगार विचित्र ।५८।
बोहोत भांति मंगल कलश थाल आरती धूप
सदन सुतिकामों भइ शोभा प्रगट अनूप ।५९।
सब घर बंधनवार अरू कुमकुम चरचित द्वार
चौक पूरी मंगल सदन कीये सकल नरनार ।६०।
सहेज मोद सब जगतमें भये आपुने भाये
अति प्रसन्न आनंद उर चौद लोक न समाय ।६१।
शीतल मंद सौरभ सरस आनंद चली वियार
तीन लोकमां सहेज ही ज्यां त्यां जैजैकार ।६२।
दान बहोत विप्रन दीयो बंदीजन पहराय
सबहीनकुं मन भावतो रूची भोजन करवाय ।६३।
जीन जो जाच्यो सो दीओ अपुने घर को सर्व
आभूषण पट वस्त्र अरू मोती माणेक द्रव्य ।६४।
महाओच्छव प्रभु निकट कीने ले ले नाम
ता पाछे कीने अधिक अपुने अपुने धाम ।६५।
जेतिक प्रभुकी सृष्टी हे तिनकु आनंद देत
आनंदशक्ति प्रागट्यको आनंद ही सब होत ।६६।
ज्यां जतायो कृपा करी तिन मन अति उल्लास
दैवी जीव ज्यां ज्यां हता सब मन पूरी आश ।६७।
जद्यपि सब सुर लोकमां समजे नांहीं न देव
महामहोच्छव तिन कर्यो ब्रह्मादिक महादेव ।६८।
गंधर्व गाअे मोदशुं करे अपसरा नृत्य
कुसुम वृष्टी ज्यां त्यां भइ बाजे देव वाजिंत्र ।६९।
महा मोद वैंकुठमें अति प्रसन्नता पाताल
शेष नाग वासुकी वली सुख पायो तेही काल ।७०।
अे ते जीव जो जगतमें मिटे याचना आप
ततक्षण गई आपदा मिटे सवनि संताप ।७१।
अेवामां थई आरती उठया प्राणआधार
भक्त सहु दंडवत करी कीधो जयजयकार ।५७२।

अेक मास अंतर गयो हवो न त्यांहा प्रसंग
भक्त तणें मन पूछवा मनोरथ अभिनव रंग ।५७३।
अति प्रसन्न जेणे समे दीठा जलग्रह मांह
दंडवत कीधी ते समय करी विनती त्यांह ।७४।
श्रीमहाप्रभु ते दिवस नित्य तैमज रहे छे जेह
उत्सव केरी वारता प्रगट करी कहो तेह ।७५।
सनमुख थई करूणा करी मुसकत वदन सुचार
बोल्या कृपा वस थकी कर्यो प्रगट विस्तार ।७६।
यह भांती उत्सव थयो कहयो भाव अनुसार
यहु प्रकार को कही सके कोन करे विस्तार ।७७।
महामहोच्छव जन्मको अपनो मारग मांह
सब उत्सवमां मुख्य हे इन पटंतर कोइ नांहीं ।७८।
आनंद महोच्छव याही को कोइ न समजे अन्य
के समजे श्री गोकुलपति के कृपाशक्ति पहेचान ।७९।
अेसी लीला प्रागटमें गोपनीय जो वात
अंतरंग बहीरंगकु ब्रह्मादिकने अज्ञात ।८०।
गुण लीला बहु भांतकी रूप धर्म अरू कृत्य
अे सब प्रभुके प्रागट्य भये को कही सके चरित्र ।८१।
याते अधिक प्रकार हे ताको नांहीं पार
कोन कहे और कोन सुने काहु हे अधिकार ।८२।
श्रीमुख वचनामृत सुनी करी दंडवत त्यांह
अेक प्रश्न मनोरथ मन धरी करी विनती त्यांह ।८३।
अेह प्रागट्य पुरूषोतम तणुं जे राज कहो छे तेह
श्री भागवत वेद पुराणमां क्यां लख्युं छे अेह ।८४।
के बीजा शास्त्र पूराणमां लख्यो छे अेह प्रकार
जे उपर श्री मुख थकी कहयो प्रगट विस्तार ।८५।
श्रीमुखथी बोल्या वचन इनको लिखन नांहीं
पुस्तक को कछु और अे यह तो अनुभव मांह ।८६।
सो जाने जो अनुभवे वेद पूराण अगम्य
यह तो अनुभव ताही कुं जो पूर्ण पुरूषोतम ।८७।
जिनको यह प्रागट्य हे पूरण जाने सोय
के इनकी करूणा द्रष्टीथी भगवदीय कुं होय ।८८।
अैसो ओर यह भांती करी कहयो न कहीवे योग
भगवद रस आवेसथी बन्यो आवे संयोग ।८९।
अबको अवतार सर्वज्ञकुं काहु न कछु संपन्न
यह लीला समजे कहां जु श्रवण न अेक वचन ।५९०।

सबे देव आश्चर्य हे गये जु ब्रह्मा पास
कहो कोन आनंद यह सहेज प्रगट सुखरास ।५९१।
ब्रह्मा कछु जाने नहीं इन जाय पूछयो वेद
आनंद प्रगट्यो जगतमां सो तुम जानो कछु भेद ।९२।
वेदने ब्रह्माकुं कह्यो हमकुं बहुत अगम्य
इन आनंद के मूल लों नांहीं न मेरे गम्य ।९३।
यह आनंदके मूलकुं नमन करे सब कोय
यह स्वरूप सो जानीये अेह जनावे सोय ।९४।
हम यहु आनंद वृक्षके फीरत डार और पात
यह आनंद के मूलको जानत नहीं वात ।९५।
मूल सबनी आनंद को सबे र्ध गुण भक्त
सबे प्रेम सौंदर्य सब सबनी प्राण मनोवृत ।९६।
सब मंगल सामर्थ सब हम तुम और संसार
यह जानत हुं सबनके जीवन धन आधार ।९७।
यह वेदके वचन सुनी सबहीके मन भाये
शिव ब्रह्मा सब देव मिली कीने दंडवत आये ।९८।
कृपाशक्ति उपदेश प्रभु ज्यों ज्यों कारज कीन
ज्यांहां बोले ज्याहां वसे ज्यांहां जाय सुखदिन ।९९।
जाको प्रभु आदर कीयो ज्यांहां बोले मुसकाय
भवन पधारे जाही को ज्यांहां आप सुख पाय ।६००।
ज्यां ज्यां दरशन दीयो ज्यांहां करी पहेचान
स्वतः सुरती जाकी करी सेवा लीनी मान ।६०१।
निकट रही सेवक भये शरण अनुसरे जोय
ज्यांहां संबंध कछु अेक भयो निस्तारे सब कोय ।२।
संबंधी प्रागट्य को बंधु कुटुंब और दास
ज्ञात पूरोहित आश्रित सेवक मन हुल्लास ।३।
जासुं रस लीला करी ताके समान नांहीं कोय
तिन के सुमरण नामते और कृतारथ होय ।४।
गुन गाये और जस सुने करे प्रभूनी वात
लीला अवगाहन करे प्रेम सहित दिन रात ।५।
सो बडभागी जगतमें तिन समान नहीं कोय
तिन देखे परसे संगथे और कृतारथ होय ।६।
यह लीला विश्वास करी जो राखे उर मांह
सुने सुनावे पात्रकुं सदा प्रेमे करी गाय ।७।
तिन परसे दर्शन मात्रथी नाम लीअे वांचे अेह
निस्तारि हैं यह लोक सब यामें संदेह नांहीं ।६०८।

अे प्रसंग परम आनंद सुं कीधो पूर्ण त्यांहा
सौभागी अेकांत स्थल हवो जलघर मांहे ।६०९।
श्री गोकुलेश श्रीमुख थकी कीधी करूणा वृष्टि
निज प्रागट्य वचने कह्युं लह्युं भक्त जे पुष्ट ।१०।
अे प्रसंग पूरण थयो हवो ते जैजैकार
जे संबंधी प्रागट्यना तेणे राख्यो रूदिया वार ।११।
प्रश्न कर्युं तेणे समे हुता भक्त रसवान
वचनामृत अचव्युं श्रवण नेनरूप रसपान ।१२।
प्रगट कर्युं पोते थकी प्रागटयनू सुनी निज रूप
महाभाग्य जेणे सांभली अनुवाद कर्यो अनूप ।१३।
सार ग्रह्यो तेणे समे प्रगट्या जेहने काज
अन्य न समजया ते समे समज्यो पुष्ट समाज ।१४।
अति प्रसन्न थई सेवके कर्या दंडवत त्यांहां
करी वीनती दीन थई प्रभु प्रसन्न मुख छे ज्यांहां ।१५।
श्री महाप्रभु अे वातनो अक्षर कणिका मात्र
अति दुर्लभ अह्यो जीवने धरण शक्य नहि पात्र ।१६।
तेहने पण अे श्री महाप्रभु स्वतः कर्युं अतिदान
संपन्न करो छो कृपा करी वचनामृतनुं पान ।१७।
कृपानाथ अे सृष्टि सम भाग्यवान नहीं कोय
सदा निरंतर निकट रहे सनमुख दरशन होय ।१८।
ओर विचारी आपणी कीधी करूणा सार
अेहवी लीला रहस्यनो कर्यो प्रगट विस्तार ।१९।
अेहवुंं प्रागट्य प्रगट कर्युं श्रीमुखथी सार
ते चरित्रलीला विसद करूं तेणे अनुसार ।२०।
करूणा करी प्रभु ऊच्चर्या स्वकीय हितारथ अर्थ
ते महेद भगवदीअे ग्रह्युं अनुभवने सामर्थ ।२१।
ते लेखनथी में लख्युं प्रभु वचनामृत सार
केवल कारण रूप अे इच्छाने अनुसार ।२२।
मघमहेद तणा मनोरथ थकी महेदे करी सहाय
गोपालदासे विवरण कर्युं चरणे शीष नमाय ।६२३।

इतिश्री गोकुलेश लीला रसाब्धि क्रीडाकल्लोल महा अद्‌भुत विचित्ररस
व्याराना गोपालदास - विरचित
प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम
प्रथम मांगल्य
संपूर्णम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य – २ – बीजुं

राग : केदारो : अेहनी जात. दादाजी कृत विनतीनी,
''वैष्णवजनने करुं विनती, सिर नामी कर जोडी'' अेम गवासे

श्री विठलसुतना पदजुग वंदु अभिनव मंगलकारी
प्रगट्या भूतल रमण करेवा रसलीला विस्तारी ।१।
द्विजवररूपे भक्त आभरण गोकुलेशजी नाम
श्री गुंसाईजीने घेर कृपा सहित पधार्या पूरण काम ।२।
प्रागट्य मुख्य अवांतर भेदे तेहनुं कारण भिन्न
रमण मुख्य अवतार अवांतर समुझे नहिं को अन्य ।३।
मुख्य गाम जावुं ते मांहांथी त्रण स्परसे जे चर्णे
तेमज मुख्य रस उध्धार अवांतर प्रगट अेह अनुकर्णे ।४।
पथिक पगे त्रण स्परस करे ते ज्यांहां लगी पोहोंचे गाम
अर्थ न सरे तेथी ते त्रणनो रहे आपापणे ठाम ।५।
आ उध्धार महाराज तणो ते अदभुत कारणरूप
करे रमण जोग्य भोग्य रसरूपे अेहवा भेद अनूप ।६।
ते रमण अर्थे महा परम रसिकवर शृंगार रसनुं सार
परमाद्भुत सुंदर अति मोहक कर्यो सहेज श्रृंगार ।७।
धोती स्वेत स्वेत उपरेणो भाल तिलक अति सोहे
तुलसी गुंजामाल कंठमांहा जे देखे ते मोहे ।८।
सकल कला संपूरण पूरण पुरूषोतम छे जेह
सकलांशे सरवोपर राजे अदभुत प्रागट्य अेह ।९।
आनंदमात्र कर पाद मुख उदर आदे देइ जे साज
अेह अंग रसात्मिक अेहोने रमण सबंधी काज ।१०।
अखंड अचल लीला सामग्री साथे लेइ आंहा पधार्या
ते प्रागट्य कर्या भूतलमांहा जे जे ठाम विचार्या ।११।
अे कारणमांहा अनेक जीवनां कर्या भाग्य विस्तार
वरणांवरणे पशु पक्षी द्रुम कीधो अंगीकार ।१२।
अनेक अनेरी लीला अद्भुत प्रगट प्रमेय प्रकार
रसनी रीते ने बहु प्रीते पुष्ट तणुं जे सार ।१३।
नामनिवेदन नवली रीते प्रीते करी सनमान
वरणभेदमां भावभेदसुं जथाजोग्य रसदान ।१४।
पात्र विशेषे रसविशेष ते स्वाद तणो अभिलाखी
प्रथुक प्रेमरस जाण रसिकवर रहे न अे रस पाखी ।१५।
प्रागट्य बीजे प्रथम लेइ अने पछे करे कांई दान
आंहां प्रथम दान रसवृष्टि करी ने पछे ग्रहण सनमान ।१६।

मूढ जीव अवस्था भिन्ने न धर्म नेम आचार
स्वतह बले सनमुख ते लीधा कीधो अंगीकार ।१७।
अंग अवयव अने वय रूपे चतुराइ नहि पार
भक्ति प्रेमणां अेतद रस पर मनोरथ गूढ अपार ।१८।
अेहवा महारस जोग्य करी अने दान अपरिमित दीधुं
तेहने रसवस थया प्रभु पोते अेहनुं कारज कीधुं ।१९।
अदेय दान दक्ष अतुलीबल निःसाधन फल आप
कारुणिक करुणाभर रसभर सहे नहीं परिताप ।२०।
वली सहेज शरण आव्यानुं विन साधन विन नेह
इच्छाअे सहुने सुख आपे लौकिक अलौकिक जेह ।२१।
अे प्रागट्य विसद करवाने महेदचरण आराधुं
प्रथम अेहनी पदरज वंदु आगल कारज साधुं ।२२।
जे पदरेणु जोग्यता प्रियरस प्राप्तिकरण अेह
संपादन सुख स्वरूप तणुं ने निरवधि उपजे नेह ।२३।
मंगलकारक निरविघनार्थ अति पुरुषारथ रुप
माहारे सकल पदारथ साधक अनुभव अेह अनूप ।२४।
अेह रेणुनी महिमा अद्भुत कोअे न जाणे तेह
के जाणे रसवल्लभ वाहालो के अेह जणावे तेह ।२५।
जेथी मुहने अेह जोग्यता प्रगट हवी संपन्न
अेह स्वरूप ने अेह भगवदी वसिया माहारे मन ।२६।
अेह भक्तनुं स्वरूप कहुं संक्षेपे छाह्या मात्र
संबंध प्रभुसुं समग्र कहेवा हुं जोग्य नहीं पात्र ।२७।
प्राणप्रभुअे आप सुखारथ अंगीकृत जे करीआ
अनिरवचन अेहोने हितअरथे लीलाथी देह धरीया ।२८।
महाप्रभुनां परमप्रिय अतिपुष्ट पुष्ट भजनीय
सेवाशक्त परायण अतिसे अंतरंग सजनीय ।२९।
शोभासिंधु दैन्य मर्यादा अनन्यता नहीं पार
स्वरूप नेष्टीकना नरेन्द्रने पूरित भाव अपार ।३०।
सदा प्रसन्न स्वकीयना पोषक जगत तणा हितकारी
अति गंभीर मनोरथ पूरे वल्लभना सुखकारी ।३१।
परम चतुर अंतरगति जाणे प्रभुना मननो मर्म
निरावरण संपूरण जे मांहां दीसे भगवद धर्म ।३२।
श्रीमुख कमल रूप रसभर मकरंद मधुप अनुरागी
हृदय निगूढ प्रवीन गूढ रस प्रिय सोहाग सोहागी ।३३।
स्वमनोरथ अनूप सुख अनुभव अद्भुत अति उत्कर्ष
परम कारण रूप रस रंजित भरीया तेणे हर्ष ।३४।

गोकुल परम प्रिय महामोहन हसित वदन अनुरागी
अति रसपात्र परम उपकारी अेहवा माहा बडभागी ।३५।
अति उदार अनुभव सुखदायक नायकनी जे रीत
परम रसिक माहादुर्लभ जेहो पर वाहलानी अति प्रीत ।३६।
ईश्वरेश्वरने रसरीते प्रत्यंगे सुखदाता
महाराज राजेश्वर संगम अभिलाखे अतिराता ।३७।
दरशनथी प्रभुने सुखकारी रहे सदा शुभ नीत
स्वार्थीय सृष्टे अलंकृत प्रतिष्ठाथी भयभीत ।३८।
परम प्राणवल्लभ रसलुब्धक वेधी रसना जाण
अति आसक्त स्नेह भरपूरित नहीं रसनुं परिमांण ।३९।
अेहवा अनेक गुणे संपूरण उपमानो नहीं पार
जेहनो जस जगते न समाये ते केम करीअे विस्तार ।४०।
अेहना पदनी रेणु तणो हुं क्यांहां लगी करूं प्रकाश
अति निगूढ रस अनुभव करवा अेहनी मुने आश ।४१।
पोषक अति पुरूषारथ साधक सर्व मनोरथ पूरे
ते चरण रजने चरणे नमन करूं माहारा अंतर दुःख चूरे ।४२।
अेहनो रसरूप अलौकिक रस रत्नाकर सोहे
ज्यांहां अतिनिर्मल मंजुल उज्जवल रसरूपी मुक्ता होअे ।४३।
कीर्ति रसाल रसे स्वादित छे रसे युक्त रसदाई
मनोरथ प्रगट करण छे तेहने नमन करूं सिर नाई ।४४।
तेहना आश्रित महाप्रभु अवतारी वरेन्द्ररूप
ईश्वरेश्वर अति सुखदाता श्री गोकुलनो भूप ।४५।
कर पाद मुख उदर आदि देई आनंदमय सर्वांग
भक्त मनोरथ पूरण अर्थे कर्या मंगलरंग ।४६।
व्रज नितंबनीना सेव्य परमधन रति शृंगार रससार
प्रेमपात्र रति त्रिय जन र्स्वस्व जे छे नित्यविहार ।४७।
रूचि दायक सुंदर मनभायक परमानंद स्वरूप
लोकोत्तर अनिरवचनीय महा दिव्यमान अनूप ।४८।
कृपासमुद्र दीन उपकारी निज अनुराग सुखदाता
भक्त भावात्मक परमप्रिय अति निजजनने रस माता ।४९।
परम अनाद्य पूरण पुरूषोतम अे परम कष्ठापन्न
कर्तुमंकर्तुं अन्यथाकरण अे सामर्थ संपन्न ।५०।
मूलभूत पुरूषोत्तमोत्तम भक्तवच्छल हित काज
श्रीगोकुलेश परमाद्भुत सुंदर जै जै जै महाराज ।५१।
अेना चरणकमल जुग वंदु जुगल स्वरूप विराजे
अति प्रफुल्लित मकरंदे निरभर स्वरूपा आत्मिक राजे ।५२।

शरणेकराय शिरोमणी सागर आगर कीर्तिरूप
रसात्मिक रसदायक निजजन नायक नवल अनूप ।५३।
प्रवेश नहीं त्यांहां लेश लक्ष्मीनो निज जनने अतिगम्य
रूदयारूढ अतिगूढ अहरनिस परम रमणीय अति रम्य ।५४।
अति शीतल सतपात्र सुखद अति कोमल प्रिय मनरंग
ज्यांहांथी भक्तिसागरना प्रगटे अधिक तरंग ।५५।
अे चरणरेणुने प्रेम पूरवक नमन करी बहु वार
अेह बले में मनोरथ कीधो करवा जस विस्तार ।५६।
अेह ग्रंथ प्रागट्य थवानुं कारण कहूं छुं तेह
कृपा करीयने सर्व भगवदी सांभलजो करी नेह ।५७।
अेक समय महाभक्तराज जे सरवोपर छे जेह
महेदभक्त गोकुलभाईने भाव उपन्यो अेह ।५८।
तेथी मनमां हर्ष उपज्यो ते उरमां न समाय
श्री महाप्रभुनी लीला वर्णन तेह प्रगट केम थाय ।५९।
पछी पोतानो आश्रित जानी तत्पर जमनादास
तेडीने ते आगल कीधो पोते भाव प्रकाश ।६०।
पूछ्युं श्रीमुखना वचनामृतनो संग्रह छे कांइ तारे
ज्यां त्यांथी संचय करी लावो कारज छे अेक मारे ।६१।
अेह वचन सुणीने अेहने उलट अतिशे आव्यो
मारा प्रभुनो जस विस्तरसे अेह संमत मन भाव्यो ।६२।
ते ऊपर अेणे उद्यम कीधो महाप्रभुने चरणे लागी
आठ प्रहर आरत मनमांहे नयने पलक न लागी ।६३।
भक्तराज आज्ञा सामर्थे इच्छाए प्रवेश कीधो
वचनामृतथी वैष्णवने पूछी मधु संचय करी लीधो ।६४।
अेहने अेह योग्यता क्यांथी अेह रसे केम भीनो
अेह आज्ञानो प्रताप अने अंगीकृत नारायणजीनो ।६५।
अेहनी संतति फल संगेथी परम महा फल लीधुं
परम प्राण वल्लभ व्हालासुं प्रेम सहित मन बांध्युं ।६६।
तेथी अेणे जगत हितारथ संग्रह कीधो सार
ते ऊपर भगवद इच्छाअे हवो ग्रंथ विस्तार ।६७।
श्री गोकुलेश लीला रस सागर तेनी कणिका मात्र
ते जश कहेवा उद्यम कर्यो पण धरण शक्य नहि पात्र ।६८।
को कहेशे रस सागर मेली कणिकाने साधे
त्यां कहुं छुं अे कणिकानो जोतां पार न लाधे ।६९।
अेक समय प्रभुअे श्रीमुखथी वचन कह्युं छे अेह
रसाब्धी बिंदुमाहा मग्न होअे जे पुनरूथान न अेह ।७०।

अे कणिका सर्वज्ञ न समजे वेद न जाणे अर्थ
ईश्वरेश्वरने अगम्य अति नहीं कोईनुं सामर्थ ।७१।
बुद्धि परम अणुं गोकुलेश जश अखिल ब्रह्मांडे व्याप्यो
मेघ बिंदु जल कणिका गणीअे पण अे नव जाअे माप्यो ।७२।
त्यांहां को कहेशे अति अगम्य तो तें केम कह्युं जाशे
तेहने कहुं छुं चरण रेणुने आश्रयथी सिद्ध थाशे ।७३।
अे में मोटुं साहस कीधुं चरणरेणुं देइ माथ
जेहनी कणिका छे सहु साधक ने पुरूषारथ साथ ।७४।
अेतनमारगे रूचि उपजावे अे स्वरूपने जाणे
त्रीजु पुरूषार्थ अेह लीला हित करी मनमां आणे ।७५।
लीला सहित स्वरूप अंतःस्थिति होअे हृदयारूढ
रस भावे उत्पन्न अने वली अनुभवनो रस गूढ ।७६।
प्रभु स्वतः इच्छाअे रस वस सदा रहे अनुरक्त
अभिलाषे प्रतिक्षणुं रस वांछे अे पुरूषार्थ भक्त ।७७।
अेथी अनेक प्रकार गूढ रस ते प्रगट केम कहीअे
ते सघला अे चरणरेणुं जो कृपा करे तो लहीअे ।७८।
ते चरणरेणुने नमन करवानो उद्यम रूपी चंद्र
आरंभ मात्र उछलीत ऊपर थई आवे प्रेम समुद्र ।७९।
लीला रूपी लहेर गेहेरी मध्य करावे कल्लोल
त्यांहां प्रेरे छे मुज मन अनुदिन कृपा तरंग झकझोल ।८०।
ते तरंग अंग सहित मनने अेहवा भाव उपजावे
वर्णन वल्लभ महानिधी दुर्लभ ते विण कांइ न भावे ।८१।
नमननो उदेश करता अेहवा अनुभव थाये
तो साक्षात संबंध श्री चरणेरज रस क्येम कहेवाये ।८२।
अेह रेणुने नमन करीने अेहनो संमत लीधो
अेहनी करूणानुं बल याची वलतो उद्यम कीधो ।८३।
जे महाप्रभु प्रागट्य हवा श्री गुंसाईजीने घेर
परम रमणीक स्वरूपे लीला नित्य नित्य नवली पेर ।८४।
ते स्वरूप लीला गुण वर्णन कांइ अेक करूं प्रकाश
अेक अेकथी अधिक रसात्मक आपे सुखनी राश ।८५।
सुंदर केश सरल सुशोभित अति सरस सचिकण श्याम
कुंतल पर अलीकुल ओवारूं त्रिय लोचन पूरण काम ।८६।
चलके ललके लता लहलहे सरिता मध्य जेम नीर
काम रूप कामिनी मन मोहन धरे नहीं को धीर ।८७।
जेह समे अंबोडो वाले मोडे पेचे केश
लटकेशुं सोहे छोगालो ते दिसे अभिनव वेश ।८८।

भाल विशाल रसाल रसीली रेखा तिलक अनूप
राजती सहेज श्याम रेखा मध्यकाम मोहिनी रूप ।८९।
भ्रोंह धनुष वंक गुण विन निरखे लागे तन बाण
थाअे ते वस अवस देहथकी केहेनी करे न काण ।९०।
लोचन ललित चपल अणियाला अतिय रसाला सोहे
रसदायक नायक रसना चितवनीअे मन मोहे ।९१।
लोल कपोल करण कुंडल बेहु जडित जोती अति चलके
गल्ल स्थल नासिका निरूपम जोता त्रियमन ढलके ।९२।
वदन कमल विकसित शोभाभर मुसकनी ईषद हास्य
दंत पंकती दुति पीक झलकतुं सुंदर सुखनी रास ।९३।
अधर अरूण रस रंग रस भर्या रंजित रस तंबोल
रस निर्भर नमी आव्यो रस नहीं को समतोल ।९४।
दाता मोहक नहीं कोइ अे सम रस अगाधि अखूट
सकल शिरोमणी रस रास जे नहीं को अे रस छूट ।९५।
गुण अे रसनो वचने न आवे पान करे न अघाय
स्वाद रूचित मध्य स्नेह प्रगट्थी पीतां तृप्त न थाय ।९६।
रसना रसिक रसीली रसभर रसे जुक्त रसपूर
रसनाअे रसना रस स्वादित रस कहेवा अति सूर ।९७।
ठोडी स्थल विश्राम धाम सुख ग्रीवा गुण गंभीर
लटकनी भाव अनेक सूचवे अनुभवी धरे न धीर ।९८।
माला तुलसी हेम मुक्तानी गुंजा सोहे सार
भाव भेद त्रीय रंग अंगना ललके रूदयावार ।९९।
उरोज अने वक्षः स्थल प्रबल ते दसन काम त्रियमान
स्वकीयने सुखभर भेदशुं दे परीरंभण दान ।१००।
स्कंध बाहु भुज अंगुली दल परसे अति अनंग विशेष
सकुचे नहीं प्रिय हित अर्थे स्वारथ नहीं लेश ।१।
नखमणी चंद्र तणी शोभा मुद्रिका अनुपम दीशे
उदर नाभी रोमावली राजे जोतां हैयडुं हीशे ।२।
कटि प्रदेश रस रूपे सोहे धोती धरी बिराजे
उपरेणो आनंदे अंग ओढयो ते अतिशे भ्राजे ।३।
नितंब जंघ जानु अति सोहे शोभानु नहीं मान
शक्य नहीं शोभा कहेवा अे वचने करी प्रमाण ।४।
चरणकमल सुशोभित अंगुली नखमणी जोती ते मोहे
पदतल अंकुश ध्वजा अलंकृत भक्त शीश पर सोहे ।५।
गौर कांती श्रीअंग अनूपम उपमाने नहीं आन
तेजपुंज रसपुंज रसात्मक करे अनुभवी पान ।१०६।

वचन मधुर रस अमित माधुरी स्वाद अपर्मित अेह
करूणाभर मनोहर अव्यक्त रस थाये वृष्टि अति तेह ।१०७।
नखशिख पर्यंत स्वरूप सूचनिका कही कांइ जेवी जाणी
हवे आगल कहुं गुण स्वरूप रस जेहवो आवे वाणी ।८।
आनंद मात्र कर पाद उदर मुख आदि देइ सहु अंग
गोकुलेंदु मुखी वृंदनुं जीवन वृजानंद कंद मनरंग ।९।
श्रीमद गोकुल नितंबिनी सेवित वल्लभ प्राण आधार
श्री गोकुलेश रसोदय अदभुत सुंदरी जन सर्व संसार ।१०।
सदा सर्वदा श्री गोकुल प्रिय वल्लभा भाव संपन्न
सर्वदा स्नेह सींचन ललित रस लावण्य वदन प्रसन्न ।११।
मधुधारा वृष्टि सम वरसे अखंड वचनामृत
मुखारविंद माधुर्यं रसदायक जीवन रसिकनुं कृत्य ।१२।
श्री गोकुलेश रसेन्द्रीय कपोलसु सुमुखे विलास
विलास रसे संयुक्त भक्त रती उपजे सुखनी रास ।१३।
रसांकित भ्रुअ भ्रंग विलासे ईक्षण मनोहर दीसे
स्वलीला दक्षणै क्षण ते जोतां हैयडुं हीसे ।१४।
रसिकभाव सदा संपूर्ण रसारूढ आवेश
रसिक वाक्य रस स्थापन करवा रामा रूदे प्रवेश ।१५।
प्रत्यंगे अति अद्‌भुत सुंदर अखंड रसनी वृष्टि
भक्त नेत्र महोच्छव होये निरखे सघली सृष्टि ।१६।
कमनिय पादांबुज अनुरक्त भक्त मधु वृत
विलास रसे सर्व रस मंडण नित्य लीलार्सवर्ट ।१७।
सदा विलास संयुक्त रसात्मक विलास रस सर्वस
श्रंगार रसे मंडण ने जे छे श्रींगार रसने वस ।१८।
श्रंगार रसे जेहनी छे प्राप्ती पोते भजनानंद
मूर्तिमान श्रंगाररूप अे दायक अति आनंद ।१९।
कला रसे शिरोमणी सुंदर केली कला सामर्थ
रस भावे भूषित द्विदलात्मक पोषक उभय रस अर्थ ।२०।
निज स्नेहार्थे नरने रूपे स्वरूप सचिदानंद
समूल रसात्मिक भक्त आरत हर स्वतंत्र आनंद कंद ।२१।
भक्तसुं आशक्त भक्त वश भक्त प्राण आधार
अंतरंग फल दायक ते विण रहे न अेक लगार ।२२।
चंद्र अलौकिक अद्‌भुत उदयो रूक्मणी रूदे आकाश
सोल कला संपूर्ण साथे कुमुदिनी भक्त प्रकाश ।२३।
नेत्र चकोर ते स्वकीय भक्तना तेहना पोषण काज
स्त्री जन्म हित कारण केवल अेहवो उदय उड राज ।१२४।

विवर्धन रस आर्णव अगणित किरण कोटि प्रकाश
जे रसवचन थकी छे अलगो ते आपी पूरे आश ।१२५।
स्वेत रंग सदा सुसेव्य दिव्य मनोहर देह
गोकुल आनंद दायक नायक प्रगट श्री विठल ग्रह तेह ।२६।
स्वकीय भक्तना प्राण आत्मा परम प्रिय मनुहारी
तद भक्त परवेष्टित पोते श्यामा संग सुखकारी ।२७।
सर्व ज्ञात स्वरूप अति सुंदर रहस्य रमणस्थल ज्यां
प्रिय श्री गोकुल स्वतहा कृत लीला सदा स्थिति छे त्यां ।२८।
मनोरथ अर्थ सिद्धी सुंदर वर वृज युवति पति प्राण
भाव आत्मा भावे पूरक अेहवा चतुर सुजाण ।२९।
रस सिंधु उमडयो अंतरथी सुभग तन वल्लभराज
नित्य प्रति रचना नाना विधिनी अंग अंगना हितकाज ।३०।
अधरामृत पोषण प्रेमदानू भोजन छे सुखकारी
अेकांत रस संबंधी जे छे नहीं को ते अनुहारी ।३१।
चरणामृत सींचन सेवक ने सेवा तणुं सुख देवा
आगलथी अदभुत दान अे प्रगट पुष्ट रस लेवा ।३२।
स्वकीय निज अर्थे करी स्थापित विविध युक्त रसदाता
रसज्ञ भजनानंद अने वली महाभोग्य रस माता ।३३।
मान दमनहारी प्रिय प्रियजन रमण रसे अभिरामी
चित्त हरण वरण रस दाता क्रीडासक्त अति कामी ।३४।
भक्त तणा परिताप हरण सुख करण लीला विहार
साक्षात मनमथना मनमथ ने तेहना आधार ।३५।
स्मित मात्रे विरह महोदधि मग्न उधारक जेह
अगाधि रस सागर गुण आगर भक्त भाग्य फल तेह ।३६।
रसिक राय सिर मुगट महामणी रसिक तणा आधार
अेहवा अनेक गुणे परिवेष्टित पामे नहिं कोइ पार ।३७।
स्वरूप लीला गुण अलंकृत अनिरवचनी रस रीत
रसावेस आनंदे प्रमुदित रमण करे छे नित्य ।३८।
अेह प्रभुअे आप हितार्थ पुष्टी सृष्टी उपजावी
श्री अंगथी प्रगट करी ते पोताने मन भावी ।३९।
अेह सृष्टी लीला उपयोगी सहुथी अलगी सार
वासुदेव वेदांत न जाणे नहीं ब्रह्मा परिचार ।४०।
भिन्नैवकाचित सा सृष्टीर्वोधातुर वितर्रेकिणीतीरे किणी जाण
अेह वचन श्रीमुखनुं कहुं छुं करवा अेह प्रमाण ।४१।
रस अंगेथी जे प्रगटी ते रस भावापन्न दीसे
सर्वेन्द्रीय स्वादित रसभर अनुभव सिद्ध कहीशे ।१४२।

अंग थकी आनंदे प्रगटी अेवी सृष्टी रसवान
तेहने हेते पोते प्रगट्या करवाने रसदान ।१४३।
रसनी जे सामग्री सर्वस्व सहित अतुल सामर्थ
महा अमित रस वृष्टी करवा रस अनुभवने अर्थ ।४४।
दैवी जीवना भाग्य विस्तर्या जगत उद्धार करेवा
नि:साधन फल कलियुगमाहे प्रगट्या प्रेम भरेवा ।४५।
परम विचित्र बाहाज्य आवर्णे मध्ये छे रस रूपे
श्रीगुंसाईजीयने घेर कृपा सहित पधार्या अेह स्वरूपे ।४६।
ईश्वरेश्वर प्रगट्यानुं कारण कोण करे निरधार
स्वाभिप्राय संशय अेहवुं वचन कह्युं छे सार ।४७।
पुरूषोतम प्रागट्य हवामां कारण अनेक ते दीसे
ते प्रभुने बले मारी बुध्धी अनुसार कांइ अेक विसद कहीशे ।४८।
प्रसाद रूपा शक्ति प्रभुने करीय विनती जेह
ते कारण प्रथम श्रीमुख वचनेथी विसद कर्युं छे तेह ।४९।
बीजुं कारण कहुं छूं ते तमो सांभलजो चित्त
मारगनुं सिध्धांत अने वली अंतरंग सुखदाई ।५०।
अेह प्रभु अनादि सिध्ध पुरूषोतम परम रसाल
महा कारूणिक करुणा मय वछल अेहवा परम दयाल ।५१।
दीनोद्धरण परम उपकारी नि:साधन फल रूप
साधन रहित सहज अंगीकृत श्री गोकुलनो भूप ।५२।
महा दु:ख सागरथी काढता निमेष न लागे वार
आरत हरण जगत उपकारी स्वकीयनो आधार ।५३।
अेह संसारमां पुष्टी मार्गी जीव दु:खित बहु जाणी
निरूपाधि कलेश निराश्रय, जोइ करुणा मनमां आणी ।५४।
ते जोईयने प्रभूना चितमा दया अपरमित आवी
ते ऊपर पोताने मन विचार्युं सहज सुभावी ।५५।
वेद पुराण शास्त्र नव समजे पुष्टी पंथे सामर्थ
लीला रस भावात्मक महातम प्रगट स्वकीयने अर्थ ।५६।
त्यां को कहेशे जो स्वकीय तो कां अलगा प्रभुथी अेह
तेहना समाधानना अर्थे कारण कहुं छुं तेह ।५७।
प्रथम अेहने संगम रसमां प्रभुशुं अति अनुराग
हठ मान उपज्यो ते अपराधे प्रभुअे कीधो त्याग ।५८।
विरह कलेशे व्याकुल थईने विषयानंदमां मलिया
तेह थकी अलौकिक आनंद अंतरगतथी टली ।५९।
पछी एहवा सम्बंध वासना बुध्धिथी हवा जेम संसारी
प्रभु रमण रस मग्नमांथी अेहोनी सुरती विसारी ।१६०।

को अेक काल अेणी पेरे अेम वीत्यो भाग्य उदय थयो ज्यारे
भक्त भाग्य फल उदय प्रभुनुं नाम प्रगट थयुं त्यारे ।१६१।
कृपा वशात रमण रसमांथी सुरते आवी चढया
दैवी जीव अे पुष्टी मार्गी प्रभुनी द्रष्टे पडया ।६२।
देखत मात्रे करूणा आणी जाणी पूर्व नेह
कोण प्रकारे कोण साधने शरण अनुसरे अेह ।६३।
अे कारज कोइथी नव थाअे साधन कीया लेखे
पुष्टी पंथे अंगीकृत करवा सामर्थ कहुं न देखे ।६४।
शुद्ध पुष्टी भक्ति मार्ग जे पोताने मन भाव्यो
ते प्रगट करवानो संमत श्रीप्रभुने चित आव्यो ।६५।
स्वमुख रूपी श्रीआचार्यजीमां अे सामर्थ जाणी
तमो जइ भूतल प्रगटो अेम बोल्या मधुरी वाणी ।६६।
नाम वल्लभाचार्य थई धर्म धुरंधर कहावो
पुष्ट पुष्ट परम स्नेह भर्यो भक्ति मारग प्रगटावो ।६७।
स्वरूपात्मक श्री भागवत शुक मुख प्रगट थयुं जेह
जेहनो कोइने बोध नथी जइ विवरण करीअे तेह ।६८।
जगदीसे जगत मंगल अर्थे वेद शास्त्र बहु कीधा
अेनो अर्थ स्वरूप जाण्या विना केहेना काज न सीधा ।६९।
ते उपर आज्ञा अनुसारे स्वतःकृपाबल कीधुं
अंतःकरण प्रबोधे कहयुं छे तेहवुं प्रागट्य लीधुं ।७०।
महावेद पारग कारण मइ स्वमार्ग सामर्थ
लीलामां थकी पधार्या भूतल भक्तने अर्थ ।७१।
अेह प्रागट्य समूल थकी कहुं काली घेली वाणी
अेतनमारगी सांभळजो मुज पर करूणा आणी ।७२।
वलतुं प्रागट्य श्री गुंसाईजीनुं कहुं ते कारणरूप
जेहने घेर कृपाअे प्रगट्या श्री गोकुलना भूप ।७३।
तेनी लीला प्रागट्यथी कहुं अनुभव करवा काज
पण वचनथी अगोचर तेहने कहेतां आवे लाज ।७४।
अे प्रभुनो जस कोटि मेरू सम मारे वचने न आवे
पण शुं करीअे अे लीला वीण बीजुं कांइ न भावे ।७५।
अेणे कारणे आगल कहुं श्री आचार्यजी प्रागट्या जेह
कुल चरित्र तणी सूचनिका छाहया मात्र तेह ।१७६।

इतिश्री गोकुलेश लीला रसाब्धि क्रीडाकल्लोल महा अद्‌भुत विचित्ररस
व्याराना गोपालदास – विरंचित
प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम द्वितिय मांगल्य
संपूर्णम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य - ३ - त्रीजुं

श्री आचार्यजीना प्रागट्यनुं

अे प्रागट्यनुं ते कारण जेहजी प्रथम थकी हुं कहुं तेहजी ।१।
अति दुर्लभ छे ते केणे न जणायजी प्रभुना बलथी ते मनोरथ थायजी ।२।
अे प्रागट्य ते सहुनुं सारजी पामे नहीं कोइ अेहनो पारजी ।३।
वेद वेदांत न शास्त्र रीतेजी साधन अेहनुं तेहीनी प्रीतेजी ।४।
प्रीत साथे नाम लेता थाय रसनी वृष्टी
रोचक पोचक स्वाद ने वळी होय अमृत वृष्टी ।५।
अे मारगे अनुसरण मात्र करे व्हालो सहाय
हेलामां थई मध्य पाती लीला रस अवगाहे ।६।
अे स्वरूप प्रागट्य लीला गुण ने मारगनुं सिध्धांत
हुं केम कहुं अे अगाध अतिशे समजे नहीं कोइ प्रांत ।७।
अे मारगना रस पात्रनी रूची लइ श्री महाराज
इच्छाथी अे ग्रंथ प्रगट्यो जगतनां हित काज ।८।
जेम कृपा वसथी आप प्रगट्या जीवना हित अर्थ
तेह रीते स्वकीयने हित प्रगट कीधो ग्रंथ ।९।
कोइ कहेशे आपथी प्रगटाव्यो जो अे ग्रंथ
तो प्राकृत भाषाअे करी कां कर्यो अे सांप्रत्य ।१०।
सर्वोधिक गिर्वाण भाषा लौकिक अलौकिक सार
ते मांहे अेवा ग्रंथनो कां न कीधो विस्तार ।११।
तेहना समाधान अर्थे वचन कहुं छुं अेह
श्रीमुख वचन अनुसारथी कर्यो ते निःसंदेह ।१२।
संस्कृतमा कहेत मात्र रसने पामे कोय
व्याख्यान करी समजावीअे ते समय अनुभव होय ।१३।
संस्कृत करी फरीअने बोधवे भाषा मांह
अे कारणे संस्कृत तणो संसय निवार्यो त्यांह ।१४।
अेवी अति करूणा करी भक्तना आरत हरण
सद्य अनुभव सर्वने हित टाल्युं आवरण ।१५।
साधन विणनू फल प्रगट पोते ते प्रगट्या जेम
अंतरनो अनुरोध टाली ग्रंथ प्रगट्यो तेम ।१६।
जे वांचे जे सांभळे तेने उपजे सुखरास
स्वतः पोते सर्वे समजे न करवो आयाश ।१७।
गोरस जेम मथाणा विण धृत हाथ न आवे तेह
प्राकृत मांहे सघरस नवनीत न्यारा अेह ।१८।

कूपजल जेम पथिकने गुन विना तरस्यो जाय

तेम पंडित विण एहवी वाणी केणे नहीं समजाय ।१९।

तेथी प्राकृत कराव्यो ग्रंथ कृपा निधान

सुणत मात्र सर्व केहेने होअे ते रस पान ।२०।

श्री महाप्रभुअे श्री गुंसाईजीनुं वचन कहयुं बहुवार

संस्कृतात प्राकृत रहस्य अेह करी निरधार ।२१।

अेम प्राकृत परम अगाध रस उछलीत सहुने ज्ञात

अेह जाणी ग्रंथ प्रगट्यो प्राकृत जगत विक्षात ।२२।

श्री गोकुलेश रस लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल नाम

आनंद मय रस भाव भर ने भक्तनुं अभिराम ।२३।

हवे मूल कुल प्रागट्यनुं ने परंपरा जेह

अेह भक्त सहाय बलथी विसद करूं छुं तेह ।२४।

आंध्र अेहवु नाम एहनुं तिलंग कहीअे देश

स्वच्छ महा पवित्र ने नहीं कलीनो प्रवेश ।२५।

ते देश मध्ये गाम अेक कांकरकुंभु नाम

त्रिलोक अलंकृत अने महा मनोहर छे ठाम ।२६।

स्वच्छ जल रमणीक स्थल ने परम सुंदर ग्रह

निवासी अभिलाषा नित्य देवता वांछे जेह ।२७।

त्यांहां वसे कांकरवार ब्राह्मण शुद्ध परम पुनीत

आचार शुद्ध खट कर्म जुत रहे ते शुभ नीत्य ।२८।

यज्ञ करता वेद पाठक तपस्या शुभ कर्म

द्विज ग्रह पुनीत जगत वंदित सकल जाणे धर्म ।२९।

जगत इसे जगत हितने वेद प्रगटाव्या सार

तेहनी साथे अेह कुल प्रगट्युं ते अे संसार ।३०।

जे कुले सर्वांग मुख आचार्यजीनुं प्रागट्य

स्वानंद अग्निकुमार विठलनाथ अति उदभट ।३१।

जे कुले श्री विठलात्मज श्री गोकुल आभर्ण

प्रगट थई अने जेह कुलमां धर्या ज्यां मृदु चर्ण ।३२।

जे द्विजोत में कांकर कुले प्रागट्य प्रभुनुं ज्यां

ते कुल तणुं वर्णन करे सामर्थ केहनुं त्यां ।३३।

वृक्षने जेम सर्व गुण मूल थकी संपन्न

तेमज अे प्रागट्यथी फूल हवुं पावन धन्य ।३४।

जेम काष्टने संबंधे नावे तरे छे बहु लोह

पुरूषोतम प्रागट्यथी जस सकल गुण संदोह ।३५।

आदी यज्ञ नारायण हवा तेने हवा वेद प्रसन्न

संदेह सांप्रत्य रूपे करी टालता कहीय वचन ।३६।

त्यां गंगाधर अेक सोमयागी धर्मवान उदार
घर सुखी वैभव अति घणो महादेवनो अवतार ।३७।
ते प्रमाण अर्थ श्लोक श्रीमुखे कह्यो छे बहुवार
गंगाधरे महादेव गणपति पुत्र ते निरधार ।३८।
तेहोने अेक पुत्र गणपति सोमयागी तेह
आचार शुध्ध खट कर्म ज्युत धर्म रति शुं नेह ।३९।
परद्रव्य पर निंदा न जाणे परम दीन दयाल
स्वकीय पोषक ज्ञात वर्गे करे ते प्रतिपाल ।४०।
न्याये प्राप्त द्रव्यनो जेने अनादर अहर्निस
अन्याय द्रव्य परसे नहीं निरमाल्य ने सादृश्य ।४१।
सत्य वचन जे बोलवा मनमां धरे आलस्य
ते मिथ्या भाषण केम करे जेणे वृध्धी पामे यस ।४२।
त्रण स्त्री साधवी तेहने धर्मसुं छे सुत्र
अेक अेकने त्रण त्रण अेम नव हवा छे सदपुत्र ।४३।
तेह मध्ये जेष्ट स्त्रीने पुत्र वल्लभ भट्ट
ते शास्त्र वेद पूराण वक्ता जाणे सघली सृष्टि ।४४।
पुत्र अेह घेर लक्ष्मण भट्ट कहीअे जेह
वेदनो अवतार ते साक्षात रूपे अेह ।४५।
ज्यांहां अग्निवत आचार्यजी प्रगट्या शुं कहुं निर्माण
तेथी अे वेदनो अवतार अेह प्रमाण ।४६।
अेहोने घेर इलम्माजी पतिवृता छे नार
तेहने गर्भ स्थित हवा वल्लभाचार्यजी सार ।४७।
परस्पर अति हरख ने आनंदनो नहीं पार
उत्कर्ष अे बालक हशे अेम करे मन विचार ।४८।
तेथी मन चंचल हवा ने मोद उपज्यो अंग
उदेस प्राग निवासने लेइ चाल्या त्यां संग ।४९।
सुखद मारग माहे अेक चंपारण्य शुभ देश
भीमरथी नदी तटे चौडागाम ते मध्य कर्यो प्रवेश ।५०।
विक्रमार्क संवत्सर कहीअे ते तेने धन्य
सवंत १५२९ वैसाख वदिनो दिन ।५१।
सातमे मासे स्वइच्छाअे अेकादशी शनीवार
श्री पुरूषोतम मुख रूपी प्रगट्या तेणी वार ।५२।
सप्त मासे जन्म सहेजे लौकिकमां अति धन्य
प्रतापवान ने उग्र होय अे तो अलौकिक चिन्ह ।५३।
जगती तलना तिमिर हरवा करवा दूर पाखंड
पुष्टी मार्ग प्रगट करवा माया मत सतखंड ।५४।

पुष्टी सृष्टी ते वृथा जाती लही निज फल हीन
मारगना फल दानने प्रगट्या ते जाणी दिन ।५५।
जीव दैवी आसुरीमां मल्या अे संसार
पुष्टी मारगे प्रविष्ट करवा जगतनो उध्धार ।५६।
उत्साह अति आनंद सुर नर हवो सघले ठाम
पिता माता ते हर्ष पाम्या देखी पूरण काम ।५७।
महा तेज पुंज स्वरूप जोइ माताने मन फूल
अेह बलथी ते वडे करी स्वर्गने त्रण तुल ।५८।
पुष्प वृष्टी अमर करीने वजाडया वाजिंत्र
देवांगना अति हर्षसु तेह समय कर्युं नृत्य ।५९।
मंगल प्रकारे जात कर्म ते कर्या वेद विहित
दान दीधा विप्रने मन धरी ते बहु प्रीत ।६०।
पुत्र महासुख पुंज नै तेजनो भंडार
साधक मनोरथ सिध्ध कारज करण बहु प्रकार ।६१।
चालीआ त्यांथी हरखसु मन धरी मोटी आस
प्रागमांहे आवीया ने कर्यो त्यांहां निवास ।६२।
कारण स्वरूप आचार्यजी दीन दीन मोटा थाय
ते जोइ लक्ष्मण भटने हैयडे हरख न माय ।६३।
प्रसन्नता उत्साहसुं दीधुं ते त्यां उपवीत
विधोगतिसुं सर्व कीधुं शास्त्र केरी रीत ।६४।
आचार्यजीने बांधव बे अेक ज्येष्ठ अने अेक बाल
पिता अंतरहित हवा माता करे प्रतिपाल ।६५।
भटाचार्य विद्या विलासनो वाराणसीमां वास
श्री आचार्यजी भणवा पधार्या प्रथम तेहने पास ।६६।
वेद शास्त्र अनेक जोइने दक्षिण पधार्या राज
चार संप्रदायना श्रुति भाष्य भणवा काज ।६७।
ब्रह्मचर्य त्यां जइ भणी आव्या ते सर्व
माया मत पाखंड सहुनो टाळवा ते गर्व ।६८।
श्रुति स्मृति शास्त्र पूराण श्री भागवत वेद वेदांत
मारग सकलनुं तत्व अेहोने सिद्ध छे सिद्धांत ।६९।
पछी पोतानुं प्रागट्य प्रयोजन विचारी मनमांह
त्यांथी वेगा चालीया आव्या श्री गोकुलमांह ।७०।
उपकूल जमुनाजी तणो अेक वृक्ष छोकर ज्यांहां
ते निकट पीपल तले आवीने बेठा त्यांह ।७१।
स्वच्छ जल स्थल विमल अति रमणीय रसनुं कोष
ते जोइने अति हरखीया मनमां पाम्या संतोष ।७२।

त्यांथी गोवर्धन पधार्या आव्या ते आन्योर मांह
सदु पांडेने घेर आवी उतर्या ते त्यांह ।७३।

सवंत १५४५ माधव मासने नवमी दिन
श्री आचार्यजी आन्योर पधार्या धन्य अे शुभ दिन ।७४।

तेहने पूछयुं नाथजी बेसे छे कीये ठाम
अमो नाथजीने शुं लहुं यहां देवदमन छे नाम ।७५।

प्रथम प्रभुने रमणनी इच्छा हवी मनमां जेह
ते उपर आगल थकी सांप्रत्य कीधुं तेह ।७६।

प्रेमे ते पहेला प्रगट करीया नाथजी नवरंग
अनुभवन ो संयोग सघले थयो ते अेह प्रसंग ।७७।

गांठोलीना गोरा मंगोल तेहने हवुं स्वप्न
भीतरथी बाहेर बेसाडो बोल्या अेह वचन ।७८।

आचार्यजीना प्रागट्यथी कारण आव्युं मन
सेवा प्रकार प्रगट थाशे, थया मन प्रसन्न ।७९।

गाम सघलुं मळी आव्युं उद्यम कर्यो अपार
पण उठाडया उठे नहीं पछी कर्यो मन विचार ।८०।

पछे सदुने आज्ञा हवी ते नाही ब्राह्मण चार
स्पर्श मात्रे प्रगट थई बेठा तेणी वार ।८१।

सवंत १४९६ अे वदी त्रीज श्रावण मास
श्रीनाथजी गोप्य प्रगट थया ते करी मन उल्लास ।८२।

नाम देवदमन करी बोलावे त्यांना लोग
अनुभाव जोइ समर्पे त्यां दूध दहींना भोग ।८३।

ते स्वरूप श्री आचार्यजीने देखाडयुं तेणी वार
नाही वेगा पधारीया त्यां सेवा कीधी सार ।८४।

परस्पर बहु पेरसुं कीधी ते सघली वात
अंग मनोरथ पूरण थया ते हैये हरख न मात ।८५।

चातुर मास रही करी देखाडी सेवानी रीत
बार वन उपवन कर्या आणी ते व्रजशुं प्रीत ।८६।

जन्माष्टमी उत्सव कर्यो आवी श्री गोकुलमांह
फरी अन्नकूटे पधार्या श्री गोवरधन ज्यांह ।८७।

अहीं रही पारायण करे श्री भागवत जे सार
क्यारे कथा कहे श्रोता मले जे वार ।८८।

प्रतिवर्ष गोकुल गोवर्धनमां रहे चातुर मास
अन्नकुट करीने पधारे ज्यां कर्यो अडेल निवास ।८९।

आज्ञा भगवद अभिमते ते करीअे मन विचार
मारग प्रगट हेत प्रयाण कीधुं करवा जस विस्तार ।९०।

कुरूक्षेत्रे प्राची सरस्वतिने करी करूणा द्रष्टी
बेठा जे ज्यां कथा कहे छे रामानंद अेक मिश्र ।९१।
तेणे उठीने आसने बेसाडी कर्या बहु सनमान
करूणा करी पधार्या ने कर्युं मुने दान ।९२।
कथा तेहनी सांभळी कह्युं अर्थ नोहे अेह
तेणे कह्युं शुकजीअे कह्युं छे कहुं छुं तेह ।९३।
आचार्यजीअे कह्युं बालक शुक शुं जाणे अेम
भक्ति मारग गूढ रस जाणवा नहीं कोइने नेम ।९४।
यद्यपि शुकजीअे कह्युं तेहनुं तू सुं जाणे हेत
अनुग्रह थकी तेणे कह्युं महागूढ संकेत ।९५।
पछी पोते अर्थ करीने प्रगट कर्युं निज तत्व
नवनीत गोरस मध्य तेम अे वचन रसनुं सत्य ।९६।
तेणे समय जे कोइ त्यां हता तेणे कहयुं अेह वचन
ईश्वर विना शुकजीयने अेम कहेवा नहीं को अन्य ।९७।
प्रगट अेह प्रकार देखी आव्युं मन मांहे
भगत वामनदास विद्यादास नाम पाम्या त्यांहे ।९८।
त्यांह हरस राणी क्षत्राणीने प्रथम लीधु शरण
रस रूप मारग प्रगट करवा प्रथम स्त्रीनो वरण ।९९।
वैष्णव मार्ग प्रगट कर्यो अेह कारण बध्ध
जे स्वत: प्रागट्य हशे ते आगमन मारग सिध्ध ।१००।
पछी श्री गोकुल पधारिया विस्तार मारग अर्थ
स्वकीयने हित प्रगट कर्या स्वमारगना ग्रंथ ।१।
जे ग्रंथनी गणना कहुं जे कीधा प्रथम ने प्रांत
भक्ति मारग परम फलनुं जाणवा सिध्धांत ।२।
प्रथम चतु:श्लोकी ग्रंथ जे प्रगट कर्यो तेह
सर्वदा सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिप अेह ।३।
कृष्णाश्रय ने विवेकधैर्याश्रय जे नाम
पुष्टी प्रवाह मर्यादा ने जलभेद विश्राम ।४।
सिद्धांत मुक्तावली अने निरोध लक्षण लक्ष
बालबोध ने सेवाफल नवरत्न निजजन सक्ष ।५।
श्री भागवत तत्वार्थ दीप निबंध यमुनाष्टक
भक्ति सिद्धांत भक्ति वर्धिनी सहस्त्रनाम मधुराष्टक ।६।
पंचश्लोकी प्रकाश कर्यो निबंधनुं जे सार
जेमां सहु शास्त्रनो सिध्धांत छे निरधार ।७।
अनुक्रमणीका दशमनी कीधी तेह करवा पान
तेथी अे रस समुग्रनुं उपजे सहुने ज्ञान ।१०८।

नामावली दशमनी जे त्रिविधी लीला सुबोधनी श्री भागवत
अणुभाष्य अंतःकरण प्रबोध सन्यासनिर्णय सत्य ।१०९।
पुरूषोतम सिध्धांत अर्थ सिध्धांत रहस्यनुं सार
को पुष्टी मारग निरूपण को रस तणो विस्तार ।१०।
अेहवा अनंत ग्रंथ प्रगट कर्या शुध्ध मार्ग केरे काज
अन्य मारगे अनुसरे नहीं आश्रय अहीं जेह समाज ।११।
अे ग्रंथ छोटा गुणे मोटा दोहन वेद पूराण
अज्ञात मारग भक्तने जाणवा अेह प्रमाण ।१२।
श्रीमुखे कह्युं वट बीज न्याये अेहनो विस्तार
भाषे ते सूक्ष्म दीसता मांहे रस तणो नहीं पार ।१३।
अेकवार न्हावा पधार्या विश्रांत घाट छे ज्यां
कृष्णदास मेघन आवीआ ते मल्या मारग मांह ।१४।
आचार्यजीना दरशने तेनुं थयुं मन कोमल
शरण आव्या फरी न गया ते स्वरूपनुं अे बल ।१५।
पछी जे कोइ शरण आवे श्री आचार्यजी पास
अभिलाष मनमां अती घणी जे पूरण थाअे आस ।१६।
परीक्षा शुध्धता जोइने आपे तेहने नाम
नाम पामे ते सहुना थाअे पूरण काम ।१७।
भगवद आज्ञा अेम हवी जे कोइ आवे तमारे शरण
संदेह तेमांहे नहीं अमो कर्यो तेहनो वरण ।१८।
भाग्यवान जे हशे तेज आवशे नर नार
पुष्ट पंथ अनुसरवानो नहीं अन्यने अधिकार ।१९।
जे उपर इच्छा हशे आवशे शरणे तेह
तेहनो अंगीकार करवो न करवो संदेह ।२०।
ते दिवसथी जे शरणे आवे करे अंगीकार
परीक्षा जीवनी नहीं न रह्यो मन विचार ।२१।
आशय ईश्वरनो लही मन हवो अति संतोष
जीवनी जीव दसा तणो टल्यो ते दंभक दोष ।२२।
अे मध्येना अेह सेवक कृष्णदास मेघन
प्रथम अेहने गुरू हतो बुध्धि भ्रष्ट मार्ग भिन्न ।२३।
आचार्यजीसुं आज्ञा मांगी त्यां जवानो उदेश
आचार्यजीअे कहयुं त्यांह जइ पामशे तुं कलेश ।२४।
पछी कृष्णदास गुरू पासे गया त्यां गुरूअे पूछयो भेद
ते शुं गुरू बीजो कर्यो पामीने बहु खेद ।२५।
कह्यो मारे गुरू तमो अे वातना छे सम
गुरूना प्रभावे पामीओ हुं पूरण पुरूषोतम ।१२६।

तेणे कहयुं अे पुरूषोतम ते कर्या केम प्रमाण
तेणे कहयुं हुं बतावी आपुं तेहथी तुं जाण ।१२७।
अग्नी जाज्वलमान लइ बेहु कर धरी उभो तेह
युग्म घडी पर्यंत राख्यो सत्य वाध्युं देह ।२८।
श्रीखंड वत ते अग्नि करतल राखीओ धरी आप
त्राहे त्राहे करी मुकावीओ गुरू पाम्यो पश्चाताप ।२९।
प्रताप उग्र प्रगट करी आव्या आचार्यजी ज्यांह
वृतांत कहयुं तेना मन तणी ते भ्रांत टली त्यांह ।३०।
अंत:करण विरक्तता पर आचार्यजीनुं चित
भागवते भगवद गुण करी करीशुं ते काळ व्यतीत ।३१।
पछी विचार्युं आचार्यजीअे रहेवुं थई ब्रह्मचर्य
पाणी ग्रहण करीअे नहीं एहवुं धरयू मन धैर्य ।३२।
भगवद आज्ञा अेम हवी जे करो पाणी ग्रहण
विनती कीधी ग्रहस्थ धर्मनुं नथी अंत:करण ।३३।
इच्छा तमने नथी पण इच्छा छे अमने अेम
कारण गोप्य प्रगट कीधुं समजे नहीं को जेम ।३४।
विज्ञप्ती कीधी वागधीश पति संकुच जुत मन लाज
देश नहीं अहीं अम तणो तो कोण दे महाराज ।३५।
आयाश करवो नहीं पडे तमने ते अेक लगार
सहेज मांहे थई रहेसे अेह सहु निरधार ।३६।
वाराणसी जाओ तमो करसेते अति सनमान
स्वत:थी ते घेर आवी देशे ते कन्यादान ।३७।
देवन भटने घेर कन्या रूपवंत अपार
आज्ञा थकी तेने मन उपज्यो स्वत: अेह विचार ।३८।
वाराणसीमां घेर आवी करी ते विज्ञप्त
मनोरथ कन्यादाननो छे जो आवे तमारे चित ।३९।
सांभळी मन प्रसन्न थई मान्युं अेह वचन
देवनभटे दंडवत कर्या कहयुं भाग्य मारो धन्य ।४०।
अक्काजी सौभाग्य सुखनिधी सकल पूरण काज
इच्छाथी पाणी ग्रहण कर्युं ते वल्लभराज ।४१।
अंकाजी पति जगत वंदित जगत हित जगदीश
श्री पुरूषोतम पुष्टी मारग प्रगट व्रजाधीश ।४२।
प्रागट्यने परिक्रमाना क्रमनो ते जेह प्रकार
निश्चे ते कोअे लहे नहीं अज्ञात अेह विचार ।४३।
आचार्यजीनुं कारण कोणे कहयुं नहिं निरधार
में लख्युं छे श्री महाप्रभुजीना वचनने अनुसार ।१४४।

पछी वल्लभाचार्ये विचार कर्यो विजय कारण काज
दिग्विजय दश दीशाओ करथ परिक्रमाने व्याज ।४५।
रूद्र वाणीने सांभळीने थया जे जन भ्रष्ट
परिक्रमाओ पधार्या निरदुष्ट करवा सृष्ट ।४६।
विधी पूर्वके ज्यांथी कर्युं छे त्यांथी कर्यो आरंभ
विमल जस विस्तारवा ने टाळवा दुःख दंभ ।४७।
प्रयाण प्रथम प्रदेश कीधुं विमासे मन तेह वार
प्रबल बले श्रम साधीयो सुख आपवा संसार ।४८।
जगत हित जगती तले जइकर्यो जय जय कार
अधिक अधिक सुख आपवाने साथे सेवक चार ।४९।
ते मध्ये ओक प्रसिध्ध पहेलो कृष्णदास मेघन
मनवृत कारण लहे तत्पर सेवा सुख संपन्न ।५०।
पधार्या जे जे स्थले ते थयुं सर्व पावन
सहेज दरशन थकी तेहना थया कोमल मन ।५१।
चरण स्पर्शे करी सहु कृत्य कृत्य कीधा तीर्थ
योग्यता तेने हवी थयुं कृतार्थ सामर्थ ।५२।
ठाम ठामे पंडित जीत्या टाल्यो मत पाखंड
ब्रह्मवाद ते स्थापीने मायावाद कीधो खंड ।५३।
कुटील तिमिर अज्ञानता जड बुध्धि धर्म हीन
ते भक्ति पंथे अंगीकर्या जे हता मायाओ लीन ।५४।
ओम उदय कीधो भक्ति मार्ग प्रगट ज्योति प्रकाश
मायामत पाखंड खंडी तिमिर कीधो नाश ।५५।
शास्त्र सिद्ध विरूध्ध टाळी वेदोगत वेदांत
श्री भागवत मत स्वमत करी स्थापीयो सिद्धांत ।५६।
पछी विचार्युं वाराणसी अति विद्या केरुं पीठ
त्यां शंकराचार्यने मते सहु अनुसरे थई दीठ ।५७।
ते खंडवा उदेश कर्यो पधार्या छे त्यांहां
कनक पात्रे लखी बांध्युं विश्वेश्वर छे ज्यांह ।५८।
ते वांचीने पंडित सहु मली खेदे आव्या त्यांहां
उपेन्द्र आश्रम आदी देइ अने आचरज छे त्यांह ।५९।
दिवस सतावीस सुधी वाद कीधो नित्य
साकार पुरूषोतम प्रमाण्या कहयुं ब्रह्मवाद ते सत्य ।६०।
वेदांत मत जे अति अगोचर प्रगट कीधो तेह
प्रमाण सिध्धे स्वमत स्थाप्यो लोकोतर छे जेह ।६१।
सहित मायावाद खंडया सर्वमत पाखंड
ईश्वरेश्वर जाणीआ जस वाधीयो ब्रह्मांड ।६२।

पत्र बांधी पंडित जीत्या मार्ग मेटया अन्य
उक्त जुक्ते उतर नाव्यो क्षोभ पाम्या मन ।१६३।
अेम वाराणसीमां पंडित जीत्या बांध्युं पत्र
भक्ति मार्ग जश प्रगट विस्तर्यो ते सर्वत्र ।६४।
त्यांथी पधार्या आव्या दक्षीण देश
विद्यानगर अे नगर मोटुं कर्यो त्यांहां प्रवेश ।६५।
मोसाळना सहु हर्ष पाम्या नाना मोटा जेह
दानाध्यक्ष राजा तणा साक्षात मामा तेह ।६६।
विनती श्री आचार्यजी प्रति कही करी सनमान
हुं मेळवुं महीपालने ते आपशे बहु दान ।६७।
ते प्रत्ये बोल्या श्री आचार्यजी महाराज
हुं मलवानी इच्छा करूं वच्चे अन्यनुं शुं काज ।६८।
परिग्रह करवा तणी मनशा नहीं लव लेश
परिक्रमा कर्तव्य मारे तीर्थने उद्देश ।६९।
अति उग्र वचन कह्यां लौकिक अलौकिक सर्व
सुणी श्रवण पंथ मातुल तणो मननो गयो ते गर्व ।७०।
कृष्णराय राजा त्यांनो अति भलो धर्मीष्ठ
अति निपुण सील स्वभाव ने रूची धरे भगवत नीष्ठ ।७१।
स्त्री तेहने पदमिनी तेहना रूपनो नहीं पार
तांबोल गलता पीक आभा दीसे रूदया वार ।७२।
जावक शीष बोधनी दंवु ते अे अनुहार
तेहनी सराहणा श्री महाप्रभुजीअे करी छे बहुवार ।७३।
त्यां तत्ववादी ने मायावादी ने परस्पर अति गर्व
पंडित बेहु तेडिया ते पासना सर्व ।७४।
वेद शास्त्र पूराण रीते जेह छे मर्याद
राजद्वारे सभा कीधी करे ते त्यांह वाद ।७५।
अेह रीते परस्पर संवाद नित्य प्रति होय
निरधार के न करी सके ने ओसरे नहीं कोय ।७६।
मायावादी जीतसे हवो नगर सघळे सोर
हवे जुक्त खूटी तत्ववादी हारसे ते भोर ।७७।
संध्या वंदनना समये सुणी आचार्यजीअे अे वात
त्यारे अेहवा वचन कही वेदांतना विक्षात ।७८।
स्फुरे नहिं जो जुक्त माटे पराजय न कहेवाय
वाद मुज साथे करे जो जीतवाने थाय ।७९।
गर्वित वचन आचार्यजीअे उचर्या मोसाळ
जे यथारथ तेणे जइ कह्यां राजाने तत्काळ ।१८०।

श्री आचार्यजी आव्या सांभळी राजा ते थया प्रसन्न
सभा सहित ते हरखशुं आवी कर्या दर्शन ।१८१।

दर्शन मात्रे तेहने उपज्यो अेह विचार
हवे मारगनुं सिद्घांत थाशे अेहथी निरधार ।८२।

विनती करी पधरावीआ आवी सभा मंझार
उंचा आचने बेसाडीआ कीधी ते अति मनुहार ।८३।

सहेज अतुल प्रताप दीसे अति शोभावंत
धर्म धुरंधर गुण सकल पूरण पामे नहीं को अंत ।८४।

सोल दिवस ते सभामां सिध्धांत कीधुं सार
निरउतर करी जीतीओ नहीं करी सक्यो उच्चार ।८५।

मायावाद जे तिमिर ते ततक्षण कीधो नास
तिमि हर भक्ति मारग कीधो ते प्रगट प्रकाश ।८६।

चोहों दीसे अे वात प्रसरी थयो जै जै कार
भक्ति मारग स्थापीओ जस प्रगट जग विस्तार ।८७।

राजाअे विनती करी चरणे नाम्युं शीष
सनाथ कीधो नाथ हुं पधार्या जगदीश ।८८।

बेसाडी आसने अति कीधुं ते त्यां सन्मान
उन सोल सहस्त्र कनकने कराव्युं ते स्नान ।८९।

स्नानोदक ते तेमज मेली त्यांह थकी कर्युं प्रयाण
धर्म स्थाप्यो जगतमां जस वाजीया निशान ।९०।

पछी कावेरी रंगनाथ ने कस्तुरी रंग विक्षात
त्यांथी पधार्या ज्यां सेतुबंध रामेश्वर साक्षात ।९१।

हवे पंढरपूर विठलेश्वर थई आव्या द्वारिका मांह
तीर्थ सहु पावन करी अने पछे पुस्कर ज्यांह ।९२।

त्यांथी पधार्या मध्यदेश मथुरा आप
तीर्थनी कालिमां मटाडी हर्या सहु संताप ।९३।

ज्यांहां वृंदावन श्री गोवर्धन नित्य रमण स्थल छे तेह
श्री आचार्यजी पधार्या मनधरी पूरण नेह ।९४।

श्रीनाथजी अति हरखशुं वेगे ते सामा जाय
परस्परनो मनोरथ वचने ते केम कहेवाय ।९५।

पधार्यानी कुशलता पूछी थया मन प्रसन्न
स्नेह वाध्यो अति घणो हरख्या ते अन्यो अन्य ।९६।

श्री गोवर्धन अति फूलसुं आव्या ते अेहोने शरण
कृपाशुं आचार्यजीअे छोवराव्या निज चरण ।९७।

श्री नाथजीनी सेवाना त्यांहा कर्या बहु प्रकार
अति सुखद हिते जगत हितने कर्यो अेह विस्तार ।१९८।

मंगला श्रींगार गोपीग्वालना जे भोग
राजभोग अनेक विधी ते मांहा बहु संजोग ।१९९।
उत्थापन ने ग्वाल गोपी वल्लभ आवे वेग
संध्या सेन तणा अेम बांध्या सगळा नेग ।२००।
समय समय आरती उतारे ते बहु प्रीत
राज रीते सेवा अेम नित्य करी नवली रीत ।१।
पछी श्री गोकुल पधार्या ज्यां रमण सुखनुं धाम
कोअेक दिवस त्यां रहया पूरवा निजजन काम ।२।
श्री आचार्यजीअे प्रगट कीधी भक्ती जेह स्वरूप
स्व मारग सेवा प्रकारते लोकोतर जे अनूप ।३।
अन्य मारगथी निरूपण कह्युं विलक्षण
प्रमाण पूर्वक शास्त्र सिध्ध कर्युं तेह विवर्ण ।४।
अन्य शास्त्र धर्म जेह विवेक आदी विचार
चतुर्थ पुरूषार्थ अने जे त्यागनो निरधार ।५।
हवे स्वतंत्र जे प्रगट कीधो पुष्टी मारग शुध्ध
चतुर्थ पुरूषारथ विवेक ने त्याग जे अविरूध्ध ।६।
लौकिक, अलौकिक भिन्न भांते न्यारुं कीधुं सर्वे
संदेह न रह्यो लेश ने प्रतिवाद टाळ्यो गर्व ।७।
पण पूजा मारगे पूजा अर्थे संभवित जे दोष
ते निवृत पूर्वक पूजा कर्णे पूज्य संतोष ।८।
तेम स्वप्रगटित मारग विषे जे सर्व दोष निवृत
सेवा प्रकार विचार न कर्यो अेह मन उदवर्त ।९।
निर्दुष्ट ते केम थाअे जाण्यो आचार्य उदेश
जेहनी आज्ञाअे प्रागट्य हतुं ते स्वयं श्री गोकुलेश ।१०।
आनंद छे कर पाद मुखने उदर आदी जेह
श्री आचार्यजी प्रति वचन कहे साक्षात आवी तेह ।११।
स्वसेवा प्रतिबंधनो जे निवृत दोष प्रकार
असाधारण कहये जावद जे नर नार ।१२।
श्रावण सुदी अेकादसी अने अमल पक्ष जेह
महानिसी भगवद वचन साक्षात कहयुं छे तेह ।१३।
ब्रह्मसुं संबंध करावो देह जीवने साथ
सर्व दोष निवृत निश्चय कर्यो निजजन नाथ ।१४।
पछी भाव प्रोजी निवेदन स्नेहे कर्युं सनमान
नामने मिसे मुक्तिनुं कीधुं अवारी दान ।१५।
पछी ज्यांहां कुरूक्षेत्र ने हरद्वार आव्या अेम
बद्रीनारायण पधारीया ज्यांहा मल्या उद्धव प्रेम ।२१६।

कृष्णदास मेघन मारगमां साथे ते सेवा काज
तत्पर थई अने सहु करे वात्सल्य केरा काज ।२१७।
शिला पडती आप थांभी अेहवुं कीधुं कार्य
साहस कर्यो ते अति घणो रीझव्या श्री आचार्य ।१८।
प्रसन्न थई अने अेम कह्युं वर माग मनमां जेह
संकोच रहित बोल तारे मनोरथ होय तेह ।१९।
मारगनुं सिद्धांत मारा हृदये होय आरूढ
मारी मुखर्ता गणीअे नहीं हुं अल्प छुं माहामूढ ।२०।
वली अेक करूणा करी अने ते करो अेवी पेर
पधारो प्रेमे करीने मारा गुरूने घेर ।२१।
श्रीमुखे कहयुं माग्या तणुं अेणे न जाण्यो हेत
जो मागी जाणत ते समये तो दान अलौकिक देत ।२२।
पछी व्यास पास पधारीआ अेहोनेराख्या ज्यांह
त्रण दिवस उभा रह्या आज्ञा प्रमाणे त्यांह ।२३।
वेद व्याससुं कहयुं श्री भागवतनुं व्याख्यान
अलौकिक प्रसंगनुं ते कर्युं अेहोने दान ।२४।
युगल गीत युगते करी संभलाव्यो अेक श्लोक
सार कह्युं सदपात्र ते जाणी महापरम अलौकिक ।२५।
वाम बाहु कृत वाम श्लोके कर्यो रस विस्तार
ते पान करता मान टाळ्युं स्वत: कीधो सार ।२६।
व्यासजीअे करी विनती कह्युं भाग्य मारूं धन्य
तत्वार्थ आप थकी जाण्युं सफल आजनो दिन ।२७।
श्री भागवत प्रागट्यनुं अमने थयुं निमित
पण स्वाद जाण्यो तम थकी हुं अे कहुं छुं सत्य ।२८।
दया कीधी दिन जाणी स्वत: कीधुं दान
ताप मारा मन तणो टाळ्यो ते कृपा निधान ।२९।
विज्ञप्ती कीधी अति घणी दीनता आणी मन
अेह लोकमां अे दान करवा आप समान नहीं अन्य ।३०।
बद्रीकाश्रम व्यासजीने कहयां भाव अगम्य
उत्तर दिशा उधार करीने पधार्या सोरंम ।३१।
सोरम सुंदर स्थल करीने संभल आव्युं शरण
ताप टाळ्यो तीरथनो ज्यांहा धर्या कोमल चरण ।३२।
पछी त्यांथी पधार्या करी काणकुबज उदेश
अेकांत स्थल जइ उतर्या ज्यांहा अन्य गंध न लेश ।३३।
जे दिन कनोज पहोंचशे आज्ञा हवी तेणी रात
करतव्य जाणी पधारे छे अेम स्वप्नमां करी वात ।२३४।

वाटिक निकट सोह्यामणी ने स्वच्छ स्थल आराम
छांया शीतल सुखद सुंदर कर्यो त्यां विश्राम ।२३५।

कृष्णदासने पोते कह्युं जाओ सिधा ने उपयोग
मन आसय आज्ञानो धर्यो तेहने आणवा विनियोग ।३६।

कही पठव्या ग्राम मध्येना कहीश मारूं नाम
समृध्ध थाशे अति घणो अहींया रहेवुं छे जुगजाम ।३७।

वसाणी करता वाणिक हाटे घृत सुंदर अन्न
दामोदरदास संभलवार जाती पामीयो दरशन ।३८।

उतरी आगळ उभो रहयो ने अश्व मोकल्यो घेर
पधारवुं अहींया केम पडयुं ते कहोने मुजने पेर ।३९।

श्री आचार्यजीथी अलगा न रहो ते तमो क्षणु मात्र
आज्ञा नथी मुने केम कहुं कोण मारूं गात्र ।४०।

सीधो आचार्यजी पासे लइ वेग वल्या जाण्युं रखे थाये वार
दामोदरदास पुंठे थया मन धरी हर्ष अपार ।४१।

दरशन पाम्युं दूरथी जइ हरखे नाम्युं माथ
सकल पदारथ सिध्ध थया ज्यारे शीश मुक्यो हाथ ।४२।

विनती करी विवेकशुं ने पधराव्या निज धाम
आज्ञा ते आपी अेहवी ज्येम थाअे पूरण काम ।४३।

नाम निवेदन तेहने आप्युं तेहवे काल
आध टाली आसुरी कीधी ते सकल संभाल ।४४।

स्वरूप सेवा संबंध कराव्यो करूणा आणी मन
पटाभिषेक पोते करावीने बेसाडया आसन ।४५।

त्यांहा बीडा अर्थे पान आण्या ते दीठा हर्या अपक्व
पोते त्यांहां आज्ञा करी पान आणवा परीपक्व ।४६।

सेवा अर्थे सामग्री जे जे होय विनियोग
ते उत्तम थी उत्तम आणवी जे आवशे प्रभुने भोग ।४७।

वली वस्त्रनी शिक्षा कही लावीअे सेवा काज
वण वधेर्या मांहेथी लइ कीजीअे सहु साज ।४८।

ते दिवसथी तेणे प्रकारे सेवानी सहु रीत
करे सहु उत्साहसुं स्नेह सहित जे छे नीत ।४९।

स्वकीयने शिक्षा अर्थे अे वातनो उद्देश
बहु वार पोते कह्युं छे श्री महाप्रभु श्री गोकुलेश ।५०।

वरण तेहना वेग कीधो आण्युं निज शरण
पछी विजय कीधो त्यां थकी क्षेत्र नीम सा रण्य ।५१।

पाप क्षालण क्षेत्रनुं करी अयोध्या माहां भोग
ते रमण स्थळ रघुनाथजीना जइ कर्यो संयोग ।२५२।

रघुनाथजी मनरंग अतिशेआनंद उपज्यो रास
व्रज वनिता सुख सांभलीशे श्री आचार्यजी पास ।२५३।
व्रज संबंधी वारता कहो कह्युं करी उच्चार
श्री भागवत संभळावीयुं जे सुख तणुं छे सार ।५४।
मर्यादा पुरूषोतमाये नमः कही कथानो कर्यो आरंभ
श्री हनुमान जाज्वलमान थई भासीयुं मन दंभ ।५५।
रोष आवेसे रातडा थई उभुं कीधुं पुंछ
अनन्य भाव बले थकी ते जाणे सहुने तुच्छ ।५६।
रघुनाथजीअे रोष शांत करवा कह्युं थाओ सावधान
आपणने अे थयुं छे शुभ धरशो अभिमान ।५७।
हनुमानजीनी नेष्टा जोइ आचार्यजीने उपजी प्रति
गोकुलेशजीअे श्रीमुखे कह्युं अे अनन्यतानी रीत ।५८।
श्री रघुनाथजीना भक्तमां हनुमान सम नहीं कोय
प्रताप वर्णन अनन्यता श्रीमुख करी कह्युं सोय ।५९।
त्यां टोक करी देखाडी अे जे छे अनन्यतानी रीत
अहींया आव्यानुं कारण कहो अमने थाअे प्रतीत ।६०।
संबंध विना अमो सर्वथा नव जाउं केहेने द्वार
उत्कर्षता कही आपणी अहींया प्रभुनी ससुराल ।६१।
आठ पठराणीमा अेक सत्या जेनुं नाम
नग्रजीतनी कन्या परण्या तेह छे अेह ठाम ।६२।
अे उतर दीधो अेहने करी मारग केरो पक्ष
मर्यादा हितते अेम बोलीआ पण वृज प्रभुशुं लक्ष ।६३।
समाधान सहु केनुं करी कहयुं आवीया ते माट
प्रसन्न थई पधार्या ज्यांहां गया केरी वाट ।६४।
गंभीर गुण गया कीधी अति घणी पावन
विशेष भावे विजय कर्यो मंदिर मधुसुदन ।६५।
पधार्या पोते थकी तेहना ताप टालण काज
दया कीधी दुःख हरवा आविया मम घेर आज ।६६।
पछी मंदराचलथी राज महेलने कोट मंगल ज्यांह
जल मारगे थई पधारे नावे बेसी त्यांह ।६७।
आचार्यजी पोढया हता नावमां सुखसुं ज्यां
कृष्णदास मेघन उतर्या मन वृति जाणी त्यांह ।६८।
गंगापार जइने लाव्या ते सुंदर क्षील
जणाव्युं केहेने नहीं अेहवा महा सुशील ।६९।
आचार्यजी आलस भर्या जाग्या ते तेणी वार
पूछयुं कांइ आरोगसो अेम करी बहु अनुहार ।२७०।

कह्युं इच्छा क्षीलकी पे क्यांहा पाइअे आंह
अेणे लइ आगल धरी अति प्रसन्न कीधा त्यांह ।२७१।
असाधारण सेवकनो धर्म ते कहीअे अेह
मनवृत जाणे प्रभु तणी तेहना अलौकिक देह ।७२।
पछी गंगा सागर संगम पधार्या सुखसंग
भगवद वचन आज्ञा हवी आनंद अभिनव रंग ।७३।
अेकवार अेकांत मलीअे होअे अर्थ संपन्न
विप्रयोग संयोग करवा करो निकट गमन ।७४।
विरह अे श्री आचार्यजीने पूरण पुरूषोतम
मिलन इच्छा थकी कह्युं ते स्नेह पूर्वक जेम ।७५।
श्री भागवत विवरण करो अेम प्रथम आज्ञा अेह
निज वचन अन्यथा कीधुं तेडवा करी बहु नेह ।७६।
विरहना परिताप कारण कह्युं आवो अहींया
आचार्यजी ये भाव बले थकी आज्ञा उलंघी त्यांह ।७७।
प्रथम आज्ञा हवी त्यांह सौभाग्य उपज्युं मन
श्री भागवत विवरण विना केम थाअे रसनुं पान ।७८।
अेणे भावे आतुर्या कर्यो मनसुं विवाद
अनुभव विना केम पामिअे जे फल तणो सुख स्वाद ।७९।
श्री भागवत विस्तार करवानो जे मन विचार
आज्ञा उल्लंघन करी सौभाग्य बल निरधार ।८०।
हवे अंत:करण उद्देश कर्यो जगन्नाथ पुरूषोत्तम
त्यांहां प्रसाद महातम अति घणुं अेवो स्थल छे उतम ।८१।
आवता जाणी अति घणा उत्साह अभिनव मन
वेग ते वहेला मोकल्या सामा ते कृष्ण चैतन्य ।८२।
आदरसुं आवी मल्या रहया नामी शीश श्रीपात
प्रणाम करीने दिन साथे कही सघळी वात ।८३।
पुरूषोतमजी अे मोकल्या बोल्या छे आवता जाणी राज
अभिलाषा मनमां अति घणी हुं आव्यो अे काज ।८४।
साथे चाल्या सुख हवुं थई झारखंड मंझार
महातम जेहने मन वसे ते शुं जाणे स्नेह अपार ।८५।
न जइअे अे वाट संकट विकट वारूण जुद्ध
स्नेह पूर्वक समाधान अर्थे कह्युं शास्त्र अविरूद्ध ।८६।
महातम बले मान्युं नहीं त्यां गया कृष्ण चैतन्य
राज मारगे स्नेह रीते पधार्या अे भिन्न ।८७।
आगल जइने आचार्यने मल्यो मारग थयो ज्यां अेक
वृतांत सघलुं वेग थई कह्युं कारण अेह विसेक ।२८८।

अद्‌भुत महा मद गलित मोटा वारूणवर बहु मोल
सामा जोइ अनेस्पर्श न कर्यो शुं कहुं तेहनी तोल ।२८९।
ते सुनी श्री आचार्यजी साधे ते पोते मौन
अेणे श्रम कराव्यो प्रभुने शुं लहे स्नेह शून्य ।९०।
सेवा संपुट श्रमजले भरपूर सालिग्राम
आश्चर्य पामी शीश नामी कह्युं जुओ पूजा ठाम ।९१।
हम तुमकुं तब ही कह्यो अे प्रभुको सामर्थ
श्रम कराव्यो बोहोत तुमे पधारे रक्षा अर्थ ।९२।
जन्म मारो व्रथा खोयो आवी प्रेम प्रतीत
प्रार्थना करी पाण जोडी कह्युं कहोने स्नेहनी रीत ।९३।
आचार्य उतर करी अने ते दान दीधुं त्यांह
पछी पधार्या प्रेमशुं दामोदर सलिता त्यांह ।९४।
वागधीश ईश जगत तणा ते जइ पहोंच्या त्यांह
प्रेम पुलकित पधार्या क्षेत्र पुरूषोतम ज्यांह ।९५।
त्यां साखा चार करण साक्ष पूरवा पधार्या छे नाथ
साखी गोपाल नाम धराव्युं जाणे जगत विक्षात ।९६।
पुरूषोतम परिताप टलीओ निरखी वदन सुचार
फूल अंगेअभीनवी अवलोके वारंवार ।९७।
अवलोकता आनंदीयो मन आज अम चित हर्ष
मही मंडलमां महातम हशे ज्यां त्यां उतकर्ष ।९८।
आचार्यजीअे समाधान कीधुं सानुभाव संयुक्त
ते समय सुख जगन्नाथने अे विशद वचन अव्यक्त ।९९।
पछी पोते प्रयाण कीधुं महिमा वधारी क्षेत्र
जगन्नाथ रायना जुदा थाता नीर भरीया नेत्र ।३००।
जगन्नाथ राय पधार्या ने दामोदर सलिता जाय
पुरूषोतम क्षेत्र साखी गोपाले अेम कर्यो महिमाय ।१।
उध्धार कीधो जई ज्यांहा त्यां जे कोणे नवि थाअे
परिक्रमा वेदोक्त विधी जे करी जगन्नाथ राअे ।२।
परीक्रमा करी पृथ्वी तल ने खंडयो मत पाखंड
वाम मारग नाम टाल्युं जस विस्तार्यो ब्रह्मांड ।३।
जय जय कार जगते हवो सृष्टीनी पूरी आश
समाप्तम् करतां वरस नव उपर थया कंई मास ।४।
सकल काम संपूर्ण करी पधारे काशी क्षेत्र
गंभीर नीर वहे गंगा अधिकार ज्यां तिन नेत्र ।५।
वाराणसीअे गंगा तीरे पधार्या छे ज्यां
सासरे जई उभा रहया ज्यांहा अक्काजी छे त्यांह ।३०६।

लज्या सहित घुंघट करी अने गया भीतर तेह

मातने जइ अेम कह्युं जुओ कोण आव्युं अेह ।३०७।

सासु अति उतावळा आव्या ते आंगण मांह

श्री वल्लभाचार्य ओळख्या अति हैये हरख ते त्यांह ।८।

प्रथम पाणी ग्रहण करी आचार्ये कर्युं प्रयाण

अक्काजी पीयर रहे महा शील परम सुजाण ।९।

लोक सहु अेहोने कहे जे कह्युं अेह अनूप

परदेशीसुं संबंध कीधो पामसो तमो दुःख ।१०।

अति नेह कनिष्ट पुत्री अक्काजी सुबाल

पिता परदेश गया अे रहे छे मोसाल ।११।

माताने व्हाला घणुं ते करे सोच विचार

अंतरयामी आचार्य पधार्या तेणी वार ।१२।

सर्वेने मन सुख हवुं आनंदनो नहीं पार

आगता स्वागता अर्घपाद ते कर्या बहु प्रकार ।१३।

पछी ससुर पक्षनुं सहु मली ने वीमासे मन सोय

आपणे हवे अे पेर करवी प्रसन्न अे जेम होय ।१४।

अद्भुत भांते करीअ खांते सोलंकित श्रंगार

पुत्री प्रेमे पहेरावववाने वसन विविध प्रकार ।१५।

आण्यो गमतो अक्काजीने सासरवासो सार

फूल अंगे अभीनवी ने मोदनो नहीं पार ।१६।

आज वैभव अभिनवो आपणे अेम बोल्या मामा मात

पुज्याग्र थई घेर आवीया जगदीश जग विख्यात ।१७।

आदर सहित आणुं कराव्युं अक्काजी अति उत्साह

भाग्य मारूं सफल फलीउं पामीआ निज नाह ।१८।

अति अनुपम स्नेह साथे भीडी भेटे अंग

कोडे कुंवरी चलावता प्रेम पुलकित रंग ।१९।

विदाय थाता विवस वचने नेत्र भरीया नीर

सकुमारी सौभाग्य शोभा जोता न रहे धीर ।२०।

श्री आचार्यजीने आशीष दइ सहु को ते वलीया घेर

जुगजुगमां बिराजो जोड अे स्नेह सहित अेणी पेर ।२१।

आज्ञा करी उतावली ते चालवाने उदेश

हरख ते भरीया बेहु जण पछी कर्यो प्रणय प्रवेश ।२२।

मारगे मर्यादा छूटी अेकांत जोइ अवकाश

लोचन द्वारा परस्परे त्यां हवो प्रेम प्रकाश ।२३।

प्रीत पूर्वक परवर्या आव्या ते अडेल मंझार

माता अति मन मोद पाम्या हवो जय जयकार ।३२४।

अेम दिग्वीजय करी दशोदिश मिस परिक्रमाने तेह
वाक्य भागवत फल उदय कीधो ते निःसंदेह ।३२५।

अज्ञान जड तिमिर दूर करी टाल्या ते अन्य आवरण
भगवद संबंध ते कीधो आप्युं निज शरण ।२६।

संसार सागर दुष्ट तरवा नहीं अवर उपाय
पंथ पुष्ट सकल शिरोमणी ते तणा अे सुखदाय ।२७।

परिक्रमा मारग प्रगट हित करी कारण अेह
भक्ति पंथ परीचारनी आज्ञा हवी छे जेह ।२८।

स्वमतिने अनुसार शास्त्र श्री भागवते कही ज्यां
आरंभ कीधो ज्यां थकी फरी पूरण कीधो त्यां ।२९।

चार संप्रदाय ने वली आचार मारग जेह
प्रवाह पुष्टी ने मर्यादा सहु कर्या निःसंदेह ।३०।

सर्वनो आदर करी कर्यो उद्दीपन निज धर्म
प्रतारण सहुने जणावीअे अेहवो अेनो मर्म ।३१।

परिक्रमा मिसे प्रबल कीधा साधन जे संसार
स्व भक्तथी अतिरिक्त अर्थे भिन्न भिन्न प्रकार ।३२।

मुक्ति क्षेत्र ले आदी तीर्थ कर्या अंगीकार
जीव ने अर्थे सामर्थ कीधा संप्रदाय ते चार ।३३।

यजन जोजन दान वृत अे केवल परम उपकार
तारतम्य अलगुं भजन अर्थ ब्रह्मवाद साकार ।३४।

भक्ति मारग अंबुज अद्‌भुत सुखद सारनुं सार
ब्रह्म स्वरूपे भानुं भूतल प्रफुल्लित अर्थ विस्तार ।३५।

अवनी उपर आस्य आपणुं करवा जस विस्तार
प्रगट कर्युं कारज अर्थ पुष्ट रसे जे प्रकार ।३६।

अनुभवार्थ आनंद अगणित आप स्वरूपानंद
भक्ति हित स्थिति ग्रहे श्री गुंसाईजी करी श्रीगोकुलचंद ।३७।

आज्ञा आनंदित हवी जे स्वआनन आचार्यजी
महीतल मारग पुष्टी प्रीत जइ करो अेह कार्य ।३८।

उत्साह अगणित अंग उपज्यो लीला उपयोगी जेह
रस युक्त छे ते उक्त मारग पुष्ट हशे प्रचार वली तेह ।३९।

अति मनोहर सरस सुंदर मृदुल मारग पुष्टी
रक्षा अर्थे मर्याद अंगीकरी करी संतुष्ट सहु सृष्टी ।४०।

अेक समय श्री महाप्रभु संध्या वंदन करी
काज पोहोंची त्यांनुं तेह बाहेर आव्या फरी ।४१।

बेठकमां बेठा आवी गादी तकीअे सोहे
आनंद भर अवलोकता जगतना मन मोहे ।३४२।

कल्याणभट खंभालीआना बेठा सनमुख पास
बीजा भक्त यूथ सामे छे महा भाग्य केरी रास ।३४३।
कल्याणभट पर कृपा प्रभुनी भाग्य तणो नहीं पार
अे विनती वात्सल्य जुत करी जाणे बहु मनुहार ।४४।
कह्युं कह्यो आचार्यजीअे मारग प्रगट करी अेह
श्री गुंसाईजीअे आप अनुभव करी देखाडयो तेह ।४५।
अे वचन भटनुं सांभळी महाप्रभु थया प्रसन्न
सामर्थ बल सूचन करी बोल्या तेह वचन ।४६।
कह्यो कीयो और राख्यो अेम कह्युं मुसकाय
तेह सुणी सहु भक्तने आनंद उर न समाय ।४७।
अेह मारगने हित प्रगट कर्युं द्रढ कर्यो सिध्धांत
अनुक्रमे अवनी अर्थे विवरण कर्युं आदिने प्रांत ।४८।
आचार्यजीअे प्रगट कीधो गुंसाईजीअे विस्तार
राख्यो श्री महाप्रभुजीअे अनुभव्यो अति रस सार ।३४९।

" इतिश्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्भुत
विचित्र रस व्याराना गोपालदास
विरंचित प्रथमतरंगे
मांगल्य त्रीजुं - ३
संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य - ४ - चोथुं

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

श्री गुसाइजीना प्रागट्यनुं मांगल्य चोथुं लखीअे छीअे (राग : गौडी)

अंगीकार प्रकार मारग भक्तनो विस्तार
इच्छा प्रमाणे शरण लीधा कर्यो अंगीकार ।१।

महात्तमे प्रभु ओलख्या अनुभावसुं अनुरक्त
प्रविष्ट थई सुमारगे अनुसर्या मारग भक्त ।२।

परिक्रमाअे ने वली जे ज्यां आविआ शरण
आदर अनुग्रह करीने कीधो ते तेहोनो वरण ।३।

ते भक्तना करूं नाम वर्णन विसद करीने तेह
श्री आचार्यजीअे स्वत: अंगीकार कीधो जेह ।४।

सीरंधमां सौभागी वैष्णव वली थानेश्वर गाम
आप आवी अनुसर्या जे क्षत्री जाते नाम ।५।

रस मारगनी रीत प्रीते प्रथम स्त्रीनो वरण
हरस राणी जात तेहनी अेह लीधा शरण ।६।

जेत जाती नाम तेनुं सेवक वामनदास
निरंतर रहे नेहभर कृपा केरी आस ।७।

दामोदरदास सीरंधना जेह हरसाणी जात
तेहने श्री आचार्यजीअे अेकांते कही अे वात ।८।

तारे अर्थे प्रगट कीधो मारग अे सुखदाय
हजी तुंने दस जन्मनो रह्यो छे अंतराय ।९।

आचार्यजीनी करे अंग सेवा कृष्णदास मेघन
ते पर अति घणा प्रसन्न अे भाग्य माने धन्य ।१०।

केशवदास कपूर जाते अगलपुर मांह वास
चैतन्यदास सुजाति सेवक जेहनो पुत्र रामदास ।११।

जीवणदास कपूर जाते जेणे मेहने दीधी आण
सानुभाव सदा संपूर्ण अेहवा चतुर सुजान ।१२।

खेतु रूपो दीधो तो ते कोछड जाते चार
प्रीत पूरण रहे परस्पर भाग्यनो नहिं पार ।१३।

सेठ दिनकर श्रोता अेहवा अहरनिस अनुरक्त
करी पाक काचो चून आव्या भगवद रस आशक्त ।१४।

कविता करता भाट जाते कवी राम ने प्रभुदास
सीरंध मुकी जइ कर्यो जेणे समाणामां वास ।१५।

प्रभुदास जलोटा जेहना छे सेव्य स्वरूपे जेह
मदन मोहनजी सिकंदरपुरमाहा अद्यापी बेठा तेह ।१६।

अच्युतदास अहोरात्र रहेता अति घणुं विरक्त
गिरि परीक्रमा दंडवते करता अेहवा भगवद भक्त ।१७।
थानेश्वरमां क्षत्री ज्ञाते भल्लो गोविंद दास
हीन मनसुं दिन सेवक थई रह्या खवास ।१८।
वलता जइ अने सेवा जलनी करी अेकाग्र चित
विश्राम घाटथी लेइ जाता श्री नाथजी निमित ।१९।
इटोरडा गोपालदासने आश्रये चरणाविंद
कवित कीधा अति घणा जेणे आचार्यजीना छंद ।२०।
सेवक सहगल जातनो जे गोपालदास अभीधान
बाबा वेणु सीरंध धधरी ते गाम सनमान ।२१।
कीरतन केशवराय आगल कृष्णदासे करयू अति दीन
आवेश पूर्वक देह छांडी थई गया अति लीन ।२२।
सहेगल क्षत्री सेवक सूधो विठलदास छे नाम
माधवदास पटपटीआ क्षत्री जेनुं थानेश्वर गाम ।२३।
गोरी समराइ सासु वहु बे परस्पर प्रसन्न
आंतरिक तेहना भाव उतम सेवा सुख संपन्न ।२४।
वली थानेश्वर सीरंध केरा सारस्वत ब्राह्मण जात
वरण कीधो तेह तणो जेहनी उच्च वरणे ज्ञात ।२५।
लहुअड क्षत्री आचार्यजीनी करता सेवा अंग
कान्हडदास ते बेटा अेहोने नाम छे नरसंग ।२६।
राघवदास जगन्नाथ रववास गोपीनाथजीने संग
को सकारण फरी आव्या अक्काजीने प्रसंग ।२७।
सीरंध मेली कडी रहेता गजाधर खंधाल
विरक्त गोसांईदास केरी करी स्वत: संभाल ।२८।
जात छकडो वासुदेव ने बूला मिश्र छे जेह
भक्त नलुदन सारस्वत जे कडे जइ रह्यो तेह ।२९।
रामानंद मिश्र थानेश्वरी पंडित अति अनुराग
वैष्णवना अपराध कारण कर्यो आचार्यजीअे त्याग ।३०।
जगन्नाथ मिश्र सनाथ कीधो जात जेहनी गौड
विश्नुदास छीपो सीरंधी जेना भाव प्रबल अति पौढ ।३१।
वैष्णव विद्यादास वारी अंगीकृत जे अपार
थानेश्वरमा सदा रहेता जात छे भावसार ।३२।
हवे व्यक्त करी विशद लख्या छे वैष्णव जे गुजरात
साधु सेवक सांचोरा जे ब्राह्मण केरी जात ।३३।
वडालीमा दुवे गोविंद जीवनधन अर्थ यत्न
जेहने अर्थ प्रगट कीधो ग्रंथ जे नवरत्न ।३४।

तेहने घेर अेक पुत्र उतम वैश्नव नारायणदास
पिता पुत्र अेकत्र स्थलमां करी रह्यां वास ।३५।
नरहर जोशी जे सांचोरा जेणे अन्य न नाम्युं माथ
भावानुरक्ते भक्त मोटे जोशी जे जगन्नाथ ।३६।
अे भाइ बेहु भला वैष्णव अने त्रीजी मात
गाम तेहनुं खेरालुं अे प्रसिध्ध सहुमां वात ।३७।
वली तेज गामे दास नरहर भगवदीअनुं अंग
जीवन जेहने जोशी जगन्नाथ रहे तेहने संग ।३८।
जोशी पुरूषोतम अति उतम मर्यादाने काज
काशी चाल्या कुटुंब साथे संग न कोअे समाज ।३९।
कृष्ण भट ते संग चाल्या भगवद रसने काज
अभिलाषा अतिसे मन धरी कह्युं भाग्य मारूं आज ।४०।
जोशीअे भटथी दूराव कीधो भगवद रसनो मर्म
पछी भटजीअे वात कहीने जणाव्यो मननो धर्म ।४१।
ते सांभलता देह दशा न रही ने घणुं थया प्रसन्न
परस्पर थई प्रीत अतीसे आजनो धन्य दिन ।४२।
प्रथम दवे सोहता जेहनुं मणोदर गाम
आचार्यजीअे अलौकिक धर्युं दुवे पुरूषोतम नाम ।४३।
वळी सुशील बे सौभागी सेवक दुवे माधव नाम
नि:साधन जेह ने नेह निरंतर दुवे छे जेराम ।४४।
दुवे राजो अने माधुर भक्त बे अनुरक्त
प्रताप बले तेहोने कराव्युं निवेदन अव्यक्त ।४५।
राम जीवो बे भाइ हता ते अति घणां गुणवंत
कृपा राजा दुवे केरी थया नेष्टा वंत ।४६।
उत्तम श्लोकदास उत्तम नावे समता कोय
ठाकुरद्वारना वैष्णव केरी करता पोते रसोइ ।४७।
स्वत: परोसे घी अति परोसता परमार्थ
वैष्णव महेतारी सर्व कहेता अेहवा नि:स्वार्थ ।४८।
श्री गुंसाईजीअे कृपा करी कह्युं मांग कछुं तुं आज
हुं सदा प्रसन्न रहु राज उपर अे आपीअे महाराज ।४९।
अे मध्ये भाव धणा छे ते कोइ न जाणे पार
प्रसन्न पोते अति घणुं थया श्री गुसांईजी ते वार ।५०।
मणोदर मांहे साधु सेवक अनुसार मारग बीज
दुवे गोपाल छे नाम तेहनुं दुवे गोविंदनो भत्रीज ।५१।
गोविंद भट ते गान करतां हरि रस अनुभव आस
लखी टीपणी श्री विठल आगल सीदंपुर राणो व्यास ।५२।

पद्युम्मनभट ते भला ब्राहमण गिरनार गिरिस्वर विद्वान
जेने द्वारकामां कथानुं आचार्यजीअे कर्युं दान ।५३।
राजनगरे शंकरपूरमां रामदासभाइनो वास
इंद्राणी नामे स्त्री तेहने पुत्र मुकुंददास ।५४।
राओल पदम स्व सुखार्थ्थ जइ रह्या ते उज्जैन
मालवा मध्ये वडोदीआनो वास मुक्यो तेण ।५५।
कनोज गामे दास दामोदर संभलवार क्षत्रीय
भाव अेके त्रणे रहेता दासी पोते स्त्रीय ।५६।
द्वारकानाथनी करता प्रीते सेवा बहुअ प्रकार
अति घणो अनुभव तेहने केम थाअे विस्तार ।५७।
द्वीज जाते कनोजीआ अेक पदमनाभ प्रसिध्ध
उत्कर्षता वैष्णव तणी ते द्वारा करी ते निध्ध ।५८।
श्री आचार्यजीअे आज्ञा आपी श्री गुंसाईजीने अेह
पदमनाभने पूछजो मार्ग सिध्धांतनो संदेह ।५९।
भगवद भाव अति घणुं रहेता ते मनने रंग
श्री गुंसाईजी घेर पधार्या चोरी सिध्ध कर्यो पलंग ।६०।
रात्र दिवस ते रस सहित करता प्रभु गुण गान
श्री गुंसाईजीना नाम श्रवणथी न रहेतुं अनुसंधान ।६१।
पुत्री जेहने परम नेष्टिक तुलसा तेहनुं नाम
नाती रघुनाथदास वहु पार्वती सुशील सुखनुं धाम ।६२।
वाराणसीमां शेठ चौपडा नाम पुरूषोतम दास
विश्वेश्वरे प्रसाद मांगी लीधो जेनी पास ।६३।
भगवदी जाणी भावशुं करी सेवक थई संभाल
जेहनी रक्षा अनुदिन करे पोते कालभैरव कोटवाल ।६४।
जेणे स्पर्श मणीनो स्पर्श न कर्यो भाव प्रबल प्रकाश
तेहो घेर पुत्री रूक्ष्मणी ने पुत्र गोपालदास ।६५।
रामदास नामे सेवक सारस्वत भाव भीतर भव्य
जगदीशे तेहनुं रूप धरी अने आप्यो करजनो द्रव्य ।६६।
अलौकिक भावे अेक सेवक अन्याश्रय नहीं अंश
लौकिक कलेशनो लेश नहीं ते नाम पाठक हरिवंश ।६७।
हवे अडेलना अेक क्षत्री वैष्णव लख्या छे जे नाम
पुनित अति नवनीत निर्मल आचार्य छे अभिराम ।६८।
तंबोली पदारथ अति गुणवंत बुध्धि सागर सार
सेवा तत्पर नेष्यवंत ने कोइ न पावे पार ।६९।
परमानंदजीना पद पाठे हता सहस्त्र ते वार
श्रीजीअे श्रीमुखे कह्युं छे सभामां अे कंइ वार ।७०।

अरधा परधा पांचसहश्र ने कंठ पाठे सात
अेक लीलाअे गान करता पूरण जाती रात ।७१।

वेणीदास ने दास माधव क्षत्री बेहुं समर्थ
ते काज करे कारण सहित जेमां भगवद अर्थ ।७२।

भागवत पोथी प्रीत साथे आणी आचार्य पास
प्रौढ अक्षर गूढ भावे समर्पी जनार्दन दास ।७३।

खेतो क्षत्राणी सीरंदीअे जाणी ते प्रेमनी पेर
श्री नाथजी पय पान करता जईने तेहने घेर ।७४।

तेहना घरनो प्रसाद आचार्यजीअे कर्यो अंगीकार
महात्तम प्रसाद प्रगट कर्यो वली भाव अनेक प्रकार ।७५।

सीरंदी क्षत्राणी रजो नामे सेवक स्त्रीनी जात
आचार्यजीने नित्य सामग्री समर्पे ते रात ।७६।

श्री आचार्यजीने विनती करीने कर्युं ते सुंदर धाम
निज मंदिर श्रीनाथजीनुं जवल पूरणमल्ल नाम ।७७।

संवत पंदर ओगणसठे श्रावण वदी त्रीज
श्रीनाथजीना मंदिरनी दीधी नीम धरीयुं बीज ।७८।

पुरूषोतमदास ते प्रीत साथे अनुसरे भगवद वाट
स्त्री तेहने घणुं सात्विक धाम छे राजघाट ।७९।

नवनीत प्रीयजी सेव्य जेना घावन गजन नाम
अर्गलपूर आवी वस्या तेनुं आदे कालपी ग्राम ।८०।

अेक सेवक सारस्वत सिधोतरा दास भगवान
पटणा ते स्वस्थल गाम तेहने प्रीय भगवद गुणगान ।८१।

भगवद भजन स्नेह साथे करे ते अेणी पेर
श्री आचार्यजीनी पादुकानी सेवा तेहने घेर ।८२।

भूलो उपाध्यो खुटी केरो खीरडी सारस्वत जेह
मार्ग नैष्टिक अति भलो आचार्यजीसुं नेह ।८३।

मैया क्षत्राणी कडा केरी जेहने बालकृष्ण उपास्य
सानुभावसुं सेवा करावी पुत्रत्वे पूरी आश ।८४।

सेवक बे सकसेना कायस्थ भाग्य केरी रास
प्रभुसुं अति प्रीत वांछे दिनकर ने मुकुंददास ।८५।

वसावणदास सीरंधमां ते वैश्नव सुख संपन्न
भट नागर कायस्थ मध्ये हता माहा प्रपन्न ।८६।

शेरगढना साहारीया माथुर त्रिपूरदास
पीठ देइ प्रभु दिसे न बेसे मनवृती प्रिय पास ।८७।

ग्वालीयरमां निरबंध हता सुरती कीधी रात
छोडाव्या श्रीजीअे स्वप्न द्वारा प्रसिध्ध छे अे वात ।८८।

संगी पुरूषोतमदास अेहना भगवदी पर भाव भार
सहेज तेनु सर्वदा रहे मारगने अनुसार ।८९।
पुष्करणा जाते रामदास पाम्या मोटो संग
नाथजी तणी सेवा करता सेवा भीतर अंग ।९०।
जगो स्वामी ठठानो अे रह्यो ते सोरठमांअे
बादरायेण मोरबीनो अे सात्विक छे समुदाअे ।९१।
बडा रामदास हरीयाणीआना भाग्यनो नहीं अंत
करी नाथजीनी सेवा भीतर अेकवीस वर्ष पर्यन्त ।९२।
नरहरदासनी सेवा सुंदर समारे नागरवेल सार
गोद खेल्या श्री नाथजी तेहना भाग्यनो नहीं पार ।९३।
संतदास सेवा निपुण करता ते नित्य कुल
माधवभट काशमेरी पर आचार्यजी अनुकूल ।९४।
नरोडाना वछाभटनुं धर्युं गोपालजी नाम
चौखरा रस रीत कीधां सहित भाव सकाम ।९५।
आजोलना ते औदीच वैष्णव विष्णुदास नामे सोय
भगवद धर्म प्रवर्त्या समता ते नावे कोय ।९६।
नारायणभट मेह राणाना भाव नहीं कांइ भिन्न
जेना सेव्य स्वरूप श्री मदनमोहनजी बेठा वृंदावन ।९७।
नारायणदास ब्रह्मचारी रहेता महावन अति आनंद
तेना सेव्य श्री रघुनाथजीने घेर श्री गोकुलचंद्र ।९८।
आंतरीमां शुक्ल सेवक सनौडीआ परसराम
अेह ज्ञाते बली वैष्नव धर्मांगद छे नाम ।९९।
निरूपाध्य नरहर त्रवाडी डीसे रहेता तेह
भावभर अहरनिस घणुं आचार्यजीसुं अति नेह ।१००।
प्रोहित जेरामदास तेनो वास छे चीतौड
गोधरा पासे पेडादरे रहे राणोजी राठोड ।१।
भगवद जस रस प्रगट कीधो सुर परमानंद
गुण गान ध्यान रस पान तेहनुं भर्या रहे आनंद ।२।
नरीयो भाटीयो लुहाणो जेहनो ठठामांहे अधिकार
स्वप्न दारा नाम आपी कर्यो अंगीकार ।३।
अलौकिक अनुभाव साथे स्थापित कीधुं नाम
अभिधान नरहरदास कीधुं सर्या सघला काम ।४।
सन्यासी सरस्वती माधव भगवद बले ते त्यां
व्यास राणाने नाम आप्युं पूरी द्वारका मांहां ।५।
भाइ बे मेवाती हता जादवेंद्र कुम्भार
नीम नवनीतप्रिय मंदिरनी करी रात्र मंझार ।१०६।

जल काजे सेवा नाथजीनी आरंद्र भाव अनूप
स्वहस्त खोदी चुण्यो पोते अति अनुपम कूप ।१०७।
सेखरीना भोमीआ ते सूरजमल चौहाण
भगवद रससुं प्रेम पाम्या देह न अनुसंधान ।८।
कान्हरदास ब्राहमण आन्योरे विरक्त रहेता धर्म
अेकाकी स्वामीदास सेवक भाट हता ब्रह्म ।९।
साधु रीते रहेता पोते श्रीनाथजीने द्वार
अन्यने अनुसरे नहीं ने करे दूधनो आहार ।१०।
अहरनिस अनुसरी रहेता भगवद संगी संग
मौन्य रीते भीत प्रीत्ये अन्य व्यासंग न अग ।११।
श्री भट सनोडीया गंगा तीरे रहित अन्य जंजाल
जेणे प्रेम भावे पद कर्या संयुक्त अति रसाल ।१२।
जाट ज्ञाते लालदास ने देश छे पंछाह
लहुअड स्वामी स्नेह पूर्वक रहे वृंदावन मांह ।१३।
सदुपांडे आन्योरनासुं सानुभाव श्रीनाथ
पय पान करता प्रीत साथे पुत्री केरे हाथ ।१४।
नरो अेहवुं नाम तेहनुं शुद्ध अंतःकर्ण
श्रीनाथजीअे जइ हाथ आप्यो कटोरो सुवर्ण ।१५।
सवंत पंदर चोराणु अे जेष्ट वदी नवमी हवी पेर
श्रीनाथजीनी कनक कटोरी रही सदुने घेर ।१६।
श्वसुर श्री गुंसाईजी तणा भट विश्वनाथ तैलंग
पुत्री आपी तेणे अर्थ सेवा सुख श्री अंग ।१७।
भट मलारी तैलंग ज्ञाते आचार्यजीसुं नेह
बहेन ते घेर अंकाजीनी मोटी मोधम अेह ।१८।
खांडेराव ते सेवक कहावे करे स्वारथ काम
निंदय पदारथ कृपण माटे नलेतुं कोइ नाम ।१९।
अे सेवक सर्वे लख्या जे जेम यथामति अनुकर्म
जेहोना उतकर्ष प्रगट प्रसिध्ध छे जे धर्म ।२०।
श्री आचार्यजीना सेवक सघला मार्ग अभिमत जेह
दिग्विजयसुं सृष्टी दैवी प्रगट भूतल तेह ।२१।
करूणा सिंधु कृपा करी अने धरीअ मन विचार
आगलथी उद्योत करवा कर्यो किरण प्रसार ।२२।
किरण रूप अनूप वाणी आधिदैविक आप
तिमिर असुर ते दूर करी हर्यो सृष्टिनो परिताप ।२३।
ते सृष्टि सघली द्रष्टिअे पडी जे निरूपाधी कलेश
जे साथ नाथे सबंध साक्षात करवा कर्यो उदेश ।१२४।

कली जीव मध्ये क्रीडा कौतिक धरी मनसा मन
प्रमेय रूप स्वरूप सुख हित अंग अंगी अनन्य ।१२५।
प्रथम पात्र ते रस भर्या सहु अंतरंग समाज
रहस्य रमण आनंद अवनी प्रगट करवा काज ।२६।
आज्ञा ते श्रीमुखे सर्वने लेइ कृपा आदि नाम
तमो वसो वसुधा वली वृजमा सहित गोकुल गाम ।२७।
आधि दैविक स्वरूप सघला सदैव सेवा अर्थ
प्रताप बले ते प्रगट कर्या सहित सकल सामर्थ ।२८।
प्रभुता विभुता अने इच्छा अनुरागीणी जे भक्त
सर्वात्म भावे स्वरूप सबंधी रस सहित प्रेम संयुक्त ।२९।
ते प्रिय सुख हित सांचर्या सहु आवर्या अनुराग
मही मंडल मोदे भर्या परवर्या अधिक सोहाग ।३०।
जइ समारो सुखद मारग संयुक्त सुंदर धाम
सर्वोपर श्रींगार भूषण निरहेतुक निष्काम ।३१।
सिध्ध सर्व सांप्रत्य कराव्यु लीला केरे काज
ज्यांहां फलात्मिक सृष्टीसुं पोते प्रगटशे महाराज ।३२।
आज्ञा प्रमाणे एम सृष्टी उधार अंगीकार
बीज रोप्युं रमण अर्थ आस्य रूपे सार ।३३।
ज्यांहां फलात्मिक सृष्टी साथे रमण करवा काज
विस्तार अर्थे विठल रूपे स्वारथी सृष्टीनो साज ।३४।
स्थल स्थाणुं रोपीऊं पोते आचार्यजी द्वार
प्रकारांतर रसे सनमुख इच्छा उभय प्रकार ।३५।
उतकंठा उपजावी गुंसाईजीने प्रभुने सामर्थ
ते भोग करवा पोते प्रगट्या फल अनुभवने अर्थ ।३६।
प्रथम छे ते स्वकीयाना सदा नित्य अनूप
रमण अर्थे सृष्टी नौतन परकीया रस रूप ।३७।
प्रकारांतर स्वाद सुखभर वरणन कर्युं न जाओ
भूलामणी भेदे करी जाणे रसिक वर राय ।३८।
सिद्य सहु सांप्रत्य कीधुं कराव्युं जेह द्वार
रमण अर्थे योग्यता भावे भर्या नरनार ।३९।
जे समय जेवी सृष्टी जोइओ तेवीनो परिचार
रस समय रसभर थई विचारी सेवा सुखद प्रकार ।४०।
माहादेवजीओ आज्ञाथी आसुरी जे सहु सृष्टी
ग्रंथ पोतेथी करी अने कर्या सघला भ्रष्ट ।४१।
ते मल्यां त्यां जीव दैवी थया सरखा ओह
प्रवर्त मारग मुक्त करी सनमुखे लीधा तेह ।१४२।

श्री भागवत अभिमत प्रकारे इच्छा पूरक जेह
भक्ति मारग प्रगट कीधो जगत वंदित तेह ।१४३।

चरणाटयनो राजा निपुण ते शरण आव्यो त्यांह
विनती करी पधरावीआ चरणाट निजपूर मांहे ।४४।

श्री आचार्यजी वैभव सहित निज संग लीधा दास
चरणाट गढे पधारीआ अने कर्यो त्यां निवास ।४५।

पछी त्यांथी पधारे गोवर्धन चातुर मास
श्री गोकुलमां रहे ज्यां चोतरो पीपर पास ।४६।

ते प्रेम पूर्वक पीपळने वृक्ष कारण माट
स्वच्छ स्थल अति सुभग छाया समीप शोभित घाट ।४७।

त्यां यमुनाजी वहे निर्मल सुखद सुंदर धाम
वैष्णव साथे स्नेहसुं त्यां बेसवानुं ठाम ।४८।

करूणा करी अने कथा कहे ज्यां होय रसनी वृष्टि
दया दिन प्रती अति घणी उपर अलौकिक सृष्टि ।४९।

अेक सेवक सात्वीक भावनो ज्यां दक्षिणमां रंगनाथ
कामना युक्ते कलेससुं मन वहयुं वैभव साथ ।५०।

अपराधथी ते अधम वर्णे करण भोग्य निमित
लौकिक सुख आपवा जेमां नथी कोइ वित ।५१।

भोग योग आसुरी ते बाहाजय दीशे देह
आभ्यंतर अति स्वच्छ कोमल प्रभु परायण तेह ।५२।

अन्याश्रय अंतराय थयो मर्याद मुक्त अवतार
प्रभु पोते प्रताप बले त्यां करी तेहनी सार ।५३।

अधिकार आपी यहां राखीयो स्वच्छ स्थल महावन
दिन भावे ते देह नींदे भाग्य माने धन्य ।५४।

आसुरी भाषामां तेहनुं अलीखान अभिधान
आचार्यजीसुं प्रेम पूरण प्रिय भगवद गुणगान ।५५।

कथा सुणवा काज आवे श्री आचार्यजी पास
हवे भोग मारो दूर थाशे निश्चे तेहवी आश ।५६।

श्री आचार्यजीने आज्ञा हवीअे श्रोता अति सावधान
रहस्य मार्गनुं कही पछी कर्युं व्रजवर दान ।५७।

विश्वास पूर्वक व्हालसुं करे सकल व्रजसुं हेत
भाव तेहनो श्रीमुखे सहरायो संकेत ।५८।

वृक्षावल्ली गौ अगोचर रमण रमणीअ स्थान
रक्षा हृदयारूढशुं करे सेवा सुख अनूपान ।५९।

अेक समय ते अश्व उपर आव्यो थई असवार
घाट जशोदा वाट ठाडो चपळता नहीं पार ।१६०।

स्नान करवा समय आव्या श्री आचार्यजी जमुना तीर
अश्वने अति सराहयो देखी गुण गंभीर ।१६१।
ते सांभळी मन मुदितसुं कहयुं राखीअे महाराज
अश्वशाळा मोकलो यहां आवशे कांइ काज ।६२।
श्री आचार्यजीअे उतर कर्यो त्यां बोल्या अेम वचन
तुम जानत हो हम परीग्रह कछु नाहीं करत अन्य ।६३।
ते अश्वनी विश्वास आणी आराध्य करे अपार
महत्व माने अति घणुं नहीं थाअे को असवार ।६४।
पुत्री प्रवीण प्रपन्न तेहने पुष्टि रस आरूढ
पाणी ग्रहण कारण न कीधुं भाव छे अति गूढ ।६५।
पिता पुत्री तणुं कारणश्रीमुख कह्युं छे कंईवार
श्री आचार्यजीसुं संबंध तेहनो कह्यो करी विस्तार ।६६।
नित प्रत्ये स्नेह रीते आवीने अेकांत
दरशन करी पाछा वले अेहवो निपुण नेष्टवंत ।६७।
अेवा प्रकार अनेक अेहना अलौकिकनी रीत
आश्चर्य मोटुं असुर जाते प्रभुसुं घणी प्रीत ।६८।
वली कथा कहे आचार्यजी अति स्वत: थई प्रसन्न
त्यां माधवभट कसमीरी आवे ते श्रोता अति वितपन ।६९।
माधवभटनो गुरू केशवभट ते आवे त्यांह
रूची जोइ आचार्यजीनी आव्युं ते मनमांह ।७०।
वीनती कीधी अे शिष्यने हुं समर्पुं छुं आज
अे रत्न मारे छे ते आवे सेवामां काज ।७१।
आचार्यजीअे कह्युं अे तुं समज्यो ते मननुं हेत
अेहने तमो आपत नहीं तो अे हुं मागी लेत ।७२।
भाग्य अेहोनुं विस्तर्युं आव्या प्रभुने शरण
पुष्टी मारग अंगीकृत कीधो छे अेहनो वरण ।७३।
को दिवस रही घेर पधार्या चरणाट छे ज्यां धाम
स्वजन ने निज भक्त तेहना पूरवा जे काम ।७४।
पछी टीकानो आरंभ कीधो सुबोधीनी तेहनुं नाम
मुहुर्त वंत अर्थे आवीयुं उभा तेणे ठाम ।७५।
आपापणे अवसर समय कर जोडी नामी शीष
सहस्त्र धारा पूर वाधे व्याख्याता जगदीश ।७६।
ते लखे माधवभट बेठा प्रष्ट भागे त्यांह
ते लेखणी थांभे तेहने स्थल समजे नहीं ते त्यांह ।७७।
पोतेथी पूछे नहीं अेहवो निपुण नेष्यवंत
जेणे पग प्रभुनी द्रष्टि सनमुख कर्या नहीं आदी अंत ।१७८।

अेक समय आचार्यजीने करी त्यां विज्ञप्ती
अेक वात मारे मन वसी छे जो आवे तमारे चित ।१७९।
जो मारग प्रगट कर्यो तमो पधरावो सेवा घेर
तेह जोइ अने अनुसरे सहु करोअेहवी पेर ।८०।
में आपथी कीयो नहीं पंथ भक्त हर संताप
करवायो हे जिन यह मारग सो पधारेंगे आप ।८१।
श्री नाथजी त्यां गोप्य रूपे अतिने घेर सेव्य
सेवा कांइ समजे नहीं जाणे ते प्राकृत देव ।८२।
मचीयोभट मोहोलाइ ससरे करी विनती अेह
अतिना ठाकोर तणी सेवा करो तमो तेह ।८३।
अेहोनी संपति तणो दोहीत्रने अधिकार
तेह करसे अेह सेवा कहयुं तेणी वार ।८४।
विनती बीजी वार कीधी आनंदया मन मांह
श्रीनाथजी पधारीया घेर हवा मंगल त्यांह ।८५।
इच्छाने अभिमत प्रकारे सेवा मारग जेह
प्रभुने उपयोग रीते प्रगट कीधो छे तेह ।८६।
जावदीक कृत्य जीवना अे थकी थया कृत्य कृत्य
सेवा मध्ये भाव ते अनुसरे नहीं अन्यत्र ।८७।
प्रमाण प्रमेय साधन सुखद फलदानने उदेश
सेवा स्नेह संयुक्त प्रगट करी महाराजश्री गोकुलेश ।८८।
आचार्यजी चरणाट मांहें रहे अेणी रीत
स्वकीयने पोषण करे ते करी अतिसय प्रीत ।८९।
सवंत पंदर सितेरे सुधी आश्वीन दशमी दिन
गोपीनाथजी जनम्या प्रथम मन हवा सहु प्रसन्न ।९०।
पछी वेदनुं व्याख्यान दोहन कर्युं ते निरधार
श्री भागवत विवरण करी त्यां प्रगट करे छे सार ।९१।
स्वकीयने हित स्वमारगना ग्रंथ कीधा आप
नवरत्न आदी अनेक ते टाळवा जनना ताप ।९२।
श्री आचार्यजी विण मारग अे प्रगट ते नव थाय
रस प्राप्ती शुध्धाचार्य भजन विना ते नहीं उपाय ।९३।
जे जन मारग आचार्य ते अेतन मारगी फलदाय
भक्ति पंथे सिद्धांत विना कारण नहीं समजाय ।९४।
ते माटे सर्वथा जावुं ते अेहोने शरण
मारगनुं फल दान दई करे भक्ति मारगे वरण ।९५।
प्रमाणे अेम कहयुं छे अंश छे जेहनो जेह
स्वारथ मुकी स्वतः केवल भजे तेहने तेह ।१९६।

तेमज जे जन मारगी ते भावे प्रविष्ट थाय
कृपा विना अे मारगनुं तत्वार्थ नहीं समजाय ।१९७।
जथार्थ स्वरूप श्री आचार्यजीनुं सार
ईश्वर विना सामर्थ नहीं कोइ जाणवा निरधार ।९८।
श्री आचार्यजी प्रणित मारग अतुल बल सामर्थ
वृतांत प्रभुनुं हेत ते समजे नहीं कोइ अर्थ ।९९।
कारण अनंत अनंत विधि ने इच्छा चरित्र अनंत
ते विचारी निज रूप प्रागट्य श्री विठ्ठल गुणवंत ।२००।
जगत वंदन जगत हित प्रभु जगतना उपकार
तैलंग मणी द्विज तिलक अे सहु जगतना उध्धार ।१।
प्रेम लक्षण विमल जश पंथे भक्तनो विस्तार
करवा ते द्रढ स्थिर स्थापवा आपवा भजन अपार ।२।
चरण रेणुं प्रताप बल जे जगतमां विक्षात
ब्रह्मादिक समजे नहीं छे वेदने अज्ञात ।३।
सवंत १५७२ वदी पोष नवमी दिन
वार शुक्र शुभ करण जोग नक्षत्र ते धन्य ।४।
उदयात घडी अेकवीस पल पचीस उतम पेर
नाथ श्री विठ्ठल प्रगटीया श्री आचार्यजीने घेर ।५।
अक्काजी जे महालक्ष्मी आनंद अंग न माय
मोद मनमा अति घणो ते हैयामां न समाय ।६।
दशो दिशा उद्योत थई ने हवो जय जय कार
जात कर्म कर्या सहु आचार्यजीअे तेणी वार ।७।
वाजिंत्र विविध प्रकार वाजीया आपीआ बहु दान
बंदीजन पहेरावीआ ते करी अति सनमान ।८।
बारणे तोरण चोक पूर्या मांगल्य कीधा साज
आचार्यजी अति हरखशुं ते भाग्य माने आज ।९।
श्री आचार्यजीनी उत्कर्ष कयां लगी ते कहेवाय
जेहने पुत्र श्री गुंसाईजी कह्युं वचन अे समुदाय ।१०।
जेहनी गोदे खेलीआ वर रसिक सुंदर बाल
स्नेह रूपे परम पुरूषोतम श्री गोकुल पाल ।११।
उतरोतर अधिक अधिक प्रकार प्रागट्य अेह
न भूतो न भावी अेह सम ते आधुनिक छे जेह ।१२।
पछे अन्न प्रासन्न करावी नित्य करे बहु वात्सल्य
अलौकिक सामर्थ जे दिसे ते अति प्राबल्य ।१३।
समय थये उपवित दीधुं धरी मन उत्साह
सकल गुण पूरण प्रगट दीसे ते बालक मांहां ।२१४।

माधव सरस्वति वाराणसीमा भणवा मुक्या ज्यांह
विद्या स्वतः स्वरूपे आवी आगल उभी त्यांह ।२१५।
श्री गुंसाईजीनी सेवा करवा विद्या सहुने कोड
श्री आचार्यजीअे प्रगट दीठो हींडती संघोड ।१६।
श्री आचार्यजी कारण स्वरूप ते करे बहु सिद्धांत
तत्व सहुनुं सत्व आदि वेदने वेदांत ।१७।
श्री भागवत तत्वार्थनो कर्यो ग्रंथ निबंध
निर्णय ते सघला शास्त्रनो परमारथनो सींधु ।१८।
टीका त्रण स्कंधनी कीधी भागवत सार
पछी आज्ञा अेम हवी करो दसमनो विस्तार ।१९।
विलंब स्व निकटागमन जाणी थई आज्ञा अेह
विरह असही लही प्रभुनो आरंभ कीधो तेह ।२०।
पछी चरणाटथी जइ अडेल कीधो वास
त्यां गोपीनाथजीनो विवाह कीधो लग्न जोइ सुखरास ।२१।
श्री गुंसाईजीनो विवाह करवा कर्यो मनोरथ बहु
उत्साह मन आनंदसुं त्यां तेडया स्वजन सहु ।२२।
विश्वनाथ भट वागरोदी स्त्रीनुं भवानी नाम
तेहो घेर कन्या श्री रूकमणीजी सुशील सुखनुं धाम ।२३।
आदर अति उत्साहसुं विवाह ते मल्यो सही
वरस आठना रूप सुंदर शोभा न जाअे कही ।२४।
विवाह हवो आनंदसु ते हरखनो नहीं पार
सौभाग्य अेह थकी हवा अति भाग्य सहु विस्तार ।२५।
पछी यज्ञ कीधो सकल शास्त्रनी रीत रक्षक धर्म
नियंता सकल ते धर्मना जेह अेहोना मर्म ।२६।
पछी श्री गोकुल पधारीया आव्या मधूपूरी मांह
द्वितीय आज्ञा तेह समय प्रभुअे कीधी ते त्यांह ।२७।
तेह पण मानी नहीं अडेल आव्या फरी
अेकादसनो आरंभ कीधो दशम पूरण करी ।२८।
विरह कलेशातुर थकी कृपा रोषपूरक जेह
आज्ञा त्रीजी अेम हवी प्रभुनी ते निःसंदेह ।२९।
पछी आवश्यक मनमां विचार्युं पधारवुं निरधार
विचार पूर्वक अंतःकरण प्रबोध कीधो सार ।३०।
स्वतः जे पूरण सकल पोता तणुं सामर्थ
श्री गुंसाईजीने तेह सोप्युं विस्तार मारग अर्थ ।३१।
सन्यास लीधो लोक गोचर निर्णय कीधो आप
प्रभु निकट जइ मल्या हर्यो विरह संताप ।२३२।

सवंत पंदर सत्यासीअे असाड सुदी दिन त्रीज
भूतलमाथी विजय कीधो धरी मनमां धीरज ।२३३।
वरस अठावन उपर सात दिन बे मास
राज आज्ञा प्रमाणे निकट कीधो वास ।३४।
पूछ्युं मारग प्रगटनुं कारण करी विस्तार
कीधुं तेह कह्युं सहु वली कर्यो वचन उच्चार ।३५।
पूरण पुरूषोतम स्वतः प्रागट्य केरो अर्थ
दान करवा जीवने नहीं अवर कोइ सामर्थ ।३६।
सगर्मे भाव धरी मन करी इच्छा रमण अनूप
सत्कार करी अेम आणीयुं मन वचन गोकुल भूप ।३७।
आचार्यजीअे श्री गुंसाईजीने कह्युं करवुं जेह
पृष्टि मारग रीत प्रीते प्रगट कीधुं तेह ।३८।
प्रविष्ट कीधा जीव मारग पुष्टि केरी रीत
सेवा सुखद प्रकार करी देखाडी सघळी नीत ।३९।
वादार्थ जे आवीआ अहींया महा पंडित राज
तेह जीत्या मारग बलथी सर्या तेहना काज ।४०।
हरिवंशजी आदि देइ जेहवा अेहवा भक्त
देखाडी पदकमल प्रेमे कर्या त्यां अनुरक्त ।४१।
शुध्ध मारग पुष्ट केरा प्रगट कीधा ग्रंथ
स्व मारग हित स्वकीयने जे प्रेमनो छे पंथ ।४२।
आर्या ने श्री गोकुलाष्टक भक्तिहंस जे सार
विवेक जे मांहे कर्यो छे जे क्षीर नीर सविचार ।४३।
भक्तिहेतु निर्णय विद्वनमंडण विहार रस उल्लास
वृतचर्या दानलीला रमण सुखनी रास ।४४।
गुप्तरस जे आचार्यने विचित्रतर जे गान
त्रिभंग ललित उदबोध जे श्रींगार रसनुं नहीं मान ।४५।
स्वामिनिस्तोत्र ने स्वामिन्याष्टक कृष्णप्रेमामृत
श्री वल्लभाष्टक सर्वोत्तम भाव जनित विनती सत्य ।४६।
टीपणी भाव सुबोधीनी ने प्रेमामृत विवर्ण
ग्रंथ त्रण आचार्य कृतनुं विवरण आरत हरण ।४७।
गीता तात्पर्य ग्रंथ ने मुक्ति जे तारतम्य
अेतनमारगी हित कर्युं अहीं अन्यनो नहीं गम्य ।४८।
षटपदीअ प्रबोध अेणीपेरे ग्रंथ कीधा बहु
तात्पर्य केवल भक्त अर्थे अनुसरे जेम सहु ।४९।
चरणाट मध्ये यज्ञ कीधो राखवा मर्याद
जे सहेज कारज अे करे त्यांहां धर्मनो आस्वाद ।२५०।

जेम मद गलित हस्ती जे मारगे थई पलाय
प्रबलथी अेम चालता त्यां सहेज मारग थाय ।२५१।
जेणे श्री गुंसाईजी जाण्या तेहना भाग्य तणो नहीं पार
कृपा साधन रूप ने फलदाननुं अे द्वार ।५२।
वार खट गुजरात जइ खट रस कर्यो संपन्न
जेहना श्री प्रभुजी विषे थया हाव भाव सर्वे अनन्य ।५३।
पधारे जे जे स्थले तेहना भाग्य पूरण थाय
कारण सहु पोते लहे पण प्रगट केम कहेवाय ।५४।
ब्रह्मांड पुराणे अठोतरमें अध्याये कह्युं अेह
अेह प्रागट्ये जीव बत्रीस लक्ष उधार करशे तेह ।५५।
जे समय थई अे वारता श्री प्रभुजी आगल
श्रीमुखे कह्युं प्रत्यक्ष त्यां प्रमाण अति निर्बल ।५६।
और यहु तो मिथ्या है जिन लिख्यो अेसो भ्रांत
अे प्रागट्य पूराणमां नहीं लिख्यो आदी अरू अंत ।५७।
अलेखक प्रागट्य ताकुं लिखे लेखन कोन
वेदादिक अज्ञात इन अब भक्ति हित कीयो गोन ।५८।
महातम श्री गुंसाईजीनुं छे ते अनेक प्रकार
शास्त्र वचने करी ते पामे नहीं को पार ।५९।
महातम अपरमित पार नहीं केम होये जीव अग्र
रताइ ठाकोर कृत श्लोक श्रीमुखे कह्यो कारण समुग्र ।६०।
श्री विठ्ठलना पद कमल बिराजे महीतल मांह
वैकुंठ लोक उत्कंठा घणी जे जइ जोइअे त्यांह ।६१।
सभा मध्ये प्रसंग प्रभुअे कहयो श्रीमुख मुसकाय
ते सभा समय प्रसंगभक्त भाग्य कह्युं नव जाय ।६२।
प्रभुजीअे प्रकाश कर्यो मुशकनी मधुरे बोल
रताइ ठाकोर कृत श्लोक श्रोता कोण करूं समतोल ।६३।
पंचोली सावधान श्रोता मुदित मन महाराज
आगल अेहने प्रगट स्थलनुं कह्युं कारण काज ।६४।
सभा मध्ये श्रीमुखे कह्युं छे कंइ वार
द्रष्यांत कारण लख्युं छे अे वचनने अनुसार ।६५।
वली प्रकार बीजो प्रिछवो जे अेवडो उतकर्ष
स्वरूप अनुभव अति घणो प्रेमे मुदित मन हर्ष ।६६।
प्रमाण कारण संदेह निवारण गोकुलेश अष्टक जेह
प्रीय वस्तु पोता तणी श्री गुंसाईजीअे लखी तेह ।६७।
अेहनो ते आसय समजवाने नहीं अवर उपाय
अे प्रभु कृपाअे भगवदी जो कहे तो समजाय ।२६८।

अनन्य भक्तसुं धर्म संगम सहेजनुं सामर्थ
अनुसरे अनुभव वस्तु वैभव सरे सघळा अर्थ ।२६९।
अेहेवुं श्री गोकुलेश स्वरूप नहीं उपमाने अनुसार
मूलभुत प्रकार पूरण ओलख्युं अग्निकुमार ।७०।
महा रसात्मिक रसिकवर रसनायक रसनिधी रूप
रोम प्रति रस कोटि धारा अेहवुं सहेज स्वरूप ।७१।
श्रींगार रसनो सार उदधी मध्ये दधी अमृत रूप
त्यां मथी माखन काढीयुं कृत्य नीत्य नवल अनूप ।७२।
अष्टकमां उभय आत्मिक कीधुं स्वरूप सूचन सिध्ध
श्री विठ्ठलभवने सुख सदने वदने श्री गोकुलपति महा निध्ध ।७३।
प्रभुजीअे पोते प्रमाण कर्युं आनंद वदन प्रसन्न
भगवत स्वरूप भगवदै रेव ज्ञाप्यते बोल्या अेम वचन ।७४।
त्यां आशंका उपजशे अेणीपेर पुरूषोतम अेक प्रकार
ते संदेहना समाधान अर्थे कहुं छुं करी विस्तार ।७५।
अनेक प्रागट्य हवा पहेलां लौकिकमां महातम
अतुल प्रागट्य श्री गोकुलपतिनुं वेद वचने अगम्य ।७६।
परमपुरूषोतमोतम ते लोकोतरने न्याय
न भूतो न भावी हशे अेहवुं प्रागट्य श्री गोकुलराय ।७७।
वागधीशपति प्रथम प्रगट्या राखवा वेद मर्याद
कर्म कलेशनो लेश टाळी वादी मेटया वाद ।७८।
तेहो घेर प्रगट्या पुरूषोतम ते पूरण परमानंद
त्यां वेदनी नगम्य अगम्य वाणी अेहवा प्रगट श्री गोकुलचंद्र ।७९।
अगम्य कह्युं जे वेदने तेहनो टालवा संदेह
प्रमाण अर्थ वचन कीधुं श्रीमुखे कह्युं छे तेह ।८०।
श्रीजी आगल अेक समय सुतीयो नारायणदास
क्षत्री जाते महेद रूपे आवीआ प्रभु पास ।८१।
कह्युं कवित कारण घणुं जाणी आनंद उर न समात
मन मुदित थई अेम बोल्यो अेक वेदकी अे वात ।८२।
ते सांभळी श्रीमुखे बोल्या मोद जुत संकुचात
प्रेम पुलकित प्रसन्न वदने ए वदे न जाणे वात ।८३।
वेद तो प्राचीन छे प्राचीन अेहने ज्ञात
आधुनिक प्रागट्य अभिनवुं अेनी शुं जाणे अे वात ।८४।
अनाद्य पुरूषोतम अेहवा अनन्य जन आराध्य
लोकोतर लीला करण नहीं शास्त्र संमत साध्य ।८५।
प्रागट्य स्थल ते प्रबल करी अने वस्तुत्व नीरदृष्ट
ते पुरूषोतम घेर प्रगटीया जे सार पुष्टनुं पुष्ट ।२८६।

प्रागट्य अपरमित अविधि जेहनी न जाणे स्वतः सुजाण
कृपा वृष्टीसुं द्रष्टि संपत्ति अनुभव अेह प्रमाण ।२८७।
स्वकीय सृष्टि संतोष पोषण भाग्य अर्थ उच्चार
सहेजमां सिध्धांत करी कह्युं प्रमेय प्रबल प्रकार ।८८।
अवतारथी अतिरिक्त अेहवा परम पुरूषोतम सोय
ते पुरूषोतम विण अतुल प्रागट्य अन्य स्थल केम होय ।८९।
पिता प्रपिता पितामह ते निरासक्त निरदोष
सामर्थथी सामर्थ अधिक ज्यांहां प्रभु प्रबल रस कोष ।९०।
अेकथी अेक अधिक प्रतापी कोटिक कारण कुल धर्म
आद्यथी लेइ अविधि सुधी सांभलो अनुकर्म ।९१।
लक्ष्मणभट अति सुंदर निगम कला अवतार
त्यां अलौकिक फल अग्नी रूपे कोमल क्रांती अपार ।९२।
महा पराक्रमी मध्य रस ते श्री विठ्ठलनाथ स्वरूप
माधुर्य ते महा स्वाद पोते श्री वल्लभ गोकुलभूप ।९३।
वळी विशेष विसद लख्युं जे लोकमां महिमाय
द्रष्यंत विण ते वस्तु वेहेरो ओलख्युं नव अे जाय ।९४।
मलीआचल ते अचलवाणी आचार्य अदभुत देह
वृक्ष चंदन जगत वंदन नाथ विठ्ठल जेह ।९५।
सुवास सहित जे चंदन तरू ते सकल आवे काज
सौरभ सकल मध्ये अकल अेहवा श्री गोकुलपति महाराज ।९६।
उदयाचल आचार्य अवनी हवो न अेहवो कोय
श्री गुंसाईजी सुखनिधी सूरज पोते प्रगटीया त्यां सोय ।९७।
ते कांति कारण करूणामय श्री वल्लभ सुखनी रास
अेहवो मारतंड मही तले प्रभु कोटि किरण प्रकास ।९८।
प्रकास पाखे सूर्य शोभा केम होय संपन्न
उदय हवो जेम अभ्र छाह्या जामीनी तेमां दिन ।९९।
उतरोतर उतकर्ष अेणीपेरे प्रगट अनुभव अेह
प्रमाण अर्थ कहुं वली सर्वे सुण्युं छे तेह ।३००।
यदिविंशे खिलवंश अेहवा गुण सागरे कह्युं अति हर्ष
गंगाधर सोमयागीथी उतरोतर उतकर्ष ।१।
उत्कर्षनुं आश्चर्य शुं पण मोटुं आश्चर्य अेह
भूतल रहस्य प्रागट्य प्रगट कर्युं भूतो न भावी अेह ।२।
वली साया गढवीनुं कवित जे वल्लभ लीधा अवतार
अे प्रकार उपर प्रभु प्रसन्न ते सुण्युं सहु बहुवार ।३।
लिखित पूर्वज कीर्ति यातायात गुण आधिक्य
अे श्लोक श्रीमुखे कहयो सर्वे सुण्यो छे ते व्यक्त ।३०४।

अेम आचार्यजी घेर श्री गुंसाईजी विराजे अेणीरीत
हवे कह्युं प्रागट्य हशे जे सर्वोपर अति प्रीत्य ।३०५।
श्री गुंसाईजी घेर गोप्य लीला प्रगट कारण काज
अंतरंग रस वस थई करी गर्भ स्थिति महाराज ।६।
श्री गुंसाईजी तणुं अेक रसना वरणन कर्युं नव जाय
ज्यां कोटि काम संपूर्ण पोते प्रगट्या श्री गोकुलराय ।७।
श्री रूक्ष्मणीजी गर्भ भूषित कर्या श्री महाराज
आगल तेह विसद करूं सांभलो रसिक समाज ।३०८।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्‌भुत
विचित्ररस व्याराना गोपालदास
विरंचित प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम
प्रथम तरंगे मांगल्य – ४ चोथुं
संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य – ५ – पांचमुं

श्री श्री श्री गोकुलेशो जय जयति
श्री प्रागट्य सिद्धांतनुं मांगल्य पांचमुं लखीअे छीअे।
राग जैत श्री : "पुष्टीमारगी जे भगवदी वल्लभना अनुराग्याजी" बीजी जात
"आज सखी श्री गोकुलपति आव्या कीजे मनना भाव्याजी" एवी जाते गवाशे

श्री गुंसाईजी घेर श्री रूक्ष्मणी सौभाग्य तणी अे रासजी
शील सुभाव सुकोमल मन अति कृपा तणो ते निवासजी ।१।
सुंदरता अंग अंग भरी अति रूप तणो नहीं पारजी
लोचन प्रेम रसाला कोइ नहीं अे तणी अनुहारजी ।२।
लक्षण पूरण प्रेम सहित अे सकल गुण संपन्नजी
अति गंभीर भाव पूरण मन परस्परे अनन्यजी ।३।
पुत्र त्रण जे प्रथम हवा जे खट गुणने अनुकर्णजी
आपापणे गुण अनुसरी कर्यो तेह आचर्णजी ।४।
पण तेथी तृप्ती होअे नहीं अभिलाषा अतिशेथायजी
प्रागट्य परम अलौकिक मनोरथ तेणे मन अकुलायजी ।५।
श्री गुंसाईजीनो भाव गूढ ते लहेवा न कोइ सामर्थजी
आतुर अभिलाषित छे जेहने तेह तणो मनोरथजी ।६।
अचिंत्यानंत शक्ति वंत ने महामहिमा छे जेहजी
अति अधीर भक्त तणे वस रहे न अणु विण तेहजी ।७।
माधुर्यता संयुक्त अने वली परम अगणितानंदजी
ताप हारक सर्वांग तणो जे परम रसिक सुख कंदजी ।८।
लीला रस रसात्मिक पूरण पुरूषोतम निधी जेहजी
आश अे प्रागट्य तणी मन अधिक अधिक छे अेहजी ।९।
पोते प्रगट करे नहीं अे कारण अेक अनंतजी
रूदे प्रेम पुरित न समाअे गुणे गुंफीत गुणवंतजी ।१०।
रस सहित आवेसे रूक्ष्मणीजी आगल कहीय प्रकासजी
अे भाग्यरास सुखरास रस पुत्र तणी छे आसजी ।११।
अे अभीष्ट क्यारे होसे गर्भा स्थिते शोभा अंगजी
नेत्र शीतल त्यारे थाशे देखीस अे बाल उछंगजी ।१२।
तेह सुणी रूक्ष्मणीजी बोल्या हुं कही न शकुं संकेतजी
भाग्य थकी अे प्रगट कर्युं तमो मारा मननो हेतजी ।१३।
सांभलता परस्पर मनने वाधी अतिशे फूलजी
भाव अेक अेके बेहु थया रसावेस अनुकूलजी ।१४।

स्नेह परस्पर अधिक उपज्यो आरत अंतःकरणजी
अति प्रिय प्रेमे अभिलाष्या महा सकोमल चरणजी ।१५।
भाव जुजुअे प्रेमे कीधा प्रेम तणो अभिलाषजी
हृदया रूढ स्वरूप थयुं छे तेहज अेहनी साक्षजी ।१६।
साधन अंग अंगनी आरत मन वांछित फल जेहजी
अंतर आत्मिक अनुपम भावे प्रगट थयुं छे तेहजी ।१७।
उपज्यो अधिक प्रेम पुलकित तन न्यारी न्यारी रीतजी
लहे न कोइ पोते पोतेथी आंतरिक जे प्रीतजी ।१८।
भाव तणुं जे स्वरूप आधिदैविक लोभात्मीक रूपजी
तेणे लोभे लोभात्मीक कर्या अे केवल लोभी स्वरूपजी ।१९।
स्वरूप आत्मिक सर्व अंगने प्रगट अेहवुं ध्यानजी
कारूणिक मनोरथ तणे रहयुं न बीजु ज्ञानजी ।२०।
परम प्रिय दीनत्व रूप जे प्रगट थयुं त्यांहां आवीजी
आगम अंकुर मांगल्यार्थे जे होअे सहेज सुभावीजी ।२१।
गदगद कंठे कहे रूक्ष्मणीजी मारे मन अेम भासेजी
मारी तो योग्यता नथी पण भाग्य तमारे थासेजी ।२२।
इच्छा सामर्थथी आव्युं अेहवुं अेहोने मनजी
परस्पर अे सहेज सूचवे हशे काज संपन्नजी ।२३।
मास सुदिन ते घडी सफल जे समय थयो अे प्रसंगजी
श्री गुंसाईजी पूरण गुण सुणी ते वाध्यो मनमां रंगजी ।२४।
अेह मनोरथ मनतणो अव्यक्त अलौकिक जेहजी
ते सघलो श्री प्राणपतिअे सम्यक जाण्यो तेहजी ।२५।
सत्य भाव सत्य संकल्प सद्य ते अंगी कीधोजी
लीला रस विस्तार रमण अर्थे ते सिद्ध करी लीधोजी ।२६।
अंतरंग अंगवद भक्त जे हवा प्रभु उपयोगीजी
अंकित लही समय जोइने मल्यो अेह संयोगजी ।२७।
हे प्राण प्रिय परम पुरूषोतम करूणा सिंधु अपारजी
में प्रथम विनती करी हती ते राजे करी उधारजी ।२८।
अेह मनोरथ मारो पूरण कीधो सकल सोहाग समेतजी
कारण अलौकिकने वली जे मांहां जगत तणुं छे हेतजी ।२९।
प्रभुनी रूचीथी प्रागट्य अेहनुं कारण अे मांहां जाणीजी
रसावेस प्रसन्न प्राणपति देखी मन अेम आणीजी ।३०।
इच्छाथी प्रगट्या श्री गुंसाईजी कलीमांह मारग काजजी
ईच्छाथी उछाह तेहोने सुणीअे श्री महाराजजी ।३१।
करी दंडवत कृपानिधिशुं कृपा शक्ति कह्युं अेहजी
जगत उद्धरण उद्धार करेवा करू वीनती तेहजी ।३२।

मारग सिध्ध सिध्ध सामग्री थई प्रभुने सामर्थजी
कृपा सकल पूरित रस पूरण तेह तणो छे अर्थजी ।३३।
अति परिताप ताप परिपूरण प्रगट्या अेहोने आजजी
आपुं प्रगटवुं सींचन करवा कहेतां आवे लाजजी ।३४।
महेद भक्त कृष्णदासी आदि जे रस उपयोगी जेहजी
इच्छाथी आगल प्रगट्या अभिलाष करे छे तेहजी ।३५।
परम रसिकवर गोकुलपति अति वल्लभ मन मांहजी
ताप जनित आतुरताअे आरति लागी मन मांहांजी ।३६।
अे अनुदिन चिंतन चितमां ते पडे नहीं चित चेनजी
चितवे चतुर शिरोमणी जोवा लोभी अेहोना नयनजी ।३७।
व्याकुलता अे भाव तणी ते शांता क्येमे न थायजी
प्रीट सुंदरवर तम साथे ते अेणी पेरे अकुलाअेजी ।३८।
समजे नहीं पोते थकी पोताना जे छे भावजी
प्रगट्यो सहेजे अेह तमारा आगमनो अनुभावजी ।३९।
अेह वचन सुणी कृपा शक्तिनो कीधो बहु सतकारजी
निज इच्छाते करी विनती प्रसन्नता नहीं पारजी ।४०।
अंग अंग भाव पूरित थया मन मांहे अेह विचारजी
लीला नित्यथी करवी जे लीलानो विस्तारजी ।४१।
अति प्रमोद फूलेसुंदरता प्रगट थई जे अंगजी
अनुभवी जोइ मोहित थया जे अनुभवे अनुदिन संगेजी ।४२।
आ लीला वैष्णव साथे सामग्री सर्व समेतजी
तेह भाग्य सराये तेह तणां ज्यां प्रगट्यानुं हेतजी ।४३।
विलंब नहीं आतुरताने जे इच्छा तेह प्रमाणजी
करवा दान सहित अेणी पेरे अेहवा परम सुजाणजी ।४४।
स्वतः जगत मंगल हित अर्थे निःसाधन फल रूपजी
मूलभुत शुध्ध पुरूषोतम उत्तम अेह स्वरूपजी ।४५।
गर्भ स्थिति न्यांअे रूक्ष्मणी कर्या परम सौभाग्यजी
जाण्युं न जाअे समज न पडे जे अद्भुत कोण अे भाग्यजी ।४६।
सौभाग्य तणुं सौभाग्य अने महाभाग्य तणु फल जेहजी
ते स्थापित कीधुं श्री मात चरणे जश विस्तार्यो अेहजी ।४७।
माघ मास प्रफुल्लित हवो ने शुक्ल पक्ष सुभ वंतजी
प्रगट थया रसना अंकुर आगम थकी अे वसंतजी ।४८।
खट रूतुमा जेष्ट शिरोमणी कारण रसनुं जेहजी
ते माटे अे मासे स्थित करवुं कारज रस तेहजी ।४९।
श्री गुंसाईजीना भाव विवसथी प्रविष्ट थया जेम जोतजी
श्री रूक्ष्मणी गर्भमां मणी भूषण अति प्रगट्यो उद्योतजी ।५०।

तेणे विद्युलता कोटि प्रकाश रूप श्री रूक्ष्मणीजी सोहेजी
परम अगणितानंद स्वरूपे स्थिति कीधे सहु मोहेजी ।५१।
ते दिवसथी जगतमां प्रसर्यो सौभाग्य जनित आनंदजी
सकल मोदे फूले प्रफुलित थया हवो ते सुखनो कंदजी ।५२।
आनंदने आनंद वधाइ मोदने मोद अपारजी
सुखने सुख उपज्युं घणुं कांइ शोभानो नहीं पारजी ।५३।
कामे कठिण कमान कसी मन पामीने अति खेदजी
रति सु रति करसे अे प्रभ मनमां जाण्यो अे भेदजी ।५४।
तेह दिवसथी प्रीय आतुरने खेदे मारे बाणजी
व्याकुल करे विरह उपजावे केहेनी करे न काणजी ।५५।
अज्ञान अधमता प्रबल हता ते थया आप गति मंदजी
जीव जाचना टली जगतनी मेटयो सकल दुःख द्वंदजी ।५६।
तिमिर दंभ ने दोष दूराग्रह अहंकार पाखंडजी
कपट कुटिलता अे कलीयुगनी टली सकल ब्रह्मांडजी ।५७।
सुर नर मुनि सकल देवना पति ज्यां त्यां जैजैकारजी
सहेज मोद सहुने प्रगट्यो पण समजे नहीं प्रकारजी ।५८।
प्रगट हशे जेहने हित अर्थे तेहने मोद न मायजी
आगम ने आगमन सूचवे अतिशे आतुर थायजी ।५९।
नव अंकुर प्रगटित रसावेली नवदल नवली प्रीतजी
फेली पोहोंची प्रेम भर पूरित आशा रसनी रीतजी ।६०।
सामग्री लीला उपयोगी सहित सकल रस साजजी
सिध्ध थई अने आगलथी पहेली जे प्रभुना हित काजजी ।६१।
ते सहु भगवदिने दिन प्रतिक्षणुं वाधे नवली भांत्यजी
अंतर स्थिति श्री रूक्ष्मणीजी ओपे अनुपम कान्तजी ।६२।
अंतरथी आभा झलके सर्वांगे जोती अपारजी
अंतर द्रष्टे करी अंतर गति निरखे वारंवारजी ।६३।
अेवा अनुभवथी श्री रूक्ष्मणीजी हरखे हरख अपारजी
मनोरथ अंत थकीअे अधिक ते कीधुं तेणी वारजी ।६४।
मनोरथ हेत सत्य सहु करवुं अेहवा आरति हरणजी
श्रीमात चरणने अंगे प्रगट्या गर्भ तणा अनुकर्णजी ।६५।
पांडु वरण प्रगट्यो अंगे ते लौकिक भासे भांतजी
रसिक राय तणो जस प्रगट्यो उज्जवल तेहनी कांतजी ।६६।
सौभाग्य भरे गर्वे गौरवथी चाली सके न व्यर्थजी
सोच्या मांहां श्रमित थई आवे नहीं वचन सामर्थजी ।६७।
अेह स्वरूप रसे रूची वाधी बीजुं कांइ न भावेजी
मन वांछित मनमा इच्छेथी भोजन अरूच जणावेजी ।६८।

बल सूचे अंतर अतुल बल तेथी निर्बल अंगजी
प्रभुथी मन अलगुं नव थाअे थई ते मनसा पंगजी ।६९।
भक्ताभरण गर्भ तेणेथी रूची नहीं आभरणजी
अंग तणी संभाल नहीं अेहवा प्रगट्या आचर्णजी ।७०।
जेम जेम सौभाग्य कला वाधे तेम तेम थाअे कृश गात्रजी
विधि विधि वात्सल्य विवेक करे त्यां सघला गुणीजन मात्रजी ।७१।
सहीयर समाणी सहु मली आवे बोलावे लेइ नामजी
वात करे वल्लभनी अेहने अेह थयुं अभिरामजी ।७२।
आप सुशील सुभाव थकी ते वचन दूरावी बोलेजी
सहेज वचन रस भरथी प्रगटे जेम रसना पट खोलेजी ।७३।
मंगल सकल मातु पदकमले लपटाणा रहे संगजी
प्रभुता भावे वचन नव बोले समजावे भ्रुअ भ्रंगजी ।७४।
स्तन उपर श्यामता तेहनी शोभा प्रगटी आपजी
दुग्ध पात्र अेक चक्रवर्तीना उपर कीधी छापजी ।७५।
अेह स्वरूप प्रगट जोयानी सादर उपजी मनजी
बीजुं कांइ रूचे नहीं अेहोने मन लाग्युं निशदिनजी ।७६।
क्यारे प्रगट हशे अे परम धन देखीश मारे नयणजी
क्यारे उछंग लेइ सुनीअे माधुर्य मधुरा वेणजी ।७७।
क्यारे हुं मारा वल्लभने करावुं स्तन पानजी
क्यारे अेहोनी पदरज मुने करशे अेहवुं दानजी ।७८।
क्यारे बेहु करसुं लेइ उरसुं चांपी चुंबन देसुंजी
कोडे करी अेहोने बोलाववा शा शा नाम धरसुंजी ।७९।
क्यारे अवनी पर उर धसता मारे सनमुख आवेजी
चूटकी देइ साने बोलावुं अे कौतिक मन भावेजी ।८०।
क्यारे उवटणे नवरावुं केशर कुमकुम रोलजी
उपर जल वारी नाखुं काजलबिन्दु करूं कपोलजी ।८१।
गुंथुं चोटी अंजन नयणे भूषणनो नहीं पारजी
कटि पायल घुंघर घमघमती नेपूरनो झमकारजी ।८२।
क्यारे खेलवणा कोयल फीरकी कंदुकनी जोडजी
खेलावुं सनमुख बेसादिने पोहोंचे मारा कोडजी ।८३।
क्यारे आवी उरसुं लागे कंठ मांह बांहय घालीजी
मुख चुंबुं उरसुं चांपीने शीतल थाअे छातीजी ।८४।
अेणी पेरे आशा रूपी सागर उरमां न समायजी
उपजे तरंग मनोरथना ते रोक्या क्येमे न जायजी ।८५।
रूचिर चित्र जुअे उर अंतर अेहोने सादर अेहजी
क्षणुं क्षणुं प्रति करे नौतम पेर अनुसंधान न देहजी ।८६।

भावात्मिक नेत्रे अविलोके सांप्रत्यनी अनुहारजी
लोचन प्रेम स्निग्धता पूरीट शोभा परम सुचारजी ।८७।
मास मासे रस पूरित होय शोभा प्रगटी अंगजी
मन आनंद कोड पूरणनो वाधे प्रतिदिन रंगजी ।८८।
अेवुं मुख श्री रूक्ष्मणीजीनुं सगर्भ सुंदर जोइजी
श्री गुंसाईजी कारण समज्या ने जोता तृप्ती न होयजी ।८९।
गर्भ सौभाग्य प्रगट हवा कांइ तेह तणु नहीं मानजी
भक्त तणा अखिल सौभाग्य तणु छे अेह निदानजी ।९०।
होशे पुत्र महागुण मंडित विचार्युं मन अेमजी
स्वतंत्र पधार्या पोते ज्यांहां मनोरथ नहीं गम्यजी ।९१।
आनंदया अतिशे मनमांहां रूक्ष्मणीजीसुं अेम बोल्याजी
कारण रूप प्रगट होशे नहीं को अेहने समतोलजी ।९२।
रसभावे संपन्न रूक्ष्मणीजी बोल्या मुसकायजी
सत्य अेह जे तमे कहो छो आगम अेवो जणायजी ।९३।
परस्परे हरख्या बेहुने मोद तणो नहीं पारजी
सनमुख मुख जोइ रहया लोचन चाली जल धारजी ।९४।
श्री गुंसाईजी आनंद विवसथी उरमांह न समायजी
प्रसन्नता अंतर गत्यनी कहेवा अतिशे अकुलायजी ।९५।
मारग प्रगट करण हित ने जे स्वरूप गोपनअर्थजी
अेवा नाथजीसुं हित अति मलवानो कर्यो मनोरथजी ।९६।
प्रगट्यो मोद रह्युं नव जाअे कह्युं वेगे त्यांहा जइअेजी
आनंदे अेकांते जइ अने अेह वधाइ कहीअेजी ।९७।
शोभा रूप परम शोभाजी तेडया तेणी वारजी
कह्युं अेह प्रागट हशे ते सार तणु छे सारजी ।९८।
लोकोतर अनिरवचनीय जेहनो पार न लहीयेजी
प्रादुर्भुत हशे अहींआ ते माटे तमने कहीअेजी ।९९।
साज सहु सौभाग्य तणा लेइ रहेजो ततपरताअेजी
जे ज्यां जोइअे ते त्यां करजो समजी सत्वरताअेजी ।१००।
तेह समय तमथी थई आवे मनोरथ मनमा जेहजी
अलौकिक अभिलाषे करजो उपजे तमने तेहजी ।१।
परमोत्कर्ष स्वरूप प्रगटशे सार तणु जे सारजी
मंगल आरती जग मंगलने करजो तेणी वारजी ।२।
सुणी वचन श्री गुंसाईजीना शोभाजी अेम बोल्याजी
तमथी भाग्य अमारा फलशे अेह वचन कही फूल्याजी ।३।
श्री गुंसाईजी रथ उत्सव करीने पधारे गोवर्धनजी
शोभाजीशुं शिक्षा देइ अने करयुं गमनजी ।१०४।

तेह दिवसथी शोभाजी करे त्यां अनेक प्रकारजी
रूक्ष्मणीजीने पूछी पूछी रूचतुं करे तेणी वारजी ।१०५।
स्वरूप तणा अभिलाषी जे छे तेहने कहयुं वृंतातजी
प्रथम आगमन ने वली अे सुणी थया मनोरथ अंतजी ।६।
मंगल सकल हवा मन मांहां करे ते मंगल काजजी
मंगल निधी आगमन थकी सहुहोअे मंगल साजजी ।७।
चोक साथीआ विविधी प्रकारे फरी करी राखे छे तेहजी
चित्र करे नौतन पेरना त्यांहा भर्या रंगसुं तेहजी ।८।
बहु विधि रच्युं सेन मंदिर ते सकल सुख तणुं निधानजी
ठाडी छात विचित्र समारी उपमाने नहीं आनजी ।९।
आरती पूरे अति आरतशुं भरे ते थाल मोतीजी
सहु को मली आनंद मंगल गाअे परम पनोतीजी ।१०।
मंदिरमां दीप अजवाळे उखेवे अगरना धूपजी
मनोरथ अनेक करे मन गमता धरी ते भाव अनूपजी ।११।
जोयानी आरतुरता ने आगमन तणो आनंदजी
अे रसनो स्वाद अनुभवी जाणे केम कहीअे मति मंदजी ।१२।
अेहवे श्री गुंसाईजी जेणे दिवसे पहोंच्या श्री गोवर्धनजी
श्री नाथजी सामा आव्या ने हरख्या अन्यो अन्यजी ।१३।
हर्ष भरे मुख वचन न आवे जुअे सनमुख उभाजी
प्रसन्नता आनंद परस्पर थई अपरमित शोभाजी ।१४।
अेहवा प्रसन्न जोइ अेहोने श्री नाथजीअे अेम जाण्युंजी
जगत तणुं भूषण प्रगट्युं अेहो घेर एम मनमां आण्युंजी ।१५।
क्षणुं अेक रही वचन बोलीआ अेम सुणीअे अेह वधाइजी
पूर्ण काम प्रगट हवां ते सुणी मन फूल न मायजी ।१६।
परस्परे सनमान करी उपकार परस्पर जाण्योजी
परस्परे अेम प्रेम भरेथी स्नेह उभयता आण्योजी ।१७।
दिन दिन प्रति शोभा वाधे ने दिन दिन अधिक प्रतापजी
आरत हरणे प्रगट आगमनथी मिटया आधि संतापजी ।१८।
प्रागमां प्रागट्य तणुं जे कारण अे जाणे छे आपजी
त्यांहां न रहया मननी फूले आव्या हरवा संतापजी ।१९।
श्री नाथजीशुं नेह निरंनर तेहमांहा बहु विस्तारजी
मुक्ष गोपनाअर्थ अवांतर लीला अनेक प्रकारजी ।२०।
नित्य नौतन नाना विधिना ते करे प्रकार अनेकजी
भावपूर्वक मन आनंदे भांति भली अेक अेकजी ।२१।
श्री गुंसाईजी श्रींगार नौतन नित्य करे अपरमित प्रीतेजी
समजी भाव करे अति आदर मानी ले हित रीतेजी ।१२२।

हवे करूं वर्णन ते स्थलनुं प्रभुना प्रागट्य ज्यांहाजी
अलौकिक सामग्री सर्वे प्रगट थई छे ज्यांहांजी ।१२३।
प्रागनगर महानगर निरूपम तीर्थ प्रयाग राजजी
त्यां अति पावन वहे त्रीवेणी जगत तणे हित काजजी ।२४।
नवल धाम सोहे अति सुंदर छजा अटाली सारजी
द्वारे जडित कनक मणी मुक्ता झुमकनो नहीं पारजी ।२५।
कनक स्थंभ पांच पिरोजा जडया अपरमित सोहेजी
मणीमय खचित तिबारी आंगण दीठे सज्जन मोहेजी ।२६।
जाली गोख विचित्र नाना विधी शोभानुं नहीं मानजी
सोहासणी सहुको मली मली करे ते बहुअ पकवानजी ।२७।
जलेबी घेर घेर करी अने पागीआ मिसरी मांहेजी
दलीआ बुंदी सेव तणा लाडु कीधां छे त्यांहजी ।२८।
चारोली पागी मिसरीअे तेहना लाडु कीधाजी
बींज तणा लाडु बहु विधिना सुंदर सिध्ध करी लीधाजी ।२९।
सेव सजोरो सुतर फेणी सीरा गुंझा सारजी
वडा खीर दहीं माखणना मांहे स्वाद तणो नहीं पारजी ।३०।
खाजा मठडी दाल पचाइ नाडी मनोहर भोगजी
मगदल मालपुआ सुखपूरी करी प्रभुनेसुख उपयोगजी ।३१।
डेहेरचडी दहींथरा खुहो लेहेचोइ कीधी सहुजी
तिलसांकरी सकरपारा इंदरसा कर्या बहुजी ।३२।
खांडपापडी पूरी धारी ने वेसण केरी सेवजी
कपूरनाडी बावर अेणीपेरे कर्या सर्व ततखेवजी ।३३।
अेहवा भोग अनेक भांतना क्यांहां लगी कहीअे नामजी
पछी मंदिर आगल साज ते कीधा अति अभिरामजी ।३४।
पट वस्त्रे मंडप छाहया ने धजा पताका जोडजी
कदली स्थंभ बारणे रोप्या सहुने उपजे कोडजी ।३५।
आंगणमां साथीआ सुंदर तोरण बांध्या द्वारजी
जलहलती झुमक दीवी अे दीपकनो नहीं पारजी ।३६।
कुपवाटीका घर घर सोहे वृक्ष ते नाना भांतजी
कुंडीओ जल केलि करयानी सहु आनंद उर न समातजी ।३७।
नाना पक्षी शब्द सुशोभित करे ते मधुरूं गानजी
ज्यांहा त्यांहा मोर कला करी नाचे संगीत गानजी ।३८।
चंदन छींट शेरीअे छिरकी ज्यांहां त्यांहां अगरना धूपजी
घेर घेर कनक कुंभ भरी राख्या रचना करी अनूपजी ।३९।
सकल मंडल मंडित संपूर्ण बहु विधि भवन समार्याजी
उपमाने समोवड को नहीं इंद्र सदन ओवार्याजी ।१४०।

प्रभुने आगमने आनंदित सहुने सहेज उत्साहजी
दशो दिशा प्रसन्न थई अने प्रगट उद्योत उमाहजी ।१४१।
गगन नक्षत्र सहित निरमल थयो वाणी आपु गति भूल्याजी
कमलचंद्र सूर्यवंशी बेहु अेके काले फूल्याजी ।४२।
पृथ्वी थकीअ प्रगटे मांगल्य शब्द उच्चारजी
देश देश पूर नगर ज्यांहां त्यांहां आनंदित नरनारजी ।४३।
शीतल मंद सुगंध सहित त्यांहां वहे ते त्रिविध समीरजी
छए रूतु अेकी रीते विलशे बोले कोकिल कीरजी ।४४।
गुल्मलता द्रुमवेली नवदल कुसुमित फल संयुक्तजी
कुसुम कुसुम मकरंदे मधुकर गुंजे अति उनमतजी ।४५।
रस सागर उछलित थई अने कीधी रसनी वृष्टिजी
आनंदे रसपूरित रसभर सींचन कीधी सृष्टीजी ।४६।
लौकिक अलौकिक बाह्याभ्यंतर प्रगट भाव तेह वारजी
सुंदरीअे बहु विधि कीधा त्यांहां प्राण देह श्रींगारजी ।४७।
अेह अलौकिक उत्साह अपरमित अलौकिक सर्व प्रकारजी
अलौकिक द्रष्टे लहीअे लौकिक न जाणे लगारजी ।४८।
सदन सुतिका सुंदर सुख निधि शोभानो नहीं पारजी
त्यां पोढया श्री रूक्ष्मणीजी आशाभर जगत तणे उपकारजी ।४९।
रतीने रती उपजे घणी अनंग ने अनंग विशेषजी
रसने रस अभिलाषा प्रगटी आगमने उदेशजी ।५०।
दश मास दश विधि वनितानो विप्रयोग रस स्वादजी
द्रग मन संग परस्पर जागर कृसता रति ने उनमादजी ।५१।
लज्या त्याग मुर्छा इत्यादिक अनंग दिशा जे नामजी
अे रसनो अनुभव कराव्यो भक्तने पूरवा कामजी ।५२।
प्रागट्यनो अंकुर प्रगट्यो लही आतुरता ते निदानजी
प्रगट थई श्री रूक्ष्मणीजीने व्यथा मध्यानजी ।५३।
शोभाजी अति आतुर थई अने दाइ वेग तेडावीजी
मोद भरी सनमान सहित दुल्ली धगरण त्यां आवीजी ।५४।
पछी महा मोद भर्या जोशीने तेडाव्या तेणी वारजी
स्वच्छ जले कुंडी भरी गंगा आवी दे धारजी ।५५।
करी प्रतिष्ठा वेद मंत्र विधि सिध्ध करी राखी जी
मंगल साज करी बेसाडया विनय वचन बहु भाखीजी ।५६।
सौभाग्य सदनमां अेह सुणी त्यां मलीयो सहु परिवारजी
शोभा रूप परम शोभाजी करे अनेक उपचारजी ।५७।
पित्राण बहेन लक्ष्मीजी सत्याजी मन हुल्लासजी
महा भाग्यरास कृष्णदासीजी उभा छे त्यांहां पासजी ।१५८।

उदर व्यथा मध्यान थकी थई अधिक तेह न सहेवायजी
उपचार करे रूक्ष्मणीजीने पण शाता केमेय न थायजी ।१५९।
जोतसीने पूछे जइ व्यथा केम भांगे अेहजी
दैवी ग्रह काल दरसी बोल्या त्यांहा प्रश्न करी अने तेहजी ।६०।
महा भाग्यवती घटिकामांहां मंगल तणों शुभ कालजी
तेह तेणो पेंडो जुअे छे सुख थाशे तत्कालजी ।६१।
भाव जनित व्यथा ते उपचारे नहीं साध्यजी
उपाय न कोइ लागे अेहोने गोकुलपति छे आराध्यजी ।६२।
अे स्वरूप जोयानी आरति विण दीठे न रहेवायजी
विलंब थाअे विलंबे नहीं मन ते आतुरता न सहेवायजी ।६३।
अे व्यथा अंतरथी अेहोने प्रगटी तेणी वारजी
भाग्यवान अलौकिक अेहने शा कीजे उपचारजी ।६४।
अेम करतां संध्या आवी सौभाग्यवती साक्षातजी
जोशीअे त्यारे घटिका मेली गत्य जाणवा सत्यजी ।६५।
नवल नायका प्रथम घडी पूरण थाता मन वाध्युंजी
छप्पन पल अति महा सकोमल सूक्षम मान ते साध्युजी ।६६।
भक्त महातम प्रगट करण ने भक्ताधीन जे नामजी
भक्त तणे रस वस व्हालो ते भक्त तणो प्राण अभिरामजी ।६७।
उदर उपर कृष्णदासीअे हस्त फेरव्यो आपजी
व्यथा सद्य भांगी ततक्षण ने मिटयो सकल परितापजी ।६८।
भक्त भाग्य फल उदय ते परम गौरवनुं मूलजी
आनंद मात्र करपाद मुखोदर सर्व रसे अनुकूलजी ।६९।
परम अलौकिक परम ज्योत ते पुष्ट पुष्ट हितार्थजी
विरह कलेश नाशन फल दायक शीघ्र स्वरूप दानार्थजी ।७०।
भक्त भोग्य आरती विहवल ने भक्त मंगल अवतारजी
श्री गोकुलेश रसार्णव अभिनव पुरूषोतम जे सारजी ।७१।
दीन जन निस्तारण कुल दीपक जे वंसजी
श्री मद वल्लभ कुल सरसीरूह प्रकाश करण कुल हंसजी ।७२।
श्री विठल उदयाचल रस उदयो प्रगट जोत प्रकासजी
श्री रूक्ष्मणीजी प्राची दिशाथी पूरण करवा आसजी ।७३।
अनुराग समुद्र उछल्लित कारण जे भक्त कुमुदनी वृंदजी
श्री विठ्ठलप्रिय आत्मज अनुपम स्वतंत्र आनंद कंदजी ।७४।
अंक भूषण श्री रूक्ष्मणीजीनुं श्री गोकुल सद मणीयजी
रस दायक नायक लही ते आरत भक्त मन तणीयजी ।७५।
सिध्ध सामग्रीनो रस अनुभव करवा अे प्रागट्य जी
आप स्वतः रसदान करवा पुष्ट पुष्ट तणुं जे पुष्टजी ।१७६।

गुण भूषण भूषण नू भूषण जेह स्वयं भगवानजी
वल्लभ देव जलहलतुं ब्रह्म जे नहीं को अे समानजी ।१७७।
अे प्रागट्यनो समय कहुं सर्वोपर जीवन रूपजी
परम सौभाग्य सर्व गुणे रस रेडी करयो अनूपजी ।७८।
ब्राह्मण द्वितिय परार्ध ने स्वेत वाराह अेह कल्पजी
वैवस्वत मनवंतरने मन सेवानो छे जे जल्पजी ।७९।
अठावीसमें कलीयुगमां सक नृप विक्रमादि राजजी
सवंत सोलसे अष्टम वरसे दक्षणायन दिन भ्राजजी ।८०।
हेमंत रूतुने रति उपजि महा मंगल पदनी आशजी
परम पवित्र परम उत्कर्ष मागशीर जे मासजी ।८१।
छय धरम धरमी संयुक्त सप्तमी ने शुक्रवारजी
अमल पक्ष नक्षत्र पूर्व भाद्रपदे जे सारजी ।८२।
सिद्ध योग वाणिजकरणने शुद्ध छे अे पंचांगजी
कुंभ रासी स्थिते चंद्र त्यांहां प्रगट मोद सर्वांगजी ।८३।
अे दिन रात्र प्रथम गतघटी अेक ने पल छपनजी
मिथुन लग्न अे शुभ वेलाअे आनंद उपज्यो मनजी ।८४।
लौकिकमां जेहवे समय जन्म होअे तेहवी सिद्धीजी
अेह समय अलौकिक रस ढळ्यो सर्वोपर कर्यो प्रसिध्धजी ।८५।
श्री विठ्ठल ग्रह परम सौभाग्यवती श्री रूक्ष्मणीजी नामजी
कर्तुमकर्तुंमन्यथा करण ते प्रगट्या पूरण कामजी ।८६।
दुरावी दुल्ली दाइअे कह्युं बेटुआ भयोजी
तेह सुणी मुदित थई कृष्णदासी बोली मेरो गोकुलनाथ आयोजी ।८७।
त्यारे श्री रूक्ष्मणीजी कहेराज करो तेरो श्री गोकुलनाथजी
मेरे तो अबही मंगल भयो आयो प्राण अमारे हाथजी ।८८।
अे वचने उलटथी हरख्या परस्परे तेणी वारजी
कष्ट मिट्युं पहेलुं सहु पेरनुं प्रगट्युं महा सुख सारजी ।८९।
भक्त भाग्य संचित फल्या अति उदित मुदित समुदायजी
ते वरणन इच्छा करूं पण वचने केम कहेवायजी ।९०।
आगल कहुं प्रागट महाउत्सव सर्वोपर जे सारजी
बुध्धि अनुसारे अनुसरीने कांइ अेक करूं विस्तारजी ।९१।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महाअदभुत विचित्ररस
व्याराना गोपालदास विरचित
प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम
प्रथम तरंगे मांगल्य – ५ – पांचमुं
संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य - ६ - छठ्ठुं

श्री श्री गोकुलेशो जयजयति : प्रागट्य सिध्धांतनुं मांगल्य छठुं लखीअे छीअे।
राग : "करूणाते करीने पधार्याजी पोते ते जलघरा मांहेजी"

जय जयकार हवो ते समय परम पुरूषोतम आव्याजी
महा भाग्यरास कृष्णदासीअे गोकुलनाथ कहीने बोलाव्याजी ।१।
ततक्षण थाली वजडावी हर्षशुं नाद ते आनंदे वाध्योजी
ते समय जोतसीअे महा मोदशुं शुभ महा मंगल काल साध्योजी ।२।
शब्द वधाइना सहजे हवा दुंदुंभी बहु विधिना वाजेजी
स्वतः प्रकाशे अति उद्योत थयो शोभा अलौकिक राजेजी ।३।
शोभानुं रूप शोभाजीअे कंचन थाल कर लीधीजी
मुक्ता फलेरे वधावीने मंगलआरती कीधीजी ।४।
जे कोइ इ छे रे अेणे समय तेहना भाग्यनुं शुं कहीअेजी
सुंदरी जोइने सनमुख रहया आनंद उरमांहां उमहीअेजी ।५।
जेवुं अतुल प्रागट्य हवुं तेहवुं दीठुं छे जथारथजी
कोटि कलाअे संपूर्ण सहित अलौकिक सामर्थजी ।६।
लीलानी सामग्री जे नित्यनी सहित थयुं दरशनजी
जोइने चकित ते थई रहया रीझया ते अन्यो अन्यजी ।७।
भाव न पहोंचेरे भक्तना ज्यांहां मनोरथ नहीं अन्यजी
स्वतः प्रागट्य रसदानने तेह थयुंअेहोने संपन्नजी ।८।
विवस थया रे त्यांहां ते समय अभीनवा कीधां छे नृत्यजी
देहनी सुरति भूले थकी प्रगटी अलौकिक जे प्रीतजी ।९।
आनंद भाव जनित त्यांहां आनंद प्रगट्यो ते अेहोना उर माहिंजी
आनंदात्मिकनुं श्रीमुख जोइ आनंदसागरमां अवगाहेजी ।१०।
दंडवत कीधारे वली वली दुःखडा लेइ लेइ ओवार्याजी
दुःसह दुःखरे वियोगना अे छबी जोइने विसार्याजी ।११।
धन्य धन्य माता श्री रूक्ष्मणीजी कूख तमारी सोहागजी
अलौकिक रत्न प्रगट हवुं आज तमारूं महा बडभागजी ।१२।
मिसरी मेली रे मुखमां घणी घणी घणी करी विज्ञप्तजी
परम अजन्म जनम्या तमो मेटी अंतरनी आरतजी ।१३।
दंडवत करी श्री रूक्ष्मणीजीने चरणे नमावे शीषजी
तमो द्वारा अेह प्रागट्य हवुं अेहवा अमारडा ईशजी ।१४।
सर्वस वारूं रे तम उपर मारा ते देहने वली प्राणजी
अदभुत दान अमने कर्युं अेहनुं नहीं निरमाणजी ।१५।
रूक्ष्मणीजी अति मोद भर्या आनंद उरमां न समायजी
मनोरथ दान ते मन लहे वचने केने न कहेवायजी ।१६।

आडी द्रष्टे श्रीमुख जुअे काइं अेक गुरूजननो करे सोचजी
अंतरमां आतुरता घणी मनमां हरख ने संकोचजी ।१७।
सूतिका सदन सोहामणुं शोभा ते लहेरडे जायजी
चोंहो खुणे दीपक जलहले मंगल मंगल मंगल थायजी ।१८।
मोद आनंद उभा बारणे हरखने हरख न मायजी
सर्वस्व पोतानुं ओवारीने सकल जगतमां वहेंचायजी ।१९।
उलट अतिशेरे उलटयो अखिल ब्रह्मांडे न समायजी
फूलने फूल प्रफुल्लित थई प्रसरी ते सर्वने थायजी ।२०।
सृंगारात्मिक नवरस त्यांहां अष्ट ते भावे संयुक्तजी
रसनी सामग्री बहु भांतनी आवीने उभी अनुरक्तजी ।२१।
अष्टमाहा सिद्ध नवनिधि त्यांहां अलौकिक पुरूषार्थ छे जेहजी
भक्ति ते नवधा प्रकारनी दसमी ते पागी छे नेहजी ।२२।
सौभाग्य सकल शोभा भर्या सामर्थ अनेक प्रकारजी
दान ते विविध बहु भांतना गुण सहु उभा छे द्वारजी ।२३।
सकल अलौकिक आवर्या अेहवी सामग्री त्यांहां बहुअजी
उभी प्रभुनी ओलग करे तेहनो पार न लहुंअजी ।२४।
पोते भाग्य विचारे तेह तणा भाव ते आणीने मनजी
अेह समय उपयोग जे आवशे तेहना भाग्य छे धन्यजी ।२५।
सौभाग्य सदनमां भीड अति घणी थई ते तेणीवारजी
घोष सुणी त्यांहां आवीया मलीयो ते सहु परिवारजी ।२६।
वदन निहालीने जोइयुं दीठां ते त्रिभुवन धणीजी
अेहवा जोइने हरखे भर्या आशीष दीधी ते घणीजी ।२७।
वधाइ वधाइ थई रही ज्यां त्यांहां वधाइ बोलेजी
आनंद सागर उलटयो नहीं को अे सुखने समतोलेजी ।२८।
अति उदघोष प्रगट हवो मलीओ ते बहु समाजजी
जे ज्यांथी ते त्यांथी सहु चालीयां मेलीने पोताना ग्रह काजजी ।२९।
सहेज शृंगार जे नित्यना तेहज कीधां छे तेणी वारजी
साडी सुरंग बहु भांतनी सुंदर खासा ने जर तारीजी ।३०।
चोली नौतन नव रंगनी कसी कसकसती तेहजी
अंग आभूषण आनंदना प्रगट्यो छे नौतन नेहजी ।३१।
कंचन कलस संपूरण उपर श्रीफल सारजी
पित वस्त्र परवेष्ठीत कंठमा फूलना हारजी ।३२।
आरती केरे कारणे मंगल थाल ते कीधीजी
दधि दुर्वा गंधाक्षत कुम कुम ईंडी पींडी लीधीजी ।३३।
मुक्ता फलरे वधावाने पुष्प हेम रजतना मांहेजी
बीडा लीधारे संयोगना दीपक प्रगट्या ते त्यांहेंजी ।३४।

मंगल कलस लेइं सोहासणी को लेई चाल्या मंगल थालजी
को सोंधा को उवटणां लेइ अेहोना भाव रसालजी ।३५।
अरगजा केशर घोलीने लीधा ते नवराववाना साजजी
भाव जनित सामग्री अंगनी लीधी ते व्हालाजीने काजजी ।३६।
पकवान अनेक प्रकारना करी करी राख्या छे जेहजी
उत्सव केरे कारणे भरी भरी साथे लीधा तेहजी ।३७।
जूथ आपापणे मली अने उलटे चाल्या ते सहुजी
कोइ कोइने रे पडखे नहीं समृद्ध मलीय छे बहुजी ।३८।
आपापणे उत्साहे भर्या करे मन गमतुं ते गानजी
आनंद शब्द ते उचरे जै जै मांगल्य थयुं ध्यानजी ।३९।
को अंतर गति सूचवे वारूं हुं सर्वस्व आजजी
को कहे आलिंघन देइश मेटी ने गुरूजन केरी लाजजी ।४०।
को अंतरमा अनुभव करे को आतुरता न सहेवायजी
को कहेने मारग आवे नहीं निमेष ते सतजुग थायजी ।४१।
कोअे मनोरथ मन धरे जेह छे रसनी रीतजी
को वात्सल्य मनमा करे को मनगमती प्रीतजी ।४२।
आकर्ष्या गुणे गुणवंतने ठेलाते अभिलाषे रसालजी
केशथी कुसुम खसी पडे अंचल पटनी नहीं संभालजी ।४३।
अेहवे अनेक भावे भर्या अनेक भांतना जे भक्तजी
श्री मुख जोवाने आतुर थई आवे छे धसमसता उनमतजी ।४४।
को कर कंकण खलके उरमांहे उर पर हार ते हिंदोलायजी
कटि सुक्ष्मनो सोच करे नहीं उर नितंब अति भारी थायजी ।४५।
नकवेसर मुकता ललके घणुं करे अधर पर ते जाणे नृत्यजी
घुघर धमके कटि मेखला जाणे करे छे प्रभुनी कृत्यजी ।४६।
चरण अनुपम घुघरा विंछीया ने पूरनो झणकारजी
गोफणी घुंघरडी रे धमकती तेहनो नाद अपारजी ।४७।
श्रमित थया रे श्रम जाणे नहीं झलके ते आननकपोलजी
नीची द्रष्टे रे जुवे नहीं चढयुं मन मनोरथने हिंदोलेजी ।४८।
नेत्र तृषित ने हर्ष हर्षित भावे आकर्षित छे अेहजी
अनेक मनोरथे आवर्या विकल संभाल नहीं ते देहजी ।४९।
अंगे अंगने आरती हवी तेहनुं अंगज साक्षजी
पृथक मनोरथ जेहना रसभावेअलगा अभिलाखजी ।५०।
प्राण ते देहात्मिक थई रहयो मनमा मनोरथ केरे काजजी
स्वरस परस श्री अंगनो अनुभव थाशे अमने आजजी ।५१।
परवत सृंगथी जल उत्तरे तेहने रोकवा को सामर्थजी
अेणी पेरे धाया रे आतुर थई व्हालाने जोवानो छे अर्थजी ।५२।

अतिसे आरत भरसुं उलटया	मनमांहे पूरण हेजजी	
वाने वेगे ते आवीआ	जेम आवे अचानक तेजजी	।५३।
आनंद रूपीरे तरंगिणी	रस सागरअे राजद्वारजी	
अेणी रीते आवी मल्या	जोया ते प्राण आधारजी	।५४।
श्रीमुख कोमल सोहामणुं	रूप ते कोटि अनंगजी	
केश ते खीटलीआला मंजुल	भाल कपोल सुरंगजी	।५५।
भ्रकुटि कुटिल सोह्यामणी	जाणे कामिनी कामकमाणजी	
दीसे सूक्ष्म बल अति घणुं	नयणा नायकना लघु बाणजी	।५६।
नासिका नवल निरूपम	सूचन नाना सुगंधजी	
गल स्थल ते सुंदर धणुं	करण युवतिना जाणे फंदजी	।५७।
अधर अरूण अमृत रस भर्या	तेहनी उपमाने नहीं आनजी	
दीठेरति अभिलाषा उपजे रस	व्याकुलनुं जीवन दानजी	।५८।
ठोडी स्थल रे सोहामणा	रस संपूरण पूरण कामजी	
आवे ते त्रिषित रसपानने	तेहने अेहज छे विश्रामजी	।५९।
ग्रीवा गुण निधीनी गुण संपूर्ण	भुजवर दीर्घ रूदय विसालजी	
उदर नाभी कटि जंघ जुगल	त्यां प्रगटित नूतन अंग रसालजी	।६०।
चरण अरूण अति चंचल छबी	नखमणी नवल अंकुरजी	
ज्यां रे जोउं ते अंग रसे भर्या	रसनी खाण रसे भरपूरजी	।६१।
आराक्तता सर्वांगे अति घणी	दीसे परम शोभायजी	
श्री कर कमल मुद्रीत बेहुं	चलण वलण चंचलतायजी	।६२।
रसना भाव मुठीमां राख्या छे,	गुप्त प्रकारे तेहजी	
जेने कारणे पोते प्रगटीया	करमांहे लीधे प्रगट्या तेहजी	।६३।
विहंसीने आनंदे श्रीमुख थकी	प्रगटे छे लघु मधुरे स्वरे रावजी	
सत्कार करी सहु भक्तने	पूरण कीधा रसना भावजी	।६४।
रस रमणीय सकल अंग जोतां	ते अभिनव उद्योतजी	
दीपक अंतर पुर आछादीय	बाहेर प्रगटे ज्येम जोतजी	।६५।
स्वरूप रसात्मिक अति रस भर	दीसे बालकने अनुकर्णजी	
समय विरूध्ध ते समय भक्तने	कर्या ते समय रस पूर्णजी	।६६।
ते अभिलाषा जे छे अंगने	कर्या मनोरथ पूरण दानजी	
पुरूषोतमने अतुल सामर्थथी	दर्शन मात्रे कर्या सनमानजी	।६७।
को जोइने मोही रहया	केहेने देह न संभाळजी	
को दिगमूढ थकित थया	केहेना भाव रसालजी	।६८।
को अनुसंधान न देहनुं	को मूर्छित थयां गति पंगजी	
केहेने पोतानुं सुझे नहीं	को रोमांचित थयां अंग अंगजी	।६९।
को भामणा लेइ बेहु करे	व्हालोजी उछंगे लीधाजी	
स्वरस परस करी सुख हवुं	मनोरथ मन मानता कीधाजी	।७०।

केहेने हरख आंसु नयणे वहे   केणे दंडवत कीधा बहुयजी

उग्र मनोरथ तेह समय   कहेतां पार न लहुंयजी   ।७१।

वाजिंत्र वाजे बहु भांतना   श्री विठ्ठलजीने द्वारजी

सहु कोइ आव्युं रे उलटी   आंगणे भीडनो नहीं पारजी   ।७२।

ताल पखावज आवज वाजे   नगाराना निरघोषजी

पंचशब्द रे वाजे घणा   प्रगट्यो ते अतिसय उद्घोषजी   ।७३।

स्वर शहेनाइना सोहयामणा   झांझ नफेरीना नादजी

वीणा वंस मधुर स्वर   ढोल ढोलकी वादो वादजी   ।७४।

सारंगीना स्वर सोह्यामणा   तंबुरे तानना तरंगजी

मानसुं गान करे गुणीजन बहु   स्वर संगीतना रागजी   ।७५।

जंत्र रवावने झालरी   कडताल ने मुख चंगजी

अेवाअनेक ते अभिनवा   अतिशय वाध्यो छे रंगजी   ।७६।

सकल नगर रे गाजी रहयुं   कान पडयुं न संभलायजी

ज्यां त्यां जैजैकार थई रहयो   अे सुख कोटि ब्रह्मांडे न समायजी   ।७७।

सकल जगत ब्रह्मांडे आवर्युं   आनंद प्रसर्यो सर्वत्रजी

ज्यां जोउं त्यां आनंद घणो   नहीं को आनंदथी अन्यत्रजी   ।७८।

भक्त ते नाचे रे मोद भर्या   अंग अंग प्रगट्यो छे नेहजी

उनमत थया रे माने नहीं   भूल्या ते देहने गेहजी   ।७९।

हाथ जोडी अे जोडे थई   अेक अेकने कंठ दे बाहेंजी

नृत्य करे रे नवली पेरे   गाअे ते मनगमतुं त्यांहेंजी   ।८०।

गदगद कंठे रे बोले नहीं   लाग्या आनंदना उर बाणजी

अेक आलिंगन देइ रहे   रहित देह अनुसंधानजी   ।८१।

एक जूये एक जोटी लिये सनमुख   एकने कंठे देई हाथ

आगल चाले हिंदोला देइ   वली फरी चांपे ते साथजी   ।८२।

अेकभुज भीडी उरसुं   रहे पोते ते उर मांहेजी

हर्ष आंसु रे नयणे वहे   कंठथी छूटे नहि बांहजी   ।८३।

अेक हमची खेले हरखे भर्या   अेक भमरी दे भांत अमोलजी

नृत्य करे नाना विधि नौतन   मुखमां भर्या छे तंबोलजी   ।८४।

अेक बेलडीअे बेहु जन वलगे   आणी न गुरूजन केरी शंकजी

नर नारी सहु अेकत्र थया   गिणे न राजा ने रंकजी   ।८५।

अेक प्रमुदित थई करताली देइ   हंसी हंसीचांपे उरशुं हाथजी

अेक कहे भाग्य तुमारे अेम हवुं   अेम कही चरणे नमावे माथजी   ।८६।

अेक कुमकुम लेइ मुखे मरदे   अेक ते छिरके रोरी रंगजी

अेक ते मिसरीअे मुख भरी   भुज भरी चांपे छे अंगजी   ।८७।

अेक जलेबी लावे अति घणी   मेले परस्परे मुख मांहेजी

आप संभाली कोइ नव सके   सहु मन मग्न थया सुख मांहेजी   ।८८।

तेल फुलेल गुलाब चमेली ढोले ते मस्तक मांहेजी
चरणे थई अने चुइ पडे कीच मची आंगण मांहेजी ।८९।
केसर चंदन छांटणा अरगजा उतम अबीरजी
सौरभ सकलना सिधुंनुं वही चाल्युं जाणे नीरजी ।९०।
अेक भामणा लेइ परस्परे चरणे नमावे छे शीषजी
अन्यत्र भाव केहेने नहीं जाणीने गोकुलाधीशजी ।९१।
पोते पोतानुं भूली गया अंग अंग प्रगट्यो छे नेहजी
अलौकिक आनंद रसमां पागीने आनंद आत्मिक थयो देहजी ।९२।
अेक भाग्य कहे पोतातणुं धन्य अमारो अवतारजी
जेने हेते प्रागय हवुं माने छे तेहनो उपकारजी ।९३।
केहेनाअंचल पट छूटी गया केहेनी त्रुटी मुकता मालजी
कंचुकी कसण थोभे नहीं आभूषणनी नहीं संभालजी ।९४।
अेक न्योछावरी करी प्रिय उपर आपे परस्पर सर्वजी
अंग आभूषण ने पटवस्त्र जे मोती माणेक द्रव्यजी ।९५।
अेक सर्वस्व ओवारी आपणुं मेलीने अंतरनी लाजजी
पोते पोतानुं राखे नहीं मारे मन वांछित थयुं आजजी ।९६।
को अेक आव्या रे मागवा तेणे दीठो अेह प्रसंगजी
सहु पोतानुं आपी रह्या अेवो प्रगट्यो मनमां रंगजी ।९७।
मागण मनोरथ धरी जे आव्या तेथी कोटि थयुं संपन्नजी
तेना कुलमां कहेने मागवा मनमां मनोरथ रह्यो न अन्यजी ।९८।
को आश्चर्यें रे मोही रह्या को आनंदमां थया लग्नजी
को कोलाहल जोइ रह्या को भावे थया रसमां मग्नजी ।९९।
नगर सहुने उलट अति घणो थई रहयो घेर घेर जैजै कारजी
मंगल गाअे सोहामणी कीधा ते मंगलआचारजी ।१००।
चोक पूर्या रे त्यां मोती तणा साथीआ सुंदर सोहेजी
उपर कुम कुम केरा छांटना देखी सजनना मन मोहेजी ।१।
कलदी स्थंभ सोह्यामणा घेर घेर मंडप छाया बहुजी
घेर घेर तोरण बांधे मालण घेर घेर उत्सव करे सहुजी ।२।
वाजिंत्र घेर घेर वाजे अति घणा घेर घेर होय नवली रीतजी
घेर घेर न्योछावरी करे नौतन आपेने सजनने बहु प्रीतजी ।३।
घेर घेर हाथा कुम कुमना देइ घेर घेर छिरके रोरी रंगजी
घेर घेर आनंद होय अभिनवो घेर घेर वाजे ताल मृदंगजी ।४।
घेर घेर दीसे अति रळीयामणुं घेर घेर कीधां बहु शृंगारजी
तेसमय मनोरथ अलौकिक मन तणा तेह तणो नहीं पारजी ।५।
देव दुंदुंभी वजाडीया कुसुमनी हवी बहु वृष्टीजी
तेहने असंभवित आनंद हवो पण देखे नहीं को द्रष्टीजी ।१०६।

सुर वधु सुख वांछे छे संसारनुं	गंधर्व गाअे गुण गानजी	
अपसरा नाचे नाना भांतसुं	मनमां मोदनो नहीं मानजी	।१०७।
ब्रह्मा इंद्र महामुनी हरख्या अति	हरख्या मनमां महादेवजी	
लोक लोकना पतीजे अध उरधना	ते सहु आनंदया ततखेवजी	।८।
सात द्वीप नव खंड जे मेदनी	दशो दीशा आनंद विनोदजी	
चौद लोक ब्रह्मांड सकलमां	सहेज प्रगट थओ अेहोने मोदजी	।९।
अगणित आनंद अमित समोहनुं	प्रागट प्रगट हवुं जे वारजी	
ते उच्छलीत थयो सर्वत्रमां	अदभुत आनंदनो विस्तारजी	।१०।
कारण प्रगट्यानुं को नव लहे	जाणे नहीं कोइ अेह स्वरूपजी	
अेहने सहेज प्रगट हवुं	आनंद लक्षणनुं जेह स्वरूपजी	।११।
मागद बंदीजन सहु जस भणे	गंधर्व गाअे छे गीतजी	
मोदसुं हुलसीने सहु आवीआ	आशीष दे छे बहु प्रीतजी	।१२।
विप्र ते आव्या रे हरखे भर्या	कुमकुम अक्षत दुर्वा लइजी	
वेद विद्योगते बहु मंत्रसुं	आशीरवाद आशीष दइजी	।१३।
ज्ञात वर्ग सहु कोइ आवीआ	मलीयो ते कुटुंब परिवारजी	
नीछट नाल वधेरीने	कीधां बालकना आचारजी	।१४।
उवटणा बहु अनुरागसुं	अरगजा केशरे नवराव्याजी	
जै जै शब्द सहु उचरे	स्नेह सहित मन भाव्याजी	।१५।
वाजिंत्र वाजे रे सोहयामणा	बंदीजन जश बोले द्वारजी	
विप्र ते वेद धुनी करे	मंगल गाअे सुंदर नारजी	।१६।
चरणामृत लेइ तेह समय	छीरके छे पोतानो सर्वांगजी	
अंतर बाहेर शीतल करी	मनमां अभिनवो रंगजी	।१७।
नवरावीने अंगुछो करी	आप्यां श्री रूक्ष्मणीजीने उछंगजी	
परस करी अति सुख हवुं	फूल्या ते सर्वांगे अंग अंगजी	।१८।
महाभाग्यवान रूक्ष्मणीजी	नहीं भाग्यने अेह समानजी	
प्रागट्य अतुल परम पुरूषोतम	तेहने करावे छे स्तन पानजी	।१९।
आयुष जस बल वाधवा	विश्व प्रकाश ग्रंथे कही विधिजी	
वेदोक्त वात्सल्यताअे करे सहु	कर्या प्रगट्या जाणीने महानिधीजी	।२०।
दुग्ध ते स्तन धोईने	जमणो मुक्यो श्रीमुख मांहजी	
अति किलकित मुख विकसित कर्युं	सेज्या पर पोढ्या छे त्यांहजी	।२१।
जमणी पाणे सुंदर शोभीअे	हरखे करे छे स्तन पानजी	
माताना मनोरथ पूरीया	कीधुं मन वांछित ते दानजी	।२२।
अति पुलकित रोमांचित हर्षित	गदगद कंठे मनमा आणेजी	
उरसुं चांपीने चुंबन देइ	भाग्य पोतानुं वखाणेजी	।२३।
सुंदरी सुवर्ण कटोरडे लाव्या छे	पान संयोगनो रसजी	
विनती करी रे रूक्ष्मणीजीने	कहयुं लीजिये अे अवस्यजी	।१२४।

बीजा प्रकार ते नित्यना हर्षसुं सर्वे ते लेवराव्युंजी
उठी ने लीधुं ते आदर करी जे जे पोताने मन भाव्युंजी ।१२५।
बीडां बहु रे प्रकारना उपचार सर्व ते कीधाजी
आरति अतीसे मनमां व्हालो ते उछंगे लीधाजी ।२६।
अे समय उछंगे जोइ भक्त ने उपज्यो सात्विक भावजी
नमन कर्यामां प्रार्थना करे आशीष दे छे मनने चावजी ।२७।
जै जै प्राणपति गोकुल धणी जै जै भक्त तणा आधारजी
जै जै ताप हरण रस वृष्टी करण जै जै वांछित दान उदारजी ।२८।
जै जै प्रत्यंग सुख दाअेक जै जै सर्व इंद्रीय आस्वादजी
जै जै रस कलाअे शिरोमणी जै श्रींगार रसे जे आदजी ।२९।
जै जै सुख सागर सिंधु कृपाभर वांछित कल्प तरू अे कामजी
जै जै सर्व गुणार्णव पूरण जै जै प्राण तणा अभिरामजी ।३०।
जै जै स्वकीय भाव पूरक रस जे भावार्थक रूदीया रूढजी
विरह रसे भोगी द्विदलात्मक जे गुण जाण निपुण रस गूढजी ।३१।
जै जै नाथ सनाथ कर्या अमो भावे पुष्ट थया अमो आजजी
अदेय दान दाता तमे प्रगट्या जै जै जै महाराजजी ।३२।
जेम निरधनीया ने धन संपजे निधी पामे फूले जेम रंकजी
तेम अे भक्तने अे समे श्री मुख जोइ थया निशंकजी ।३३।
भक्तना भाव अंगी करी प्रभुजीअे कीधुं सहु संपन्नजी
प्रागट्य नौतन को नवि लहे हुलसीने आनंदया ते मनजी ।३४।
अेह परस्परनो रस ते समय अनिरवचनीय तेहनो विस्तारजी
नौतन रस अभिलाषा नौतन वचने केम करीअे उच्चारजी ।३५।
भीड ते भीतर तिबारी आंगणमां अटाली भरीयजी
चोकमां चहु ओर अति घणी नहीं को सके ते हींडी फरीयजी ।३६।
बहार आव्या रे शोभाजी सहु कोना कर्यां सनमानजी
तिलक करया कुमकुम तणा आप्या बीडां ने पकवानजी ।३७।
चोळी चीर बहु भातना आभूषण ने मुक्ता हारजी
हलदी आपी रे अति हर्षसु कीधी अति घणी मनुहारजी ।३८।
विप्रने तेडिने आसन दइ अरचीने दीधां बहु दानजी
आशीर्वाद दे आनंदसु कर्यां बहु सनमानजी ।३९।
अगणित गाय अपावी खरिकथी वछ सहित दूधे संयुक्तजी
सुवर्ण श्रृंग मढी रूपे खरी तांबे पीठी विधोगती उक्तजी ।४०।
घंटाभरण भूषित सोहामणी कंठमां बांध्या छे पटवस्त्रजी
अेवी अनेक बहु भांतनी गायो आपी विप्रने विधी शास्त्रजी ।४१।
आनंदे आशिष दे छे ते सहु वेदने मंत्रे भावे युक्तजी
जुग जुग राज करो अेह शिशु धन्य धन्य भक्त संयुक्तजी ।१४२।

भंडार सकल श्री गुंसाईजीना मेल्या उघाडा तेणी वारजी
दान अवारीने आप्या सहु गणना अगणितनो नहीं पारजी ।४३।
प्रथमे पहेरावी वारेण युगया शिर लखमणीया तेहनुं नामजी
तेने वस्त्र भूषण मन भावता उचित आपी पूरण कर्या कामजी ।४४।
मागद सूत बंदी जन सहु संतोष्या छे तेणी वारजी
मांग्युं अण मांग्युं आप्युं बहु कर्यो न पात्रापात्र विचारजी ।४५।
जे कोइ कुटुंब परिवारमां आश्रीत पूरोहितना जे नेगजी
तेने बहु प्रकारे आपी अे न्योछावरी वधाइ वेगजी ।४६।
अे प्रागट्ये सहु वैभव जुत समृध्धवान थयुं छे सर्वजी
दान अपेक्षा कहेने नव रही भर्या अलौकिक पूरण गर्वजी ।४७।
जेहने जे भावे कामना जेने जे मनोरथ अे पर्वजी
तेहने दान योग्य आपीने पूरण कीधुं सर्वजी ।४८।
प्रणपति कीधी आगल घणी शोभाजीअे ते बहु पेरजी
श्री गुंसाईजी पधारीअे तमे आवजो वेगा थई अमारे घेरजी ।४९।
अति आनंदेरे प्रफुल्लित थई मनमां मोद तणो नहीं पारजी
अे उत्सव मारे नित्य नवो नित्य तमो आवो अमारे द्वारजी ।५०।
अेह वचन सुणी शोभाजीनुं सहु कोइ आनंदया अपारजी
जुग जुग जीवो रे जगत प्रभु सहुना जीवन प्राण आधारजी ।५१।
आशीष दीधी रे अति प्रेमसुं प्रगट प्रकारे त्यांहां सहुजी
तेथी अभ्यंतरमां अति घणी मन वांछित मनमां बहुजी ।५२।
अे आनंदना समोहनी को कणिका नव जाणे अेहजी
आनंद दातानुं मन लहे के अनुभवी जाणे तेहजी ।५३।
अे रसनी योग्यता अेहने अे रस भोक्ता अेह भक्तजी
अे रसनो स्वाद ते अेह लहे रहे सदा रससुं अनुरक्तजी ।५४।
जेने जणाव्युं रे पोते थकी कृपा करी अे प्रागट्य सारजी
धन्य सौभागी रे दासडा अेहना भाग्य तणो नहीं पारजी ।५५।
धन्य उछव अनुदिन नित्य नवो धन्य पागटय परम उदारजी
धन्य अे भक्त अपरमित रस भर्या अेहना अनुभव पर बलीहारजी ।५६।
श्री गोकुल प्राण पति गुण पूरण वल्लभ परम कृपालजी
अंतर टाल्यानी आश धरी चरणे लागे दास गोपालजी ।५७।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महाअदभुत विचित्ररस
व्याराना गोपालदास विरचित
प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम
प्रथम तरंगे मांगल्य - ६ - छठ्ठुं
संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य – ७ – सातमुं

श्री श्री गोकुलेशो जयजयति

श्री प्रागट्य सिध्धांतनुं मांगल्य सातमुं लखीअे छीअे।

राग : करूणाते करीने पधार्याजी पोते ते जलघरा मांहेजी

प्रागट्य उत्सव पूरण करीने आगल धरियो ते उदेशजी
कृपा प्रभुनी ने अे भक्तनी बुधे आगल कर्यो प्रवेशजी ।१।
जे कहयो ते रस अति अभिनवो कहेशुं ते वली अतिशे सारजी
अेक ते अेक तणु महा भूषण अनुभवे मन लहे विचारजी ।२।
कुटुंब सजन मली हरखसुं अेहवुं धरीयुं ते मनजी
वधाइयो मोकलीअे श्री गुंसाईजीने आनंदे सहुको थया प्रसन्नजी ।३।
पत्र वधाइनुं वेगे लखी श्री गुंसाईजी छे ज्यांहांजी
शुभ वेला शुभ लग्न नक्षत्र शुभ मन वांछित प्रगट्या छे आंहजी ।४।
वांचीने वेगे पधारशो क्षणु मलाशो अहीं अवारजी
जोइने नेत्र सफल करीअे प्रगट्युं छे सार तणु जे सारजी ।५।
कुमकुम चरची अने जत्न करी आप्युं वधाइयाने हाथजी
तुं जइ वेगे वधाइ मागजे कहेजे प्रगट्या श्री गोकुलनाथजी ।६।
आज महाभाग्य फल्युं छे तारूं तुं तो आज थयो सनाथजी
परमानंद पत्रने लेइ अने वेगे चाल्यो नमावी माथजी ।७।
दुल्ली दाइने वेगे करी कीधुं अतिसे सनमानजी
उच्चित आप्युं बहु भांतिसुं तेनुं क्यां लगी कहीअे मानजी ।८।
पीतांबर पहेराव्युं प्रेमसुं लहेंगा चोली नौतन साजजी
आभूषण आप्या अति मोदसुं पूर्या मन वांछित सहु काजजी ।९।
तिलक कर्युं सुंदर कुमकुम केरूं चोखा चोढया आदर करीजी
पालखीअे बेसाडी घेर पहोंचावीआ आशीष दे जुअे फरी फरीजी ।१०।
त्रीजे दिवसे मोढा लुअनो उत्सव आव्यो बहु पेरजी
गोल चणानो भोग समर्पीने वहेंच्यो ते ज्ञातमां सहु घेरजी ।११।
अे बाल ने श्री रूक्ष्मणीजीने आनंदे आरति कीधीजी
अक्षत दुर्वाअे वधावीने हरखे ते आशीष दीधीजी ।१२।
जगत रक्षकनी रक्षा करवाने वात्सल्यता कीधी अति घणीजी
कडीओ सोना रूपा त्रांबानी ने कीधी छे लोढा तणीजी ।१३।
अेणे दिवसे गेवा सूत्रसुं प्रोइने सिध्ध करी छे त्यांहांजी
तेनी कडधनी करी उत्साहनुं बांधी श्री प्रभुनी कटि मांहेंजी ।१४।

मल्लाह नावना लोहनी कडी त्रांबानी घडी लाव्यो लुहारजी
रक्षा अर्थे अे चरणे धरी आपी न्योछावरी तेह वारजी ।१५।
मागशीर सुदी बुधवार बारस भली रस भरी आवी छे ते धन्यजी
मनमां मन वांछित दिन आव्यो आव्यो ते छठीनो शुभ दिनजी ।१६।
हलदी अने चावल पीसीने छठी ते लखी छे भींतेजी
घीनी वसोधारा त्यां देइ अने खडग मथनी राख्या नितेजी ।१७।
आगल दीपक अजवाळ्या अने तेल पूरे छे त्यांहां सहुजी
छठीने पीत वस्त्र ओढाडीने कीधां प्रकार ते बहुजी ।१८।
वाजिंत्र वाजे द्वारे अति घणा होअे ते नादना निरधोषजी
ठाम ठाम दीपक झलहले भीतर आंगण ने झरोखेजी ।१९।
ज्ञात वर्ग सहु को तेडया आव्या छे नर ने बहु नारजी
वस्त्र पहेर्या छे अनेक प्रकारना कीधां भांति भांति श्रींगारजी ।२०।
पूजा ते करी रे विधोगते शास्त्र रीते देश आचारजी
प्रभुने तिलक कर्युं गोमय तणुं आरती कीधी तेणी वारजी ।२१।
रक्षाने हेते सहु अे कर्युं जे छे वात्सल्यना प्रकारजी
ते जोइ सहु कोइ मोदे भर्या हरख्या ते नर ने नारजी ।२२।
दूध पूरी फेणी भोग समर्प्यो ने उत्त्स्व कीधो बहुजी
ज्ञात वर्ग पोतानी तेडी छे तेने लेवाडीयुं छे ते सहुजी ।२३।
राती जगो रात्र संपूरण कीधो छे ते हरखे भरीयाजी
मनोरथ अंते पोहोता अहीं आगे ते अधिक वली करीयाजी ।२४।
त्यांहां सहु आव्या सोहामणी थाले छठी आरती दीपक धरीजी
तेहने तंबोल मेवा सहु थाल ते आपी पूरण करीजी ।२५।
अेणी पेरे छठी सोहागरंग रतजगो कीधो छे वाद्य ने गान संयुक्तजी
जेथी दोष संचार करे नहीं कह्युं छे भागवते अे उक्तजी ।२६।
बरहीनो दिवस महा मंगल रूप पोष वदी २ ने सोमवारजी
पहेले दिवसे स्नानारंभ करी अेक लर धोइ राखी रविवारजी ।२७।
सोम ते नावाने विहित नथी ते माटे साध्युं अे शुभ मुहुर्तजी
प्रात:काले नावाने समे कीधुं मांगल्यनुं सहु कृत्यजी ।२८।
रूक्ष्मणीजीने नाहवाने समय अभ्यंग उवटणा बहु कीधाजी
केशर हलदी दूध ने गोमय मृतिका गौमुत्र सिध्ध करी लीधाजी ।२९।
पत्र समालुना उकालीने सिध्ध कर्युं जल नावाने अर्थजी
स्नाननी विधी जेम होय अे समे ते सहु कीधुं सुख अर्थजी ।३०।
अे सामग्री लेइ सोहामणी नवरावे छे उत्साहे भरीजी
गान करे छे चोंहो पासे रही अति आनंद मनमां धरीजी ।३१।
सौभाग्य सदनमां चोको दइ अने सेजया बिछावी ते बीजे पासजी
चारे पाअे ने सेजया आगल चोक पूर्या मन उल्लासजी ।३२।

धृतनो दीपक चार बातीनो करी राख्यो तेणी वारजी
अलवाती नाही अंगुछो करी मस्तके तेल भर्या अति सारजी ।३३।
साडी हलदिनी पीअर तणी चुणी पहेरी छे तेणी वारजी
कोरूं काजल नयणे सारीने तिलक कुमकुमनुं कीधुं सारजी ।३४।
नायण आवी रे महावर लइ चरण ते श्री रूक्ष्मणीजीना रंग्याजी
प्रथम श्री महाप्रभुना पद कमल ते अलते करीने अभ्यंगजी ।३५।
नाअेणने न्योछावरी आपीने पधार्या ते मंदिर भणीजी
लोह रक्षा लीधी अेक हाथमां अेक हाथे लोटी दूध तणीजी ।३६।
अेक कोइ लरिकाने हाथे धरी रीत जे मांगल्यना आचारजी
देहरी पूजीने शुभ सदनमां पधार्या छे तेणी वारजी ।३७।
सिराहणानी भींत ने वली भीतर हलदिना हाथा करीजी
चौक उपर खीचडी ढेरी करी धर्या टको हलदी सोपारीजी ।३८।
पिंडरू देवने खीचडी संकल्पे ते भली रीतेजी
गोरणी सुभगाने शणगारीने भोजन करवावे बहु प्रीतेजी ।३९।
प्रथम जे भाग्य दिवस आरंभीने वाजिंत्र वाजे छे ते नित्यजी
ते वाजिंत्र सहु विदा कर्या न्योछावरी आपी उचितजी ।४०।
बीजुं जे बरहीनुं कारज सहु श्री गुंसाईजी पधारे ते करसेजी
जात कर्म ते विधी साथे करी नाम प्रभुनुं ते धरसेजी ।४१।
पहेले मास मध्ये आवर्णनुं मुहुर्त आव्युं छे शुभ दिनजी
काज करे छे महा मोदे भर्या अतिशय हरख्यां ते मनजी ।४२।
चोखा हलदीअे पीली करी साथीआ पूर्या आंगण मांहजी
उपर कंकुना छडा कर्या सांगामाची मांडी त्यांहजी ।४३।
उपर गादी मखमलनी धरी त्यां रूक्ष्मणीजी जइ बेठा मोदेजी
सुंदर वस्त्रे आछादन करी श्री महाप्रभु पोढाडया गोदेजी ।४४।
कोरूं काजल करमां लइ अने अंजन निरंजनने कीधुंजी
द्रष्ट निवारण कारण तेह समे काजल बिंदु भ्रु उपर कीधुंजी ।४५।
प्रथम आभूषण धरावाने लाव्यानी फुइनी छे रीतजी
तेने ठामे बहेन वडी ते शोभाजी लाव्या बहु प्रीतजी ।४६।
प्रथम कठुला बांधे कंठमा रक्षा अर्थे वात्सल्य करीजी
श्याम श्वेत मणीकामां शोभीअे परवालानी साखा धरीजी ।४७।
कौडी चित्र तणुं दर मढीअने कठुला कीधो अेह प्रकारजी
कंठे पहेरावी शोभाजीअे वधणुं बांध्युं जडित अपारजी ।४८।
चोकी सुंदर रत्न जडावनी माला मुकता फलनी अमोलजी
हांसडी सांकडी हेम हमेलनी धुकधुकी जडित न को समतोलजी ।४९।
पोंची श्वेत मणीकामां शोभीअे बेरखी नवग्रही अनूपजी
चूडा पहोंची ने हथ सांकळा वांकडा राजे गोकुल भूपजी ।५०।

खेल मादलीआ कणदोरे भला कटि पाछल घुघरडी फिरतीजी
चरणे धराव्या नेपूर घुघरी ते धमधमती झमझम करतीजी ।५१।
टोपी सुंदर वस्त्र सुशोभिती माणेक रत्न जडया बहु पेरजी
मोतीना सुडा ने लर लटकती फीरती मोती केरी शेरजी ।५२।
मघे कुल्ले रत्न जडावनो शिखरे नंग अनुपम जडीयाजी
आगल भ्रुअ कपोलने उपरे चंदो ने लटकण टोपीअे मढीयाजी ।५३।
पीत झगुली परम सोहामणी अतलस अनुपम अभिनव रंगजी
आगल बांधी बहु फूलनी सोहे छे श्री प्रभुने अंगजी ।५४।
अेवा आभूषण बहु भांतना लाव्या कुटुंबने बहु भक्तजी
आणीने मुहुर्त कीधुं अेह समय आगल पहेरशे अनुरक्तजी ।५५।
जे कोइ आवे आभूषण लेइ लावे पान बुरू ने नवनीतजी
ते श्रीमुखमां मेले प्रेमसुं जेम कुल केरी अेहोने रीतजी ।५६।
अेहवा वात्सल्य अनेक प्रकारना तेनां क्यां लगी कहीअे नामजी
अेकथी अेक अति रसात्मिक सुखद सुभग अति पूरण कामजी ।५७।
मातु चरण सुत जोइने कोइ अेक आनंद उर न समातजी
मनमां मनोरथ बहु विधी सूचवे क्यारे आवी निरखे अेहोना तातजी ।५८।
हवे वधाईयो जइ पहोंच्यो हशे हरख भर्यो श्री गोवरधनजी
अेहवो विचार करे श्री रूक्ष्मणीजी पोते पधारशे थोडे दिनजी ।५९।
त्यां श्री गुंसाईजीने आतुरता घणी पुत्र वधाइ हुं पामीस ज्यारेजी
रात दिवस क्षणुं क्षणुं अेम सोचता सर्वस्व आपीस तेने त्यारेजी ।६०।
वधाईयो पहोंच्यो रे मोदे भर्यो पेंडे न लागी ते वारजी
मनमां मनोरथ अनेक विचारता आव्यो ते ठाकोर द्वारजी ।६१।
दूरथी दीठा रे श्री गुंसाईजीने बोल्यो वधाई वधाई उच्चारजी
चातक मुख जेम बुंद श्वातिनुं तेम सुख पामीआ तेणी वारजी ।६२।
उरमां आनंद सागर उलटयो ते कांइ रोक्यो केमे न जायजी
उमंगीने हरख आंसु नयणे वहे आनंद अंग अंगमां न समायजी ।६३।
पत्र पछी लेइ आप्युं हाथमां जोइने उरसुं चांप्युं तेहजी
वांच्युं ते वदन प्रसन्नसुं प्रगट्यो छे अति घणो नेहजी ।६४।
तेनुं मिसरीअे मुख भरी ने जीभ ते कंचननी आपीजी
आभूषण पट वस्त्र वधायाने आपी सकल संपदा स्थापीजी ।६५।
आनंदने मन अति चंचल थयुं अेक क्षणुं न रह्युं न जायजी
जोवाने मनोरथ प्रगट्यो अति घणो क्षणुं अेक जुग सम थायजी ।६६।
वेगा थई अने पधारीया उपर नाथजी पासजी
सुणी अने आनंदया घणुं पोंहोंची अमारा मननी आसजी ।६७।
मन वांछित अे अमारा तणुं तेह प्रगट हवुं आजजी
मनोरथ मन तणां पूरण हशे मेटी अंतर गतिनी दाझजी ।६८।

अेह परस्परनो रस प्रेमनो	ते अेहज जाणे वातजी	
आज्ञा मागी अे आतुर थई	फूल ते अंग न मातजी	।६९।
वेगे चाल्या अति उतावळा	क्षणुं न लेइ ते वारजी	
मार्गे मनोरथ बहु पेरे सोचता	आव्या ते प्राग मंझारजी	।७०।
जेणे दीठारे आवतां जे ज्यांहां	मलीआ मारग मांहांजी	
तेणे जैजैकार शब्द कही	मागी वधाई ते त्यांहांजी	।७१।
वेगे वधाइ श्री गुंसाईजीनी पधार्यानी	आपी ते अेहोने घेरजी	
हुलसीने मोद भर्या सहु आविया	कीधी उत्सवनी बहु पेरजी	।७२।
सनमुख बालक बेटीने वहु	शोभांजी आव्या छे बहारजी	
दंडवत कीधारे श्री गुंसाईजीने	फूलसुं बोल्या तेणी वारजी	।७३।
आज वधाइनो दिन अभिनवो	आनंद मंगल मारे आजजी	
प्रागट्य प्रभुनुं प्रेमे हवुं अने	वली पधार्या छे राजजी	।७४।
अति आतुर अभिलाखे अलजाया	आव्या ते मंदिर मांहेंजी	
अंतर ग्रह आनंदे आवयुं	पोढया छे प्रेमे प्रभुजी त्यांहजी	।७५।
जे आवर्ण रहित सामर्थ सहित	ज्यां अंशकला नहीं अंशजी	
छअे धर्म सहित चतुर्व्युह रहित	अे अनादि पुरूष अवतंशजी	।७६।
परम रसात्मिक महा रसमय	श्रींगार सर्वोपर रसकोसजी	
रमण रसे जे अति रस पूरित	दीठे नयण तणे संतोषजी	।७७।
अेहवा जोया रे नयणा भरी भरी	भरी आव्या छे ते नयणजी	
गद्‌गद कंठे अति हरखे भर्या	श्रीमुखथी न उचरे वेणजी	।७८।
नखशिख शिखनख निहाली जुअे	अंग अंग होय रसनी वृष्टीजी	
अंतर भाव त्रषित सींचन करी	लोचन शीतल कीधी शुभ द्रष्टीजी	।७९।
आतुरताअे उछंगे लेइ	चांपीने उरसुं लीधाजी	
स्वरस परसथी अति सुख हवुं	सकल पदारथ सीधाजी	।८०।
मुसकित विकसित मुख मृदु किल्कीने	अनिरवचनी वचने कांइ बोलेजी	
ते जोइ आनंद उपजे अभिनवो	नहीं को अे सुखने समतोलेजी	।८१।
जोइने अति पुलकित थया	रहित अनुसंधानजी	
देहनी सुरती भूली गई	उत्साहे कीधा समाधानजी	।८२।
ज्यांहां रे जुअे छे जे अंगे थकी	द्रष्टी ते अलगी न थाअेजी	
रूप समोहमां पागीने	तेहज अंगमां लोभायजी	।८३।
क्यारेक भाग्य सराहे आपणुं	क्यारेक प्रभुनो उपकारजी	
क्यारेक आश्चर्य मोह पामीने	करे ते अनेक विचारजी	।८४।
आरत अंतरनी ततक्षण टली	अंग टळयो ते परितापजी	
शीतलता सर्वांग प्रगटी ने	टळया ते सकल संतापजी	।८५।
श्री रूक्ष्मणीजी अति आनंदे	मलवाने अति आतुर थायजी	
आपणुं मनगमतुं प्रभुअे कर्युं	ते कहेवा अति अकुलायजी	।८६।

बहार आव्या रे श्री गुंसाईजी आरंभ जात कर्मनो कीधोजी
कुटुंब ज्ञात वर्ग सहुने तेडया ने मनोरथ सहु कोइनो सीधोजी ।८७।
सहु कोइ आव्या उलटीने आशीष देता तेणी वारजी
हरखे वधाई मागे ते मोदसुं श्री गुंसाईजी आनंदया तेणी वारजी ।८८।
आज अमारा भाग्य सफल हवा सफल मनोरथ मारो आजजी
चौद लोक उपर थई मेदनी अेवुं बोले ते सकल समाजजी ।८९।
ब्राह्मण अति पवित्र वैदिक भला आचारी वक्ता खट शास्त्रजी
सोमो जोशीने साथ सहु आव्या वेद तणा बहु पात्रजी ।९०।
जात कर्म उत्सव सुणी आव्या भक्तना विविध समाजजी
श्रींगार करीने सोहामणी लाव्या ते मंगलना बहु साजजी ।९१।
सुंदरी सुंदर रूप सोहासणी प्रेम अलंकृत भाव रसालजी
श्री विठलजीने घेर लावीया मंगल गाता मंगल थालजी ।९२।
तेणे भीतर जई दर्शन कर्या दीठुं रसानन परम रसालजी
दुःखडा लेइ दंडवत करी ते समे बोले छे मुदित थका सहु बालजी ।९३।
धन्य अे भाग्यवती वसुधा भली धन्य अे देश नगर ज्यां वासजी
धन्य अे वंश जे कुल पावन कर्युं धन्य अे जे भक्तनी पूरी आसजी ।९४।
धन्य अे माता पिता पूरण कर्या धन्य अे प्रगट्या जेहने काजजी
धन्य दिन धन्य घडी अमारडो धन्य भाग्य अमारा आजजी ।९५।
गाअेण गंधर्व गुणीजन मागध आव्या ते जश कहेता अेहो घेरजी
वाजिंत्र बहु विधिना वाजे अति घणा उत्सव होअे छे बहु पेरजी ।९६।
दधी दुर्वा गंधाक्षत मधु घृत ने वली मंगलना जे साजजी
तोरण बांध्या रे बहु बारणे चोक पूरे छे मंगल काजजी ।९७।
प्रथम श्री गुंसाईजी पधार्या नावाने स्नान करी महा नांदी आव्याजी
अति उत्साहे नांदी मुखकरी अंतरना परिताप समाव्याजी ।९८।
बालकने दधी धृत मधु प्रासन्न आरति अभिमंत्रे कीधीजी
जै जै कार सहु केणे करी आनंदे आशिष दीधीजी ।९९।
विधि पूर्वक विधोगतिसुं कर्युं जात कर्म त्यां तेणी वारजी
सकल मनोरथ सहु पूरण हवा हरख्या सकल नर नारजी ।१००।
दान विधोगतिसुं सहु विप्रने आप्या अंतरगतिनी फूलजी
गउ बहु संयोगे विधी पूर्वक रथघोडा आप्या, बहु मूलजी ।१।
सुवर्णभार अनेक विधि भली आभूषण बहु जडित्र अपारजी
माणेक मोती आप्या अति घणा तेहनो क्यां लगी कहीअे पारजी ।२।
हार अमोलक मुक्ता फलना मध्ये नीलमणी सोहायजी
आप्या ज्ञात वर्गमां सहुने तेनी गणना गणी न जायजी ।३।
चीर ते नारी कुंजरना बहु जे ज्यांहां जोअे तेहवा रंगजी
आप्या ते सकल सोहासणी जेने जेवा सोहे अंगजी ।१०४।

नाउ ते अक्षत थालीमां धरी　आरसी दुर्वा मेली छे मांहेजी
आवी वधाई कही उभो रही　आप्युं अपरमित तेने त्यांहेजी　।१०५।
भीतर रूक्ष्मणीजी बहु बेटीअे　आप्या भूषण वस्त्र अनेकजी
तेहने संग्रहनी सुधी विसरी　तेहनो क्यां लगी कहुं विवेकजी　।६।
ब्राह्मण भिक्षुकने जे मागद　स्वकीय ज्ञात वर्ग नर नारजी
जेणे जे मांग्युं ते तेने ते समय　आप्युं तेणी वारजी　।७।
दान सकल श्री गुंसाईजी आगले　उभा छे इच्छाअे करजोडजी
संपति सकल ब्रह्मांडनी उभी छे　पूरण करवा कोडजी　।८।
आज लगी अेहोना सहुको मली　आदर करी कीधो सतकारजी
संग्रह कर्यो नहीं श्री गुंसाईजीअे　वहेंची आप्या तेणी वारजी　।९।
तेथी सत गणुं थया भंडारमा　प्रभुना स्वरूपनो अे प्रकारजी
ते जेम मेह समुद्रथी लेइने　करे छे जगतनो उपकारजी　।१०।
ते फरी आवे समुद्रमां　तेम अहींया पूरणता नहीं पारजी
अेणी पेरे सर्व तणुं पोषण करे　ते अनिवार अखुट भंडारजी　।११।
अजन जन्म प्रभु अेहो घेर प्रगट्या　न भावी न भूतो अे प्रागट्य स्वरूपजी
जश वैभव प्रताप महा भाग्यनुं　क्यां लगी वर्णन करीअे अे रूपजी　।१२।
आशीर्वाद दे अति मोदे भर्या　जुग जुग जीवो महाराजजी
राज करो अे अखिल ब्रह्मांडनुं　करो ते भक्तना शुभ काजजी　।१३।
बरहीने नाम करण अेक दिने　मुहुर्त आव्युं छे शुभ दिनजी
मंडप छाया बहु रचना करी　सहुको फूल्या छे मनजी　।१४।
चोक पूरी रे बहु मंगल करी　वेदी विचित्र रची छे सारजी
पाट बिछाव्या पट वस्त्रे भला　आण्या ते सकल उपहारजी　।१५।
पाट बेस्यारे श्री गुंसाईजी　मनमां प्रगट्यो छे मोदजी
श्री रूक्ष्मणीजी अति आनंदे भर्या　पुत्र रत्न लेइ बेठा गोदजी　।१६।
अे समे श्री गुंसाईजी आनंद भेर　अनेक अभिप्राय सुं करी प्रीतेजी
नियंता वैष्णव धर्मनी जे　सिध्धताने अर्थ अने मारग रीतेजी　।१७।
मालाना अधिपति ते केवल अे छे　रक्षक पक्षक अेक प्रमाणीजी
अति अतुल बल सामर्थवान अे　अेहवुं सम्यक मनमां जाणीजी　।१८।
पुत्रने तुलसी माला धरावी जे　पोते प्रगट करावी हित करीजी
माटे प्रसन्नतासुं निज भक्तनुं　रूप करी अने अे कंठे धरीजी　।१९।
पुन्याह वाचन प्रथम करी अने　उतम थाल ते आणी त्यांहजी
उज्जवल चोखा सुंदर आणीने　पूर्या छे थालज मांहजी　।२०।
श्री गुंसाईजी आनंदया उरमां घणुं　मनमां धरीया अभिरामजी
थालमां कंचनसुं पोते लख्युं　श्री वल्लभ अेवुं शुभ नामजी　।२१।
प्रथम नाम कृष्णदासीजीअे धर्युं　अे नाम सर्वोपर सोहाव्युंजी
अेवुं कही मानी लई अने　श्री गुंसाईजीने मन भाव्युं जी　।१२२।

अे नाम सगर्भ भावे जुत	अेहनी उपमाने नहीं आनजी	
अेना अक्षरनुं विवरण करी	कांइ अेक कह्युं छे व्याख्यानजी	।१२३।
अेहवो कोण जे अे विसद करे	परम अगाध नहीं निर्माणजी	
अेना चरण कमल जुग स्पर्शीने	कांइ अेक कहुं छुं बुद्धि प्रमाणजी	।२४।
प्रथम आदी श्री कार सुशोभिती	आदि लक्ष्मीजीनुं जे रूपजी	
चरण तलासे छे अे प्रभु तणा	ते माटे अे मुक्ष अनूपजी	।२५।
श्री रिधीरूपा लक्ष्मी कहीअेजी	जेनो अंश छे महा सुख धामजी	
अंश ते त्रिभुवनमां व्यापी रह्यो	ते अहीं दिन थई करे कामजी	।२६।
श्री अेवुं शोभाने कहीअे सदा	अंश छे तेनो त्रिभुवन मांहेजी	
शोभा सकल पूरी रहयो ते	शोभा पामे छे अहींयाजी	।२७।
श्री अेहवुं स्त्री अवतारने कहीअे	ने ते छे व्रज सीमंतिनी जेहजी	
तेने भावे अे प्रभुने पामीअे	ते माटे श्री पहेली अेहजी	।२८।
श्री पारवतीने श्री प्रीतने	श्री रतीने कहीअे छे संगजी	
तेनो आधार सर्वस स्थल जे	छे अे प्रभुनुं श्री अंगजी	।२९।
श्री ते योगमायाने कहीअे	निकट सदा रहे प्रभु पासजी	
रमण उपयोगी काज अे करे	अनुदिन उपजावे सुखरासजी	।३०।
श्री ते मध्याने कहीअे जे	करे प्रभुने रस संपन्नजी	
मानवती ने अे सनमुख करे	अे उपर छे सदा प्रसन्नजी	।३१।
गो अक्षर सकल गणना पति	देव रूषीगण मुनीगण नामजी	
ग्रहण उरगण सुरगण	गुरूगण अेना पूरण प्रभु कामजी	।३२।
मनिस्य गणे पूरण अेम शोभीअे	भूत सकल गुण मांहां जेम प्रवीणजी	
जे अवतार गणे सहुना पती जे	ते सहुअे प्रभुना आधीनजी	।३३।
गो परमानंदने सहु को कहे	ते परमानंद दाअेक अेहजी	
गो अेम गाय वृषभने कहीअे	पंचामृत रस दायक अेहजी	।३४।
गो मरजादा रहित सुख	परमित नहीं ते रसनो भंडारजी	
गो ते ज्ञान भक्ति सरस्वतीने	कहीअे ते तणुं अे सारजी	।३५।
गो माधुर्य वचनने कहीअे छे	ते अति प्रीय छे अेह स्वरूपजी	
गो अेवुं नाम ते कहीअे वेदने	जेनुं श्री भागवत फल रूपजी	।३६।
गो अेकादस इंद्रीने कहीअे	तेनां पोषक पूरक आसजी	
गो ते नेत्रे रसो अनुभव मइ	गो ते तेज ने प्रकाशजी	।३७।
गो ते काम तणां पंच बाणने	मोह शोक ने वली तापजी	
उचाटन उदवेगना भोगता	उदीपन सामयक छे आपजी	।३८।
वज्रने गो कहीअे जेणे आपथी	भक्त विरूध्धीने दे छे दंडजी	
ते ज अंकित चरणे सोहीअे	अतुल बल अेह पाखंडजी	।३९।
सत्यने धर्मने दानने ज्ञानने	कर्मने स्वर्गनुं गो छे नामजी	
चंद्रने रश्मीने जल पातालने	सर्व छे अेह छे पूरण कामजी	।१४०।

क कहीअे छे श्रीव्रज भूमीने श्री पुरूषोतमनुं जे धामजी
चौद लोक उपर छे मेदनी तेना उर उपर विश्रामजी ।१४१।
ल अेवुं इंद्रीनुं नाम नीरवलण ते अनंतनुं नाम अपारजी
ब्रह्म वाणीअे जे गम्य नहीं पामे नहीं कोइ अेनो पारजी ।४२।
ल कहीअे दान प्रकारने अे छे महा रस दान उदारजी
ल अंतर जामीने कहीअे छे भक्त तणा आधारजी ।४३।
कुलने देशने वंशने ज्ञानने देहने गेहने अे सहु साथजी
सर्वना अंतर जामी ते प्रभु माटे श्री गोकुलनाथजी ।४४।
अेनुं कारण को केम कही सके ते केम करीअे विस्तारजी
अेह मांहां कारण भाव अनेकना अे मांहां लीला सिंधु अपारजी ।४५।
अेहना अर्थने को सामर्थ छे जे करे अेह तणुं व्याख्यानजी
अक्षर अक्षर मनमां धरे करे अे जे रसनुं रसपानजी ।४६।
श्री गोकुलनाथ अे नाम छे खट रसभोगी अलौकिक आपजी
निजजन मोहक रूप अे सर्वथा आरत हरण हरण संतापजी ।४७।
आधि दैविक अलौकिक महावन तेमां मुक्ष श्री गोकुल गामजी
सर्व वैकुंठथी अधिकतर वन वैंकुंठ जेनुं नामजी ।४८।
ते श्रीगोकुल सहस्त्रे दले जुत दीसे ते कमल तणे आकारजी
भक्त सुंदरी केशर पांखडी मध्ये बेठा प्राण आधारजी ।४९।
अेवो आसय जोइ कृष्णदासीअे नाम धर्युं छे तेणी वारजी
ते प्रमाण कर्युं श्री गुंसाईजीअे नाम अे सार तणुं जे सारजी ।५०।
सौभाग्य जोतसी वृंद शिरोमणी कृष्णदासीअे धर्युं जे नामजी
सर्वथी अधिक सर्वोपर शोभितुं मनोरथ दायक सुखनुं धामजी ।५१।
नाम धर्युं श्री गुंसाईजीअे आपथी तेनुं कोण करे व्याख्यानजी
श्री वल्लभ वल्लभ सहु जगतने वल्लभतानुं अेह निदानजी ।५२।
पशु पक्षी कीट पतंग ने देव असुर मुनी नर नारजी
अेना वल्लभ अे वल्लभ घणुं अे जगजीवन जगत आधारजी ।५३।
श्री वल्लभ अक्षर त्रण निरूपम त्रिविध नायकाना सृंगारजी
तामस राजस सात्विक सर्वनुं भूषण प्राण तणा आधारजी ।५४।
मासनुं नाम धर्युं श्री गुंसाईजी कृष्ण अे नाम धर्युं संपन्नजी
परमानंद स्वरूपे भक्तना सर्व गुणे आकर्ष्या मनजी ।५५।
कर्म चरित्र गुणे बहु नाम छे तेनो पामे नहीं कोइ पारजी
अेवो कोण विचिक्षण जे करे अगणित नाम तणो विस्तारजी ।५६।
को नक्षत्र गणे को रज गणे मेघ बूंदनी गणना थायजी
पण अे प्रभुना नाम चरित्रनुं अगणित गणना गणी न जायजी ।५७।
कली महा दोष रूप अलंकारनो नाम तिमिर हर जोती प्रकासजी
नामे सदगती अे संसारनी पावन पतित सकल अघ नासजी ।१५८।

नाम लीलात्मिक ने स्वरूपात्मिक रूपात्मिक चरित्रे जे अनूपजी
अे मांहे अेक प्रकारनो अक्षर जीवने माहापुरूषार्थ रूपजी ।१५९।
अेक समय घनश्यामना नामनो श्री गुंसाईजी करे छे विचारजी
आ नाम धरीअे अेवुं महाप्रभु बोल्या छे ते तेणी वारजी ।६०।
त्यारे श्री गुंसाईजीअे उतर अेम कहयो नांही अे नाम तुमारो होयजी
त्यारे महाप्रभु बोल्या प्रेमसुं मेरो तो नाम धर्यो छे सोयजी ।६१।
त्यारे श्री गुंसाईजी बोल्या मोदसुं अे दोउ नाम तुम उपयोगजी
नाम अे ओरनकुं उचित नहीं नहीं अे नामके जोगजी ।६२।
प्रथम बालकृष्ण जनम्या ते समय नाम करनने बेठा अेहजी
को अेक बोल्यो जे बडा श्री गुंसाईजीनुं नाम धरो तमो अेहनुं तेहजी ।६३।
त्यारे श्री गुंसाईजी अति हरखे भर्या मनमां आनंदनो अभिरामजी
सगर्भ साभिप्राये तेने अेह कहयुं आगे धरनो हे अे नामजी ।६४।
वचन अे श्रीमुखे श्री प्रभुअे कहया रसावेस थई जेणी वारजी
धन्य सौभागी जे अनुभव कर्या सनमुखे उभा तेणी वारजी ।६५।
नाम मिषे श्री गुंसाईजीअे अेम कह्युं आणीने मनमां अतिशे हर्षजी
प्रागट्य करी देखाडयुं अेम जणाव्युं सर्वोधिक उत्कर्षजी ।६६।
अेणी पेरे नामकरण करी अने श्री गुंसाईजीने अति आनंदजी
ने वली भक्तना भाग्य प्रगट कर्या प्रगट्यो महा रसनो सुख कंदजी ।६७।
आगला जन्म पत्रनो आरंभ करूं महारस सूचक केरे काजजी
मारी बुध्धि प्रमाणे वर्णवुं सुणजो महारस रसिक समाजजी ।१६८।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित
प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम
प्रथम तरंगे मांगल्य – सातमुं – ७
संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य - ८ - आठमुं

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

राग : भूपाल, बिहावल

जात : आवो गोरी आवो सामली अेथी कांइ अेक उतावळी चाले गवाशे

नमन करी नवकुंवर विठल सुत श्री गोकुलाधीशजी
अेहना रस अनुभवीने चरणे नमावी शीषजी ।१।
महेद चरण रज अनुसरी कहुं मारी बुध्धिने अनुसारजी
अजन जन्मनी जन्मपत्री तेहनो करूं विस्तारजी ।२।
जात कर्म नामकर्म ते कीधां छे अति उत्साहजी
आनंद सागर उलटयो जगत ब्रह्मांडे न समायजी ।३।
स्वरूपे जेहवी तेहवी लीलाने अनुसारे ते नामजी
अलौकिक साधन फल रूप रसरूप पूरण कामजी ।४।
अेवा नाम श्री गुंसाईजीअे प्रगट कर्या छे जेहजी
अनादि सिध्धि अपार गुणे सरवोपर तेहजी ।५।
श्री गुंसाईजीना मनमां आनंद उर न समायजी
जन्म पत्र ग्रह लग्न सांभळवाने मनोरथ थायजी ।६।
बालक वहु बेटी सहु रूक्मणीजी बेठा छे पासजी
भक्त सहु टोले मल्या अेह सुणवानो उल्लासजी ।७।
जोतसी वरेन्द्र सोमो जोशी परम प्रवीण निपुण गुण जाणजी
सरस्वति अेहो सनमुख लहे भूत भविष्य अने वर्तमानजी ।८।
मुदित थई श्री गुंसाईजी मति मंद जोतसीने त्यांहां पूछे जी
कोण लग्न ग्रह कहेवा छे तेनुं कारण कहो शुं छे जी ।९।
अे सुणीने अति हरखीयो फूल्यो ते अंगने प्रत्यंगजी
भाग्य फल्युं कहे मारूं मनमां वाध्यो छे अति रंगजी ।१०।
दंडवत करी महाप्रभुने जन्म पत्र ते लीधुं हाथजी
अक्षत दुर्वाअे पूजीने सहु कोइ नामे छे माथजी ।११।
अविग्र आप सदा लगे सुखना सुख दायकनेजी
मंगलने जे मंगल करे भक्तना भायकनेजी ।१२।
परिवार सहित श्री गुंसाईजी भक्त तणो नहीं पारजी
आशीश दे मन भावती सहु कोइ तेणी वारजी ।१३।
प्रथम श्री गुंसाईजी मोदसुं हुलसीने कहे अेहजी
जन्म पत्री तेह तणी छे तेनी रक्षा करो सहु तेहजी ।१४।
अेह स्वरूप अने अेह गुण अेहनी लीला ने अे भक्तजी
अेहने अेह रक्षा करो मुदित थया अनुरक्तजी ।१५।

सहेज सुभाव चरित्र अने	सील क्षमा दया ने दानजी	
अेह सहु अेहनी रक्षा करो	अेनी समताने नहीं आनजी	।१६।
अेहनुं श्री मुखचंद्र अने	नेत्रना तारा अति बलवानजी	
अेहनी सत्य रक्षा करो	सत्य संकल्प अे भाग्यवानजी	।१७।
सर्वोपर भाग्यरास छे	लीला मध्य पाती जे भक्तजी	
तेहना भाव रक्षा करो	आशीष दे छे अति अनुरक्तजी	।१८।
जन्म पत्रने आरंभ ते	जोतसी आशीर्वाद दे छे जी	
स्वस्ति श्री ज्यो मंगल	अभ्योदय शुभमस्तु कहे छेजी	।१९।
भक्त गणना अधिपति	मुक्षत्वे अहींये छे अेहजी	
गोत्र गोवरधन स्थल सदा	गुरूस्थानी मध्य वरती तेहजी	।२०।
सूर्य आदि ग्रह सर्वे	योग नक्षत्र ने जे रासजी	
जन्म पत्रिका छे जेहनी	तेह सहुनी पूरो आशजी	।२१।
अेहवा अनेक प्रकारशुं	अनेक भांतनी दे आशीषजी	
मन पूर्वक मनोरथ	चरणे नमावे छे शिषजी	।२२।
जोतसी अति मति मंदने	इच्छाअे कीधुं सनमानजी	
तेथी प्रभुना आगम गुण	कहेवानुं प्रगट्युं छे ज्ञानजी	।२३।
गुण गुणवंतना अगणित	चिन्ह चरित्र जे सारजी	
लक्षण प्रकृति विसद करे	बुध्धि तणे अनुसारजी	।२४।
अे बालक आवो हशे	भक्त ज्ञानादि संतुष्टजी	
स्वकीय भाव सहु समजे	विविध वरण करता रसपुष्टजी	।२५।
गुणीगणनो आधार अे अखंड	अलौकिक जस विस्तारजी	
त्रिभुवन भक्त मुगट मणी	कोटिक चंद्रनो परिचारजी	।२६।
भू भक्तनुं अचल सौभाग्य ने	कोटिक कंर्दप देखी लाजेजी	
नाना विधि माहा भोगी	भोगाशक्ति जितेन्द्रीय राजेजी	।२७।
स्व आचारज दर्शीत	मारगना प्रति पालकजी	
पितु पितामह आदि	सकल कुलना अजुआलजी	।२८।
अंगीकृत तणुं आत्मा	सर्वनुं जीवन दानजी	
भक्त सकल प्रिय अेहने	भक्तनुं अेह निदानजी	।२९।
सर्वना संशय नासक	दिनता मंत्रे संतुष्टजी	
करूणा रसे भर सागर	उपमा उपमेय उतकृष्टजी	।३०।
सकल भुवननुं विभूषण	भूषण भक्तनुं जेहजी	
सर्व माधुर्यना माधुर्य	कृतारथ सजनना अेहजी	।३१।
सर्व अंतर गति भाव निपुण	रस जाण प्रवीणजी	
नौतन रस अभिलाषीत	प्रतिक्षणुं आप नवीनजी	।३२।
सर्व कल्याणनुं मूल अने	कल्याण कारक आपजी	
स्वरूप सच्चिदानंद	भक्त आरत हर ने संतापजी	।३३।

भक्त द्रोहीना विध्वंसक अतुल प्रताप प्रचंडजी
स्व मारग अनुरूक्तनुं कु मारग मत सत खंडजी ।३४।
अेह छे सत्य प्रत्यज्ञ अचल वचन अे बोलेजी
विहित कर्म करे सदा नहीं को अेहने समतोलेजी ।३५।
वक्ता ते सृति सिध्धांतना रक्षक मर्याद अवतंशजी
रक्षक वेद परायण मिथ्यावादिना मुख द्वंशजी ।३६।
मंत्र उपासन तंत्रादिक भक्तना मोह निवारकजी
सर्व करण सामर्थ भक्त मारग उपदेश कारकजी ।३७।
स्वकीयने ते दान भजनानंद अन्यने दर्शन दुर्लभजी
कर्म ज्ञानादि अगोचर स्नेह पंथे अति सुर्लभजी ।३८।
ज्ञान विज्ञानने ईश्वर शास्त्र स्व धर्मना संभालकजी
वेद पंथ प्रति पादन आश्रित दीनना प्रति पालकजी ।३९।
वांछित कल्पतरू पूरण अपूरण पूरण कामजी
दारिद्र दवना दावानल सुशीलतानुं अे धामजी ।४०।
गुरू रत्नना अे हिमगीरी सामर्थ सकलनो सुमेरूजी
जश तणो क्षीर समुद्र अे धन वारू कोटि कुबेरजी ।४१।
सत समुहनो आश्रय निग्रह अनुग्रह सामर्थजी
सर्व ज्ञाता अने भोक्ता सर्वना पूरक अर्थजी ।४२।
अंग सकल रंगे भर्या रस भर्या रसदाता रस जाणजी
मधुर वचन मुख उचरे रसजुत रस अे खाणजी ।४३।
परम दयाल दया भर जगत हितारथ रूपजी
भक्त विरह कातर करूणामय कारण अनूपजी ।४४।
थोडे करे घणुं माने ने पोतानुं कीधुं न जाणेजी
कोटिक अपराध जीवना ते मनमां नहीं आणेजी ।४५।
जे आश्या जे कामना धरी मन आवशे अेह पासजी
तेथी अधिक पूरण करी तेहनी पूरसे अेह आसजी ।४६।
चार वर्ण चार आश्रम चार संप्रदायना जे इशजी
ते आवीने अे आगल चरणे नमावे शीषजी ।४७।
जगतना ईश जगतगुरू जगत जीवन जगना आधारजी
अद्‌भुत अे प्रागट्य हवुं अेमां कारणनो नहीं पारजी ।४८।
भक्तना सुख दायक बहु नायक नवली रीतजी
अे रसे रस अभिनवो अेहने व्हाली प्रीतजी ।४९।
अेवा गुण अगण अपारनो पामे नहीं कोइ पारजी
शेष तणुं सामर्थ नहीं तो हुं केम करूं विस्तारजी ।५०।
स्वतः प्रगट पोते हवा दैवी सृष्टीने काजजी
वरणावरण स्मरण करे रक्षा करवा सर्व समाजजी ।५१।

अेणे प्रकारे प्रथम गुण कही अने प्रगट्यानो कहुं समयजी
लोकोतर जे काल ते दंडवत करी करी सहु नमयजी ।५२।
संवतछरादि पंचाग लग्न ग्रह षड वर्गें गण वर्णजी
आधिदैविक स्वरूपे सहु कोइ आव्या प्रभुने शरणजी ।५३।
विविध विशे बहु भावशुं सहित पोतानुं सामर्थजी
सामग्री साथे लई हर्षशुं सेवानो छे हर्षजी ।५४।
ग्रहे गण लग्न अनेक नक्षत्र शुभ वेळाअे ने अे योगजी
कर जोदिने उभा रह्या धन्य जे आवशे उपयोगजी ।५५।
महा रसरूप स्वरूपनो उत्सव जोवाने तेणी वारजी
सत्कार करी महा प्रभुजीअे सर्वनो कीधो अंगीकारजी ।५६।
आगे जे बहु प्रागट्य हवा तेना कारण प्रगट प्रमाणजी
न्यामिक अक्षरमां लख्या वेद शास्त्रने पूराणजी ।५७।
अे प्रागट्य अति अभिनवुं कारण रूप अे कोण संभालेजी
वेद पूराण ते शुं लहे ज्यांहां वाणी नहीं चालेजी ।५८।
अेहनुं प्रागट्य कारण को केम उरमां आणेजी
अेहनी करूणा कटाक्षथी अेतनमार्गी कांइ जाणेजी ।५९।
अेवुं कही कहे जोतशी अेहोने चरणे अनुसरीयेजी
अेथी प्रागट्यनो समय कांइ अेक सूचन करीयेजी ।६०।
ब्रह्माने बीजे परार्ध स्वेत वाराह जे कल्पजी
वैवस्वत मनवंतरे कली अठावीसमो गत अल्पजी ।६१।
नृप विक्रमादी राजथी सवंत सोलसे आठजी
शाक ते साली वाहन तणी चौदसे तेरने साठजी ।६२।
दक्षणायन सूर्ये हेमंत ऋतु मांगल्य प्रदनी छे रासजी
परम पवित्र परम उत्कर्ष मागशीर मासजी ।६३।
शुक्ल पक्षे सुदी सप्तमी भ्रगु घडी बत्रीस पल बावीसजी
पूर्वा भाद्रपद चोपन घडी पल छप्पन अे धरी शीशजी ।६४।
अे जन्म नक्षत्र सिध्धी योग घटी ओगणत्रीस ने पल अेकजी
जन्म योगने वाणिज करणे अेम पंचांग शुद्ध विशेकजी ।६५।
चंद्र ते कुंभ रासे स्थिति रास नवासे नवमे जेहजी
धन संकाते गति दिन चार घटी अेकावन तेहजी ।६६।
भोग्य छे दिन पच्चीस घटी नव छवीसनुं दिन मानजी
मिथुन लग्न लग्नाधिप बुध्ध रसाधिप शनीश्चर जाणजी ।६७।
चंद्र होअे धिप कहीअे केन्द्र ने कारणाधिप शुक्र नामजी
संस्थाधीपो बुध नवाशाधिपो शनीनुं धामजी ।६८।
द्वादशाधिपो जीवने जीव त्रेतीशाधिपो कहीअेजी
ते दिने उध्यात गत घडी २७ पल ५६ लहीअेजी ।६९।

रात्र प्रथम घडी अेक ने पल छप्पननो जे समयजी
अे महा शुभ वेळा ते सर्वना मनमां गमयजी ।७०।
श्री विठल ग्रहमां भाग्यवती रूक्षमणीजी
पुत्र रत्न प्रगट्या महाप्रभु अति पूरण कामजी ।७१।
नक्षत्र नाम दामोदर कह्युं जोतसीअे तेणी वारजी
मास नाम श्री कृष्ण ते श्रीमुखे कहयुं छे बहु वारजी ।७२।
वेहेवार नाम श्री वल्लभ धर्युं श्री गुंसाईजीअे हाथजी
भक्तनुं नाम ने रास गते श्री गोकुलनाथजी ।७३।
अेहना अनेक नाम चारो जुग जुग अविचल अेहजी
शेषने सहस्त्र मुखे गणना अे न आवे छेहजी ।७४।
सिंध ज्योतनी ने मनिष्य गणे शूद्र वरण ने नाग वर्गजी
जीव दसामा प्रागट्य ते नव जाणे जोशी गर्गजी ।७५।
स्कंध ते सूर्य शोभितो नक्षत्र पुरूष ने आकारजी
कुंभ रासे स्थिति चंद्रमा अेहनुं कारण करूं छुं विस्तारजी ।७६।
परम रसिक प्रगट्या रसभर रसनो छे अे कोशजी
ते रस सूचनने अर्थे समय कर्यो छे निरदोषजी ।७७।
ब्रह्मा अनेक हवा छे ते मध्ये तप कीधो छे जेणेजी
व्रज सुंदरीना चरण रजनी प्रार्थना कीधी छे तेणेजी ।७८।
ते ब्रह्मानो बीजो परार्ध पुष्टी रूप छे अति उद्भटजी
ते मांहे अति करूणा करी कीधुं छे पोतानुं प्रागट्यजी ।७९।
त्रीस कल्प छे ते मांहेनो श्वेतवाराह कल्प जे नामजी
ते भौमी सबंधी भूअ भक्त छे ते माटे कीधुं सनमानजी ।८०।
चौद मनवंतर मांहेनो सातमो वैवस्वत मनवंतरजी
तेणे पूर्वे भगवद सबंध सुण्यो छे ते माटे कीधो छे आदरजी ।८१।
अेकोतर कली मांहे कलीयुग अठावीसमो सारजी
वैष्णव तेने जाणीने प्रभुजीअे कीधो अंगीकारजी ।८२।
अे कलीयुग मांहे विक्रमाजीतनो छे शकराजजी
सवंत सोलसे अठोतरा सर्वथी अधिक अे शुभकाजजी ।८३।
विक्रम कहेता विशेष करी मारगे चरण धरे जेहजी
मारग ते सर्वोपर प्रगट करी पायो धार्या अेहजी ।८४।
त्यांहां सुख संयुक्त अलौकिक सामग्री लाव्योजी
मर्यादा रहित अेणे समय अनंत गुणे संवछरा आव्योजी ।८५।
सोल श्रींगारना भोक्ता आप किशोर किशोरी युक्तजी
सोल कलाअे संपूर्ण प्रागट्य सहित अे भक्तजी ।८६।
अष्ट विधि आलिंगन आत्मिक स्वरूप छे अेहजी
जेहना भेद आचार्यजीअे ग्रंथमां विवरण कीधा तेहजी ।८७।

नायका अष्ट प्रकारनी रसभर	सर्व सुखे संयुक्तजी	
अष्ट माहा सिध्ध अलौकिक	आगल उभी कारण भक्तजी	।८८।
प्रभु रूपी अलौकिक चंद्र	उदय थयो सोल कला संपूर्णजी	
नायका कुमुद प्रकाशित कीधा	सरवांगे दुःख चूर्णजी	।८९।
सर्वांगे रसरूपी पीयूष	सींचन करे छे निशदिनजी	
भक्त रूदय भाव अंकुर	प्रगट करे प्राण जीवनजी	।९०।
अष्टाधिक शत सोल	श्री गारात्मिक भक्तरूपी मालजी	
तेह तणा मध्य नायक	पोते श्री गोकुल पालजी	।९१।
संवत सोल अठोतरानो	जे कीधो अंगीकारजी	
तेह विसद करी को सके	भाव छे अनेक प्रकारजी	।९२।
अे सवंछर मांहे छे	शाक ते साली वाहनजी	
साली नायका भावे	भूषित छे जेहनुं वाहनजी	।९३।
साली विसाल वाहन रति रण	शाके कर्युं मननुं चीत्युंजी	
पंच दश तिथी स्परसे भर	काम प्रगट करी रण जीत्युंजी	।९४।
तेथी करी पण अंगनो स्परसे	काम उदीपन थाअेजी	
रसभोग वर्ण जीतीने	सर्वांगे सुख दायजी	।९५।
चौद उपर तिहोतेरे	पंदर सतनो कर्यो स्पर्सजी	
तेणे अे सूचन कर्युं मनमां	आणीने अति हर्षजी	।९६।
शाके चौदसे तीहोतेरे	तेनो भाव प्रगट धर्यो छे जी	
चौद विद्या चोसठ कला	नवे रसनो साको करवो छे जी	।९७।
पूराण न्याय मीमांसा	धर्म शास्त्र ने चारे वेदजी	
छय अंग अे चौद विद्याना	अनेक छे भेदजी	।९८।
पूराण उपपूराण न्याय	जे मध्ये विचारनो नित्यजी	
मीमांसा ने वेदांत	सोल अध्याय छे अेणी रीतजी	।९९।
ते मध्ये अध्याय बारमां	कर्म मार्गनो विचारजी	
चार अध्यायनुं श्री आचार्यजी	श्री गुंसाईजीअे विवरण कीधुं सारजी	।१००।
धर्मशास्त्र जे स्मृती उपस्मृति	वेद ने उपवेदजी	
वेदना अंग शिक्षाकल्प व्याकर्ण	छंद ज्योतिष भेदजी	।१।
निरूक्त खट शास्त्र	अवांतर शास्त्र छे तेहजी	
उप शास्त्र छंद शास्त्र ने	वाछायन शास्त्र छे अेहजी	।२।
भरथ शास्त्र जे श्रींगार	पांचमो उपवेद ते रागजी	
संगीत वाद तान ताल	भेद स्वरे अनुरागजी	।३।
विद्याना भेद अनेक अवांतर	मुक्ष ते अेणे प्रकारजी	
वली चौद विद्याना चौद अर्थ छे	ब्रह्म ज्ञान रसायन सारजी	।४।
स्वर ध्वनी जोतिश वैदिक	कोसावा जीव वाहन जेहजी	
हीणाक्षर कथन नट नृत्य	ते व्याकरण छे तेहजी	।१०५।

जल तरण संबोधन चातुरी विद्या जे चांपजी
तेनुं सारांस तत्वना ज्ञाता भोक्ता छे आपजी ।१०६।
चोसठ कला ने संयोग विप्रयोग नव रस धर्मने टेकजी
अनन्यता दान दया ने सेवा आव्या अेह अनेकजी ।७।
अे शाली वाहन सके अनुकर्ण कह्युं छे अणुं मात्रजी
हवे दक्षणायन सूर्य तेहनी छे पुष्टी मार्गी रात्रजी ।८।
फल सूचक रस बोधक दिन प्रति वाधती जायजी
दक्षण मार्ग अनुग्रही दक्षण नायक अे समुदायजी ।९।
हेमंत रूतु अति विलसित शीतल सुखजन कहे छे अेहजी
महा मांगल्य फल दायक विरहना ताप नासक जेहजी ।१०।
पुष्टि भक्तिव्रत महा समुद्रवत दान सबंध फल रूपजी
फल रूप गुरू रूप सर्वेना पोते छे आधार रूपजी ।११।
मागशीर मास ते भक्ति मारगी सुखनुं सारजी
रस सबंधी स्नेह सृंगार सर्वोपर प्रगट प्रकारजी ।१२।
मार्ग जे पृष्टि मार्गशीर कहेता सर्वोपर जेहजी
फलात्मीक प्रगट करी प्रागट्य कीधुं छे तेहजी ।१३।
सर्व मासमा मार्गशीर श्रेष्ठ कर्यो छे अे मासजी
सर्व मास उपर करी प्रभुजीअे पूरी अेहोनी आसजी ।१४।
शुक्ल पक्ष अति निर्मल अमल उभय आत्मिक प्रागट्यजी
चंद्र पूरण कला वाधती भक्त पक्ष निर्मल उदभटजी ।१५।
पोतानो पक्ष निर्मल करी अज्ञान तमनो कर्यो नासजी
उतरोतर कला वाधती रसभर भक्तशुं छे विलासजी ।१६।
सप्तमी तिथी अंगी करी धर्म धर्मीने संयुक्तजी
केवल धर्मी स्वरूप बले अंगीकृत कीधा छे भक्तजी ।१७।
देव रूषी पितु यहलोक परलोक आत्मा ने आत्मीयजी
अेह थकी अलगा करी योजन कीधुं रस मारगीयजी ।१८।
बाहु प्रसारण परीरंभण आदी छय छे जे रस धर्मजी
ते रसे जे जने अध्यन करे दान दे अेहने अे खट कर्मजी ।१९।
अति प्रवीण महा नायक खटगुण पूरण सुंदर वरजी
धर्म धीर जस वेष्टित उज्जवल मार्ग अे रस भरजी ।२०।
शुक्र ते वीर्य पराक्रम अंग सुदेस जसवंतजी
संजीवन विद्या अलौकिक स्वरूप हाव भावादिक अनंतजी ।२१।
संजीवन मंत्र छे ने संजीवनी मूली छे पासजी
वचन ने स्वरूप जेहने जीवन संपन्न सुख रासजी ।२२।
कंदर्प वर्धत याधिक कविराज सर्व रूषि मांहे सारजी
भगवद आत्मिक अति भलो ते माटे शुक्रनो कर्यो अंगीकारजी ।१२३।

नक्षत्र पूर्वा भद्र पद पूर्वा नायका रूपजी
सनमुख सिंघासन रूप अन्य पूर्वा अनन्यपूर्वा स्वरूपजी ।१२४।
भाद्रपद कल्याण कारक द्विविधी रसात्मीक सुख धामजी
सिध योग सहित रस सिधी संयोग अनुभव सिधीअे नामजी ।२५।
पूर्व फल ने पछी साधन वृष्टी ते भाद्र पदनी पेरजी
सुनक्षत्र अपूर्व रसमय यामीनी रति पति अनुभव भेरजी ।२६।
भगवद संयोग सिधी योग साक्षात सबंध रयणी रसेजी
भक्तने पुष्टि फलदायक सिद्ध छे विलंब न निसेजी ।२७।
वाणिज्य व्यापार करण ते भक्तनां इंद्रीयनो व्यापारजी
जीवन संपन्न वाणिज्य रस रूपी द्रव्य छे सारजी ।२८।
क्रय विक्रय रस वाधतो वाणिज्य उधार परम विशेषजी
करण वाणिज्य श्रध्धावानने श्रवणे सरूओ सदा वरेशजी ।२९।
सदना पारखु जाण प्रवीण ने अगणित गुणनी वृध्यजी
श्री गोकुलेश महा रत्न प्रगट हवा अेवमादी पंचांग शुद्धजी ।३०।
तेणे समय चंद्रमा कुंभनो कुंभ रास महा सुख रासजी
प्रगट्या रसिकवर जाणीजी कुंभमां कीधो छे रसे निवासजी ।३१।
ते सुख भरे रसने समोहे करी अने सींचन करतो आव्योजी
ते कुंभनो चंद्र ते अमृत चांदलो उग्यो सर्वने भाव्योजी ।३२।
ते कुंभनो अधिपति शनिश्चर तेणे करी नायक ते महा धीरजी
दातृत्व सूचित सनै रस वाधे क्रम क्रम अति महावीरजी ।३३।
पोते पुष्टी रसे परिपूण मंगल सुखनी रासजी
ते माटे चंद्रमानी स्थिति कुंभ रासे थई प्रकासजी ।३४।
रास नवांसे नवमे संपूर्ण सुख रास समोहेजी
सर्व प्रकारे पूरण अथवा नवांसे नवमे सोहेजी ।३५।
नवनिधी नायका अेकाकी भावापन्न सहित रस भोगीजी
नवांशे नौतन रस अनुभव दायक संयोगीजी ।३६।
धन संक्रांति शुद्ध नायकाते संक्रांति मिलण सुख साथेजी
कांती शोभा वैभव धन अंगीकार कर्यो ते नाथेजी ।३७।
गति दिन चारे ते मुक्ति आदिदै तुच्छ पुरुषार्थ चारजी
पस्यां ताप घडी अेकावन अेक जे केवल पुष्टी अंगीकारजी ।३८।
दिन पच्चीस घटी नव चोवीस तत्वाधिक संजयोक्ताजी
गुण भेद त्रिगुण आदी देइ नव प्रकारे पुरूषोतम भोक्ताजी ।३९।
दिन मान घटे निशी वाधती क्रीडा पुष्टी रसे सृंगारजी
पूरण रस अनुभव करवाने वाधी रात्र अपारजी ।४०।
मिथुन लग्न लग्नाधिपो बुध ते मानिनीना मन हरणजी
अति प्रवीण अंग भूषण रसाधिप शनी सुख स्थिर करणजी ।१४१।

रासार्ध होअे ते द्वितीय होअे अे प्रागट्य अेहजी
ते विप्रयोगात्मीक तेनो स्वामी चंद्र शीध्र गामी जेहजी ।१४२।
अमृत श्रावी स्वगुण ज्युत भक्तनो असही परितापजी
शीध्रगामी ते विप्रयोगने टालीने संयोग करी आपजी ।४३।
रास त्रीभागोंद्रेकाण तेनो पति शुक्र आदि मध्य परिवशानजी
सर्वदा अेक रसे भर अतिशे वीरज वानजी ।४४।
अ प्रसाधिप बुध्ध छे ते पुष्टी मारगी कहेवायजी
पुष्टी मारगीय कर्म ने धर्मना धर्मी अे थाय जी ।४५।
नवासाधिप शनी ते नवांस नौतन अंग विभागजी
सर्वतोधिक लोकोतर स्थिर करे अग्रभोगी अनुरागजी ।४६।
मुग्धा मध्या प्रगल्लभा जे त्रिविधाना जे नौतन भोगजी
द्वादशासो जीव तेहनो कहीये छे संयोगजी ।४७।
भक्तना द्वादशे अंगना जीवन संपादिक श्री अंगजी
आनंद मात्र कर पाद मुखोदर स्वरूप वर्धन अनंगजी ।४८।
सरवांगे सरवांगनो मनोरथ पूरण करेजी
त्रिशांसाधिपो जीव ते स्वरूप संबंधे रस भरेजी ।४९।
ते दिन रात्र घटी अेक उपरांत प्रगट्या छे सुख रासजी
सर्व गुणे पूर्णोदय महा महीमा पूरण करी आसजी ।५०।
तेना नाम ते भक्तने भावता सुख दायक पूरण कामजी
अेक अेक थकी अधिक रस श्री मुखे कह्या अभिरामजी ।५१।
मास रासे वहेवार नक्षत्रनुं नाम दामोदर धरीयुंजी
भक्त नाम रास नाम गोकुलनाथ महा रस भरीयुंजी ।५२।
भक्तना मनोरथ पूरवा भक्त वशता सूचन कर्युंजी
सुखरास संयोग समानता रस वस मन हर्युंजी ।५३।
उभयता अेक स्वरूप अे समय विशेष छे तारतम्यजी
भक्तनुं नाम ते रास नाम ते अेक धर्युं छे अेमजी ।५४।
मास नाम मूलनाम सदानंद रसात्मिक मूल रूपजी
वहेनार नाम श्री वल्लभ भक्तने भाव्युं अे अनूपजी ।५५।
पोताने मन भावतुं नाम कर्युं श्री गुंसाईजीअे जेहजी
लख्युं जन्म पत्री मांहे जोतसीअे वल्लभ अेहजी ।५६।
दामोदर दासीअे हुलामणुं नाम धर्युं पटकोलजी
पटकोल वस्त्र शिरोमणी वस्त्र नहीं को अे समतोलजी ।५७।
श्रीमुखे कही छे अे वारता मने पटकोल कही बोलावेजी
मेरा पटकोल मेरा पटकोल अेम करी हुलरावे जी ।५८।
हवे सिंध ज्योतनुं कारण कहुं रसनायक जे विविधी सबंधजी
उतान तीर्यक आ सीतक स्थीति अनंत जे बंधानजी ।१५९।

रमण रसे महा नायक चपल अतिशे शुभ लक्षणजी
पराक्रमे त्री लोक मांहे सर्वना अेहज शिरोमणीजी ।६०।
मनुष्य गणे मनुष्य चरित्र गण सील स्वरूप अनूपजी
मनुष्य गण अगण समोहसुं लीला करे अे रस रूपजी ।६१।
शूद्र वरणे ते शुध्ध भक्ति मारगे अंगीकारजी
साक्षात चरण सबंध करावे शूद्र आदि नर नारजी ।६२।
नाग कहीअे केश पासने वर्ग समूह ते सारजी
तेणे रसाधिक समय ते केश प्रसारण ग्रहण अपारजी ।६३।
परस्परे अशेष सुख सागर सुदेश शोभा भर अतिजी
समय नाग वर्ग ते
उदीपन उदबोध कारक बांधे ते स्मर ने रतिजी ।६४।
अेणे समय नाग वर्ग ते उभय चरणे आवी नमयजी
दीर्घ विसाल चमर रूप शोभित सज्याअे ज्यारे रमयजी ।६५।
गज गामिनी अति वल्लभ क्रीडा गजमतिनी जे रीतजी
नाग कहे नाग वली ते शुं अति घणी प्रीतजी ।६६।
जीव माहादशा प्रागट्य जीवनी महादशा जेणाअेजी
वृहस्पति कहेता मोटी दशावानना धणी गणाअेजी ।६७।
गुरू दशा गुरूनी शिक्षा दे क्रीडा कारण रस विशेषजी
रमण रसे हाव भावादिक मन मोटे मने परम सुदेशजी ।६८।
स्कंधे पुरूषाकार नक्षत्र ने भक्त ते पुरूषाकारजी
अंग संगे सोहे महा बलवंत मति मंद धीर अपारजी ।६९।
पुरूषाकार नक्षत्र ते विपरीत वधे रमण रस रंगेजी
अेणे प्रकारे षड वर्ग गण वर्ग शुद्ध कर्युं पंचांगजी ।७०।
सूर्य आदि देइ लग्ने ग्रह सहु आव्या सेवा काजजी
आपापणे मंडले रही उपजाव्यो शुभ योग राजजी ।७१।
लग्न कुंडली लग्न ग्रहना जे जे छे प्रकारजी
भाव तेहोना जुजुवा कहुं छुं करीने विस्तारजी ।७२।
प्रथम तनु रूप लक्षण वय वरणे भवन मिथुन ते लग्नजी
तेहनो स्वामी बुद्ध ते सर्व भाव ने भावापन्नजी ।७३।
नायक नायका उभय स्वरूप ते रस प्रकारजी
बुधीपति रस अनुभवे निपुण चंद्र वंशी ते सारजी ।७४।
त्रीजो अंक ते त्रिविधी नायका शांतिकादिक संगजी
स्वकीय परकीय भोक्ता महा रसिक श्री अंगजी ।७५।
ज्ञानात्मिक मित्र भवन अधिपति कन्या लग्न छे जेहजी
रस भावापन्न नायका अतिशे प्रीये नहीं छे तेहजी ।७६।
अे दर्शन नहीं थाअे कनेजी दर्शन अंगीकृत छे तेनेजी ।२४८।

तन स्त्रिय लिंगनुं कारण	प्रीय छे स्त्रीजन मात्रजी	
बुध शत्रु भवन बेठो	करे रक्षा भक्त रस पात्रजी	।१७७।
त्रण्य भवने भोगवे	त्रिविधि लीला रसे संयुक्तजी	
बाल पौगंड राजमिथुन	ज्युगम रूपे अनुरक्तजी	।७८।
ते तेनुं स्थानक माटे	सुरति रसे सुख धरीजी	
जोड जुगते भाव भक्ते	विगते रस विस्तार करीजी	।७९।
भक्त ज्ञान मिथुन ध्याने ते	अति स्थिर थई संतोषेजी	
ते रस आत्मिक ज्योगना	भाव भक्तने ज्ञाने पोषेजी	।८०।
बीजे धन मणी माणेक रत्न	मुक्ता सुवर्ण धातुजी	
कुटुंब भवन कर्क लग्न	शशीपति लग्ने सोहातोजी	।८१।
गुण स्थिति ते धन लग्ने	उच्चनो छे ते देव गुरूजी	
क्रीडा अर्थ ते अज्ञात यौवना	मुग्धा रस भावनो मेरूजी	।८२।
धन भवने उच्य गुरू	स्त्री भवने सते रह्यां प्रसन्नजी	
धन लग्ननो ते पति छे	ते माटे भक्त रूपी धनजी	।८३।
चंद्रग्रहे विशे बेठो ते पुष्ट	स्थानी अमृत वृष्टीजी	
ते माटे सदा सर्वदा	अेतद भावापन्न सृष्टीजी	।८४।
धन भवननो स्वामी ते	नव धर्मे भवन विषे आव्योजी	
तेणे करी अेतनमार्गी	धर्म सहित भक्तने भाव्योजी	।८५।
जाया पति गुरू माटे	अेतनमार्गी धर्मनो रक्षकजी	
धन भवननो पति धर्म भुवने	ते माटे बहु धर्मनो पक्षकजी	।८६।
चोथो आंक ते भक्तना अलौकिक	चार पुरूषार्थ सिद्ध करेजी	
कर्क छे कार्य भवन मध्येत्रीजुं ते	रंगभोमी विलास रस भरेजी	।८७।
त्रीजु ते सहज पराक्रम	भगिनी भ्रातभृत्य निजदासजी	
सही लग्ननो रवी पति	जेनो जाया भवने निवासजी	।८८।
जायानो ने पोतानो	जणावे प्रतापजी	
सूर्यना त्रण्य धर्म जे	उदय प्रताप ने संतापजी	।८९।
तेहना स्थल सूचित करूं	भक्तने आनंदनो होअे उदयजी	
प्रगट प्रताप जगत मांहे	ने शत्रुने संताप रूदयजी	।९०।
त्रीजुं छे भ्रात भवन त्यांहां	बेठो सूर्यनोरिपु राहुजी	
वेर प्रतापे उपजे	प्रताप ते पुन्यज थाअेजी	।९१।
सींघ लग्ने सहज पराक्रम	सींह लक्षण थायजी	
भक्त भृत्य अने दासनुं	पराक्रम सहीअ जणायजी	।९२।
चोथे ते मित्र मातु वाहन	सुख वाटिका निधी गेहजी	
कन्या लग्ने बुधपति	ते कन्या लग्न अेहजी	।९३।
कन्या लग्ने बुधपति ते	स्नेह भाग्यवान सहित जेहजी	
सहेज मुग्धा मन उपजे	मारे परम वल्लभ अेहजी	।१९४।

अने प्रागट्य लग्ननो बुधपति ते बुध ज्ञानात्मिक करी कहीयेजी
तेणे प्रागट्येथी सहेजे ज्ञान अे सर्वदा सुंदर वरने संग रहीयेजी ।१९५।
छठो आंक ते ईश्वर आदि छअे धर्म रसे उक्तजी
मित्र भवने कन्या लग्न ते नायका प्रिय उभे रस जुक्तजी ।९६।
रति पति संगे अनुभवे हाव भावे अति सुखजी
सर्वथी अधिक पूरण सुख अगणितानंद छे मुख्यजी ।९७।
केन्द्र स्थानक छे चार तेनो भाव जुजुवो कहीअेजी
अेक तनुं चार मित्र सात स्त्री वैभव दस अे लहीअेजी ।९८।
होअे चार पदारथ अनुकूळ त्यांहां पूरण सुख मूलजी
वैभव आदी सकल सामग्री रसनी अहीं अनुकूलजी ।९९।
तन मिथुन आनंद मय मीन ते कन्या रस भरजी
स्त्रीधन स्वकीया परकीया सानुकूल छे अति वरजी ।२००।
कर्म मीन कामनुं वाहन रसभाव जनित जे कर्मजी
वैभव अति घणो होय अने अति चंचलता तेनो धर्मजी ।१।
सुख पति छठे आव्यो ते शत्रु भवने वेगे भावेजी
ते शत्रुने माथे पग दइ रस मारग प्रगटावेजी ।२।
पांचमुं विद्या संतान गर्भ बुध्धि मंत्र उपदेशजी
तुला लग्नने भृगु पति माटे सहुथी अेह सुदेशजी ।३।
विद्या बुध्धि मंत्र उपदेश शिक्षा अेहनी तुलना नहीं कोअेजी
अने भृगुपति माटे अे पदारथ सर्वे जीवनरूप होअेजी ।४।
जे विद्या भवनेश अमृत संजीवन पति आव्योजी
कवि विचिक्षण ते जीव भवने स्थिति अति वीर्यवान भाव्योजी ।५।
रस उपयोगी वाछायन भृत्य शास्त्र हावभावादिक सुजाणजी
अमृत संजीवने करी विप्रयोगीने जीवन दानजी ।६।
अे छे शुक्र असुर गुरू माटे असुर गुरूत्वे मानेजी
अथवा काव्य प्रिय रस अे विद्या भवनेथी जाणेजी ।७।
षष्टम रिपु संग्राम क्रूर कर्म मय शंका मातुलजी
दशादिक भवने व्रश्चिक लग्ने कुंज पति छे अनुकूलजी ।८।
तेथी भक्ते रसे अतिरिक्त लौकिक खटरस ने खटकर्मजी
भयरिपु संग्राममां रण वतुं सूचित बुद्ध जुत जाणे मर्मजी ।९।
सत्य भुजा आ मार्गमां वाणिज्य वहेवार विवाद नीव्रतजी
गमन ने आगमन भवन धन लग्न गुरूपति त्यां प्रवर्तजी ।१०।
अभिसार गमननुं भवन त्यां शुक्रने महानायक वीर्यवानजी
रवि ज्युत मंगल शोभितो मंगलकारी अति प्रतापवानजी ।११।
धन लग्नमां ते स्त्री धन स्त्री भवननो स्वामी गुरू सारजी
ते बीजे धन भवने उच्चतो लीला सामग्री भंडारजी ।२१२।

लाभ भवन जे अग्यारमुं तेनो पति भोमी स्त्री भवने सोहाव्योजी
स्त्री लाभशुं चित अने ते भोम शत्रु भवने आव्योजी ।२१३।
तेणे करी शत्रु वर्गनी सामग्री रसनी उपयोगीजी
तेहनो भोग पोते करे समय समय करी विनियोगजी ।१४।
भ्रात भवनाधिप सातमे रवि भक्त जे नित्य लाभ प्रतापजी
अे प्रताप धन जोइ भ्रातने उपजे अधिक संतापजी ।१५।
अष्टमे केन्द्र संकट कष्ट, व्याधी रूपी अे संग्रामजी
अरिष्ट भवन लग्न मकर शनिपति मकर अति चपल कामजी ।१६।
रसमय रण संग्राम मकर ध्वज नायका राग तरंगजी
मती मंद नाना भाव अनंत ते मध्ये पूरण रस रंगजी ।१७।
विप्रयोग आदि संकट क्लेश अनेक भांति शृंगार विचित्रजी
सही न सके रस समय रसमा ते अति राचीजी ।१८।
नवमे ते धर्मभाग्य यात्रामठ देव दीशा भवनजी
कुंभ लग्न पति शनि माटे धर्मने भोगा स्थिर रहेवुं लग्नजी ।१९।
त्यां केत छे धर्म भूप धाम ध्वजा सकल सुख कारीजी
जेय प्रकाश भाग्य धर्मनी धसी रहयो भारीजी ।२०।
कुंभ लग्न मंगल करे पूरण अमृत रस संयुक्तजी
शनी सोम युक्त भांते रस धर्मनी प्रभुता अति उक्तजी ।२१।
दशमुं कर्म वैभव व्यापार राजमुद्रा प्रवीण पितु भवनजी
मीन लगने गुरू पति ते कर्मभवने मीन लगनजी ।२२।
लीला महाजल सिंधु सुधामां मीनवत सुखद सुभाओजी
अगाधी वैभव व्यापार क्रीडा राजमुद्रा नायक राओजी ।२३।
प्रवास परम लीला स्थल करवानो अभिसरण संकेतजी
तेहना परम कल्लोलसुं चित्र रस पूरण समेतजी ।२४।
चातुरी ज्युक्त चपल जेम जल विसे गम्य छे मीनजी
तेमज लीला समुद्र मांहे अेहने अेहज जीवनजी ।२५।
मीननो स्वामी जीव ते धन भवने उच्चनो छे मोहेजी
लीला जलने परम धन बीजुं न रूचे तेहने सोहेजी ।२६।
पिता भवने गुरूपति ते माटे पिताथी अधिक जे आपजी
अे प्रागट्यथी पिताने उत्तमादी दिन दिन अधिक प्रतापजी ।२७।
अेकादश आयुष लाभ अश्व गज वस्त्राभरण ने अर्थजी
मेष लग्ने भोम पति ते माटे गज अश्व लाभ सामर्थजी ।२८।
त्यांनुं अधिपति गुसु सुत ते मुक्ति अेह विशेषजी
भक्तनो लाभ अपरमित प्रति स्नेह अधिक निमेस निमेषजी ।२९।
वाहना आगमनाधिक तीर्थक बंधु भेद सुख जो हरताजी
मेष लग्ननो भाव सर्वोधिक अनुभव करताजी ।२३०।

द्वादशे त्याग भोग दान विवाह व्यय इष्टनुं जे भवनजी
वृष लग्न शुक्रपति रसमय सुचित्र रस पात्र गवनजी ।२३१।
वृष लग्न धर्म रूप ते अेतद धर्म नेष्टासुं चितजी
इति वय भवन प्रकार कहयो जे ग्रह लगने छे उचितजी ।३२।
अेणे प्रकारे द्वादश आत्मिक लग्न भाव प्रकाशजी
ग्रह गण वर्ग अनेकनी प्रगटीने पूरी प्रभुजीअे आशजी ।३३।
अे प्रागट्यनी पत्री द्वीज गुणवंते वांची त्यांहांजी
परिवार भक्त सहित श्री गुंसाईजी बेठा छे ज्यांहांजी ।३४।
वांचीने बोल्या जोशी अदभुत प्रागट्य अेह स्वरूपजी
प्रतिक्षणुं लीला वाधती अलौकिक कारण अे रस रूपजी ।३५।
सुख सील रूप निधान ने प्रतिक्षणुं लीला वाधती रंग अनेकजी
नेत्र सुखे सन मानतुं क्यांहां लगी कहुं विसेकजी ।३६।
लखित ग्रंथमां नथी लख्युं मारी बुध्धीने अनुसारजी
अलेखक अगणितानंद अलौकिक केम करीअे विस्तारजी ।३७।
अेहवुं कही करी दंडवत आप्युं श्री गुंसाईजीने हाथजी
सनमुख थई श्री गुंसाईजीअे बेहु करमा लइ नाम्युं माथजी ।३८।
जैजैकार कही तेह समय अक्षत दुर्वाअे वधावेजी
आनंद उपज्यो अति घणो ने वली सहुने मन भावेजी ।३९।
जोतशीने दान देइ कर्युं लौकिक अलौकिक दारिद्र चुर्णजी
कामनाथी कोटि गणु आपीने मनोरथ कीधां पूर्णजी ।४०।
जोतशीअे कर जोदिने गुंसाईजीसुं विनती कीधीजी
बालकने शुभ अर्थ ते प्रेमे आशीष दीधीजी ।४१।
निर्व्याधी नीशी रेणु ने मनसाशुं निरोधीना आरतजी
पूरण अर्पीना आशाजीव शरदोशा रातजी ।४२।
जन्म पत्रना भावने सांभलसे जेको नरनारजी
जन्म सफल तेनो हशे ने रस मारगे अंगीकारजी ।४३।
स्वस्ति श्री सुखदाइनी नाना संपन जे विद्यातीजी
मंगल उत्साह करणी संतुष्टने पुष्ट प्रदातीजी ।४४।
धन कुल जश ने आयुष विवर्धन विविध प्रकार करतीजी
गुण गण वसती निरंतर सर्वोपर आप जन्म पत्रीजी ।४५।
आगल तोक लीला कहुं प्रभुअे अंगी करी जेहजी
जे मांहें विस्तार छे बाल चरित्रनो अेहजी ।२४६।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित
प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम प्रथम तरंगे मांगल्य आठमुं – ८
संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य – ९ – नवमुं

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

राग : श्री गोकुल शोभा अति घणी आव्यो रूतुनो रायजी ''अेम गवाशे''

जीरे दंडवत करी महा प्रभुने चरणे नामी शीशजी
जीरे प्रेमे करी हुं प्रारथुं श्री गोकुल केरो ईशजी ।१।
जीरे परम दयाल दया रसभर रसिक स्वरूपजी
जीरे भूतो न भावी नहीं को अे सम ते आधुनिक अनूपजी ।२।
जीरे अजन अनंत सकल अदभुत अे अमित अतुल सामर्थजी
जीरे विरूध्ध धर्माश्रित पुरूषोतम प्रागट भक्तने अर्थजी ।३।
जीरे निरंजन निरलोभ निरंकुश निरावरण निसकलंकजी
जीरे नि:साधन फल भूतलमां लीला करे निशंकजी ।४।
जीरे रसिक राय रसजाण रसात्मिक रसनो अनुभव करताजी
जीरे रस दायक रस वांछित रस भर रसिक तणा रस भरताजी ।५।
जीरे विठल ग्रह प्रगट परम धन भक्त तणो आधारजी
जीरे स्वत: स्वतंत्र जगत हितारथ करी लीला विस्तारजी ।६।
जीरे बाल चरित्र पवित्र प्रेमभर कांइ अेक करूं प्रकाशजी
जीरे अेह मनोरथ पूरण करवा अेहनी मुने आशजी ।७।
जीरे जन्म पत्रिका सांभली सहु कोइ मन आनंदयाजी
जीरे दंडवत करी बहु भावसुं सहुअे अे पद वंध्याजी ।८।
जीरे तेह दिवसथी अेह सहु पोतानुं भाग्य सराहेजी
जीरे भक्त तणे मन भाव तणा अंकुर प्रगट्या उर मांहेजी ।९।
जीरे निरखे अेह स्वरूपने हरखे मन वारंवारजी
जीरे आश्चर्य थयुं कहे जगतमां नहीं को अे अनुहारजी ।१०।
जीरे नित्य नौतन नौतन करे वात्सल्यनी जे पेरजी
जीरे हुलरावे हरखे भर्या आनंदे उलट भेरजी ।११।
जीरे अेक जोइ मोही रहे अेक जोवाने आवे खांतेजी
जीरे अेक कांइ मिस मनमां धरी निरखे नवली भांतेजी ।१२।
जीरे अेक जोइ जाअे फरी अेक फरी अने रस वेगाजी
जीरे वात करे सहु अेहनी हींडे रस मांहे भेगाजी ।१३।
जीरे अेणी पेरे सहु भक्त ने नगर मांहे नरनारजी
जीरे श्री विठलजीने बारणे भक्त तणो नहीं पारजी ।१४।
जीरे अेवा प्रभुने जोइने श्री गुंसाईजी मन फूलेजी
जीरे आप पोताना भाग्यने गिणे न को अे समतोलेजी ।१५।
जीरे मनमा जाणी रहे प्रगट करे नहीं कांईजी
जीरे स्वरूप यथारथ अेहोना उरमा रह्युं समायजी ।१६।

जीरे सत्य संकल्प जाणीने कलप्युं अे अनुमानजी
जीरे अे बाल लीला आदी देइने सहुने सुखनुं करसे दानजी ।१७।
जीरे अेणी पेरे बहु भाव उर धरे मनोरथ मनजी
जीरे आनंद पामे अति घणो जोइ पुत्रना चिन्हजी ।१८।
जीरे रूक्ष्मणीजी हरखे भर्या हरख तणुं नहीं मानजी
जीरे कोण हेत प्रागट्य हवुं कीधुं मुने दानजी ।१९।
जीरे अति आनंदे आवर्या फूल्या अंगो अंगजी
जीरे वात्सल्यत ना भाव तणा उपजे मन अनेक तरंगजी ।२०।
जीरे तेल फूलेल सुगंध सहु ने उवटणाना साजजी
जीरे सिध्ध करे सहु ते समय प्रेमे प्रभुने काजजी ।२१।
जीरे उष्णोदक गगरा भरी राखे ते सिध्ध करीजी
जीरे उछंगे लेइ उवटणा करे ते आनंदे अति भरीजी ।२२।
जीरे भक्त सहु रंगे भर्या उभा रहे सहु संगजी
जीरे रूप जुअे मन भावसुं रसदायक श्री अंगजी ।२३।
जीरे को जोइ मोही रहे को करे ते मंगल गानजी
जीरे को स्पर्श करे श्री अंगसुं को करे रूप रस पानजी ।२४।
जीरे को रस भावे पुरित रहे को हरख धरे मन मांहेजी
जीरे को भावे अंतर रमे को प्रगट अनुभवे त्यांहेजी ।२५।
जीरे को अंगुछो अंजन लेइ को भूषण व्हाला काजजी
जीरे को आनंदे उभा रहे नवराववा लेइ साजजी ।२६।
जीरे अनेक भक्त अेणी पेरे अनेक भाव संयुक्तजी
जीरे चोंहों पास वींटी रहे स्नेह सहित अनुरक्तजी ।२७।
जीरे तेल उवटणां करी अने नित्य नवरावे सुखदाइजी
जीरे अंगुछो अंगेकरीयो ओवारे लुण ने राइजी ।२८।
जीरे शेष जल लोटी भरी वारी नाखे तत्कालजी
जीरे त्यांथी मृतिका लेइ अने करे बिन्दु शुभ भालजी ।२९।
जीरे भूषण अंग धरावीने अंजन नयणे दीधुंजी
जीरे भ्रुअ पर मिस बिन्दुका देइ रक्षा हित अे कीधुंजी ।३०।
जीरे रूक्ष्मणीजी श्रीमुख जोइ ओवारणा लेइ हरखेजी
जीरे अे समय सर्वस्व वारे त्यां भक्त रह्या जे निरखेजी ।३१।
जीरे पलंगडी परम सोहामणी जटीत रत्न बहु नंगजी
जीरे पाटी अति कोमल भरी पाट तणी पचरंगजी ।३२।
जीरे तलाइ नौतन धरी अने चादर कोमल श्वेतजी
जीरे सिराहाणुं गाल मसुरीया धरीया छे बहु तेहजी ।३३।
जीरे सेज बंध फुदणां ते छोटा छोटा फरकेजी
जीरे अे जोइ त्यां भक्तने काम व्यथा उर करखेजी ।३४।

जीरे प्रथम पलंगदिने काजे धूप दीप त्यां धरीजी
जीरे भोग समर्पी त्यां आरती द्रष्टि निवारण करीजी ।३५।
जीरे अेह समय सहु अे कीधी वात्सल्यनी जे रीतेजी
जीरे त्यां प्रभु पधरावीने पोढाडे बहु प्रीतेजी ।३६।
जीरे तेह समय श्री अंगथी प्रगटी छे कांइ जोतजी
जीरे दीसे सकल ब्रह्मांडमां जे प्रसर्यो छे उद्योतजी ।३७।
जीरे जेम घरमां दीपक थकी होअे सकल प्रकासजी
जीरे ब्रह्मांड भवनमां दीपक अे तेज तणी छे रासजी ।३८।
जीरे सके न पासुं पलटी स्व उथान रहितजी
जीरे अे लीला अंगी करी तोक तणी ते नितजी ।३९।
जीरे अविलंबन अे भक्तने मन लागुं निशदिनजी
जीरे रूप जुअे रस अनुभवे रूचे नहीं कांइ अन्यजी ।४०।
जीरे अेणी पेरे आशा भरे भाव भर्या सहु हरखेजी
जीरे अलगा कोइ रहे नहीं सुंदर श्री मुख निरखेजी ।४१।
जीरे को अेक दिवस अेणी पेरे अधिक कला आवेसजी
जीरे जोती ते प्रतीक्षणुं वाघती नव नव नवले वेशजी ।४२।
जीरे काम व्यथा कामीओनी हुंकारा देइ धिकारेजी
जीरे आतुरता संयोगनी अेह मिस निरधारेजी ।४३।
जीरे को अेक समय महाप्रभुने भक्त अंचोले झेलेजी
जीरे भक्त रसात्मिक कर कमले मधूप अलौकिक खेलेजी ।४४।
जीरे अेकना करमांथी अेक ले छे अेकना करमांथी अेकजी
जीरे केहेने वांटे आवे नहीं को महेले नहीं निमेषजी ।४५।
जीरे तृप्ती होअे नहीं अे लीधे अेक लगारजी
जीरे को उरसुं चांपी रहे कोचुंबन दे चुचकारीजी ।४६।
जीरे को परसे प्रेमे भर्या को सर्वस्व वारे नाखीजी
जीरे अण लीधे आरत घणी वाघे तेणी वारजी ।४७।
जीरे क्षणुं क्षणुं प्रति माताजीने दे छे महा सुखदानजी
जीरे परम अंक भूषण प्रेमे करे छे स्तन पानजी ।४८।
जीरे उछंगे आनंद भरे खेले नवली रीतजी
जीरे अे लीला रस जोइने वाधे अतिशे प्रीतजी ।४९।
जीरे शोभाजी आदी देइ कुटुंब ज्ञात सहु आवेजी
जीरे आनंद उत्साह भर्या सामग्री सहु लावेजी ।५०।
जीरे सोहामणी सहुको मली घेर घेरथी चाल्या साथजी
जीरे मंगल गान करे सहु सामग्री लीधी हाथजी ।५१।
जीरे दीवी प्रगटी अति घणी वाजिंत्रनो नहीं पारजी
जीरे आनंदे गातां आव्या श्री विठलजीने द्वारजी ।५२।

जीरे श्री गुंसाईजी आप ज्यां बेठा आनंद भर्याजी
जीरे अेणे समय त्यां आवीने सहुअे दंडवत कर्याजी ।५३।
जीरे आंगणमां आवी धरी सहुअे त्यां थालीजी
जीरे मांहे सामग्री बहु भांतनी सके न कोइ संभालीजी ।५४।
जीरे गुंजा लाडु ने मठडी मेवानी सहु जातजी
जीरे खेलवणा मिठाईना भर्या छे बहु भांतजी ।५५।
जीरे अेणीपेर अगणीत सामग्रीना नाम क्यांहां लगी कहीअेजी
जीरे चोक सहु थाले भर्या तेहनो पार न लहीअेजी ।५६।
जीरे तिलक करी श्री गुंसाईजीने आप्युं बीडुं श्रीफल हाथजी
जीरे आरती करी सोहासणी चरणे नामे माथजी ।५७।
जीरे श्री गुंसाईजीअे सत्कार करी सहु अे मानी लीधुंजी
जीरे जेहशुं जेवो संबंध छे तेहने तेवुं द्रव्य दीधुंजी ।५८।
जीरे त्यांथी सहु कोइ आव्या श्री रूक्ष्मणीजीने पासजी
जीरे जोइ अने महाप्रभुने पाम्या सुखनी रासजी ।५९।
जीरे बेठक मांहे हरखसुं हलदिना हाथा दीधाजी
जीरे मंगल गाअे मोदशुं मंगल बहु विधी कीधाजी ।६०।
जीरे श्री रूक्ष्मणीजी सद पुत्रने लेइ बेठा छे गोदेजी
जीरे गात ओढी सोहामणी बे आवी उभा मोदेजी ।६१।
जीरे तिलक करी बीडां आपी ईंडी पींडी कीधीजी
जीरे आरती करी आनंदे प्रेमे आशीष दीधीजी ।६२।
जीरे नित्य प्रति अेह प्रकारना आनंद मंगल होयजी
जीरे वधावाने नौतन करी लावे छे सहु कोयजी ।६३।
जीरे शुभ वेळा शुभ दिन जोइ महुरत उत्तम लीधुंजी
जीरे अति सुंदर सोहामणु पालणुं सिध्ध कीधुंजी ।६४।
जीरे डांडी पाया कंचनना त्यां जडीया ते माणेक नंगजी
जीरे जाली रत्न जडावनी ते झालके नव नव रंगजी ।६५।
जीरे पाटी पाट तणी सोहे कोमल सुख कारीजी
जीरे दोरी पचरंग रेशमनी नौतन तेह समारीज ।६६।
जीरे अति विसाल तिवारीमां घोडी रंगित धरीजी
जीरे अति विचित्र नंगे जडी दीसे शोभा भरीजी ।६७।
जीरे त्यां सुखदायक पालणुं बांध्युं सुंदर सोहेजी
जीरे ज्योत अपरमित जगमगे जे देखे ते मोहेजी ।६८।
जीरे खेलवणा उपर धरीया सुडा ने वली मोरजी
जीरे घोडा पक्षी बहु विधीना ते बांध्या चहुं ओरजी ।६९।
जीरे रत्न जडित बहु झुमखा ने मोती झुमख राजेजी
जीरे चित्र विचित्र बहु भांतना ते देखी शोभा लाजेजी ।७०।

जीरे तुंबी रंगीन चित्रितने आरसी उपर झलकेजी
जीरे गुंजा कोदिना गोटा दाडीम रंगीत ललकेजी ।७१।
जीरे कोमल मकमलनी तळाइ भीतर तेह बीछावीजी
जीरे वात्सल्यता सहु करी जे जेहने मन भावीजी ।७२।
जीरे प्रथम पूजा श्री यमुनाजी धूप दिप विधी करीजी
जीरे भोग समर्पी भावसुं रक्षा हेत मन धरीजी ।७३।
जीरे पछी पालणा ने अति हरखसुं भोग आरती कीधीजी
जीरे पलंगडीथी उंचे लइने स्नेह भरी आशिष दीधीजी ।७४।
जीरे पोढाडया प्रेमे करी परम रसिकवर रायजी
जीरे ते जोइ सहु भक्तने उलट अंग न मायजी ।७५।
जीरे सुंदरता सुंदर वरनी कोटिक चंद्र प्रकाशजी
जीरे फूल्या कमलनो मद हरे अेहवा नेत्र आ सुखरासजी ।७६।
जीरे विकसित वदन सोहामणुं परम मनोहर हास्यजी
जीरे अधर अरूण अति शोभिता पूरक भक्तनी आशजी ।७७।
जीरे भाल विशाल वंक भ्रकुटी सुंदर ललित कपोलजी
जीरे त्रण भुवनमां कोइ नहीं उपमाने समतोलजी ।७८।
जीरे वक्षस्थल सोहामणुं ते शोभा कही न जायजी
जीरे ते जोइ रस अभिलाषीने आलिंगन इच्छा थाय जी ।७९।
जीरे आरक्त हस्त चरण तल ते नवली शोभा धरताजी
जीरे ते कल्प वृक्षना नौतन पल्लवनो मद हरताजी ।८०।
जीरे हस्त चरण चंचल पणे अति उत्साहसुं खेलेजी
जीरे रस अभिलाषी ते जोइ लोचन भावे मेलेजी ।८१।
जीरे चाले नहीं कांइ बालनुं यद्यपि बाल श्रीअंगजी
जीरे अेहवा स्वरूप रसिकथी उठे छे रसना तरंगजी ।८२।
जीरे अश्रुत अति लोकोतर शोभा प्रगटे छे जेहजी
जीरे अेहनी ताहां परमित नहीं पण कांइ अेक कहुं छुं तेहजी ।८३।
जीरे परम रमणीय अे पारणुं ते अलौकिक आल बालजी
जीरे पोते सृंगार कल्प तरू श्री हस्त चरण रस डालजी ।८४।
जीरे कर पद तल आरक्त नौतन पल्लव मृदु सारजी
जीरे हुल्लाश परम सामर्थथी परमोत्कर्ष अपारजी ।८५।
जीरे अेह पवन चरणथी ते मूल सहित हींदोलजी
जीरे लहेरो डोली डोली करे लथ लोथा झक झोलजी ।८६।
जीरे मध्य विराम करी कीलके खेलवणा मन भावेजी
जीरे सर्वोधिक फलने भारे जेम लचकी लचकी आवेजी ।८७।
जीरे अर्ध उर्ध थाअे ते जोइने माता पिता हर्ष न मायजी
जीरे कृष्णदासी आदी सहु भक्तना मन वांछित पूरण थायजी ।८८।

जीरे महा अलौकिक कल्पतरू तेनुं सुख अेहज जाणेजी
जीरे अनुभवीआ अनुभव करे ते वाणी केम वखाणेजी ।८९।
जीरे भाग्यवानबीजाबालक ते आवी उभा पासजी
जीरे चारे पास रही अने झुलावे सुख रासजी ।९०।
जीरे तेहने आप्या तिलचांवल मिसरी पकवान मिठाइजी
जीरे ते अति हरख्या हरखसुं फूल न अंग समायजी ।९१।
जीरे आसपास स्त्री जन सहु ते उभा श्रीमुख जोइजी
जीरे परम प्रिय अेहनी लीला गाअे छे सहु कोइजी ।९२।
जीरेविच विच आवी माताजी झुलावे मन हरखेजी
जीरे अलगा न रहे स्नेह भरे सुख पामे श्रीमुख निरखेजी ।९३।
जीरे श्रीकर श्रीमुखमां मेली करे अंगुष्ठनुं रस पानजी
जीरे नखमणी चलके अति घणुं मुसकनीय करे दानजी ।९४।
जीरे बेहु चरणनाअंगूढा बेहु करे साही मुख मेलेजी
जीरे अे वल्लभ जाणी भक्तने रसपान करे अतिखेलेजी ।९५।
जीरे खेलवणा सामु जुअे आरसीमां प्रतिबिंबजी
जीरे रूप जुअे पोता तणुं अेह थयुं अविलंबजी ।९६।
जीरे निद्रा करे वली जागे करे निद्रामां हास्यजी
जीरे परम मधुर रूदन करे वली क्षणुं अेकमां हुल्लासजी ।९७।
जीरे अेहवा अनेक प्रकारना उठे अनेक तरंगजी
जीरे ते जोइ सहु भक्तने उपजे अभिनव रंगजी ।९८।
जीरे नित्य अेह प्रकारना प्रतिक्षणुं लीला नौतन थायजी
जीरे भाग्यवान अनुभव करता ते केम करी न अघायजी ।९९।
जीरे भाग्यवान सुदी सप्तमी मास मास प्रति अेहजी
जीरे वरसगांठ थाता लगी करे ते उत्सव अेहजी ।१००।
जीरे प्रथम मास सुदी सप्तमी आवी मंगल रूपजी
जीरे सोहासणी सहुको आवी करी शृंगार अनूपजी ।१।
जीरे चोक साथीआ पूरीने तोरण बांध्या बारजी
जीरे चित्र करे प्रेमे भर्या मंगल गाअे नारजी ।२।
जीरे दामोदरदासी करे सहु हरखे आनंद भर्याजी
जीरे मांगल्य साज बहु त्यांहां विधिशुं सिद्ध कर्याजी ।३।
जीरे पालणेथी महाप्रभुजी पधराव्या तेणी वारेजी
जीरे जंधा उपर उताना पोढाडया सुंदर नारेजी ।४।
जीरे तेल लगावी उवटणा कीधां ते श्री अंगेजी
जीरे अति आनंदे नवराव्या सोंधा केशर रंगेजी ।५।
जीरे वाजिंत्र वाजे अभिनवा पंच शब्दा बहु साजजी
जीरे गान करे मन भावता मलीओ बहु समाजजी ।१०६।

जीरे अंगुछो प्रेमे करी वस्त्र अनुपम धराव्याजी
जीरे अंग अंगे अति शोभिता आभूषण पहेराव्याजी ।१०७।
जीरे रूक्ष्मणीजी आनंद भर्या लेइ बेठा उछंगजी
जीरे स्पर्श करी सद पुत्रने शीतल थाअे अंगजी ।८।
जीरे शोभाजीअे यमुनाजीअे थाल ते करमां लीधीजी
जीरे तिलक करी कुमकुम तणु आरती प्रभुने कीधीजी ।९।
जीरे प्रतिमासे अेणी पेरे नौतन नौतन पेरजी
जीरे अेक वरस लगी अेम करे उत्सव उलट भेरजी ।१०।
जीरे प्रति मासे सहु ज्ञातने तेडे उत्सव माटेजी
जीरे मास मास प्रते जुजुवो वाअेनो त्यांहां वांटेजी ।११।
जीरे पहेले मासे मालपुआनो गोल गणी बहु भेलीजी
जीरे बीजे चीला अडद तणा ने सामग्री मांहे मेलीजी ।१२।
जीरे त्रीजे वेसण सेव तणा लाडु गोले बहु पाग्याजी
जीरे चोथे मासे माट घणा घेर पठव्या विण माग्याजी ।१३।
जीरे पांचे महीने महा प्रभुअे सुखसुं करवट फेरीजी
जीरे गुंजा वांटया बहु करीने मांहे सामग्री घणेरीजी ।१४।
जीरे छठे मासे आप्या वडा ते दहीमां सणीयजी
जीरे सातमे मासे सुंदर करी फेणी वहेंची अति घणीजी ।१५।
जीरे आठमे मासे आपीया बाबरनो नहीं पारजी
जीरे नव मासे नोतन करी आप्या इंदरसा अपारजी ।१६।
जीरे दश मासे मठा बांध्या तेमां सामग्री बहुजी
जीरे अग्यारमे मासे खाजा वहेंच्यानो पार न लहुंजी ।१७।
जीरे मास मास महा उत्सव थयो ते बारह मासजी
जीरे वरस गांठनो दिन आव्यो पाम्या सुखनी रासजी ।१८।
जीरे गनोडाना लाडु सेवतणा आप्या सहुने घेरजी
जीरे अति उत्साह महा मोदसुं कीधो उत्सव बहु पेरजी ।१९।
जीरे अेणी पेरे पांच वरस सुधी प्रति वरसे उत्सव थायजी
जीरे न्यातमा सहुने घेर गनोडा वहेंचाय जी ।२०।
जीरे पांच वरसथी उपरांत महा उत्सव प्रति वर्षजी
जीरे मारकंडे पूजा करी ब्रह्म भोजन होय हरखजी ।२१।
जीरे प्रति वरसे बहु आनंद होय उत्सव नित्यजी
जीरे कला निरंतर वाधती दिन दिन अधिक प्रीतजी ।२२।
जीरे आगमना उत्सव तणी कही संक्षेपे अेह रीतजी
जीरे अेणी पेरे लीला करता थयो मास अेक व्यतीतजी ।२३।
जीरे अे उत्सव सहु भक्त करवा तेनो आशय अति गूढजी
जीरे अे उत्सवनी सुरते होय स्वरूप ते रूदया रूढजी ।१२४।

जीरे अे उत्सव समे समे तणा करवा करी बहु साजजी
जीरे आवश्यक अेतनमारगीने समे सूचनने काजजी ।१२५।
जीरे समे समे माता हरखे करावे स्तन पानजी
जीरे शोभा अलौकिक प्रगट करी करे अपरमित दानजी ।२६।
जीरे स्तनपान करे क्षणुं अेक जुअे मातानुं मुखजी
जीरे हुलसी मरकलडां करे ते जोइ पामे सुखजी ।२७।
जीरे माता मुख साही करी स्तनपान करावे वलीजी
जीरे पोते स्तनपान करे नहीं हुलसे छे मननी रलीजी ।२८।
जीरे अेवी लीला जोइने मनमां हरखे मातजी
जीरे चांपीने चुंबन देइ उर मांहे न समातजी ।२९।
जीरे माने नहीं हठे चढया रहे ते राठी लइजी
जीरे ते जोइ माता मनमां कपट रीस वस थईजी ।३०।
जीरे भोमी विचित्र कोमल रमणी आधीदैविक छे ज्यांहांजी
जीरे लपेटीआ भर प्रभुजीने पोढाडया छे त्यांहांजी ।३१।
जीरे ते समय ते भूमीने उपजे अतिशे रंगजी
जीरे पुलकित थाय प्रेमे भरी जेम जेम स्पर्शे श्री अंगजी ।३२।
जीरे हरख्यानो उद्यम करे महाप्रभुजी तेणे समयजी
जीरे श्री अंगने उठे बाल्यपणे भोमी थकी ते क्यमयजी ।३३।
जीरे क्यारे क्रीडा करे ते भोमीशुं दाबे श्री हस्ते करीजी
जीरे उर स्पर्श करे रस मुखद्रवे श्रीमुख अवनी अनुसरीजी ।३४।
जीरे कटि उर अध उरध करे चरण फेरवे रीतेजी
जीरेआसन भेदे अवनीनो मनोरथ पूरे प्रीतेजी ।३५।
जीरे करसुं आस्फालन करे रीष्यानी मनमां हामजी
जीरे मातानी पासे जावा करे हींसोरा सुख धामजी ।३६।
जीरे माता सामुं जोइ अने हरखे छे आपजी
जीरे धसीने आतुरताअे लीधा हरवा संतापजी ।३७।
जीरे दंत अधर भीदिने चुचुकारी चुंबन दीधुंजी
जीरे गोद लइ उरशुंचांपीने महा परम सुख लीधुंजी ।३८।
जीरे हैजे हैयडु भरी आवे विलंब न सहे लगारजी
जीरे प्रेम भरे पाहानो चढे ते भीडे रूदीया वारजी ।३९।
जीरे मस्तक हेठल अेक कर धरे बीजो फेरे श्री अंगजी
जीरे अंग अंग निरखे हरखे वाधे मनमां रंगजी ।४०।
जीरे पयपान करे प्रभु बेहु स्तन उपर बेहु हाथजी
जीरे क्यारे कंठ तणुं भूषण ग्रहे क्यारे कर तणा ग्रहे नाथजी ।४१।
जीरे अंचल आच्छादन करी ने स्तनपान करावे हरखेजी
जीरे अंचल आनंदे भर्या मांअे नहीं फरी फरी मुख निरखेजी ।१४२।

जीरे निंद्रा आवे पालणे	माता सुखशुं पोढाडेजी	
जीरे वात्सल्ये अति व्हालशुं करी	सुंदर वस्त्र ओढाडेजी	।१४३।
जीरे वली जागे लइ खेलावे	पहोंचो मेले श्रीमुख मांहेजी	
जीरे करवट लेइ थई घुंटणीआ	खसी खसी आवे अति सुख मांहजी	।४४।
जीरे अवनी उलटा करी	पोढाडया छे उलट भेरजी	
जीरे हस्त चरण नाखी रमे	तेहनी शोभा नौतन पेरजी	।४५।
जीरे अवनी सागर रस तणो	त्यांह मनोरथ रूपी तरंगजी	
जीरे जाणे तेमांहे पोते तरे	थई रसावेस रस रंगजी	।४६।
जीरे परम रसिक चंचल पणे	सर्व अंग पसराअेजी	
जीरे अति आनंद अवनीने	मनोरथ पूरण थायजी	।४७।
जीरे सहु मली बेसे शिखवा	स्वतः बेठा न रहेवायजी	
जीरे श्री अंग डोलतुं जोइने	हंसी हंसी धसीने साहेजी	।४८।
जीरे बेसाडे भींत तणे खुणे	गादी तकीआ त्यां धरीजी	
जीरे अेम करी शिखवे बेसवा	सौभागी आनंद भरीजी	।४९।
जीरे बाल लीलानुं सुख आपे	करीने बहु प्रकारजी	
जीरे माताअे अनुभव करे	अेना भाग्य तणो नहीं पारजी	।५०।
जीरे अन्न प्रासननो उत्सव	आव्यो बहु प्रकारजी	
जीरे सवंत सोल अष्टोतेर	सुदी जेष्ठ नोम शुभ वारजी	।५१।
जीरे लग्न चंद्र तारा बल	सर्वांगे सिध्ध योगजी	
जीरे आरंभ उत्साहे तेडया	कुटुंब ज्ञात सहु लोगजी	।५२।
जीरे बिछावणा बहु भांतना	कीधां सघले ठोरजी	
जीरे समीयाणा मखमल तणा	पीछवाडी चहुं ओरजी	।५३।
जीरे तोरण बांध्या बारणे	कीधा बहु विधी चित्रजी	
जीरे पूरे चोक सोहामणी	करी सृंगार विचित्रजी	।५४।
जीरे मंगल कलस समारीया	रोप्या कलदी स्थंभजी	
जीरे मांगल्य साज कर्या सहु	उत्सवने आरंभ जी	।५५।
जीरे नगारा छोटा मोटा	बाजे शहनाइ नफेरी जी	
जीरे ताल पखावज पंच शब्दा	गिणना नहीं ते केरी जी	।५६।
जीरे मांगद बंदी जन सहु	आव्या देतां आशीषजी	
जीरे कहे अे बालक आनंदे	चिरंजीवो कोड वरीसजी	।५७।
जीरे विद्योगतीसुं वेदी रची	मंत्रे बहु ब्राह्मण मलीजी	
जीरे गंधाक्षत दुर्वा आणी	उपहार कर्या मन रलीजी	।५८।
जीरे श्री गुंसाईजी श्री रूक्ष्मणीजी	बेहु आनंदया तेणी वारजी	
जीरे वस्त्र सुशोभित पहेरीने	आभूषण पहेर्या सारजी।	।५९।
जीरे परस्पर छेडा गांठी	पधार्या वेदी मांहजी	
जीरे पीढा परम सुशोभित	आवी बेठा छे त्यांहजी	।१६०।

जीरे महाभाग्यवती श्री रूक्ष्मणीजी	मनमां माये न मोदजी	
जीरे परम अलौकिक पुत्रने	लेइ बेठा छे गोदजी	।१६१।
जीरे पुन्याह वांचन करी	प्रासन्न अन्न करावेजी	
जीरे त्यां सामग्री बहु भांतनी	आंगणमां धरावेजी	।६२।
जीरे खीर सेवनी खांड भरी ने	अलगी सेव पसाइजी	
जीरे कोमल भात ने मुग वली	वली धृतरोटी सुखदाइजी	।६३।
जीरे गोल चणानी दालमां	गलेफी कीधी पूरीजी	
जीरे धारीने बाबर वली	सुंदर करी कचोरीजी	।६४।
जीरे तीनकुडा तिलवडी	भली वेसणनी पकवडीजी	
जीरे भीना वडा दहीं पाग्या	करी राखी सुंदर कढीजी	।६५।
जीरे वेसणना शाक कर्या बहु	सुरण खरडा खरोइजी	
जीरे बीजा शाक अनेक प्रकारना	जे सिध्ध थया रसोइजी	।६६।
जीरे आंब अति सुंदर घणुं	ने संधाणा बहु भांतजी	
जीरे सखडी अेणी रीतनी	आगल राखी करी खांतजी	।६७।
जीरे पकवान ते पांच प्रकारना	गुंझा मांहे कीधां चित्रजी	
जीरे खाजा लाडु सेव तणा	फीणी ने मांट वीचित्रजी	।६८।
जीरे मोटठिोर करी अने	आणी राख्या त्यांहजी	
जीरे बीजा नाना करी अने	राख्या छे थाली मांहजी	।६९।
जीरे गुंजा माला हेम तणी	माणेक मोतीनी करीजी	
जीरे तुलसनी अति सुंदर	तिलरी ते आणीने त्यां धरीजी	।७०।
जीरे पोथी श्री भागवत तणी	आणीने राखी पासजी	
जीरे सुंदरी परम सोहामणी	सनमुख उभी सुख रासजी	।७१।
जीरे चौरा उपर कंसारनो	पीढो आणी मांडयोजी	
जीरे टोपी झगुली आभरण घणा	पहेरावी लाल बेसाडजी	।७२।
जीरे स्नेह सहित मंत्रोगते	विधिशुं भोजन कराव्युंजी	
जीरे बीडुं खांडी रस करी	श्रीमुखमां लेवराव्युंजी	।७३।
जीरे रसनो अनुभव करवाने	रसनुं मुहुरत कीधुंजी	
जीरे अधर पान दान अर्थे	आनंदे बीडुं दीधुंजी	।७४।
जीरे सनमुख देखाडी आरसी	जोइ मनमां मलकेजी	
जीरे प्रतिबिंब जोइ प्रमुदित	घणुं कर नाखी किलकेजी	।७५।
जीरे विस्मय थई करसुं ग्रहे	मुकर मांहेनुं रूपजी	
जीरे इच्छाअे मोहक थई रहे	अे चरित्र अनूपजी	।७६।
जीरे सुंदरी बे सोहासणी	करी आवी ते सृंगारजी	
जीरे आरती कीधी आनंदसुं	आरत हरने तेणी वारजी	।७७।
जीरे तात्पर्य अे बालकनुं	जोवाने वस्तु प्रसारीजी	
जीरे कोण वस्तु पहेली ग्रहे	अेवुं मनमां विचारीजी	।१७८।

जीरे हारद्र बालकना मननुं केम करी मनमां आणेजी
जीरे श्री गोकुलेश .... आसे महागूढ ते केम जाणेजी ।१७९।
जीरे परम अद्भुत पूरण सदा अे चौद लोकनुं सारजी
जीरे तात्पर्य अे बालकनुं कोण करे निरधारजी ।८०।
जीरे निरूपाधी स्नेह भावे पधराव्या छे त्यांहजी
जीरे बेसाडया महा प्रभु सहु वस्तु प्रसारी ज्यांहजी ।८१।
जीरे पुत्र रत्नने जोइने उलटशुं उरमां प्रहेशेजी
जीरे जोवाने उभा रहया जे पहेलुं प्रभु शुं ग्रहसेजी ।८२।
जीरे मनोरथ सहुना मन धरीने आनंद सहुने भरताजी
जीरे बेसाडया छे त्यांहां थकी पधारी रीखण करताजी ।८३।
जीरे पहेला सहु सामुं जोइ सहु को सनमुख कीधाजी
जीरे नेत्र विशाल करीने सहु केना मन हरी लीधाजी ।८४।
जीरे को अेक रसात्मीक नायका तेनुं पितांबर ग्रही लीधुंजी
जीरे रसभावे बेहु कपोल ग्रही तेने मुखमां चुंबन दीधुंजी ।८५।
जीरे पछी पोथी साही प्रेमे करीने श्री भागवत तणीजी
जीरे माला तुलसीनी लीधी पधार्या मंदिर भणीजी ।८६।
जीरे मारग प्रगट कराव्यो मन वांछित पोतेथीजी
जीरे ते अनुकरण जणावीयो अेणी पेरे सूचन करीजी ।८७।
जीरे अे जोइ सहु भक्तने मनमां मोद तणो नहीं पारजी
जीरे परस्पर ते ताली देइ देइ अने हंसे ते वारंवारजी ।८८।
जीरे को अंचल पट मुख ओटे देइ को हंसे ते अंतर मांहेंजी
जीरे आनंद सागर उलटयो ते रस रेलाणो त्यांहजी ।८९।
जीरे श्री गुंसाईजी श्री रूक्ष्मणीजीअे दीठो अेह प्रकारजी
जीरे अगणित आनंद उपज्यो मन मोद तणो नहीं पारजी ।९०।
जीरे चुंबन देइ उरशुं चांपी वेगे गोदे लीधाजी
जीरे ते क्षणे श्री गुंसाईजीना सकल मनोरथ सीधाजी ।९१।
जीरे कहयुं अलौकिक अेह स्वरूप छे ने अलौकिक अेहनुं कृत्यजी
जीरे परम रसिक रस भोक्ता स्नेह रसे अनुरक्तजी ।९२।
जीरे पाखंड विहंडण मूल थकी अे धर्म सकल प्रति पालजी
जीरे अेवुं जाण्युं श्री गुंसाईजीअे अद्भुत प्रगट्या बालजी ।९३।
जीरे अेणे समय जे त्यां हतां बाल वृध्ध नर नारजी
जीरे सभा सहित सहुअे कीधा दंडवत वारंवारजी ।९४।
जीरे आशिष दीधी अभिनवी जे जेहने मन गमीजी
जीरे भाग्य सराहे भक्तनुं श्री महाप्रभुने नमी नमीजी ।९५।
जीरे श्री गुंसाईजी आनंदनी परमित कहीअ न जायजी
जीरे अगणित अपरमित समोहनी गिणना केम करी थायजी ।१९६।

जीरे श्री गुंसाईजी ने अे बालकने	पेहेरामणी कीधी जोडजी	
जीरे श्री गुंसाईजीअे सहुने	कीधी पेहेरामणी बहु कोडेजी	।१९७।
जीरे गंधाक्षत बीडा आपी	आप्या ते दक्षिणा दानजी	
जीरे सबंधी सहुने आप्या	वस्त्र बहु पकवानजी	।९८।
जीरे मोटा ठोर ने सादिनो	फोईनो छे नेगजी	
जीरे फोईने ठामे शोभाजीने	तेडीने आप्या वेगजी	।९९।
जीरे स्वकीय ज्ञात वर्ग सहु तेदिने	ब्रह्म भोजन कराव्युंजी	
जीरे आनंदे भोजन करवा	सहु कोइ त्यांहां आव्युंजी	।२००।
जीरे भोजन करी सहु उठया	आप्या बीडां सहित बरासजी	
जीरे आशिष देइ हरखे भर्या	पाम्या सुखनी रासजी	।१।
जीरे मंत्राक्षत सहुअे आप्या	श्री गुंसाईजीने हाथजी	
जीरे ते उपरेणामां लेइ अने	मुके श्री प्रभुने माथजी	।२।
जीरे बंदीजन बहु भांतना	वाजिंत्री मागद सर्वजी	
जीरे उचित तेहने आपीने	संतोष्या अेणे पर्वजी	।३।
जीरे अेणी पेरे उत्साह हवा	कर्युं अन्न प्रासन्नजी	
जीरे वर्णन क्यां लगी करूं	नहीं चाले बुधी वचनजी	।४।
जीरे अेणी पेर अनुदिन	वाधती लीला नौतन होयजी	
जीरे ते सबंधी सहु को लहे	बीजा नव जाणे कोयजी	।५।
जीरे ज्यार थकी प्रागट हवुं	शुभ दिनने सर्व उमाहेजी	
जीरे ते दिवसथी शुभ दिननो	मनोरथ पूरण थायजी	।६।
जीरे अे दिने शुभ वेला जोइ	मुहुरत उतम लीधुंजी	
जीरे कर्ण वेध उत्सव करवा	सहु अे तत्पर कीधुंजी	।७।
जीरे पकवान अनेक प्रकारना	ने मांगल्यनी जे रीतजी	
जीरे तेह समय उलट भरे	कीधुं सहु बहु प्रीतजी	।८।
जीरे महाप्रभुने पधरावीने	कीधा बहु सृंगारजी	
जीरे वात्सल्य अनेक प्रकारना	कीधां ते तेणी वारजी	।९।
जीरे स्वजन कुटुंब सहु ज्ञातने	बोलाव्या लेइ लेइ नामजी	
जीरे त्यां प्रभुने पधरावीया	ज्यां करण वेधने ठामजी	।१०।
जीरे वाजिंत्र बाजे अति घणा	कांइ तेनो पार न लहुंजी	
जीरे बंदीजन बहु जश भणे	मागद जन मलीया बहुजी	।११।
जीरे रूक्ष्मणीजी अति आनंदसुं	मनमां अभिनव रंगजी	
जीरे महा मनोहर बालकने	लेइ बेठां उछंगजी	।१२।
जीरे पांच शेर चोखा आण्या	ने पांच गोलनी भीलीजी	
जीरे जे अे सामग्री आणीने	महाप्रभु आगल मेलीजी	।१३।
जीरे छोटी भीली ने	सुहाली प्रभुना करमा आपीजी	
जीरे भीती सहित सहु भक्त	मनमां रह्या छे कांपीजी	।२१४।

जीरे मातु चरणना उरमां घुकघुकी धुणीने चावजी
जीरे कान छेदन लालको अे उपज्यो मनमां चावजी ।२१५।
जीरे नाउ निकट तेडाव्यो ते मनमां थयो प्रसन्नजी
जीरे महावरसुं मन राखीने बेहु कर्णें कर्या चिन्हजी ।१६।
जीरे भयपूर्वक सावधान थईने सुइ दोरी लीधाजी
जीरे चपलता लघु लाघवे बेहु कर्ण त्यां वेंध्याजी ।१७।
जीरे नाउने गोल चावलने आप्या द्रव्य अनेकजी
जीरे न्योछावरी सहुअे आपी तेनो केम करूं विवेकजी ।१८।
जीरे अेवे उत्सव उत्साहे भर्या रूक्ष्मणीजी घेर पधार्याजी
जीरे आरती कीधी पुत्रने राइ लुण ओवार्याजी ।१९।
जीरे गुंसाईजीअे शणगार्यो घोडो वसंतराय नामजी
जीरे ते उपर महा उत्साहे बेसाडया पूरण कामजी ।२०।
जीरे सुंदर वर घोडे बेठा शणगार सहित अति सोहेजी
जीरे किलकारी देइ देइने श्री गुंसाईजी सामुं जोइजी ।२१।
जीरे श्री गुंसाईजी संगे चाले निजकरसुं ग्रहे बांहजी
जीरे मोद भर्या माये नहीं आनंदया अति मन मांहजी ।२२।
जीरे अेणीपेरे सुखशुं आव्या निज मंदिरमां फरीजी
जीरे भक्त सहु निरखी रह्या हरखे प्रेम रस भरीजी ।२३।
जीरे प्रेमे पतासा वहेंचीया ज्ञात सहुमा ने सहुजी
जीरे तेणे आनंद पाम्या अति ने आशिष दीधी बहुजी ।२२४।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्‌भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित
प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम
प्रथम तरंगे मांगल्य नवमुं – ९
संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य – १०– दशमुं

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

राग : ''आज सखी श्री गोकुलपति आव्या कीजे मनमां भाव्याजी' अेम गवाशे।

श्री गोकुलपति गुणनिधी गुणपूरण नागर नवले वेशजी
शोभा सकल शिरोमणी सुंदर अंग अंग परम सुदेशजी ।१।
लीला अमित अपार अपरमित नहीं कांइ तेहनुं मानजी
रसभर करूणा करी अने जो करशो मुने दानजी ।२।
कहेवानो उद्यम करूं जे लीला परम पवित्रजी
श्री विठल ग्रह प्रगटीने जे कीधुं बाल चरित्रजी ।३।
अन्न प्रासन्न उपरांतनी जे लीला महा सुख कर्णजी
कांइ अेक ते सूचन करूं जे जगत तणा मन हरणजी ।४।
क्रम क्रम लीला अधिक वाधे स्तनपान करावे मातजी
हुलसे उछंगे उलटाशुं स्वकीयना सुख दाताजी ।५।
नवरावववाने नौतन पेर ते कीधा ते बहु साजजी
तेल उवटणा ततक्षण आण्या व्हालाजीने काजजी ।६।
नहवरावी अंगवस्त्र करीने बेसाडया लेइ गोदेजी
खेलवणुं आपी आभूषण पहेराव्यां छे मोदेजी ।७।
माला तुलसी गुंजानी कंचन ने मुक्ता केरीजी
सांकळी सोनानी दुलरी जीणी मूल धणेरीजी ।८।
वघनख जडित्र प्रवाली शाखा रक्षानो जे प्रकारजी
हमेल हाटक मादलीआ अवला सवला हारजी ।९।
मुक्ता मध्ये रत्न अमोलिक तेह धराव्या कर्णजी
सुवर्णना सुंदर सुख दायक धर्या अलक आभर्णजी ।१०।
पोहोंचीने पहोंचीआ शुशोभित रत्न जडया बहु मोलजी
चूडा बाजुबंध बेहेरखी नहीं को तेणे तोलजी ।११।
कटीमेखला खेल मादलीआ साथा लागे सोहेजी
द्रष्टी पडे सहु अे उपर जे देखे ते मोहेजी ।१२।
नेपूर जडित जडाव पेजनी रह्या बहु अनुकूलजी
घुघरडी धमधमती सोहे त्यां फुंदणा मफतूलजी ।१३।
चित्र विचित्र जडित बहु विधिना आभूषणनो नहीं पारजी
सुशोभित सुक्ष्म सुखदायक धराव्या तेणी वारजी ।१४।
भाल तिलक कीधुं मृगमदनुं हरख्या गोकुल पालजी
काजल लेइ अंजन कीधु माताअे नयण विशालजी ।१५।
काजल बिन्दु कपोले कीधुं रूप आछादन काजजी
तेथी शोभा अधिक हवी निरखे सर्वे समाजजी ।१६।

झगुली पीत अमोलिक पटनी सीवी ते बहु पेरजी
काली चीप करी कमखानी मध्ये मोती सेरजी
टोपीअे टांक्या छे नंग जडाव जडी बहु मोतीजी ।१७।
कुंभे जडया पांच पीरोजा सहु भूषणमां सोहतीजी
पहेरावी सनमुख बेसाडया वात्सल्य अतिशे कर्याजी ।१८।
उरसुं चांपी मुख चुंबन दइ हरखे नयणा भर्याजी
महा अलौकिक अनिरवचनी जेहनो नहीं लहीअे पारजी ।१९।
ते लौकिक रीते लीलानो कीधो ते अंगीकारजी
खेलवणा सुंदर विधि विधिना आगल मेल्या आणीजी ।२०।
मरकलडे मुख विकसित कीधुं सहीअे लीधा ताणीजी
अेक साहे अेक पाछुं नाखे अेक लेइ मेले मुख मांहजी ।२१।
अेक चोले अेक भोंये अकोले मग्न थया अे सुख मांहजी
मणीमय खचित तिबारीमां पोतानुं प्रतिबिंब निरखेजी ।२२।
अति रमणीक स्वरूप जोइने मनमां अतिशे हरखेजी ।२३।
ते साहवा जाअे हाथशुं चाले करमां कांइ न आवेजी
बाल लीला अधिक्यथी अे कौतुक सहुने भावेजी ।२४।
विकसित मुख करता दीसे छे दूध तणां बे दांतजी
श्रांति बुंदथी निरूपम मुक्ता तेथी निर्मल कांतजी ।२५।
श्री मस्तकना केश शोभित अलक वयारे फरकेजी
रसिक भक्त उभा छे सनमुख फरी फरी ते निरखेजी ।२६।
कंठ लगावे चुंबन देइ चुंबन देइ कंठ लगावेजी
अंक भरे अंतरमां राखे केमे ते तृप्ती न पामेजी ।२७।
अेक कर लइ उर उपर राखे अेक कर मुखसुं चांपेजी
लेइ हृदय उपर राखेथी अनंग व्यथा उर कांपेजी ।२८।
विवश थई मुख मुखपर मेले द्रवे अधर रस मुखथीजी
पान करे ते प्रेमे प्रेमदा पोताना मनने सुखथीजी ।२९।
अेक उभा करे नचावाने ने छूटकी ताली वाअेजी
नचाय नहीं ने बेसी जाय सहुने हांसी न मायजी ।३०।
अेक खेलवणुं देखाडे आगल जोइने हाथ प्रसारेजी
डगमगता थई डगला भरे ते जोइ माता वारेजी ।३१।
अेक बेसाडी आंगणमां पोते जोवा रहे छे ओटेजी
चकित थई चहुं ओर निहाळी रोष जणावे होष्ठेजी ।३२।
डस डसता डसका भरे पासे कोइ न देखेजी
तेवे धाइ आवे माता जोवा जन्म सफल करी लेखेजी ।३३।
माता उपर व्हाल घणेरूं दीठेजी पहेचानेजी
साद ओलखे सुख पामे मातानुं लीधुं जाणेजी ।३४।

खेल मांहे माताने देखे मेली सनमुख जायजी
घुंटणीअे धमधम करता मातानो पालव साहेजी ।३५।
जुगते मुख जुवे जननीनुं उंची द्रष्टी करीजी
अे सुख उपर सर्वस्व हुं वारूं माता आनंद भरीजी ।३६।
रवकी रवकी मातानी गोदे चढे ते धाइ धाइजी
श्री करे मुख मातानुं साहे महा सुखना सुखदाइजी ।३७।
माखणमां मिसरी साणी अंगुली करी चटाडेजी
आनो स्वाद जुओ सुंदर छे अेम कही कही चटावेजी ।३८।
चाली जाअे चंचल पणे पाछल माताजी आवेजी
बांहीने साही मुख चुंबी प्रेमे आरोगावेजी ।३९।
गोदे गोकुलपति बेसाडी पाअे कटोरी करीजी
पान तणो रसपान करावे प्रेमदा प्रेमे भरीजी ।४०।
श्रीमुखथी रस द्रवित होय ते शोभा कोण संभालेजी
आगल अरूण अधर भर ने वली अे रसथी चुइ चालेजी ।४१।
अे सुख केवल कृपा साध्य छे, अनुभवी ते जाणेजी
अति अगाधअगोचर अभिनव को केम करी वखाणेजी ।४२।
माताजी पोढाडी पुत्रने पालने झुलावेजी
गाअे गुण विध विध वल्लभना हरखे भर्या हुलरावेजी ।४३।
झोटा दे सुंदर ढोटा ते सनमुख सांकळ साहीजी
रोमांचित पुलकित प्रेमेभर जुअे रूप उमाहीजी ।४४।
अभिलाखे आतुर अंतर गति अति सुंदर सुखरासजी
भर जोबन भाविक भक्त त्यां उभा छे सहु पासजी ।४५।
निरखे रूप निरूपम नौतन नवनव आनंद भेरजी
परम रसिकनो अनुभव वांछे रसभाव धरे बहु पेरजी ।४६।
अेक जमणा डबा अेक उभा अेक सिराहाणे पांतेजी
झुल्यामां अद्‌भुत रस प्रगटे ते जुअे छे खांतेजी ।४७।
सनमुख आवे वली दूर पधारे अेम होय रस भोगजी
अे समे भक्त बेहु रस विलसे विप्रयोग संयोगजी ।४८।
हालरडा गाअे हुलरावे हरख हेजे भरीजी
ते अनुकरण विसद करूं कांइ अेक भाषा करीजी ।४९।
मेरे लाल ललैया ललना सुखसुं झुलो सुंदर पलना
मेरे लालके सुंदर नयना चंचल अति अनुपम सुख वयना ।५०।
मेरे लालको सुंदर शीष लाल चीरंजीवो क्रोड वरीश ।५१।
मेरे लालको भाल सुदेशजी मिस बिंदुका अनुपम वेश ।५२।
मेरे लालकी आछी भोंहें लालकी बहेन करेंगी सोहे ।५३।
ये है अति प्यारो वीर खेलाउं अे विनुं ओर हाथ न लाउं ।५४।

मेरे लालके दीर्घ नयना	मानो मोती भरित मयना	।५५।
मेरे लालके सुंदर नयना	चंचल अति अनूप सुख देना	।५६।
मेरे लालके सुंदर नाक	शुक चांच नीके सो वांक	।५७।
शुआ मान परवत केरो	आयो अधर बिंब चाखनकुं तेरो	।५८।
मेरे लालको वदन सुचार	फूले कमलनकी अनुहार	।५९।
सुंदर अरूण लालके होष्ठ	खाये पान सुपारी मोट	।६०।
मोटी जीभ अमृत रस भरी	स्वकीयसुं पोषण हित करी	।६१।
मेरे लालके सुंदर दांत	दाडम कलिनकी सी पांत	।६२।
मेरे लालके मधुरे बोल	कोउ नहीं याही समतोल	।६३।
मेरे लालके सुंदर कान	शोभा नहीं को याही समान	।६४।
मेरे लालके बांहो विशाल	सुंदर कोमल मृदुल मृनाल	।६५।
मेरे लालकी सोहे अंगुरीया	राजे मुंगनकी सी फरीया	।६६।
मेरे लालको उदर अनूप	त्यां सुंदर नवल नाभीनो कूप	।६७।
मेरे लालकी कटि अति बनी	त्यां पहेरे सुंदर कणधनी	।६८।
मेरे लालकी सुंदर जांघ	मानो मठ देवरको खांभ	।६९।
सुंदर अरूण चरणकी पींडी	मानो जावक रसमो भीडी	।७०।
मेरे लालके सुंदर पाय	नखमणी शोभा कही न जाय	।७१।
मेरे लालकी पीठ प्रनाल	सोहे अनुपम अंग रसाल	।७२।
मेरे लालको वरण अेसो	अरूण अनार कलीयन जेसो	।७३।
अंग अंगकी आभा झलके	देखी सखीयन को मन ढलके	।७४।
चालो सखी देखन जायरे पलना	ज्यां झूलत श्री रूक्ष्मणीजीको ललना	।७५।
तेरे पलने झूमर सोहे मोती	शोभा पावत हे अनहोती	।७६।
पलने झुमक नंग जडाओ	अब पलना देखन को धाओ	।७७।
पलने खेलवणा बहु भांत	उपर जडित रत्नकी पांत	।७८।
पलना जडित सुनार घडयो	कनक नंग कुंदनसुं मढीयो	।७९।
रंग महेलमों ललना मेरो	चालो सखी देखन जाये सवेरो	।८०।
वाके हाथ अरवेको खेलना	सिंघ द्वार बंधाउं पलना	।८१।
घोडी परम विचित्र बनी	जटित पांच पीरोजा मनी	।८२।
दोरी बांधी पाट पचरंग	उपर वारू कोटि अनंग	।८३।
तेरे पलना किन मोल मंगायो	परम अलौकिक किने बनायो	।८४।
झुलावही माता सुख भरी	माने धन्य दिवस अे धडी	।८५।
देखन जाअे रूक्ष्मणीजी ढोटा	गुन बहु और देखत छोटा	।८६।
श्री विठलनाथको वल्लभ बाल	तातजीको प्यारो लाल	।८७।
मानवतीली तेरी मैया	तेरी लागो मोही बलैया	।८८।
माता धन जीने तुं जायो	सबहिनको कीनो मन भायो	।८९।
परम मतीली तेरी बहेना	तोही वधायो भयो सुख चेना	।९०।

खरी छबीली तेरी खवासनी	जिनने तुं खेलायो अति सुखरासनी	।९१।
खरी सयानी तेरी चाची	जिने तुं नवायो मनमों राची	।९२।
तुम पर सर्वस्व वारूं मेरो	तुम चिरंजीवो कोटि घणेरो	।९३।
राखी राखी पलना झुलावुं	सब सखीयनकुं लाल दीखावुं	।९४।
तेरे हुंकारे है रसाल	वारी मेरेगल वलीअे लाल	।९५।
जा दिन ललना दे हे तारी	वारी वारी हुं देहुं सुहारी	।९६।
करवटके हुं गुंझा देहुं	वातन कीनो भात खवेहुं	।९७।
पावके देहुं चलि होचाल	फेनी पाग बंधावन रसाल	।९८।
तेरे पालनकुं माचन पूर लेहु	हाथिनकुं कजरावन देहुं	।९९।
तेरे खर्चनकुं हे अमित सोहाग	खेलनकुं नवलारस बाग	।१००।
तेरे मुख चुंबुं हुं ललैया	वारी वारी कर लेहुं बलैया	।१।
तेरो मुख चंबुं अति गोरो	हलदी केरो कोन निहोरो	।२।
तेरी चुंबुंगी चतुराइ	झगा पहेरी होके अेक ताइ	।३।
तेरी चुंबुंगी जग वरनी	देखे अनख करेंगे तरूनी	।४।
तेरो मुख चुंबुं पासरो	गोकुलमें तेरो सासरो	।५।
चुंबुं तेरे रूपकी ज्योति	तेरे प्रगट भये उद्योती	।६।
सुंदर तोही जीवा उदर हयो	तुं कर लाल हमारो कहयो	।७।
तुं मेरे लाल कहुंजी न जाय	नयनन आगल खेलो आय	।८।
अेणी पेरे रूक्ष्मणीजीने वली	झुलावे रस नरनारजी	
आनंद अति तृप्ती न होय	जोतां प्राण आधारजी	।९।
को अेक समय अलवे उठी	उभा रही डांडी वलगीजी	
चरण चलावे अंग हलावे	शोभा प्रगटी वलगीजी	।१०।
सांकलनी घुघरडी धमके	पालणडानो रावजी	
उपरनां खेलवणा ललके	प्रगटे नौतन भावजी	।११।
बाहें पसारीने सनमुख	बोलावे माता सुखसुंजी	
धाइने कंठे लगावे चांपी	चुंबन दे मुखसुंजी	।१२।
भौम उपर उभा राखी	भामनडा ले कर वारीजी	
चलावे चाल चंचल	धरे भोम चरण अति भारीजी	।१३।
रमझमती घुघरडीमां	नेपूरणी झणकारजी	
ते जोइ माता सर्वस्व	ओवारे वारंवारजी	।१४।
रमझमता धमधमता चाले	जुअे छे श्री मुखनेजी	
जाणे आनंदने मंत्रे	अभिषेस करे माताना सुखनेजी	।१५।
आंगणामां खेले बोले	मधुर तोतडा वेणजी	
ते जोइ मनोरथ माताना	सफल करावे नयणजी	।१६।
माताजी सामुं जोइने	किलकी किलकी कांइ बोलेजी	
जीजी करी दुखडा ले	कोइअे सुखने नहीं तोलेजी	।११७।

पाछल माताजी डोले ते जुअे भक्त समाजजी
सहु कोइ अे कौतुके मोहिया भूल्या ग्रहनां काजजी ।११८।
माता सनमुख आवीने चुचुकारी चुंबन दे छेजी
पोतानुं सर्वस्व ओवारे चांपी उरसुं ले छे जी ।११९।
अेवा अनेक प्रकार अनेरा नित्यना नौतन थायजी
अे सुख जोइ सर्व लोकना दु:ख परिताप नसायजी ।१२०।
मंद परम माधुर्य हास्य ते उज्जवल तेहनी कांतिजी
स्निग्ध मृदुल अति सकोमल असित देखीअे पांत्यजी ।१२१।
सुंदर अधर अधिक रस तेहोनी अरूण अनुपम श्रेणीजी
जाणे अनिरवचनी रस भरनी प्रगटी प्रगट त्रिवेणीजी ।१२२।
त्रीवेणी शोभा रूपी महा आलौकिक प्रगटी त्यांहजी
भावपूर्वक सहु केहेना मन मग्न थया ते मांहजी ।१२३।
नखथी शिख पर्यंत आभरण जटित अनुपम धर्याजी
ते श्री अंग तणी शोभा अे सर्व निरूतर कर्याजी ।१२४।
पोते सर्व आभरण भर छे गोकुलेशआभरणजी
अे आभरणने सर्व आभरण नमन करे नित्य चरणेजी ।१२५।
गोकुलेश रूपी भूषण पुरूषोतम रत्ने जडयुंजी
पुष्टी पुष्टी रसवेष्टीत ते जेम कंचन कुंदन मढयुंजी ।१२६।
तेहोनी ज्योति जगतमां प्रगटी अखिल भुवन सृंगारजी
अमोलिक अति सुल्लभ स्नेह पंथ अन्य न जाणे पारजी ।१२७।
अेवुं मोटुं अमित आभरण अेह स्वरूपे पहेर्युंजी
अचिंतन अपरमित अति विस्तारणा शोभा भरथी गहेरूंजी ।१२८।
अे गेहेराइ गुण क्यां लगी कहीअे जे चौद लोकमां चलकेजी
ते सुंदरी सहुना सहेज पहेरवा मर्यादा रहित मन ढलकेजी ।१२९।
तेहना चरण रेणुनी कणीकामां दुर्लभ अेक बिन्दुजी
तेनी सुंदरता माधुर्यमां ते कोटिक रस सिंधुजी ।१३०।
माधुर्यमां कोटि सुधा सिंधु सुंदर कोटिक कामजी
भक्त रसात्मिकना मन अे सहु मग्न थया तेणे कामजी ।१३१।
अेवुं अनेक कोटि ब्रह्मांड तणुं भूषण श्री अंगजी
तेनुं भूषण श्री मुख सुंदर प्रतिक्षणुं नौतन रंगजी ।१३२।
तेनुं भूषण नयन सुशोभित जगत तणा मन रंजेजी
अेवा नेत्र महाभाग्वती माता काजल करी अंजेजी ।१३३।
अेवी मातानुं महात्म कहेवा न सामर्थ केहेनुंजी
त्रिभुवनमां नहीं को अे सम भाग्य सराहुं हुं जेहनुंजी ।१३४।
कपट मधुरा वचन कही शीलतानुं कीधुं दानजी
ते माताना भाग्य तणुं क्यां लगी कहीअे निर्माणजी ।१३५।

अेणे प्रकारे पुत्र रत्न आभरण जनित सुख आपेजी
वात्सल्य अंगीकार करी ने हित आपे अण मापेजी ।१३६।
कोइ अेक समय भक्त भावभर खेलावे लेइ अलगाजी
डगमगते डगले चाले आवे आंगलीअे वलगाजी ।३७।
अति मोदे मुसकाता चाल्या आवे अेहोने साथजी
जाणे जगत तणुं आव्युं धन निरधनने हाथजी ।३८।
अेक बेठा अेक सनमुख उभा अेक श्रीअंग निहालेजी
अेक मुख निरखे सुखरूप विचारे द्रष्टी अलगी न चालेजी ।३९।
अेक भूषण अेक खेलवणा अेक मेवा लीधा साथजी
अेक मिसरी पकवान मीठाइ लेइ उभा छे हाथजी ।४०।
जे सामुं जुअे सनमुख ते धाइ पासे आवेजी
जे मागे ते आपे करमां जेम प्रभुने मन भावेजी ।४१।
सहु कोइ मनमां नचावानो अभिलाष विचारे जी
अेक नाची देखाडे प्रभुने गति भेदे पगधारेजी ।४२।
रमझमती रामा नाचे ने खलके भूषण हारजी
जुडा बाजुबंध बेहेरखा नेपूरना झमकारजी ।४३।
छुद्र घटिका झोफडणे घुघरडी धमके वादेजी
अेक वाजिंत्र अनुपम वाजे न्यारे न्यारे नादेजी ।४४।
गान करे बहु तान बंधाने तेह अनुपम सोहेजी
ते जोइ प्रभना चरण चालवे निज जनना मन मोहेजी ।४५।
प्रेम भर्या प्रभुना पदकमले चुंबन दे मन रलीजी
चरण उचलीने चुंबन पोते करवा वलीजी ।४६।
अेक निज उर अंचल ढांकी देखाडे छे अेहजी
नाचो तो तमने आपुं आमा राख्युं छे तेहजी ।४७।
अेक कहे अधर अमृत अति मीठुं जेह थकी तमो राचोजी
ते तमारा मुखमां आपुं जो मारी आगल नाचोजी ।४८।
अे लोभे लोभ्या नाचे लोभात्मिक रसना लोभीजी
ते जोइ अलौकिक शोभा कर जोडी आगल उभीजी ।४९।
रंग भूमी रमणीक रमण अे ते सहुने देखाडोजी
नायक ने नायका नचावे अेणी पेरे रची अखाडोजी ।५०।
अेक छूटकी दे चुचुकारे ने अेक ताली वाये छंदेजी
अेक प्रेम सहित सहुको अेणीपेरे पडया मोहक फंदेजी ।५१।
व्हालाने वनिता अेणीपेरे नचावे छे मन रंगजी
आतुर थई उरशुं चांपी अेह मिस परसावे अंगजी ।५२।
अेक कहे भूषण अनुपम आपुं हुं तमने आजजी
ते कोइ न जाणे तेम जतने करी राख्या छे तम काजजी ।१५३।

उपयोग क्यारे आवे अेवी आरत मन धरीजी
वेगा मोटेरा थाओ अेम कहे आशीष भणीजी ।१५४।
आशाभर भावेभर भामिनी मनोरथ करे अनेकजी
ते गूढ भावगुणी जन लहे तेहोना मन तणो विवेकजी ।५५।
अेणी पेरे अनेक भाव भावे करी भावात्मीक जे भक्तजी
केहेनुं कहेवा सामर्थ जगतमां लीला अति अव्यक्तजी ।५६।
जैजै करे शब्द युवती जन सहुने मोद न मायजी
अनुभवीआ ते सुख जाणे पण वचने केम कहेवायजी ।५७।
अे नृत्य ब्रह्मादिक सुर पति विस्मय थया जोइअे
अलौकिक ज्ञाने आनंदया पण स्वरूपने न जाणे कोइजी ।५८।
अेवी लीला अनेक भांतनी प्रतिक्षणुं नौतन थायजी
बाल विनोद अगाध अपरमित वचने केम कहेवायजी ।५९।
कोइ अेक दिवस वीते रूक्ष्मणीजीअे गर्भ धर्यो ते वारजी
सर्व मलीने समंत करी अेह विचार्युं निरधारजी ।६०।
गर्भ स्थिति दुग्धे बालकने होय अति अपकारजी
सर्वे कहयुं धाव तेडावो कीधो अेह विचारजी ।६१।
प्रथम तोक अवस्थाअे तेडवा मांडी धावजी
पण रूक्ष्मणीजीनो आग्रह अति घणो स्नेह तणो भर भावजी ।६२।
कहे अेहने हुं स्तनपान करावीश डरूं नहीं लगारजी
अलौकिक सामर्थ अे बालक पर अेहवो भावजी ।६३।
गर्भ धरे अपकार तणुं आवश्यक मनमां जाणीजी
हित अर्थे स्तनपान करावा धाव तेडी आणीजी ।६४।
हरखे उलटसुं तेह आवी धाव वोहोरीया नामजी
पूरण आशा थासे मारी अे परम सौभागी धामजी ।६५।
बेसाडी सनमुख तेहने शिखामण दीधी घणी घणीजी
सहेज सुभाव कहया समजावी गिणना जाअे न गणीजी ।६६।
जतन करी जालवेजे ने तुं करजे अति मनुहारजी
तुं मारे पासे रहेजे जेम जोउं वारंवारजी ।६७।
सर्व थकी कांइ अेक हुं अलगुं आपीस तने छानुजी
पण करजे जेम अे सुख पामे हुं अे भलेरूं मानुजी ।६८।
धवरावा आप्या तेहने कह्युं राजजे जतन करीजी
गदगद कंठे थया रूक्ष्मणीजी आव्या लोचन जल भरीजी ।६९।
चतुरराय गुणजाण निपुण अेहने रूचीसुं नहीं धावेजी
माताथी विछुडया ते अे सामुं जोइ अरूच जणावेजी ।७०।
माता मनमां जाणे पण वात कहे अे केहनेजी
नवरावी पोताना भूषण वस्त्र धराव्या तेहनेजी ।१७१।

अेह प्रकार करी धावने	धवरावे छे माताजी	
सहुनुं सुख अे मांहे जाणी	स्तनपान करे सुखदाताजी	।१७२।
अेक समय महाप्रभु बाललीला	रसवस थई बोल्याजी	
तेह समयनी वात प्रगट करी	गुंझा अंतरपट खोल्याजी	।७३।
कहयुं धाव हती हरामजादी	अपने लरिकाकुं प्यावेजी	
उनसुं हेत करे बोंहोतेरो	ओर मोकुं नाहीं धवरावेजी	।७४।
मोकुं दुर्बल देखी	बोहोत दुःख काकीके मन आवेजी	
मनमां जाणी रहे दुःख मेरो	मोहो कछुअ न जणावेजी	।७५।
काकी कहे अे प्रसव होय तो	तबही धावकुं देहुंजी	
याको दुःख में सहयो जात नांही	इनकुं मोपे लेउंजी	।७६।
तब पायाकी बहेन बोली	मेरी विनती चित धरीयेजी	
जब तुमकुं बेटा होवे	तब तिनकुं कहा करीयेजी	।७७।
तब काकीने उतर उनसुं	दिनो लज्या मेहेलेजी	
जो होइ सोइ धावकुं देहुं	बेटा होय केबेटीजी	।७८।
काकी मोंहें बोहोत करी चितवे	वात्सल्य अरू हित भरीजी	
अे घणीवार श्री प्राण प्रभुअे	कहयुं छे श्रीमुख करीजी	।७९।
इच्छा सामर्थें कीधुं	श्री रूक्ष्मणीजीनुं मन भाव्युंजी	
मास आठमे नाम देवका	पुत्रीनुं फल आव्युंजी	।८०।
ते सांभळी श्री रूक्ष्मणीजीअे	आनंद मानी लीधोजी	
श्री महाप्रभुअे मारा मननो	मनोरथ पूरण कीधोजी	।८१।
अग्यारमें दिवसे नाहीने	धाव तेडावी वेगजी	
पुत्री तेहने धवरावा आपी	आप्या तेहना नेगजी	।८२।
वलता प्राणप्रीय बोलावी	लीधा उरसुं धरीजी	
महासुबुध्ध रूक्ष्मणीजी ते	धवरावे आनंद भरीजी	।८३।
श्री गोकुलमां श्रीमुखे कहयुं	में काकीको धायो जबलोंजी	
रघुनाथको जन्म भयो	मेही धायो हुं तबलोंजी	।८४।
हम सब भाइनमों	इतने दिन कोउ न धायो अेसोजी	
अेवुं प्रगट कहयुं श्री मुखेथी	में धायो हुं जेसोजी	।८५।
ते रूक्ष्मणीजीनी महीमा	क्यां लगी कहीअे विस्तारजी	
तेनी चरण रेणुं महा दुर्लभ	पामे नहीं कोइ पारजी	।८६।
जेने गर्भ पोतेथी स्वतः	पधार्या आपजी	
स्तन पान करे खेले उछंगे	हरे सकल परीतापजी	।८७।
कोटि चंद्र कोटि सुंदरता	वारूं कोटिक मारजी	
अेवा मुख उपर माता	चुंबन दे वारंवारजी	।८८।
मातानी सनमुख हंसी हंसीने	बोले मधुरा बोलजी	
अेना भाग्य समान को नहीं	जगतमां समतोलजी	।१८९।

धाव तणी कुटिलता जोइ दुग्ध रूच्युं नहीं ज्यारेजी
माताजीना दुग्ध पाननी इच्छा कीधी त्यारेजी ।१९०।
प्रभु परम संतुष्ठ थई स्तनपान करी सुख पामेजी
अभिनव आनंद माताने त्यां सहुको शिर नामेजी ।१९१।
अेम लीला करता सहु भक्त तेणे मन आनंद घणोजी
हवे कहुं छुं वरस गांठनो आरंभ उत्सव तणोजी ।१९२।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित
प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम
प्रथम तरंगे मांगल्य – दसमुं – १०
संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य – ११ – अगीयारमुं

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

राग : 'श्री मुखे आयुष दीधुं जी' अेणी जाते गवाशे

श्रीमद वल्लभ वदन प्रसन्नजी सहुनुं भूषण प्राण जीवनजी ।१।
नित नित नौतन रस रंगजी अंग अंग वारूं कोटि अनंगजी ।२।
मुसकनी मृदुल मनोहर हास्यजी वंक विलोकिनी नयण विलासजी ।३।
अलौकिक सुधा कोटि होअे वृष्टीजी तेणे सींचन थाअे सृष्टीजी ।४।
रस अंगीकृत ने उधारजी तेहनो पामे नहीं को पारजी ।५।
जाणे ते जे करे अे दानजी के जाणे करे रस पानजी ।६।
लीला दिन दिन अधिक प्रकारजी वाधे प्रतिक्षणुं अति विस्तारजी ।७।
आगम वरस गांठनो आव्योजी ते सहुने मन अतिशे भाव्योजी ।८।
श्री गुंसाईजीने मन मोदजी श्री रूक्ष्मणीजी भर्या प्रमोदजी ।९।
बालक वहु बेटीनो संगजी तेहना मनमां प्रगट्यो रंगजी ।१०।
दैवी सृष्टीने अलौकिक भक्तजी जे ज्यां ते त्यां थया अनुरक्तजी ।११।
आनंदित सुर मुनीने नरनारजी विसद करे थाअे विस्तारजी ।१२।
सहेज मोद सहुना मन मांहेंजी आगम अलौकिकने उत्साहेजी ।१३।
चांपोभाइ चांचो हरिवंशजी तेडया आनंदनां अवतंसजी ।१४।
बोल्या मुसकित वदन करीजी आनंदे आव्या रस भरीजी ।१५।
वरस गांठना उत्सव काजजी करवो वेगे सघलो साजजी ।१६।
अति उतम सामग्री जेहजी सहु सिध करी राखो तेहजी ।१७।
आगम उछव केरो जाण०जी श्री गुंसाईजी बोल्या वाणीजी ।१८।
कह्युं तमे सांभलजो दइ चितजी अे छे अलौकिक महा निध्धजी ।१९।
अेनुं कारण कह्युं न जायजी अति अव्यक्त ते केम कहेवायजी ।२०।
अे ओच्छव अलौकिक मन भाव्योजी भूतल भक्तना भाग्ये आव्योजी ।२१।
अे उत्सव समतोल न कोइजी कारज करजो अेवुं जोइजी ।२२।
आनंदया अेह वचन सांभलीजी जेम पयमां मिश्री मलीजी ।२३।
प्रथम मनोरथ करतां जेहजी विसद करी कह्युं तमने तेहजी ।२४।
अेणे दंडवत कीधां सुणीजी आश्चर्य थई रह्यां शीर धुणीजी ।२५।
अमे अे कारण कांइ न जाण्युंजी स्वरूप सुमेरने बुध्धे प्रमाणजी ।२६।
अमने कीधुं अलौकिक दानजी अे फल प्रगट्युं परम निदानजी ।२७।
उलट भर्या महा भाग्यवानजी वेगा थयां ते काज विधानजी ।२८।
अनुदिन मनमां अेह विचारजी अभिलाषित भावे अनुसारजी ।२९।
वैश्नव जे छे देश परदेशजी तेहने आगमनो उदेशजी ।३०।
मनोरथ करतां अेह प्रकारजी प्रमुदित आनंदे नर नारजी ।३१।
अति अभिलाख करे मन भाव्याजी शुभ वांछित दिन आगम आव्याजी ।३२।

नौतन मनोरथसुं सहु भर्याजी   पोते ग्रह कारज विसर्या जी   ।३३।
आनंद उत्साह मनमां धर्याजी   साज ते सर्वे नौतन कर्याजी   ।३४।
अति प्रफूल्लित थयो सर्वे समाजजी   को सिद्ध थाअे चालवा काजजी   ।३५।
को पेंडे चाल्या सौभागीजी   को मारग मांहे अनुरागीजी   ।३६।
वात विचारे मनमां घणीजी   शी शी करशुं पहेरामणीजी   ।३७।
आभूषण ने वस्त्र अनेकजी   मेवा लीधा करी विवेकजी   ।३८।
खेलवणा बहु खांते करी जी   ते लीधा अति उलट भरीजी   ।३९।
ते साथे लीधा संयोगजी   जे प्रभुने आवे उपयोगजी   ।४०।
अेणी पेरे आनंदया सहु भक्तजी   आनंद भावे अति उनमतजी   ।४१।
श्री गुंसाईजी उलट भरीजी   सघले लखी ते कंकोत्रीजी   ।४२।
मागसीर सुदी सातम शुभ नामजी   सहुको आवो मारे धामजी   ।४३।
सुंदर नव वल्लभ छे बालजी   जेहनो उत्सव परम रसालजी   ।४४।
ते उपर तमो आवो वेगजी   बालक वृद्ध कुटुंब थई भेगजी   ।४५।
जे जेम आवे मारग मांहेजी   मले कंकोतरी तेने त्यांहेंजी   ।४६।
दंडवत करी ले छे बेहु करमांजी   अति आनंदया महा सुखमांजी   ।४७।
नेत्रे देइ देइ शीप चढावेजी   उर चांपी अंतर गति भावेजी   ।४८।
वांचे कंकोतरी अति सुख थायजी   तेहने उलट अंग न मायजी   ।४९।
प्रथम आनंदित अतिशे अेहजी   भावे पूरण थया वली तेहजी   ।५०।
आरती वाधी मनमां घणीजी   सुंदर श्रीमुख जोवा तणीजी   ।५१।
जे ज्यां ते त्यांथी सहु भक्तजी   चाल्या अति आतुर अनुरक्तजी   ।५२।
वाजिंत्र वाजे श्री गुंसाईजीने घेरजी   दूरथी सुणीया ते बहु पेरजी   ।५३।
ते सुणी उलट अतिशे थायजी   आनंद रस उरमां न समायजी   ।५४।
आव्या उच्छवने आगमजी   गुंसाईजीने सुख भवनजी   ।५५।
श्री गुंसाईजी बेठक मांहेजी   बेठां आनंद भरसुं त्यांहेजी   ।५६।
महाप्रभु बेठा सुखसुं गोदेजी   खेले नौतन पेर महा मोदेजी   ।५७।
जोई जोई श्री गुंसाईजी रीझेजी   आनंद अंतर गतिमां भींजेजी   ।५८।
अेवे आवी पहोंच्यो साथजी   श्री गुंसाईजीने नामे माथजी   ।५९।
दीठा परमानंद समोहजी   अेहवा जोइने पाम्या मोहजी   ।६०।
उछलित आनंद सागर उर मांहें   फूल समाअे नहीं तिहुंपूर मांहेजी   ।६१।
हरखे हरख आंशु चुइ चालेजी   विवश थया नहीं आप संभालेजी   ।६२।
अे समय अेना मनमां मोदजी   प्रगट अवस्था रस उदबोधजी   ।६३।
नहीं कांई अे आनंदनुं मानजी   इच्छाअे कीधां ते समाधानजी   ।६४।
दंडवत करे ते हरखे सहुजी   आशिष दे छे प्रेमे बहुजी   ।६५।
श्री गुंसाईजी आनंद भेरजी   कीधां समाधान बहु पेरजी   ।६६।
करूणा आणी मनमां धणीजी   वारता पूछी पेंडा तणीजी   ।६७।
पूछ्युं सहुको नीका आव्याजी   कुटुंब सहु कोने साथे लाव्याजी   ।६८।

दंडवत करी कह्युं महाराजजी	नीका घणुं अमो सहु आजजी	।६९।
मनोरथ धरतां मनमां जेहजी	राज थकी थयां पूरण तेहजी	।७०।
समाधान श्री गुंसाईजीअे कीधुं जी	हित करी सहुअे मानी लीधुंजी	।७१।
भक्त करे ते पहेरामणीजी	सामग्री आणी छे घणीजी	।७२।
प्रथम खेलवणानो जे साजजी	जे आण्या छे प्रभुने काजजी	।७३।
परम विचित्र ने बहु भांतेजी	सुरंग सुशोभित जे गज दांतेजी	।७४।
रंगित काष्ट ने मोटी तणाजी	धातु तणा सुंदर अति घणाजी	।७५।
घोडा हाथी गाय ने मोरजी	चकइ भमरडानो अति घोराजी	।७६।
मेढां मृग मेडक ने मल्लजी	सुआ सारो दीशे भल्लजी	।७७।
पुतली गुजरीने अनुकर्णजी	को मांहे तपसी केरे वर्णजी	।७८।
वाघ वाहेणी ने घोडवेलजी	दीसे अनुपम ने वात सहेलजी	।७९।
पालखी वृक्ष ने संखा गोलीजी	जोइ रीझे व्हालो मति भोलीजी	।८०।
रथघर बलद वेल चोगामजी	तेनां क्यां लगी कहीअे नामजी	।८१।
अेवा खेलवणाना नहीं पारजी	प्रभुजी करे छे अंगीकारजी	।८२।
श्री गुंसाईजी ले छे कर मांहेजी	जोइ प्रसन्न थया सुखभर मांहेजी	।८३।
राखे महाप्रभु आगल अेहजी	मरकलडा करी ले छे तेहजी	।८४।
श्री गुंसाईजीने गोदेथीखसीजी	सनमुख आवे छे हंसी हंसीजी	।८५।
पोते चौद भुवननो नाथजी	खेलवणाने ओटेरे हाथजी	।८६।
श्रीकर ले खेले अति रीझेजी	भवतते आनंद रसमां भींजेजी	।८७।
अेक ले अेक मेले लइ मुखमांजी	अेक नाखे अेक साहे मुखमांजी	।८८।
भक्त खेलवणा आगल धरेजी	व्हालो लेवा हाथ प्रसारेजी	।८९।
बाल प्रभुने प्रसन्न करे छे जी	रीझावी रीझावी मन हरे छेजी	।९०।
अेणी रीते अति सुख दे छे जी	भक्त सहु अे मानी ले छेजी	।९१।
ब्रह्मादिकने दुर्लभ जेहजी	खेलवणे वस थाये तेहजी	।९२।
भक्तनां भाग्य तणुं शुं कहीअेजी	प्रभुना हेतनो पार न लहीअेजी	।९३।
भक्त करे छे पहेरामणीजी	श्री गुंसाईजी सहित घणी घणीजी	।९४।
देश देशनां वस्त्र अनेकजी	लाव्या छे जे करी विवेकजी	।९५।
शोभित नानारंग दुकूलजी	सुंदर जरतारी अमूलजी	।९६।
झगुली डगली ने वली टोपीजी	ते पहेरावे अतिशे ओपीजी	।९७।
ओढणी उपरेणाने ठामजी	तेमां छे बहु कसबी कामजी	।९८।
समर्प्या भूषणनो नहीं पारजी	तेनो केम थाअे विस्तारजी	।९९।
हेम जडाव जडया बहु नंगजी	जे ज्यां सोहे जेणे अंगजी	।१००।
सुंदर बाल प्रभु अति सोहेजी	जोइने जगत तणां मन मोहेजी	।१।
भक्त रीझया पहेरामणी करीजी	सर्वस्व कीधुं न्योछावरीजी	।२।
प्रभुजी लीधा पोते गोदेजी	हुलरावे चुचुकारी मोदेजी	।३।
परस करी प्रेमे थया मग्नजी	अभिनव आनंद मनमां मन लग्नजी	।१०४।

व्हालो भक्तनी साथे खेलेजी	जे आपे ते मुखमां मेलेजी	।१०५।
भक्तनी साथे रहे रस राताजी	अतिसे सुख पामे सुख दाताजी	।६।
अेम खेलावे नित्य अनुरागेजी	साथे लीला करवा लागेजी	।७।
जल ओवारीने करे पानजी	कृतार्थ करी जाणे भाग्यवानजी	।८।
प्रतीक्षणुं क्षणुं भामनडा ले छेजी	अति आतुरसुं चुंबन दे छेजी	।९।
अेम नित्य होय दर्शन दानजी	भक्त करे ते रूपरस पानजी	।१०।
अे रस कणीकानो जे अंशजी	ईश्वरेश्वरने वली विदवंशजी	।११।
जाणे नहीं अे रसनी गंधजी	केहेने नहीं अे रससुं सबंधजी	।१२।
अेतन मार्गना जे भक्तजी	ते छे अे रसे अनुरक्तजी	।१३।
स्वत: कृपाअे कीधुं दानजी	ते करे अे रसनुं पानजी	।१४।
पछी अति शुभ मुहुर्त कढावीजी	वेगे कढाइ तेह चढावीजी	।१५।
जे बहु करी जाणे पकवानजी	ते सहुने तेडया देइ मानजी	।१६।
घृत बुरू मिश्री भंडारजी	चून अनेक तणा अपारजी	।१७।
ते अेहोने देखाडयुं सहुजी	अति अगणित सामग्री बहुजी	।१८।
कह्युं तमो करो सामग्री अनेकजी	जे कांइ तमथी थाअे विवेकजी	।१९।
अे सुणी आनंदया सहु त्याहांजी	सहु कोअे थया ते कारज मांहांजी	।२०।
प्रथम जलेबी कीधी घणीजी	मिश्रीमां पाइ महा अति सणीजी	।२१।
लाडु दलीआ बुंदी सेवजी	फीणी वेसण मग ततखेवजी	।२२।
अडद चिरोंजी मींज अपारजी	मांहे बदाम मीठाइ सारजी	।२३।
बुंकणी गीरी बरास विवेकजी	अेवा कीधां लाडु भांति अनेकजी	।२४।
छूटी सेव संजारी संगजी	सुतरफीणीमां बहु रंगजी	।२५।
सीरो सुखडी लेहेचोइजी	सहु कोइ रीझे घेवर जोइजी	।२६।
क्षीरवडां दहीं माखण केराजी	मठडी गुंझा कर्या घणेराजी	।२७।
पेंडा खुओ बासुंदी जी	अे कीधां छे दूधे रांधीजी	।२८।
खाजा खांडपापडी खुरमाजी	अेवो स्वाद नहीं तिहीं पुर मांहा	।२९।
माल पुआ मनोहर भोगजी	भुरकी मगदल मांहां संयोगजी	।३०।
पूरी धारी दाल पचाइजी	बावर चंद्रकला सुखदाइजी	।३१।
तिलसांकरी ने सकरपाराजी	चिरोंजीना लाटा कीधा सारजी	।३२।
कपूरणाडी वेसणनी सेवजी	बरफी जोइ आश्चर्या देवजी	।३३।
देहेरडी दहींवडा मेहेसुरजी	अंदरसा समी नाम केशुजी	।३४।
अेवा अति अगणित पकवानजी	गिणना अे केम थाअे नामजी	।३५।
करी मीठाईनो नहीं पारजी	तेनो कोण करे विस्तारजी	।३६।
अेम पकवान मीठाई करीजी	ते सहु राखी छे भरी भरीजी	।३७।
हवे महा आनंदनो आरंभजी	द्वारे रोप्या छे कदली स्थंभजी	।३८।
वस्त्र भूषण ने बहु साजजी	ते करी राख्या छे उत्सव काजजी	।३९।
मंडप बहु पट वस्त्रअे छायाजी	स्थंभ विचित्र परम सोहायाजी	।१४०।

तोरण घेर घेर बांध्या सहुजी	चोक पूर्या प्रेमे करी बहुजी	।१४१।
अति रस पात्र सोहागे पूरीजी	कंठ भूषण हाथे जुरीजी	।४२।
साथीआ पूरे ते रस भर्याजी	मनमां मनोरथ धर्याजी	।४३।
मंगल कलस कर्या संकेतजी	मंगल मंगल निधीने हेतजी	।४४।
मली मली गाअे सोहासणीजी	भीड थई मंदिरमां घणीजी	।४५।
कुमकुम हाथा दे द्वारजी	को करे तिलक सहु नर ने नारजी	।४६।
को करे धूप अगरना त्यांहांजी	बेठक मंदिर मंडप मांहांजी	।४७।
को रोरी छिरके रस भरीजी	आनंदे गति मति विसरीजी	।४८।
को भरे आरती थाल मोतीजी	रंग भरी छे परम पनोतीजी	।४९।
को करे मांगल्यना बहु साजजी	माने जन्म सफल दिन आजजी	।५०।
को हंसी हंसी परस्पर बोलेजी	को कहे भाग्य नहीं अम तोलेजी	।५१।
को आनंद जोइ मन रीझेजी	को भावे अंतर गति भींजेजी	।५२।
क्यांहुं गुण कहे छे बेठा गुणीजी	क्यांहुं होअे वेद तणी महाधुणीजी	।५३।
क्यांहुं मन इच्छीत मनमां राचेजी	क्यांहुं संगीत भेद करी नाचेजी	।५४।
क्यांहुं महा मोदे गाअे गानजी	क्यांहुं होअे सहज अवारी दानजी	।५५।
क्यांहुं पहेरामणीना बहु साजजी	करे मनगमता व्हालाने काजजी	।५६।
क्यांहुं बेठा छे महा बडभागीजी	श्री मुख जुअे अति रस पागीजी	।५७।
क्यांहुं बहु करे ते हास्य विनोदजी	सहुने अेक रस प्रगट्यो छे मोदजी	।५८।
ज्यां त्यां भक्त तेअति रस माताजी	दीसे नव पल्लव रंग राताजी	।५९।
ज्यां त्यां प्रेमदा प्रेमे भरीजी	पोते ग्रह कारज विसरीजी	।६०।
ज्यां त्यां दीसे अति अनुराग्याजी	हींडे आनंद रसमां पाग्याजी	।६१।
ज्यां त्यां रंग तणा होय रोलजी	ज्यां त्यां रसना झाकम झोलजी	।६२।
ज्यां त्यां वाजिंत्र जोअे कोइजी	आव्या उच्छव उत्साह जोइजी	।६३।
छोटा मोटा जेह नगाराजी	बाजे नर मादा सुर साराजी	।६४।
पंच शब्दा छे अति अनूपजी	तेहना न्यारा बाजे रूपजी	।६५।
वाजे अति गति भेद मृदंगजी	सहित संगीत तणा बहु रंगजी	।६६।
गोमुख ढोल ढोलकी बाजेजी	चंद्र मंडलीमां राजेजी	।६७।
आयुज अमृत कुंडली तालजी	झांझ झालरी परम रसालजी	।६८।
घंट कंठ ताले मन मोहेजी	स्वर शहेनाइना अति सोहेजी	।६९।
वंस वांसली नाना भांतजी	वाजे नफेरीनी बहु जातजी	।७०।
जंत्र किन्नर ने सारंगीजी	बोले आनंद रसमां रंगीजी	।७१।
बाजे महुवर ने मुखचंगजी	सुणी मन उलट थयो सर्वांगजी	।७२।
रवाव पित्रांक अने सुर विणाजी	सुण्युं भाग्यवान छे ते तेणेजी	।७३।
अेवा अनेक अभिनवा वाजेजी	नाम विसद करतां मन लाजेजी	।७४।
जेवा छे तेवा न कहेवायजी	ते माटे मन अति संकुचायजी	।७५।
वाजिंत्र वाजे त्रीजे खंडजी	नाद ते सुणीअे सहु ब्रह्मांडजी	।१७६।

वाजे परम सुखद सुर सारजी	काने वरसे अमृत धारजी	।१७७।
नगर सहुअे रहयुं त्यां गाजीजी	शोभा सकल रही छे लाजीजी	।७८।
वचन न सुनीअे काने कानजी	कहेवुं कही समजावे सानजी	।७९।
अेवा आनंदनो विस्तारजी	केम करी कहुं जेनो नहीं पारजी	।८०।
छठ शुभ दिन महा मंगल कारीजी	महा ओछव मन विचारीजी	।८१।
रूकमणीजी शोभाजी मोदेजी	बहु बेटी अति भर्या प्रमोदेजी	।८२।
प्रथम रात्रनां नाहीने त्यांहाजी	आव्या पाकनी शाला मांहांजी	।८३।
व्यंजन प्रथम कर्या करी खांतजी	क्यां लगी कहीअे नाना भांतजी	।८४।
भात ते सेत पीत शिखंडनोजी	खाटो भात कर्यो बहु मणनोजी	।८५।
ठाडा मूग दलियो बहु करीजी	कोक पहेतन को भर भरीजी	।८६।
खनमंडा ने तवानी पूरीजी	रोटी दुपडी चुपडी रूडीजी	।८७।
लीटीने मांडा मोरा मीठाजी	अेवा स्वादे एवा दीठाजी	।८८।
भीना वडा पकवडा बहुजी	कांजी दहींमा पाग्या सहुजी	।८९।
खीर ते कीधी खांते करीजी	मांहे बरास ने बुरो भरीजी	।९०।
सेव पसाइने कंसारजी	लापसी कीधी तेणी वारजी	।९१।
कढी ते सेत पीत ने मीठीजी	अेवी बीजे कहींअ न दीठीजी	।९२।
वडी जे बहु भांते रूडी लागीजी	सादी छोंकी ने शिखरण पागीजी	।९३।
खांडमी गुडवो ने तिनकुडाजी	मुख प्रीय ने स्वादे होय रूडाजी	।९४।
वेसण केरा शाक अनेकजी	बहु भांते करी कर्या विवेकजी	।९५।
को छोंक्या को दहींअे पाग्याजी	को राइ को मिरचे लाग्याजी	।९६।
हलदी हींग बुंकणी अेवीजी	ज्यांहां जेवी जोइअे तेवीजी	।९७।
अेह कर्या छे भीतर सखडीजी	बाहेर बहु कर्या अणसखडीजी	।९८।
धृत सोंघा ताव्या तत्कालजी	सहुना भाव ते परम रसालजी	।९९।
अे सामग्रीनो नहीं पारजी	तेहनो केम थाअे विस्तारजी	।२००।
रात ते वीती अेम अनुरागीजी	प्रातः प्रगट थयो परम सोहागीजी	।१।
सप्तमी शुभ दिन थयो प्रकाशजी	पूरण करवा सहुनी आशजी	।२।
अंग अंग फूल्या भक्त समाजजी	मंदिर जावानो करे साजजी	।३।
घेर घेर सहुको मोद न मायजी	महा उत्सव जोवा सिद्ध थायजी	।४।
उतम तेल सुगंध लगावीजी	करे बहु उवटणा मन भावीजी	।५।
सहुको मोदे भर्या त्यां नाहेजी	अति आनंदे तेणे उत्साहेजी	।६।
पहेर्या महा विचित्र दुकुलजी	लहेंगा भांती भांती पटकूलजी	।७।
रंग रंग विविधी अनुपम चोलीजी	पहेरी महा सौरभमां बोळीजी	।८।
नख शिख भूषण अनुपम धर्याजी	महा उनमत रसभावे भर्याजी	।९।
वस्त्र आभूषणना नहीं पारजी	नाना विधी कीधां सृंगारजी	।१०।
अेकथी अेक अनेरा बहु जी	अति अनुराग भर्या ते सहुजी	।११।
चाल्या जोवा प्राण आधारजी	कहेने पडखे नहीं लगारजी	।२१२।

चोंप परस्परना मन मांहेंजी	प्रथम अमो पहोंचुं जई त्यांहाजी	।२१३।
अति आतुरताओ आवर्याजी	ग्रहेना काज सहु विसर्याजी	।१४।
अति आनंद करता गानजी	जोवा सुंदर रूप निधानजी	।१५।
चाल्या अति आतुर रस मतजी	रोके कोण महा उनमतजी	।१६।
आव्या निज मंदिरमां वेगजी	को आगल पाछल थई भेगजी	।१७।
कोटिक चंद्र ने कोटिक मारजी	मुख पर वारूं वारंवारजी	।१८।
अेवुं श्रीमुख सुंदर जोयुंजी	भक्त सहुने मन अति मोह्युंजी	।१९।
श्री गुंसाईजीओ लीधा गोदेजी	दामोदर दासी संग मोदेजी	।२०।
चाचोजी चांपोभाई संगजी	कृष्णदासी भर्या महा रंगजी	।२१।
वेदी विचित्र रची छे ज्यांहांजी	महा प्रभुने पधराव्या त्यांहांजी	।२२।
चोकी जटित अनुपम धरीजी	त्यां बेसाडया उलट भरीजी	।२३।
भांत भांगना तेल अनेकजी	आण्या खांते करी विवेकजी	।२४।
परम सुवास अने सुखदाईजी	तेनी उपमा कहीअ न जाईजी	।२५।
भक्त भर्या छे अति रस रंगजी	करे ते श्रीअंगे अभ्यंगजी	।२६।
निरखे श्रीमुख स्पर्शे अंगजी	रोमांचित्त थाअे सर्वांगजी	।२७।
रसभावे अंतरगति भींजेजी	अैना सकल मनोरथ सीजेजी	।२८।
प्रीयने जोई करवो स्पर्शजी	अलौकिक अभिनव अैनो हर्षजी	।२९।
तेनुं रूप कहयुं नव जायजी	अनिरवचन ते विसद न थायजी	।३०।
ते समजे अे रसनी रीतजी	जेने होय व्हालासुं प्रीतजी	।३१।
केसर चंदन मांहे बरासजी	चुओ अंबरमां सुवासजी	।३२।
कस्तूरी संतोष जवादजी	गुलाब मीली हवो सौरभ स्वादजी	।३३।
अरगजा उतम वाना मात्रजी	घोलीने भरी भरी राख्या पात्रजी	।३४।
सिद्ध कर्यो नावानो साजजी	मल्यो भक्तनो बहु समाजजी	।३५।
कोअे निकट को आंगण ज्यांहांजी	को रहया चोक तिबारी मांहांजी	।३६।
को अटाली त्रीजे मालजी	छजा मुंडेरी भरी रसालजी	।३७।
जुअे नरनारी थई अेक रूपजी	प्रथक रहयां पण अेकस्वरूपजी	।३८।
जेवा भावे पूरित जेहजी	तेने तेहवा कहीअे देहजी	।३९।
गान करे आनंदे पाग्याजी	जोइ रूप रसे अनुराग्याजी	।४०।
जोतां द्रष्टी न अलगी खांचेजी	सहुको ढल्या अेके सांचेजी	।४१।
अेह समयनो रस जेहनेजी	ते कहेवा सामर्थ न केनेजी	।४२।
अनुभव करे ते जाणे अेहजी	के प्रभु स्वतः जणावे तेहजी	।४३।
वागे नगारानां निरघोजी	थई रह्यो नगारा सहित उदघोषजी	।४४।
सकल ब्रह्मांड रह्या त्यां गाजीजी	देव दुंदुंभी राखी रहया लाजीजी	।४५।
अपसरा थकित जोइ नृत्यजी	गंधर्व गान सुणी थयां चकितजी	।४६।
आश्चर्य सुर मुनी सुर ईशजी	कारण जाणीने नामे शीषजी	।४७।
अे दर्शन नहीं थाअे केनेजी	दर्शन अंगीकृत छे तेनेजी	।२४८।

वेद मंत्र ब्राह्मण उचर्या जी आशीर्वाद दे उलट भर्याजी ।२४९।
बंदीजन जस बोले बहुजी ज्यां त्यांथी आशीष दे अे सहुजी ।५०।
केशर नाही नवल कुमारजी दशो दिश हवो जैजैकारजी ।५१।
ज्यारे केशर ढोले माथेजी अति उक्ताइने वलगे हाथेजी ।५२।
त्यां वात्सल्य करे बहु पेरजी नहीं नहीं जीजी कहे हित भेरजी ।५३।
हैयडे हुलसीने चुचुकारेजी सर्वस्व पोतानुं ओवारेजी ।५४।
प्रसर्यो सर्वांगे अनुरागजी जाणे चुइ चाल्यो त्रिय सोहागजी ।५५।
तेणे रसे रेले सहुना मनजी भरी सोहाग करे संपन्नजी ।५६।
प्रभुने कराव्युं मांगल्य स्नानजी भक्त करे चरणामृत पानजी ।५७।
तेह समय चरणामृत होअे दानजी अमित अमीअे पोख्या कानजी ।५८।
माता पिता बहेन समुदायजी तेना उरमां फूल न मायजी ।५९।
भीड भीतर ने ऊपर व्योमजी तिल पडवा पामे नहीं भोमजी ।६०।
मली अपर्मित अगणित सृष्टीजी हवी अलौकिक त्यां आनंद वृष्टीजी ।६१।
अंग वस्त्र करी उछंगे लेइजी पधराव्या भीतर आशीष देइजी ।६२।
आशीष दीअे छे सघलो साथजी मीठडा लेइ लेइ नामे माथजी ।६३।
अे कहेवा मारूं नहीं गात्रजी में कहयुं छे सूचनिका मात्रजी ।२६४।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित
प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम
प्रथम तरंगे मांगल्य - अग्यारमुं - ११
संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य - १२ - बारमुं

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

राग : "भले जनम्याजी श्री गोकुलनाथ जीरे" अेम गवाशे

भीतर निज मंदिरमां पधराव्या छे राज जीरे
त्यांहां आवी मलियो सर्व समाज जीरे ।१।

रस भावे भर्या अे भक्त छे जेह जीरे
व्हालाजीने सृंगार करावे छे तेह जीरे ।२।

केशर सोंधा जुत आणी ते पाग जीरे
मस्तके बांधे भर्या अति अनुराग जीरे ।३।

पेच समारी दे छे थई अने प्रसन्न जीरे
जाणे लपेटे छे पोतानुं मन जीरे ।४।

केशर भरी झगुली पहेरावे करी चाव जीरे
अंतर मांहां आलिंगन केरो छे भाव जीरे ।५।

तिलक कर्युं केशरनुं अेह विशेष जीरे
सर्वस्व आपीने लखी आप्यो छे जाणे लेख जीरे ।६।

पटका साथे बांध्युं मन पोतानुं त्यांहां जीरे
नेपूर जटित धरावे पद कमल मांहां जीरे ।७।

नखमणी मांहां प्रतिबिंब पोतानुं मुख चंद्र जीरे
रस विवसे जाणे को नायकाना वृंद जीरे ।८।

चुडो पहेरावे ने बाजुबंध जोड जीरे
ओपे श्रीकरने अलिंगननी कोड जीरे ।९।

अलका भरण धराव्युं ते ज्योते जुत ललके जीरे
अचानक अलक मेघमां जेम दामिनी चलके जीरे ।१०।

अे शोभा जोइ नाच्या मन रूपी आ मोर जीरे
श्रीमुख चंद्रे हवा नेत्र चकोर जीरे ।११।

सोहे करण धराव्या मुक्ता मणी लाल जीरे
निरखे निकट रही जुवतिना जाणे भाव जीरे ।१२।

कंठे भूषण जटित अमोलकनो नहीं पार जीरे
दीसे सकल शृंगार तणो अे सृंगार जीरे ।१३।

कटि मेखला धरावी भूषण सार जीरे
रस अंगे परसे छे मली अने वारंवार जीरे ।१४।

पहोंची प्रेमे करी पहेरावी छे श्री कर मांहां जीरे
अंगूठी धरी धरावी अंगुली रसभर मांहां जीरे ।१५।

शोभा अद्‌भुत प्रगटी प्रभुने अनुसरी जीरे
सर्वे तुच्छ थयुं शी करे न्योछावरी जीरे ।१६।

मनोरथ भक्त तणा ब्रह्मांडे न समाय जीरे
नेत्रनी कोर कटाक्षे संपूर्ण थाय जीरे ।१७।
अति उतकर्ष अपरमित परमानंद स्वरूप जीरे
शृंगार सारनुं सर्वस्व अेहवुं छे अे रूप जीरे ।१८।
पूरण अधिक थया अे दरशन जोइ जीरे
मनोरथ रंच रह्यो नहीं अनुभव सहु कोइ जीरे ।१९।
सहु कोइ उलट भर्या बाल लीला गाय जीरे
संपूरण शृंगार करी हरखे न माय जीरे ।२०।
मातृ चरण उछंगे लई बेठा छे गोदे जीरे
बहेन आरती करवा उभा छे परम प्रमोदे जीरे ।२१।
थाल विचित्र वधवाने महेल्या मांहे मोती जीरे
महा सौभाग्य भरी लेइ उभी छे परम पनोती जीरे ।२२।
प्रभुनुं रूप जुअे नेथाअे शीतल छाती जीरे
प्रगट करी छे मांहे कपूर तणी बाती जीरे ।२३।
तिलक करीने बीडां आप्या ते मननी खांते जीरे
ईंडी पींडी वारी निरखे छे रसनी भांते जीरे ।२४।
त्यांथी लेइ वधावे मुक्ता ने कंचन फूले जीरे
तेह समये को नहीं अे भाग्यने समतोले जीरे ।२५।
करे निरांजन उलट अंग न माअे जीरे
जै जै शब्द सुशोभित सर्वत्र ते थाअे जीरे ।२६।
दंडवत कर्या प्रभुने चरणे नमी नमी नीचा जीरे
कर्या नमन ने थयां सर्वोपर उंचा जीरे ।२७।
अेह समय त्यां को रंक अने राणा जीरे
भामनडा लेइ ओवारे छे तन मन धन प्राण जीर ।२८।
अंतर गति आनंदया मनमां अेम आणी जीरे
चीरंजीवो चीरंजीवो अेम कहे सहु वाणी जीरे ।२९।
नमन कर्या सहुअे अने दंडवत कीधां जीरे
गंधाक्षत विप्रे लेइ आशीर्वाद दीधां जीरे ।३०।
बहु भांते करी भेट जे मनोरथ छे जेहने जीरे
जेणे मांग्युं जे आप्युं छे तेह तेहने जीरे ।३१।
आनंदने उलट उलट न आनंद न माये जीरे
तेहनुं रूप विसद करी केणे न कहेवाय जीरे ।३२।
अेह प्रभु दीठे अति प्रगट्यो संतोष जीरे
तुच्छ करी जाण्यो अेह लोक ने परलोक जीरे ।३३।
घेर घेर प्रसर्यो नगर नगर ने तिंहोपूर मांहा जीरे
लोकलोकमां प्रसर्यो विवस थई नरसुर मांहां जीरे ।३४।

मनमां मोद तणुं कांइ रह्युं नहीं मान जीरे
श्री गुंसाईजीअे कीधां बहु पेरे दान जीरे ।३५।

भीतर रूकमणीजी वहु बेटीनो जे साथ जीरे
आपे न्योछावरी वारी प्रभुने माथ जीरे ।३६।

पंडित ब्राह्मण मागद आदि जे छे नाम जीरे
मनोरथ थकी अे आपी अधिक कीधां पूरण काम जीरे ।३७।

कुटुंब वहु बेटीमां नेग तणी जेहने आश जीरे
भूषण विविध वस्त्र आपी कीधां सुख रास जीरे ।३८।

श्री गुंसाईजी उलट भर वरस्या कंचन धार जीरे
तृप्त कर्या मागद जन नर नै नार जीरे ।३९।

गनोडा सेव तणां लाडु वहेंच्या छे सर्वत्र जीरे
आप्या नगरमां सहु जे कोइ छे प्राणी मात्र जीरे ।४०।

वैष्णव कुटुंब ज्ञात सहुनां कीधां सनमान जीरे
श्री गुंसाईजीअे घेर तेडया देइ देइ मान जीरे ।४१।

बोल्या प्रफुलित मुख आदर ज्युत आनंद भेर जीरे
प्रसाद लेवा सहु कोइ आवो मारे घेर जीरे ।४२।

अेह वचन आनंदभर सहु केहेने मन भाव्या जीरे
हुलसीने उलटभर सहु त्यां आव्या जीरे ।४३।

समृध्ध बहु मली छे तेनो नहीं पार जीरे
पतलीअे सहु बेठा आपापणी हार जीरे ।४४।

श्री गुंसाईजी आनंदे अति भर्या प्रमोद जीरे
लेइ पधराव्या पुत्र रत्नने त्यां गोद जीरे ।४५।

ज्यां बेठा छे वैष्णव यूथ सहु मली जीरे
त्यां फरे छे श्री गुंसाईजी ते मन रली जीरे ।४६।

गोदेथी महाप्रभुजी मरकलडा करी खेले जीरे
निज करे कर ग्रही पोहोंचो मुखमां मेले जीरे ।४७।

चूसे अति आनंदे भक्तनां जाणे मन हरे
तेणे स्वादे थाअे अतिशे प्रसन्न जीरे ।४८।

गोद थकी खसीने व्हालोजी नीचा आवे जीरे
उंचा लेइ उर चांपे गुंसाईजीने मन भावे जीरे ।४९।

चुंबन देइ देइ कंठ लगावे छे आप जीरे
श्रीमुख जोइ अंतरनां टाले परीताप जीरे ।५०।

सघली पतली सहुअे प्रसादनी पूरी जीरे
खीर जलेबी आदे प्रथम करी जे कचोरी जीरे ।५१।

व्यंजन भांति भांतिना सखडी कीधी जेह जीरे
प्रथम सिध्ध करी राख्या सर्व परोस्या तेह जीरे ।५२।

दीठो श्री महा उत्सव केरो सहुनो मोद जीरे
ते जोइ श्री गुंसाईजी भर्या छे प्रमोद जीरे ।५३।
पोते श्री महाप्रभुने लेइ पधाराव्या थाले जीरे
लेवा आज्ञा कीधी सहुने वचने रसाले जीरे ।५४।
भोजन श्री महाप्रभुजीने पोते करावे प्रीते जीरे
वातो अति प्रसन्न थई करे बहु रीते जीरे ।५५।
गुण चरित्र विधि विधिना सहेज ने जे सुभाव जीरे
ते कहे सहु आगल पोताना मनने चाव जीरे ।५६।
पुत्र परम प्रिय अेनी आकृती अलौकिक भरी जीरे
अेवुं कहे छे श्री गुंसाईजी सहुने फरी फरी जीरे ।५७।
रूचतुं जाणी मेहेले व्हालो श्रीमुख मांहां जीरे
भोजन करावी पोते कीधुं अति सुख मांहां जीरे ।५८।
सहु कोइ लेइ उठया छे महा प्रसाद जीरे
अचवी वेगा मंदिर आव्यां वादो वाद जीरे ।५९।
भीड थई त्यां भीतर आंगणमां अटाली जीरे
कोइ सके नहीं त्यां आप संभाली जीरे ।६०।
सहु अभिलाषा धरे क्यारे व्हालो पधारे जीरे
आतुरता थई अनेक मनोरथ मन विचारे जीरे ।६१।
तेहवे श्री गुंसाईजीअे सहुकोना सोच निवार्या जीरे
कोटिक काम विचित्र प्रभुजीने लेइ पधार्या जीरे ।६२।
जै जै कार हवो सहु कोइ दे छे आशीष जीरे
चिरंजीवो चिरंजीवो अे व्हालो क्रोड वरीस जीरे ।६३।
श्री गुंसाईजी गादीअे बेठा लेइ प्रभुने उछंग जीरे
सहु मोदभर्या मन प्रगट्यो छे अभिनव अंग जीरे ।६४।
गुंसाईजीनो महीमा कहेवा सामर्थ नहीं शेष जीरे
जेनी गोदे खेले श्री महाप्रभुजी गोकुलेश जीरे ।६५।
मनोरथ पूरकने त्यां मनोरथ ते कीधो जीरे
ब्राह्मणे अक्षत लेइ शुभ आशीर्वाद दीधो जीरे ।६६।
वैष्णव ज्ञात सहु मली अने त्यां आव्या जीरे
केसर सोंघा घोली आदरसुं छिरकाव्या जीरे ।६७।
मस्तके तेल भरी आपे बीडां तंबोल जीरे
गान करे अनुराग्या होअे रसना बहु रोल जीरे ।६८।
भेट भूषण पहेरामणी करे छे सहु कोइ जीरे
खेलवणा समर्पे छे रीझे व्हालो जोइ जीरे ।६९।
मन इन्द्रीय देहनुं करे छे आकर्षण जीरे
श्री अंगनी शोभाना अलौकिक जे गण जीरे ।७०।

केहेनुं अलके केहनुं वधने के हर्युं हारे जीरे
केहेनुं चंचलताअे मरकलडे सुचारे जीरे ।७१।
अेणी पेरे सर्वना मन पेठा तेणी वार जीरे
मोहे सकल जगतने प्राण तणा आधार जीरे ।७२।
स्वरूप धर्मथी मोहे सहु को नर नार जीरे
स्वरूप लगी को पहोंची नव सके निरधार जीरे ।७३।
अेहनुं साधन अेहनी करूणा जे रस रूप जीरे
तेह थकी अनुभव होअे अेह स्वरूप जीरे ।७४।
दूर रही को करे छे अे रसनुं रस पान जीरे
तेहनुं कृपा कटाक्षे होअे छे सनमान जीरे ।७५।
तंबोले लपटाणुं श्रीमुखने अवगाहे जीरे
सहु कोइ आपापणा भाग्यने सराहे जीरे ।७६।
स्तुती सर्वत्र करे छे ज्यांहां त्यांहां सहु कोइ जीरे
आश्चर्ये मोहया सहु अे बालक जोइ जीरे ।७७।
को कहे बालक पण महा कारूणीक रूप जीरे
अकल कलप्युं नव जाअे अेहनुं अेह स्वरूप जीरे ।७८।
अंग अंगनी शोभा कहीअ न जाय जीरे
को कहे शुं शुं कहीअे कहेवाने मन अकुलाय जीरे ।७९।
को कहे कठिन रखे होय मारी अे द्रष्टी जीरे
हुं सादर निरखुं छुं अभिलाखे करी वृष्टी जीरे ।८०।
को कहे उठावी लीजे चांपीने चुंबन दीजे जीरे
रूदीया उपर राखी मनोरथ बहु कीजे जीरे ।८१।
अेवा भाव भावता अेहोना मन मांहां जीरे
अेम बहु भांति विचारे सहु कोइ उभा त्यांहां जीरे ।८२।
वाजिंत्र वाजे छे त्यां अनेक प्रकार जीरे
गायन गाअे छे, नाचे छे नितकार जीरे ।८३।
बंदीजन जश बोले तेहनो नहीं पार जीरे
मन वांछित न्योछावरी आपे छे तेणी वार जीरे ।८४।
कोण संभाले भूषण वस्त्र ने द्रव्य अनेक जीरे
रंक राय ते उभा केम कहीअे ते विवेक जीरे ।८५।
श्री गुंसाईजीअे कीधी महा दाननी वृष्टी जीरे
तेह रसे रेलाणी मागद सहु सृष्टि जीरे ।८६।
अेणी पेरे अनेक प्रकारे महा उत्सव थाय जीरे
तेह विसद करी वचने केम करी कहेवाय जीरे ।८७।
अेहवे समय प्रभुजी नींदे भरी आव्या जीरे
दामोदर दासीअे भीतर पधराव्या जीरे ।८८।

त्यांह ढाली छे परम सकोमल सुख सेज जीरे
लेइ पोढाडया वात्सल्य बहु पेरे करी हेज जीरे ।८९।
त्यांहां आशीष देइ सहु कोइ पोताने घेर आव्या जीरे
उलट भेर आनंदया रूडां ते भाव्या जीरे ।९०।
घेर घेर टोले मलियो सर्व समाज जीरे
मनोरथ सफल थया कहे अम तणा सहु आज जीरे ।९१।
नृत्य करे छे सहु कोइ ताल बंधान जीरे
विवस थया छे ते रहित अनुसंधान जीरे ।९२।
अेक अेकने कंठे घाले छे हाथ जीरे
अेक परस्पर मोदे भीडे छे ते बाथ जीरे ।९३।
अेक अेकना मुखमां महेले छे मीठाई जीरे
केहेता संकुच न माने करे छे दिठाई जीरे ।९४।
कोइ चरणे लागी ने रहे नामी माथ जीरे
अति रस मत थयो भक्तनो सहु साथ जीरे ।९५।
तंबोले लपटाणुं दीठुं छे श्री मुख जीरे
अंग अंगमां प्रसर्युं छे तेहज अेने सुख जीरे ।९६।
जेवुं जोइ आव्या छे व्हालाजीनुं जे रूप जीरे
तेमां मग्न थया छे अे भक्तना स्वरूप जीरे ।९७।
अलगा कोण करे अंतर गतिना अनुभव जीरे
अनिरवचनी त्यां वचन तणो नहीं संभाव जीरे ।९८।
अेहवा उनमत रसमा पाग्या छे अेह जीरे
सर्वांग अेहोना थया भावात्मिक देह जीरे ।९९।
रसनो सिंधु प्रगट थयो अमित अथाह जीरे
पेसी कोण सके त्यां पामे नहीं थाह जीरे ।१००।
अे रस कणिकानो जाणे नहीं कोइ पार जीरे
ते अनुभवे जेहनो अे रसे अंगीकार जीरे ।१।
विसद करे केम ज्यांहां वाणी नहीं उचार जीरे
कांइ अेक कहुं छुं प्रभुनी करूणाने अनुसार जीरे ।२।
भेट करे छे सहु कोइ पोताने मन भाई जीरे
आपापणे रूचे ते राख्युं नहीं कांई जीरे ।३।
दान अनेक कर्या त्यां पोताने सहु घेर जीरे
भाव अलौकिक रीते कीधी ते बहु पेर जीरे ।४।
समय थयो ने त्यांथी मंदिर सहु आवे जीरे
मोदेगान करतां रूडा ते भावे जीरे ।५।
महा शोभा मंडित मंदिरे पधार्या जीरे
भक्त भाग्य फल उदय थयां तेणे संभार्या जीरे ।१०६।

बाल प्रभु पोढयाथी उठया छे तेणी वार जीरे
जंभा जुत विकसित मुख श्रींगारनुं सार जीरे ।१०७।

नयण अरूण अणीयाला अलसाणा अति दीसे जीरे
ते जोइ भक्त सहुना हैयलडा अतिशे हीसे जीरे ।८।

दामोदर दासीअे लीधा छे उछरंगे जीरे
बेठकमां पधराव्या वाध्यो छे मनमां रंग जीरे ।९।

श्री गुंसाईजी बेठा भर्या छे महा मोदे जीरे
त्यां लेइ अने पधराव्या बेसाडया गोदे जीरे ।१०।

सर्व उलट भर्या कीधां ते जयजयकार जीरे
भामणा ले छे सहु आनंदे वारंवार जीरे ।११।

अेणे रूपे अटक्या सहु केहेना त्यां मन जीरे
सुन्य थई रहयां छे चित्रनी पेरे तन जीरे ।१२।

अेक टक लागी रहया छे मटके नहीं नयण जीरे
शिथिल थया सर्वांगे बोले नहीं वयण जीरे ।१३।

प्राण मन इन्द्री सहुअे मेली छे देहनी आश जीरे
रूप व्हालाजीनामां कीधो छे निवास जीरे ।१४।

अेणी रीते करे अे रसनुं रस पान जीरे
जेहने स्वतः सुखारथ कर्युं छे रस दान जीरे ।१५।

को लेइ उभा छे त्यां मिसरी ने बहु मेवा जीरे
ते जोइ व्हालोजी हाथ प्रसारे तेहने लेवा जीरे ।१६।

लेइ श्रीमुखमां मेले छे श्रीकरे व्हालो आप जीरे
अेह मिसे सहु केहेनो हरे छे परीताप जीरे ।१७।

भक्ते प्रथम समर्प्या छे खेलवणा जेह जीरे
श्री गुंसाईजी आगल राखे छे लेइ तेह जीरे ।१८।

ते जोइ उलटसुं ले छे ते व्हालो हाथ जीरे
खेले अति आनंदे रीझे छे मारो नाथ जीरे ।१९।

कोइ अेक केवल रस भावापन्न छे त्यांहां जीरे
तेणे रस भावे प्रसन्न कर्यां रसमांहां जीरे ।२०।

रस वस करीआकर्ष्युं व्हालजीनुं मन जीरे
अे छे परम गूढ रस जाणे नहीं अन्य जीरे ।२१।

अेहनुं साधन भाव ने फल पण भाव जीरे
तेहनो अनुभव साखी अंतरनो अनुभाव जीरे ।२२।

अेवा भक्त अपरमित परमित नहीं लहीअे जीरे
अेहना भाग्य तणो पार क्यां लगी ते कहीअे जीरे ।२३।

वासर अेम वीत्यो हवे थई छे ते रात्र जीरे
घेर जावाने आतुर थया छे प्राणी मात्र जीरे ।१२४।

नयण विलुब्धा रूपे अलगा नहीं थाय जीरे
मन त्यां मेलीने सहु पोताने घेर जाय जीरे ।१२५।
सहुको आपापणे भवने भाव अनुसार जीरे
स्वरूप तणो अंतरगत करे छे विचार जीरे ।२६।
सुता स्वप्नमां अेणी रीते रयणी विहाये जीरे
सांप्रत्य सर्व मनोरथ पूरण थाअे जीरे ।२७।
विरूध्ध अवस्थाअे महा अलौकिक सामर्थ जीरे
ते माटे अे स्वप्ने पूरण कीधो छे अर्थ जीरे ।२८।
केहेने पलकना लागे जागे छे सुख सोचे जीरे
आतुरता अंतरगति जोवाने लोचन लोचे जीरे ।२९।
अेवा अनेक भावना भक्त छे जे नाम जीरे
तेहनां अेह प्रकारे कीधां छे पूरण काम जीरे ।३०।
निसा वीते सहु चाल्या निज मंदिर त्यांह जीरे
अनुभवनो आश्चर्य विचारता मन मांह जीरे ।३१।
महाप्रभुअे पोते करूणा मनमां आणी जीरे
जाग्या आतुरता सहु भक्तनी जाणी जीरे ।३२।
सुख अनुभव अेणी पेरे करे छे सहु कोइ जीरे
ते जाणे जेहने अेह अनुभव ते होइ जीरे ।३३।
महाराज राजेश्वर सहु केहेना सुखकारी जीरे
जेणे भक्त तणी सहु आरत निवारी जीरे ।३४।
प्रागट्य अे तद अर्थे स्वकीयने सनमान जीरे
महा रस वृष्टी करे छे स्वकीयने देइ दान जीरे ।३५।
श्री गुंसाईजीअे अेणी पेरे महा उत्सव कीधो जीरे
अेहोनी अंतर गतिनो मनोरथ सहु सीधो जीरे ।३६।
अे महा उत्सव सदा सोहे छे प्रति वर्ष जीरे
अे क्यां लगी कहीअे अेनुं महातम ने उत्कर्षजीरे ।३७।
उतरोतर अेहनो – अधिक प्रताप जीरे
अनुभव सिद्ध अेहोनी अनुभवी जाणे वात जीरे ।३८।
अेवुं को नहीं जेने पटंतर अेहनी दीजे जीरे
तो कहो केम करी अेनी समोवड केने कीजे जीरे ।३९।
जगत सकलनुं सर्वस्व रसनुं अे सार जीरे
अवतारा अवतारी पामे नहीं पार जीरे ।४०।
वैंकुंठ आदि अधिक जे तेहने नहीं गम्य जीरे
नाम विसद केम करीअे सहु केहेने अगम्य जीरे ।४१।
बीजा साधन केरूं फूलनुं जे फल सर्व जीरे
बीजा उच्छव कोटिकने वारू कोटिक पर्व जीरे ।१४२।

सुखनो सागर ने वली आनंदनो आधार जीरे
रसनो भर रस पूरण सप्तमी शुभ वार जीरे ।१४३।
बीजा साधन रूपे वृत न्यामिक रूक्ष जीरे
अे रस रूप रसात्मिक रसनो भर मुक्ष जीरे ।४४।
जगत ब्रह्मांडे अेहोनी को नहीं अनुहार जीरे
सर्व ओवारी नाखुं अेह उपर वारंवार जीरे ।४५।
अेह प्रमाण करवा वचन कहुं अेक सार जीरे
श्री महाप्रभुजी आगल कर्युं छे निरधार जीरे ।४६।
जन्माष्टमीने दिवसे गादी गूढे नाथ जीरे
बेठा प्रहसित वदने उभो छे सहु साथ जीरे ।४७।
त्यां स्वरूप नेष्टिक महा गुणी अनूप जीरे
परम अनन्य अपरमित तामसीनुं रूप जीरे ।४८।
अेहनी समताने नहीं बीजो को भाग्यवान जीरे
व्हालो रीझे अेहोनी सारंगीने तान जीरे ।४९।
अेहवा ध्यानदास त्यां उभा छे ते पास जीरे
पोते भाग्य सराही बोल्या छे वचन विलास जीरे ।५०।
महाराज अे कहा ओच्छव जामो होये दु:ख जीरे
नाम कहावे उछव और मरना सब दिन भूख जीरे ।५१।
उत्सव महाराज राजेश्वर श्री गोकुलेशजीको जीरे
भोग राग सुख दायक लेश नहीं दु:ख को जीरे ।५२।
खान पान संपूर्ण सर्व इन्द्रीय रस भोगी जीरे
ज्यां त्यां ले छे जलेबी आनंदमें सब लोग जीरे ।५३।
अेह वचन सुणी प्रभुजी थया महाप्रसन्न जीरे
मुख विकसित मुस्काया रीझया ते अतिशय मन जीरे ।५४।
अलौकिक उपपत कीधुं जेहनुं नहीं निर्माण जी रे
अेह द्वारा केवडावी दीधुं ते सर्व प्रमाण जीरे ।५५।
जे सर्वोधिक उत्सव अतिशे महा सार जीरे
अेहनी समताने नहीं बीजो को अनुहार जीरे ।५६।
अेक वार श्री महाउत्सव केरो ते दिन जीरे
श्री महाप्रभुजी पोते अतिशे परम प्रसन्न जीरे ।५७।
सहु को वैष्णवने त्यां पतली धराय जीरे
भक्त अपरमित नित्य भीड भराय जीरे ।५८।
सुंदर अनुपम दीसे उपर अटारी जीरे
त्यां व्हालोजी मोदे भर्या बेठा चटाइ जीरे ।५९।
केश निवारे श्री कर कमले करी आप जीरे
तेणे लटके हरे भक्तना परिताप जीरे ।१६०।

आसपास ने आगल पाछल सहु कोइ जीरे
अंतरंग बेठा ते आनंदे श्रीमुख जोये जीरे ।१६१।
श्री मुखथी होअे वचनामृतनी वृष्टी जीरे
तेथी सिंचन थाअे स्वकीय सहु सृष्टी जीरे ।६२।
ते आनंदे रीझे सहु केहेना अंग अंग जीरे
पोते मोद भर्या करे वारता प्रसंग जीरे ।६३।
अे रस अनुभव करतां उलट न माय जीरे
निज सोभाग्य मदे उरमां न समाय जीरे ।६४।
कृपापात्र बोल्या मन आनंदमां रोली जीरे
सनमुख उभा रही त्यां मालजी पंचोली जीरे ।६५।
तमारा ठाकुरना उत्सवमां थाय सारूं जीरे
ते वारूं के अमारा ठाकुरनो उत्सव वारूं जीरे ।६६।
ते सुणी मुसकाया महा प्रभुजी मनमांहां जीरे
आनंद भर पण संकुच्या बोल्या नहीं त्यांहां जीरे ।६७।
पंचोली बोल्या वली महेली मन लाज जीरे
सांचुं कहोनी कां जी बोल्या नहीं राज जीरे ।६८।
हां हां तमारा ठाकुरनो वारू अेम बोल्या वाणी जीरे
भक्त तणा सौभाग्य प्रगट कर्या मन जाणी जीरे ।६९।
अेहवा महा उत्सवनुं वरणन केम थाय जीरे
वाणी बुद्धि न पहोंचे ते वचने केम कहेवाय जीरे ।७०।
अे महा ओच्छव केरी लीलाने जे कोइ गाय जीरे
स्वरूप सहित संपूर्ण अनुभव तेहने थाय जीरे ।७१।
अे ओच्छव सांभलवा मन थासे जेनुं लग्न जीरे
गोकुलेश रस रूप रसाब्धीमां थाशे मग्न जीरे ।७२।
अे ओच्छवनी श्रवणे सांभलशे जे कोइ वात जीरे
तेह कृतार्थ थाशे जे कोइ जीव जात जीरे ।७३।
अे उत्सवनो जेणे अनुभव कीधो सार जीरे
तेहनी करूणा द्रष्टे बीजानो अंगीकार जीरे ।७४।
अे ओच्छव अनुभवीयनो जेहोने होअे संग जीरे
अंतराय कापे ने अलौकिक थाअे अंग जीरे ।७५।
अे ओच्छव पर जेहने उपजे विश्वास जीरे
पुष्ट पुष्ट रसदाने पूरण थाअे आश जीरे ।७६।
अे ओच्छवनुं रूचीशुं करसे जे कोइ गान जीरे
तेहने सद्य हशे अे मारगनुं फल दान जीरे ।७७।
अेवा कोटि कोटि फल कह्यां नव जाय जीरे
अनिरवचनी ते वचने केम कहेवाय जीरे ।१७८।

देश देशथी वैश्नव आव्या छे मनोरथ करीय जीरे
ते रसे तृप्त थईने चाले छे घेर फरीय जीरे ।१७९।
श्री गुंसाईजीअे तेहने दीधां छे सनमान जीरे
प्रसाद वस्त्र आपीने कीधां छे ते समाधान जीरे ।८०।
वेगा थईने कह्युं आवजो मारे घेर जीरे
प्रति वरसे नित्य ओच्छव अेहोनो उलट भेर जीरे ।८१।
बाल प्रभुने सहुअे आशीष बहु दे छे जीरे
चरणे स्पर्शीने त्यां भामनडा सहु ले छे जीरे ।८२।
सहुअे नाम्युं श्री गुंसाईजीने वली माथ जीरे
विदाय थई अने चाल्यो भक्तनो ते सहु साथ जीरे ।८३।
जेम बहेरखने कोइ लेइ चाले आगल जीरे
तेम वयारे फरके सनमुखे पाछल जीरे ।८४।
तेम आगल चाले पग पोताना देश भणीय जीरे
अेम पाछी फरी गति अेहोना मन तणीय जीरे ।८५।
फिरी फिरी जुअे ने वली दंडवत करे अेह जीरे
अनुभवनी सुरते अनुसंधान देह जीरे ।८६।
अेवो अनिरवचनी उत्सव केरो महिमाय जीरे
शेष तणे सामर्थे कह्यो नहीं जाय जीरे ।८७।
कदाचित को मुरखने उपजशे संदेह जीरे
तेहने काज लखु छुं करवाने निःसंदेह जीरे ।८८।
को कहेशे श्री गुंसाईजीअे पोतानाथी जेह जीरे
बीजा बालकनाथी आदर विशेष केम अेह जीरे ।८९।
त्यां कहुं छुं अेहनुं करवाने प्रमाण जीरे
श्री मुखे प्रगट कर्युं छे ते सुण्युं रंक ने राण जीरे ।९०।
अेकवार ओच्छवनो आगम उदभव जीरे
तेहवे रूकमा बेटीनो थयो अभाव जीरे ।९१।
ते असौकर्ज ते थई आवी अेवी पेर जीरे
प्रसाद लेवा वैश्नव तेडया नहीं घेर जीरे ।९२।
ते माटे श्री महाप्रभुजी पाम्या मन खेद जीरे
मनमां जाणी रहया पण भांजे नहीं भेद जीरे ।९३।
भीतर भोग सरावी पधार्या आंगण मांहां जीरे
चटाइ ज्यां बिछावी आवी बेठा त्यांहां जीरे ।९४।
पोते केश निवारे शोभानो नहीं पार जीरे
भाग्यवान त्यां नर ने सहु नार जीरे ।९५।
अति महाभाग्यवती जे रसनुं सुख धाम जीरे
अमोलिक रत्न रतनबाइ उभा छे तेणे ठाम जीरे ।१९६।

सहु कोइ व्हालाजीनुं करे छे दरशन जीरे
महा प्रभु पोते जणावे अप्रसन्न जीरे ।१९७।
केणे पूछयुं वैश्नव तेडया नथी कां आज जीरे
उसासो नाखीने बोल्या नहीं राज जीरे ।९८।
ते जोइ अंतरंगने उपज्यो मन ताप जीरे
वैश्नव तेडया नथी ते दुःख पाम्या व्हालो आप जीरे ।९९।
व्हालाने स्वकीयनो अेवडो पक्षपात जीरे
वैश्नवना आव्या तेणे पाम्या छे परिताप जीरे ।२००।
कोण उपाय करूं कही उक्ताये मन बाल जीरे
सहुने तेडे पण थाअे भोजनने अति काल जीरे ।१।
अति उक्ताअे घणुं पण शो करे उपाय जीरे
मन महेरामण उलटे फरी मांहें न समाय जीरे ।२।
अेम कहे फरी ओच्छव आवशे ते ज्यारे जीरे
मारा मननो मनोरथ पूरण थाशे त्यारे जीरे ।३।
अे आतुरतासुं मन पूर्वक करे अे ध्यान जीरे
क्यारे ओच्छव आवे अेम कहे महाभाग्यवान जीरे ।४।
अेम करतां महाओच्छव आव्यो बीजो आगे जीरे
अे महा अंतरंगना भाग्यने सोहागे जीरे ।५।
अधिकारीने तेडी अे भक्ते कह्युं अेह जीरे
अेक मारी विनती छे सांभलो तमो तेह जीरे ।६।
महाओच्छवे जे सामग्री जोइअे सहु जीरे
तेहनी आज्ञा दीजे मनोरथ मुने बहु जीरे ।७।
अेह मनोरथ मारो तम थकी पूरण थाय जीरे
कहेतां संकुच आवे पण विण कहे न रहेवाय जीरे ।८।
आनंदे आतुर थई करे ते उचार जीरे
रूप तदात्मिक दीसे अेहनुं तेणी वार जीरे ।९।
वैश्नव सहुने तेडो महेली तमो मन जीरे
जेम व्हालोजी थाअे मनमां प्रसन्न जीरे ।१०।
अेह सुणी रतनबाइने उतर दीधो अेह जीरे
प्रभुने विनती करूं जे कहेशे करशुं तेह जीरे ।११।
आतुरता अे भक्तना मननी प्रभुअे जाणी जीरे
अे आतुरता प्रभुअे पोताने मन आणी जीरे ।१२।
भक्त ने प्रभुना मननो संमत मलीओ अेक जीरे
तेणे ज्यांहांथी त्यांहांथी उपज्या भाव अनेक जीरे ।१३।
तेहवे वहु बेटीअे संमत कीधो सर्व जीरे
वैष्णव सर्व तेडवा आवे अेणे पर्व जीरे ।२१४।

भंडारी तेडाव्यो वहु बेटी करी प्रीत जीरे
सामग्री सिद्ध करजो जेह छे सदा रीत जीरे ।२१५।

वलता उत्सव केरा रह्या ते दिन दसबार जीरे
अधिकारी प्रभु आगल बेठां छे तेणीवार जीरे ।१६।

व्हालो सुख सज्याओ बेठां छे मन हरण जीरे
मुसकित वदने धरीया चोकी पर चरण जीरे ।१७।

समय थयो पोढ्यानो वलीयो ते सहु साथ जीरे
श्रीमुख जोइ आशीष देइ नामी नामी माथ जीरे ।१८।

अति ओकांत हवुं त्यां उभा छे गोकुलभाई जीरे
महा रस पात्र ओट देइ उभा छे रतनबाइ जीरे ।१९।

भाई रतनजीओ त्यां प्रभुजीने कही वात जीरे
राज महा ओच्छव दिन रह्या छे आठ सात जीरे ।२०।

ओ सुणी महाप्रभुजी मनमां अतिसे फूल्या जीरे
हां हां ओ रहे ओम कही श्रीमुखे बोल्या जीरे ।२१।

महाराज भीतरथी कहाव्युं छे अमने आज जीरे
वैष्नव सर्वने तेडवा उच्छवनो करो साज जीरे ।२२।

ओ सुणी प्रभुजी बोल्या माणसनुं असौकर्य जीरे
सखडी केम बनी आवे लागे छे आश्चर्य जीरे ।२३।

बाहेरथी पूरी ने व्यंजन करो बहु जीरे
अणसखडी आपो तमो तेदिने वैष्णव सहु जीरे ।२४।

महाराज भीतरथी आग्रह छे अति घणो जीरे
तेहोने मनोरथ बहु छे आप्यानो सखडी तणो जीरे ।२५।

ओ संमंत सुणी प्रभुजी उलट न माय जीरे
ओथी शुं भलुं जो ओणी पेरे सहु थाय जीरे ।२६।

वलती रतनबाइनी विनती करी विवेकजी जीरे
राज कोइ भगवदिने मनोरथ छे ओक जीरे ।२७।

कहे छे महा ओच्छवनी सामग्री जे सहु जीरे
आपुं ते सहु हुं विनती करी कहुं जीरे ।२८।

ओ वचन सुणी बोल्यां महाराजाधिराज जीरे
कबहुं भइ नहीं सों क्यों होय है ओसी आज जीरे ।२९।

ओ उत्सव तो सदा हमकुं है करतव्य नित्य जीरे
श्री गुंसाईजी करत आये है आद्यथे करी प्रीत जीरे ।३०।

हम ओच्छवकु तबही उछव करी जाणे जीरे
जब वैष्नव प्रसाद ले तबही सुख माने जीरे ।३१।

विनुं वैशनव कहा लागे सब रूक्ष जीरे
उच्छव तबही कहीओ वैष्णव होओ मुक्ष जीरे ।२३२।

यह उच्छवकी आशा सब काहुकुं होवे जीरे
बोले विनु बोले आवत है सब कोउ जीरे ।२३३।

ताते सब सामग्री हमारी होअे आज जीरे
हमारे हे सो तो सब वैश्नवको हे साज जीरे ।३४।

ताते याकी विनती नांहीना विगतव्य जीरे
अे उत्सव सो सदा हमकुं हे करतव्य जीरे ।३५।

अेम बोल्या महाप्रभुजी भक्तना प्राण आधार जीरे
कृपा सिंधु दयाभर करूणानो नहीं पार जीरे ।३६।

स्वकीयने संगे भोजन करवानो मनोरथ घणो जीरे
स्वकीयने आगमने उत्साह ते मन तणो जीरे ।३७।

खान पान अेकत्वे दीधा छे बहु दान जीरे
भक्त अति आदरसुं कीधां ते सनमान जीरे ।३८।

अेताद्रस अति आदर भक्तनां कर्या आप जीरे
भक्तना भोजन करवावीने हर्या परीताप जीरे ।३९।

अेहवा कोटि प्राण पति सकल गुण सार जीरे
अंगीकार शिरोमणी महा सुखना भंडार जीरे ।४०।

पूछुं श्री गुंसाईजी पोतानो अेणी रीते जीरे
ओच्छव अेणी भांते करतां बहु प्रीते जीरे ।४१।

बोल्या अेही भांतीसो उछवकरते अे मेरो जीरे
आपुनो अेही विधी अेसो कबहुं ना करते न्यारो जीरे ।४२।

ओर अन्य बालकको कीयो नाहीं कबही जीरे
मेरो उछव करी माने ते सुख तबहीं जीरे ।४३।

अेवा वचनामृत श्रीमुखथी बोल्या जीरे
रसनी वृष्टी करी ने संदेह टाल्या जीरे ।४४।

बाहाज्य जणाव्यो श्री गुंसाईजीनो बहु प्रेम जीरे
आभ्यांतरनो कोण करी सके ते नेम जीरे ।४५।

अे लीला भक्त अने वली प्रभुनो अे दिन जीरे
अविचल राज करो अेहनी पटंतर नहीं अन्य जीरे ।४६।

अेणे प्रकारे कह्यो स्वकीयनो उत्कर्ष जीरे
अेम लीला करतां हवुं संपूर्ण वर्ष जीरे ।४७।

अेणी पेरे वरस गांठनो उत्सव ते कीधो जीरे
स्वकीय सहु तेनो मनोरथ ते सीधो जीरे ।४८।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अदभुत विचित्र रस व्याराना गोपालदास विरचित प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम

प्रथम तरंगे मांगल्य – बारमुं – १२

संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य - १३ - तेरमुं

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति
'धन्य धन्य माता जसोमति हो धन्य श्री श्री गोकुल
धन्य कुमार दोउ लाडीलो वली मोहन जाको नाम' अेम गवाशे।

अति रस दायक अभिनवो जो वेद न जाणे पार
बाल्य विनोद करी रमे श्री विठलराज कुमार ।१।
सामग्री जे उपयोगनी पहेली प्रगटी ज्यांहां
समय समय उपयोगने ते आवे प्रभु छे ज्यांहां ।२।
दामोदर दासीनो ते उदयपूरमां वास
अलौकिक कारण अेहनुं अे भाग्य तणी छे रास ।३।
इच्छाने बले आवीया श्री गोकुल निज धाम
श्री गुंसाईजी त्यां हता तेणे सर्या अेहोना काम ।४।
आगमनुं कारण लहीने पठव्या प्रयाग मंझार
पोहोंता प्रभु प्रागट्य समय अेहोना भाग्य तणो नहीं पार ।५।
परम जुआ सुंदर घणुं अति प्रेम गुणे संयुक्त
महा चतुर समजे सहु जे जे छे रसनी युक्त ।६।
हेत करे सहुको घणुं अेहोने जाणी निजदास
अे प्रभुनी पासे रहे प्रभुजी रहे अेहोने पास ।७।
खेलावे प्रभुने घणुं करी करी वात्सल्य धर्म
बालकने खेल्या तणां ते जाणे सघला मर्म ।८।
स्नेह पूर्वक सुखदसुं सेवा करे भांति अनेक
रीझवे बाल प्रभुने ते अतिसय करी विवेक ।९।
चतुर रायने चालवा शिखवे रहीने साथ
पुरूं चरण धराये नहीं अंगुली वलगाडे हाथ ।१०।
बेहु आंगलीअे प्रभुने ते वलगाडे मन रंग
सनमुख रही नीहोराइने ते चाले छे संग संग ।११।
मरकलडा देइ देइ अने महा मोदसुं चाले आप
शीतलता थई भूमीने टलीया सहु परिताप ।१२।
को समय घुंटणीअे थई वृषभ तेणे अनुकर्ण
तेहज रीते श्री गुंसाईजी चाले तेहवे वर्ण ।१३।
श्री गुंसाईजी अेम कहे अे धर्म रूपनी चाल
सभा तणे संकोचथी अेम बोले वचन रसाल ।१४।
तेणे समय श्री गुंसाईजी आनंद उर न समात
जेम प्रभु तेम अनुकर्ण करे ने ज्यां त्यां साथे साथ ।१५।

अेणी पेरे ज्यारे चालवा शीख्या प्राण आधार
भक्त सहु ते जोइने ओवारे वारंवार ।१६।
नाचे नाना भांतीशुं आभरण करे नाद
ताली देइ थेइ थेइ करे ने नयणे लाग्यो वाद ।१७।
किंकिणी नूपुर घुघरी बोले महा सुख रास
भक्त रसिक महा रस भर्या ते उभा छे चहुं पास ।१८।
हुलसीने महा मोदसुं ते नृत्य करे सर्वांग
शोभानी परमित नहीं ते वाधे अधिक रंग ।१९।
ज्यारे अति रस लह्यलह्यो रसभर देखे त्यांहां
प्रेमे आंलिंगन देइ चुंबन देइ सुख मांहां ।२०।
बेहु करमां कपोल ग्रही दे छे चुंबन दान
नृत्यमां जाणे छे कनत्रोडुं साध्युं अदभुत तान ।२१।
भामणा ले बहु भांतीशुं मनमां वाधे रंग
हस्त चरण चंचल करी प्रसरावे सर्वांग ।२२।
वदन निहाले प्रेमसुं जोतां तृप्ती न थाय
भाग्य सराहे भामिनी आनंद उर न समाय ।२३।
दामोदर दासीसुं अे उताना थई गमोद
उर उपर बेसाडिने त्यां करे ते बाल विनोद ।२४।
अलबल कलबल बोलनी बोले मधुरा बोल
सुणी सुख सागर उलटे नहीं को अे रसने समतोल ।२५।
दामोदरदासी बोले तेणी रीते साथ
अलबल कलबल माधुरी जेम बोले छे नाथ ।२६।
अर्ध अक्षर कही शिखवे वली पूरो कही जाय
ते कहेवा प्रभु उद्यम करे पण वचने नहीं कहेवाय ।२७।
यद्यपि अतुल सामर्थ छे सकल गुणे संपन्न
बोली सके नहीं बाल पणे पुरूं अेक वचन ।२८।
दामोदर दासीनुं नाम नहीं कहेवाय
बोदर दासी कही अने ते बोलावे सुखदाय ।२९।
खंडित वचन मधुरडां ते पूरण सुख दे दान
बोले व्हालो रस भर्या कांइ अे रसनुं नहीं मान ।३०।
ज्यारे प्रभु आगल थकी स्वर काढे छे मन भाय
छूटकी देइ आगल थकी दामोदर दासी गाय ।३१।
अेणे प्रकारे खेलता जोइ माता पिता मन फूल
साथ सर्व अे सुख जोइ गणे जगत सकल त्रण तुल्य ।३२।
दामोदरदासी सुअे पोढाडे प्रभुने पास
नाना भांती भाव संपूरण थाअे आस ।३३।

प्रभु सुख पामे अेहथी अेहोनो गमे सुभाव
स्पर्श करे उरशुं रमे महा रसिक रस भाव ।३४।
उरशुं चांपी ने रहे परसावे सर्वांग
अेम करे निशी निगमे वाघे मनमां रंग ।३५।
अेम अहरनिश अेहोने होअे आनंदनी अति वृष्टी
जाणे जे सुख अनुभवे सुखदाता न जाणे सृष्टी ।३६।
ज्यारे प्रभुअे बोलवानी इच्छा कीधी ज्यांह
त्यारे शब्द सहु मलीने आगल उभा त्यांह ।३७।
भाग्यवान सहु मांहे जे तेनो कर्यो अंगीकार
श्रीमुखे प्रथम प्रगट कह्यो जे वचनामृत सार ।३८।
ते अक्षर पुलकित थयो प्रसर्यो जगत प्रकाश
बोल्या जे श्रीमुख थकी महा मधुर रस रास ।३९।
अेवां कुंवरने जोइने श्री गुंसाईजी मन मोद
उलट भर अलवे करी लीधा व्हालो गोद ।४०।
कनक कटोरी कर धरी प्रेमे करी सनमान
चुचुकारी चुंबन देइने करावे प्रेमे पय पान ।४१।
पान करे प्रहसित मुखे अलवे अलव आधार
चपल नयन चहुं दिस जुअे चंचलता नहीं पार ।४२।
अेम करतां श्रीमुख थकी छींट उडी रस रंग
उछल्लित थई आनंद भरे लागी श्री गुंसाईजीने अंग ।४३।
खवास जल लाव्यो त्यां धोवाने ते छींट
त्यारे गुंसाईजीअे खीजीने देखाडी तेहने मीट ।४४।
अति दुर्लभ अे छींट है श्री गुंसाईजीअे कह्युं तेणी वार
अनुग्रह विनु अे छींट को नांहीं काहु अधिकार ।४५।
श्री गुंसाईजी गोरठीअे थईने पोते घोडो थाय
बेसाडे महाप्रभुने अने उर आनंद न समाय ।४६।
स्पर्शी अंग प्रेमे भर्या चलावे चंचल पाअे
अे स्नेह तणी पराकाष्टा ते वचने केम कहेवाय ।४७।
क्यारे लाठी अनो करी ते उपर थाअे सवार
नाची नाची खेलवे अति रसभर रसिक कुमार ।४८।
को अेक समय श्री महाप्रभु ते करवा निकले खेल
लरिका संग समान वय ते आवे छे त्यांह वेल ।४९।
घमघम करती धुधरी रणझण नेपूर राव
चाल सोहावे अभिनवी अंग अंग अनुपम भाव ।५०।
छडी अति विचित्र शोभीती लीधी व्हाले हाथ
दामोदर दासी छे त्यांह सेवा मांहे साथ ।५१।

सुख समुद्र आनंद भरे अे पधारे ज्यांह ज्यांह
गोविंद मामाने घेर ते प्रथम पधारे त्यांह ।५२।
तेहने घेर उत्सव हवो आनंदे मोद अपार
खेलावे सहु कोइ मली जीवन प्राण आधार ।५३।
खेलवणा आपे हाथमां को करी देखाडे खेल
को मिठाई आगल धरे ते ले छे मोहन वेल ।५४।
कांइ मेले श्रीमुख मांह कांई वहेंची आपे नाथ
उगरतुं लेइ आपीयुं दामोदर दासी हाथ ।५५।
भक्त सहु उत्साहसुं मन धरे ते मोद अपार
आपापणे घेर ते पधरावे रसिक कुमार ।५६।
लोचे अेह मनोरथ मन वांछित करवा काज
उल्लाशे अति उल्लशे कहे धन्य भाग्य छे आज ।५७।
आंतरिक नां भावथी अेम सहेज मिट्यो संकोच
अंग अंग रस पूरीया अति हितनी बांधी लोच ।५८।
मारगमां पधारता ने करे ते बाल चरित्र
तेह जोइ सहु भक्तने प्रगटे प्रेम अव्यक्त ।५९।
क्षण क्षणुं प्रति उभा रहे ने करे ते अधिक विनोद
अंक भरे अति उलटे मन करे ते लेवा गोद ।६०।
तेम तेम बांहो मरोडता रहे अटकी तेणे ठाम
कहे अेथी आगल खेलसे ते अधिक अधिक अभीराम ।६१।
वछ गायने मारगे जातां जोइने मलकाय
ते साहावाने उद्यम करे ने पोते अति किलकाय ।६२।
घेरी लावे वछने छे बालक संगे जेह
तेम तेम अति हरखे घणुं ग्रहे पूंछ करण करी नेह ।६३।
उक्ताअे ते नासवा त्यारे कोटे घाले बांह्य
कर फेरे सुख उपरे चुचुकारी रस मांह ।६४।
गीत वाद्य कौतुक सुणी अे मुकीने त्यां जाय
ते जोवा रस अभिनवो मनमां आनंद न माय ।६५।
बालक सहु साथे रमे जे कोइ छे त्यां साथ
अेक बालकने घोडो करी ते उपर बेसे नाथ ।६६।
तेहनां कंठनी सांकली ते साहे निज कर मांहे
चरण ईसारेते चालवे श्री अंग हलावे त्यांहे ।६७।
छडी हाथमां लइ अने चाबुकनी करे ते शेन
अेम करी चलावे तेने ने बोले मधुरा वेण ।६८।
लोचन प्रहसित अति घणुं ने हास्त रूदे न समाय
अेह रसे पगी रहया ने मन चरित्र में थाय ।६९।

अभिलाषा धरी भावे करी करे ते अति मनुहार
आनंद अेहनां ते समय कहेता न पामुं पार ।७०।
घेर पधारे भक्तने तेने मन मोद न माय
जे करे मनोरथ अभिनवा तेना सहु संपूर्ण थाय ।७१।
हित जाणी अे भक्तनुं ते आनंद उर न समाय
मन इच्छीत मांगे त्यांह ने रंच नहीं मन संकोचाय ।७२।
कांइ अेक मागे अभिनवुं जे आप्युं नहीं अपाय
ते लेवाने हठ करे ने फरी फरी मचलाय ।७३।
वस्त्र भूषण उतारीने नाखे छे तेणी वार
अे ढोली घेर चालवा राख्या न रहे लगार ।७४।
बाल लीला बहु विधि करे पामे अति संतोष
अलभ्य लाभ अंतर लहे जाणे रसनो कोष ।७५।
अेणी पेरे आनंदमां थया त्रण वरसना आप
त्रण लोक विंदित सदा हरण त्रिविध संताप ।७६।
को वाधे वरसे दिना को मास ने को जाम
अहरनिस प्रतिक्षणुं वाधता ते दीसे पूरण काम ।७७।
परम विचित्र महाप्रभु अद्भुत प्रागट्य अेह
निमिष निमिष रस वाधतो जेह मांहां नहीं संदेह ।७८।
अनिरवचनी लीला करे पूरण पुरूषोतम
बाल चरित्र करी रमे ज्यां केहेनो नहि गम्य ।७९।
सवंत सोल दाहोतरे शुभ मास कर्यो निरधार
ग्रह समय ज्यांहां जोइअे आव्या त्यां तेणी वार ।८०।
पछे मुंडन करण आरंभनुं लीधुं ते मुहुरत सार
शुभ दिन जोइ शुभ लग्ननो जोशीशुं कर्यो विचार ।८१।
मुहुरत लेइ अने सिध्ध कर्यो उत्साहे सघलो साज
घेर तेडाव्यो ते सहु पोतानो सर्व समाज ।८२।
मंगल साज कर्या सहु ने बांध्या तोरण त्राट
आंगणमां वेदी रची उपर बिछाव्या पाट ।८३।
श्री रूकमणीजी आवी त्यां लेइ बेठा उछंग
फोइने नेगे त्यांहां शोभाजी बेठा संग ।८४।
कर ऊपर पूरी धरी कीधी जे कुलनी रीत
उत्साहे मुंडण कर्युं ते वात्सल्यसुं करी प्रीत ।८५।
ते पूरी उपर लेइ धर्या परम कोमल केश
मुंडण कीधे शोभीअे महा अनुपम वेश ।८६।
केश थकी ते चोगुणा मोती आप्या तेणी वार
अष्ट गणुं सुवर्ण अने सोळ गणुं रूपु सार ।८७।

श्री गुंसाईजीअे नाउने मन इच्छीत आप्युं अेह
शीश नामे अति हरखसुं आशीष दइ वलीयो तेह ।८८।
शोभाजीने नेगथी माग्युं ते आप्युं त्यांह
श्रीमुख जोइ ओवारणा लेइ हरख्या अति मन मांह ।८९।
कुटुंब मांहें आपीयुं पूरी ने बहु पकवान
आदरसुं सहु कोइना ते कीधां अति सनमान ।९०।
कारण मुंड करण तणुं ते मांहे छे बहु मर्म
दोष न अेको संचरे अे रक्षक वात्सल्य धर्म ।९१।
नवराव्या अति हरखसुं ने वाध्यो मन उत्साह
अंगुछो अंगे करी शोभा जोइ थयो उमाह ।९२।
केशर चंदन कुमकुमा धसी ते लगाव्युं शीष
जै जै बोले सर्व कोइने रूचीसुं दे आशीष ।९३।
त्यां शोभा अेक प्रगट हवी महा अलौकिक आनंद कंद
सरसीरूह लावन्य सरमां ते उपर बेठो चंद ।९४।
सौभाग्यवती शोभा भरी बे आवी उभी पास
करी आरती प्रेमसुं आशीष दीधी बहु आस ।९५।
पछे अेक मास अंतर गअे चोटी राखी जेम रीत
मालपुआ वांटया घणां करी ज्ञात मांहे बहु प्रीत ।९६।
कोटि कला क्षणु क्षणु प्रते ते वाधे रसिक कुमार
लीला बाल विनोदसुं अेम थयां वरस ते चार ।९७।
श्री गुंसाईजी मारग प्रवर्तने सेवा करे प्रमाण
मर्यादा रहित मर्याद ते नहीं विधिनुं अे निर्माण ।९८।
पोते रसभर खेलता पधार्या व्हालो त्यांह
सेवामां श्री गुंसाईजी ते परम मग्न छे ज्यांह ।९९।
तेमां थकी निरोध ने अेम करे प्रभु चरित्र
अनुभाव प्रगट सूचन करे जेम रहे न अलगी रीत ।१००।
ते समय कटोरी रजतनी दीठी श्री गुंसाईजीने हाथ
ते जोइ प्रहसित वदन करी कहयुं आछी हे अेम नाथ ।१।
अे वचन सुणी वात्सल्यना उलटया समुद्र ते अंग
सुरति रही न निज अंगनी रंजित थयुं मन अे रंग ।२।
ठोडी ग्रही चुंबन करी बेहु करसुं ग्रहया कपोल
हितसुं हित भेले थया रस पूर्यो लोचन लोल ।३।
श्री गुंसाईजी कहे बाबा पीओ जो दूध कटोरी दोय
तो कटोरी तुमकुं दीजीये अेम कहेतां अति सुख होय ।४।
कहे दोय कटोरी दूध तो मोंपे पीयो न जाय
तो कहयुं अेक भरी पीओ अपनी रूचीसुं मन भाय ।१०५।

नीची द्रष्टे जोइ रह्या महा सुंदरतानी लोच
अदेय पदारथ आपवानो मनमां अति संकोच ।१०६।
ठोडी ग्रही उंची करी श्री गुंसाईजी श्रीमुख जोय
शोभा देखी अभिनवी ते मन वांछित सुख होय ।७।
श्री गुंसाईजी मुसकाया घणुं मनमां जाणी उत्कर्ष
अदेय पदारथ में ग्रह्यो अेम आण्यो मनमां हर्ष ।८।
वचन माधुरीअे कह्युं जे इतनो पीयो न जाय
अे वचनामृत स्वादे करी सकल रस पूरण थाय ।९।
दूध पीओ वात्सल्यसुं कह्युं श्री गुंसाईजीअे अेह
उतर मधुर रसे करी रसपान कराव्युं तेह ।१०।
अेक पीअे इच्छा थकी श्री गुंसाईजीनो अेह विचार
बीजी पीसे वात्सल्यसुं बाहीने करी मनुहार ।११।
वात्सल्य वत्सल प्रभुता बेहु अलौकिक अेहनो मर्म
परस्पर हित परमित नहीं अनिरवचनी धर्म ।१२।
श्री मुख आगल मुख लावीने श्री गुंसाईजी करे जे नेह
शोभा ने आनंद बेहुनुं रूप न लहे को तेह ।१३।
दुग्ध पानना स्वादनुं को कही न सके जेम रूप
तेम अे स्वरूप रस स्वादनुं ते रूप अति अनूप ।१४।
आपापणे आनंदसुं थया स्वरूपानंदे लग्न
को केहेना आनंदने समजे नहिं आनंद मग्न ।१५।
जन्म धन्य ते भक्तना ते समय अनुभवी धन्य
अे आनंद रसनी थई लीला जेहने संपन्न ।१६।
वली अेक समय श्री गुंसाईजी भोजन करी बेठा सेज
बालक सहुने तंबोल ते आपे पोते करी हेज ।१७।
रमझम करता मलकता आव्या श्री वल्लभलाल
वचन माधुरी वरसता ते शोभा परम रसाल ।१८।
श्री गुंसाईजी विहवल थया ने रही न अन्य द्रष्टी
आवो आवो बाबा इंहां अेम वचन कह्युं अति मिष्ट ।१९।
सेज थकी नीहोर करी करसुं कर ग्रह्या बेहु
त्यारे श्री मुखथी कह्युं तंबोल मोकुं देहु ।२०।
श्री गुंसाईजीअे कह्युं में सबकुं दीओ तंबोल
अब तो तुम दो मोहीकुं हितसुं अेम बोल्या बोल ।२१।
श्री मुखसुं मुख जोडतां ते वाध्यो रस कल्लोल
अे शोभा अे सुख हरख ने ते नहीं कोइ अे समतोल ।२२।
माग्याथी आप्युं घणुं ते समजे अेहोनुं मन
परम अलभ्य अव्यक्तने को केम करी कहे वचन ।१२३।

श्री गुंसाईजी अेक समय पोते बेठा छे ज्यांह
पाछलथी प्रभु आवीने पीठे वलग्या ते त्यांह ।२४।
हलमल करी हलावीआ श्री गुंसाईजीने तेणी वार
सकल अंगे उलट घणुं कांइ फूल तणो नहीं पार ।२५।
श्री गुंसाईजी अति उलट भर्या ते बोल्या वचन रसाल
श्री वल्लभ छाती फूली के जायजी पाताल ।२६।
कोमल पोंहोंचों ग्रही अने चुंबन कीधुं करी नेह
महा प्रेम पुलकित थया कांइ सुरति रही नहीं देह ।२७।
छांडो छांडो अेम कही अने ते सनमुख लीधा आप
चांपी चुंबन देइ अने हर्यो नयणनो परिताप ।२८।
सनमुख मुख निरखी रह्यां नयणा अलगा न थाय
अनिरवचनी रस तेह समय ते वचने नहीं कहेवाय ।२९।
रूप सराहुं प्रभु तणुं के श्री गुंसाईजीनो नेह
नेत्र सराहुं अेह समय के ते अनुभवीअनो देह ।३०।
के लीला रूदया रूढ ने के जेने अे रसनुं दान
के सराहीअे तेहने अे लीलानुं करे गान ।३१।
केहेने केहेने ते समे सराहुं तेणी वार
मन फूले ते रूपने पण थाअे नहीं निरधार ।३२।
अेक समय श्री गुंसाईजी भोजने बेठा ज्यांह
बाल प्रभु साथे लइ भोजन करवावे त्यांह ।३३।
आगलथी भोजन करी व्हालो उठया मनने हेज
अचवीने पधार्या ज्यांहां श्री गुंसाईजीनी सेज ।३४।
खवासे कठणाइसुं वचन प्रभुने कह्युं अेह
सेजया श्री गुंसाईजीनी खुंदेथी बिगडे तेह ।३५।
प्रतीकूल असुर आवेसथी बोल्यो अेम खवास
कारण कांइ समज्यो नहीं आभरण सेज सुखरास ।३६।
अेह वचन सुणी महाप्रभु न्यारा उभा अेक कोर
श्री गुंसाईजी अचवीने पधार्या तेणे ठोर ।३७।
नित्य श्री गुंसाईजी सेजयाअे बेसे आप
पुत्र रत्नने जोइ अने ते हरे नेत्र परीताप ।३८।
श्री गुंसाईजी पांओ पसारीने ज्यारे बेसे सेज
प्रेम पुलकित थईने पुत्रने ते तेडे करी हेज ।३९।
देखे कोन आगेहुंते मोंपे आवे धाय
अेह सुणी आनंद भर धाइ कंठ जइ लपटाय ।४०।
रोम रोम सीतल करे अंग अंगनी टाले आध्य
पुलकित रोमांचीत थई कांइ सुखनी रहे न साध्य ।४१।

अे प्रभु भाजन प्रेमनुं कोमल परम कृपाल
वात्सल्ये वस प्रेमने अेहवा अेह दयाल ।४२।
ते दिवसे ते नित्यनुं सुख दीधुं नहीं लगार
संकोची अलगा थई अने उभा प्राण आधार ।४३।
आरत प्रगटावी गुंसाईजीने जे करवुं छे महा दान
आतुरता विनु होय नहीं महा सुखनुं रस पान ।४४।
खवासनी दुष्टता टालवाने दोष निवारण काज
परम दयाल दया करी अेहवा श्री महाराज ।४५।
रोष मिसथी रूदन करे डसडसते डुसके आप
ते जोई श्री गुंसाईजीने प्रगट्यो अति परिताप ।४६।
आतुर थई उठी अने चांप्या रूदया वार
चुंबन देइ चुचुकारी ने त्यां करे ते अति मनुहार ।४७।
गोदे बेसाडी ने ते फरी फरी पूछे वात
अे कारण मोहेसुं कहो तुम काहे ते रोत ।४८।
महा प्रभु बोले नहीं ते श्री गुंसाईजी अति उक्ताय
रोष भर्या अेहोने जोइने क्षणुअ न अे सहेवाय ।४९।
जेम जेम पूछे प्रेमसुं तेम अधिक अधिक डुसकाय
ते जोइ अति आतुर घणुं पण कारण नहीं समजाय ।५०।
श्री गुंसाईजीअे खीजीने वैष्नवने पूछी वात
क्योंरे कोउं जानत नहीं अे मोंपे सही न जात ।५१।
त्यारे तेणे ते कहयुं जे खवासे कह्युं वचन
तेह समयना महा प्रभुजी थया अति अप्रसन्न ।५२।
अेह सुणी श्री गुंसाईजीअे सेजया कीधी सतखंड
दूर करी खवासने दीधो ते अतिशे दंड ।५३।
श्री वल्लभने वल्लभ नहीं जे अेहोने नावे भोग
ते मारे शा काजनी जे अेहोने नहीं उपयोग ।५४।
बीजी सेजया आणीने ते त्यां बिछाइ पास
कोमल मृदु मन भावती जे सुंदर परम सुवास ।५५।
घणी घणी भांते स्नेहनी ते परम काष्ठा जेह
वात्सल्य अनेक प्रकारना जे कीधां सर्वे तेह ।५६।
वाहीने ते बोल्यां वचनामृत प्रगट्युं सार
ते जोइ श्री गुंसाईजीने मन मोद तणो नहीं पार ।५७।
अति प्रसन्न करी प्रेमसुं लेइ पोढया ते पास
संतुष्ठ थया पोते घणुं ने पाम्या सुखनी रास ।५८।
जेवुं प्रागट मूलथी श्री गुंसाईजीनुं छे जेणी रीत
तेणे रस आरत थई खेलावे करी बहु प्रीत ।५९।

अंग भेद अण योग्यता अनुभव केरो नहीं दाव
आधुनिक निर्वाह करे पण अंतर अनुपम भाव ।१६०।
अेणे प्रकारे को समय माता साथे करे आढ
को समय श्री गुंसाईजीसुं करे ते हितनी राढ ।६१।
जे वेळा जेणे समय मनमां उपजे जेह
ते तेणी वेळा हठ करी ने मागे व्हालो तेह ।६२।
अेक ले अेक गमे नहीं अेक नाखी दे तेणी वार
अेक भांजे अेक जोडी दे जेम आवे मन विचार ।६३।
अेक आपे ते ले नहीं अेक मांगी ले सुख मांह
अेक वहेंची आपे सर्वने अेक लेता खीजे त्यांह ।६४।
अेम खेलवणे अति खांतसुं ज्यारे खेले नवलकुमार
को मागे हाथ पसारीने अेक चरित्र करे तेहीं वार ।६५।
त्यारे खेलवणा उक्ताइने संकेले तेणी वार
अेवी भांति अनेक ते लीला करे कुमार ।६६।
कुमार लीला करता मांह प्रगट्यो जोबन अंकुर
रती रस रस अंगे भल्यो कुमार करवा दूर ।६७।
नागरता लघु लाघवे ते छबीना होय तरंग
अंकुर माहा रस सूचवे रस अंकित थया सर्वांग ।६८।
लीला प्रथम कुमारनी जे कीधी छे मन भाय
जोबन रस प्रगटे थकी ते करता अति संकोचाय ।६९।
स्वाभाविक जोबन रसे अनेक भाव संपन्न
विजय काम कोटिक करे अेवो अे रस अनिरवचन ।७०।
लोचन वचन विलासमां प्रगट होअे रस रीत
समजे नहीं पण संकुचे घणुं व्हाली होअे प्रीत ।७१।
अे देखी महा रसिकना ते मन अतिसे ललचाय
जोवानो मनोरथ करे ने अलगा नहीं रहेवाय ।७२।
शान करी सहु देखता तेडी ले नवल कुमार
बाल तणां ओटे देइ ने संकोचे नहीं लगार ।७३।
निज सोहाग सर्वज्ञथी चांपे उरसुं करी नेह
दंत क्षत इच्छा करे प्रेमदा प्रेमे भर नेह ।७४।
चुंबन दे मन भावतुं ने लेइ लेइ कंठ लगाअे
रस आतुर आरत घणी ते शांता केमे न थाअे ।७५।
जेम पर्वत दावानल दहे ते फूके समे न सोअे
तेम प्रबल मनोरथ रस तणा ते स्पर्शे केम सुख होय ।७६।
जेम जेम स्पर्शे श्री अंगने तेम तेम वाधे परीताप
अनुभव विनुं आरत घणी ते लहे अनुभवी आप ।१७७।

अेवी अनेक प्रकारनी ते लीला करे कुमार
प्रतीक्षण रस वाधे घणो कांइ तेह तणो नहीं पार ।१७८।
बुधि प्रमाणे सूचवी लीला महा रस परम सुदेश
हवे कांइ अेक वर्णन करूं आगल पौंगड प्रवेश ।१७९।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित
प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम
प्रथम तरंगे मांगल्य - तेरमुं - १३
संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य - १४ - चौदमुं

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

राग : "आवोजी अचल सोहासणी"

हवे चार वरस उपर थई लीला कहुं तेह
रमण रसे अंगी करी श्री प्रभुअे जेह ।१।
अेमां रस छे अति घणो समजे नहीं कोय
निर्भय थई सहु सुख तणो ते अनुभव होय ।२।
बालक मांहे लहे नहीं कोइ विज्ञान
नौतन रूची स्वादे करी होअे रसपान ।३।
नरनारी अेकत्र थई खेले सहु संग
निपट निशंक निडर थई होअे रसरंग ।४।
वय क्रम ओटे थई क्रम क्रम रस चाखे
क्षण क्षण प्रति रस वाधतो मन मांहे राखे ।५।
सामग्री उपयोगनी सम रस छे सहु
वय समान रस अभीनवो अेहवी त्यां बहु ।६।
अेतदरस पर थई रमे मन आनंद लग्न
अन्य सुरति आवे नहीं रसमां रस मग्न ।७।
कृष्णदासी बहु प्रेमसुं राखे संबंध
पोते घोडो थई अने ते चढावे कंध ।८।
श्री हस्त मस्तके धरी बेठा अति भावे
जमणो कर पीठे धरे डाबो लटकावे ।९।
पीठ उपर उलटा करी पोढाडे अेह
उर आगल बेहु कर ग्रही चांपे करी नेह ।१०।
कंठ उपर बेसादिने बेहु चरण भरावे
चुंबन दे करसुं ग्रही उरसुं परसावे ।११।
लेइ बेसाडे प्रेमशुं पोताने माथ
पद लपके मुख उपरे शाहे निज हाथ ।१२।
वली वलगाडे कंठसुं कर कंठ वलगाय
मुख चुंबे मुखसुं देइ उरसुं लपटाय ।१३।
अेवा अनेक प्रकारनां वात्सल्य अनेक
भाग्यवान बहु पेरे करे केम कहुं विवेक ।१४।
अलौकिक पेरे रही अे कर्यो अनुभव रस सार
अेहोनी करूणा द्रष्टीथी कीधो विस्तार ।१५।
स्नेह कृष्णदासीनो प्रेम लक्षणा कहीअे
कारण को समजे नहीं अनुभवे लहीअे ।१६।

जेहने रस उचित नहीं तेहने नहीं दान
रस जोइ रस अनुभवे अेवा अे भाग्यवान ।१७।
पांच वरस प्रवेशथी हरख्या तेणी वार
अक्षर देखाडया तणो आव्यो उत्सव सार ।१८।
सवंत सोल बारोतरे अेम कारज सीधुं
मागसीर सुदी शुभ दिन जोइ मुर्हुत ते लीधुं ।१९।
आगम उत्साहसुं कर्या ते बहु पकवान
ज्ञात वरण सहु कोइने तेडया देइ मान ।२०।
मंगल साज सहु कर्या बांध्या तोरण बार
चौक साथीआ पूर्या कर्या मंगलाचार ।२१।
ध्वजा पताका बारणे मंडप अति सोहे
गान करे सोहासणी सज्जन सहु मोहे ।२२।
वाजिंत्र वाजे अभिनवा तेहनो नहीं पार
वेदीमां पधरावीआ व्हालो तेणी वार ।२३।
पीढा उपर अति भला बिछाव्या चीर
त्यां आणी बेसाडया शोभाजीनो वीर ।२४।
रूकमणीजी श्री गुंसाईजीअे बांध्या पालव ज्यांहां
श्रीजीने खोले लेइ आवी बेठा त्यांहां ।२५।
स्वस्ति वाचन करी अने आणी कंचन थाल
उज्जवल चोखा पूरीने कर्या मांहे विशाल ।२६।
कंचन केरी मुद्रीका श्री गुंसाईजीअे लीधी
शुभ अक्षर तेमां लख्या बहु आशीष दीधी ।२७।
क ख ग घ ने आरंभीने गिणना छे जेह
गीता वेद राखी अने देखाडया तेह ।२८।
त्रण वार फरी फरी अने आरंभ कराव्यो
तेह सुणी श्री गुंसाईजीने मन मांहे भाव्यो ।२९।
अक्षर श्रीमुखे परसवानुं करतां बहु कोड
तेहना भाग्य फल्या त्यांह उभा कर जोड ।३०।
अक्षर पर श्री हस्तसुं कीधुं अनुकर्ण
ते अक्षर जगमां थया सहुनुं आभरण ।३१।
शोभाजी जमुनाजीअे आरती समारी
आनंदे महा मोदसुं प्रभु उपर वारी ।३२।
जै जै कही सहु को त्यां बहु आशिष दीधी
बाल वृद्ध सहुको मली अेहोनी स्तुति कीधी ।३३।
श्री रूकमणीजी आनंदसुं सहु नर ने नार
सेव तणा लाडु करी आप्या चार चार ।३४।

अेम अक्षर आरंभनो उत्सव ते कीधो
माता पिता सहु कोइनो मनोरथ ते सीद्यो ।३५।
महा मधैक निधी प्रभु अति तीक्षण बुद्धि
चातुरी युक्त नित्य पढे ते अक्षर शुद्ध ।३६।
बाल रामायण भणी अने भण्या अमर कोष
काव्य अनेक प्रकार कीधां निरदोष ।३७।
बहु विद्या गुण चातुरी ब्रह्माअे निरमी
ते प्रभुअे अंगी करी आवी अहीं विरमी ।३८।
स्वकीयना जे मन ग्रहे हेला मात्य जर्य
ते प्रभु अक्षर ग्रहे त्यां शुं आश्चर्य ।३९।
बीजा बालक साथना ते भणता चुके
तेहने पोते शिखवे तेमां रस मुके ।४०।
अेह समान कोइ भाग्यवान नहीं बीजा कोइ
प्रभुने जेहोना संगनी इच्छा मन होइ ।४१।
अध्यारूं घेर अेकठा मली भणवा जाय
भणतां भाव भूली गअे प्रभु प्रफुल्लीत थाय ।४२।
अज्ञाने ते आवर्या नव जाणे कांई
प्रगट संगनुं दान दे मुसकाते मन भाई ।४३।
मोद भर्या मन हुलसीने अक्षर शिखावे
बालक बुध्ध प्रकाश होअे ते प्रभुने मन भावे ।४४।
अण आवडे सुख अति घणुं स्मित करी जणावे
ज्ञानी गुणवंत थई भणे तेने स्वप्ने न आवे ।४५।
प्राबल्य प्रगट प्रेमनुं जुअे मन विचारी
अज्ञानी अंगी कर्या अेवा उपकारी ।४६।
अज्ञाने जेने करे पोते उपकार
ज्ञान वान थई अने थाअे विद्या पार ।४७।
प्रभु पढता चुके नहीं हरखे मन अेह
माता पिताने घेर जइ संभलावे तेह ।४८।
अेहोने उलट अति घणो मन फूल न माय
आश्चर्ये मोही रहया अति पुलकित थाय ।४९।
चुंबन दे वात्सल्यसुं भामनडा ले छे
उरसुं चांपीने वली घणी आशीष दे छे ।५०।
परस्परे फूल अेहने तेहनो नहीं पार
वचन मोद वात्सल्यनो नहीं प्रति उपकार ।५१।
पांच वर्ष उपरांत ते पौगंड प्रवेश
ते लीधा कांइ अेक कहुं महा परम सुदेश ।५२।

बालक सहु साथे लइ खेलवा पधारे
ज्यां ज्यां चरण धरे प्रभुने सर्वस्व वारे ।५३।
भाग्य प्रबल थयुं भुमीनुं चरणांकित स्पर्शे
अति कोमल पुलकित थई रस भावे वरसे ।५४।
खेलवणा बहु खेलना सहु लीधां साथ
गोळी गेंद चौगान ते ग्रही लीधी हाथ ।५५।
कोअेल बंगी ने लटु चकरीनो साज
अेम बहु खेल लीधां खेलवा व्हालाने काज ।५६।
रच्यो अखाडो खेलनो कौतुक करे सहु
लरीका सहु समानना त्यां मल्या बहु ।५७।
अेक अनेक अभिनवो त्यां खेले खेल
सहु कोइ मोही रह्या जोइ मोहन वेल ।५८।
प्रतिक्षण नौतन पेरे रमे ते कहीअ न जाय
जे को त्यां उभा रह्या ते जोतां न अघाय ।५९।
भांति भांति लीला करे उपजावे स्वाद
को मंदिर जाअे नहीं नयणे लागो वाद ।६०।
जेह समय जे रस तणो कर्यो अंगीकार
निःसंदेह थईने रमे नवि ज्ञान विचार ।६१।
तनमयता तेमां थई ते रसमां लीन
सत्य संकल्प धुर थकी अहेवा परम प्रवीण ।६२।
खेलवणा बहु भांति छे तेणे तृप्ती न थाय
कुंदेरो अेक त्यां रहे तेने घेर जाय ।६३।
ते कारीगर अति भलो मधुसुदन नाम
खेले प्रभु अडेलमां त्यां तेनुं धाम ।६४।
त्यां प्रभु जाअे रूची करी खेलवणा काज
खिलोना करी देउंगे अेम कहे महाराज ।६५।
अेह वचन सुणी प्रभु तणुं उलट मन आणी
बली बली जाउं ओवारणे अेम बोले वाणी ।६६।
नयन ही नयना मले याते कहा चहीअे
तुम मांगो ओर में देउं अेसी क्यांहां पइअे ।६७।
पाछे जो हम मागीअे सो वे करी देवे
वांकुं हम कछु दीजीअे सो कबहुं न लेवे ।६८।
हमकुं जब देखे तबे बोहोत सुख पावे
वैष्णव अरू नीको हतो कह्युं स्वतः सुभावे ।६९।
वात अे श्रीमुख थकी कही प्रभुअे बहु वार
भाग्यवान ते भगवदी जे सांभली नर नार ।७०।

अेवा अगणित कौतुक अभिनवा	होअे प्रतिक्षणुं बहु	
अेवो कोण विचित्र छे	जे विसद करे सहु	।७१।
खेले आंख मिचावणी	ते अति रस रूप	
महा गूढ रस गोपनी	छे परम अनूप	।७२।
लरिका लरीकनी मली	खेले अेकत्र	
अेतदरस पर थई रमे	नहीं भाव अन्यत्र	।७३।
स्त्री पुरूषना भेदनुं	विज्ञान न होय	
बाल्य तणी ओटे थकी	समजे नहीं कोय	।७४।
वय समान रस वाधतो	सहुने रस भाव	
परस्परे रस भर रमे	मनने अति चाव	।७५।
कह्युं अंधियारी ने वली	अजुआली रात	
ज्यां जे रीते रस पडे	खेले ते भांत	।७६।
आंख मिचावा ओशरो	अेहोनो ज्यारे आवे	
भाग्यवान निर्भेदसुं	त्यां आंख मिचावे	।७७।
आंख मिचावे अेकने	बालकमां रमता	
आप ओट जइ आवे	दूर होअे मन गमता	।७८।
पृष्ट भाग उरसुं देइ	स्पर्शे सर्वांग	
बंध विशेषे भावसुं	मन अति आनंद	।७९।
को अेक समय को अेहो कने	मिंचावे आंखी	
आंगलीमां इशारते	मींचे छिद्र राखी	।८०।
तेणेथी जाण्युं पडे	जे ज्यां संताय	
मन अधिकतानो खेलवा	पोते त्यां जाय	।८१।
खोली	त्यां अति अेकांत	
कोटि कोटि मन भावता	होअे मनोरथ प्रांत	।८२।
अेक खेल खेले वळी	व्हालो तेणी वार	
अनुभव थाअे अति घणा	मांहे रस विस्तार	।८३।
सनमुख बेसे अेकठा	बेहु जण थई पास	
बाथो बाथ भीडी ग्रहे	मन अति उल्लास	।८४।
सुरति भेद रस अनुभवे	नहीं को अे तोले	
अेक अेक उपर ढले	ढीमराडा ढोले	।८५।
अेक खेल वली अभीनवो	सहुने करे गाय	
वृषभ थई पोते त्यां	गोरठीअे थाय	।८६।
अेमां रस होये अभिनवो	तेहनो नहीं पार	
अेवा खेल बहु करे	केम करूं विस्तार	।८७।
घात पात छल बल लहे	वली करी दूराव	
ओट करी रस अनुभवे	चूके नहीं दाव	।८८।

बालक मिसे रस वस रमे होअे रसनी रास
अन्य कोइ अे समजे नहीं समजे निजदास ।८९।
यद्यपी अतुल सामर्थ छे न्युन नहीं कांइ
प्रगट्या अेह रस स्वादने समजे नहीं अे कोइ ।९०।
निडर निशंक थई रमे मननी संकोच
आप प्रबल बल थकी कहेनो नहीं सोच ।९१।
अे रस विसद कर्या तणुं मुने बहु कोड
लोक भीत गोपन कर्या को दे नहीं खोड ।९२।
भांति भांति रस स्वादने पोते अभिलाखे
जावदिक रस वस्तुनो प्रेमे रस चाखे ।९३।
अनादी सिध्ध आगे लहे अे सदा संयोगी
रसिक राय रस वस थई अे सकल रसभोगी ।९४।
व्याह खेल खेले वळी करी ते आचर्ण
तेहज रीते तेम करी तेणे अनुकर्ण ।९५।
खेले खोला ठीकरी अेकत्र थई बहु
चरण वचे खोली करी गोपन करे सहु ।९६।
कांकरी जोवाने मिसे मनमां अति हरखे
आमां छे कहे सहुने रस अंगे स्पर्शे ।९७।
उदीपन रस ते समे केम थाअे प्रमाण
परस्परे रस अभिनवो नहीं ते निर्माण ।९८।
हमची खेले हरखशुं बेहु सनमुख रही
वय समान अति प्रेमसुं करसुं कर ग्रही ।९९।
भमरी भमर रसमां थकी ज्यारे अतिशे थाअे
त्यारे कर मेली अने कंठ लपटाअे ।१००।
राज खेल कोइ अेक समे खेले महाराज
जोइअे जेह प्रकारनो तेहनो करी साज ।१।
मंत्री करे छे अेकने मंत्री करी स्थापे
केहेने पंडित करी अने चातुराइ आपे ।२।
पोते राज्यासन करी त्यां बेठा भावे
अेक ते छत्र धरी रहे अेक चमर सोहावे ।३।
अेकने सभा चातुर करी सनमुख बेसाडे
केहेने प्रेम करे घणो केहेने त्यां ताडे ।४।
को आवे पंडित थई को गुणी कहावे
को आवे मागध थई भिक्षुक थई आवे ।५।
कोइ कवित कहे नवा को श्लोक उच्चार
वादिने ततक्षण करे निरउत्तर तेणी वार ।१०६।

मंगवावे सेवक कने हाथी ने घोडा
वस्त्र पात्र द्रव्य पामरी कभायना जोडा ।१०७।
आपे पंडित विप्रने मागध ने गुणी
ते चाले आशीष देइ बीजा आवे सुणी ।८।
मधुर वचने सहुसुं कहे करे बहु मनुहार
अेवी लीलामां करे सहुनो उपकार ।९।
खेले चोपड चोरसा पाशा ते डाले
नरेन्द्र नरोतम आपथी सहु दाव संभाले ।१०।
गंजीफे गुणनिधी रमे ने वली सेतरंजे
दाव जीते नेमसुं सहुना मन रंजे ।११।
बीजा बहु प्रकारनां जे खेल कहावे
अेक वार द्रष्टे पडे ते अेहोने आवे ।१२।
घोडा उपर धुर थकी अेहोने बहु प्रेम
चतुरराय चोंपे चढे अेहवो नित्य नेम ।१३।
घोडा हाथी आदी जे वाहनकुं मान
स्वारी जाणे सर्वनी मुक्षे भाग्यवान ।१४।
खेल मांहेथी अेम कहे श्री प्राणजीवन
चलो चलो हम चलत है श्री गोवरधन ।१५।
घोडा और सिद्ध करो चलवे को साज
वेग लावो मोंहोंपे जो पोहोंचे आज ।१६।
वागा लाओ पहेरीअे जो होअे सवार
वेग चलाओ वाहेणी मोकुं होअे अवार ।१७।
वली कोइ समय हरणा घणां मेढां ने बकरी
गोण पहेले बेसी रमे गेंदुक ने चकरी ।१८।
अे लीलामां रहे अे ताद्रश लग्न
अनुसंधान केनु नहीं अेहमां रस मग्न ।१९।
माता भोजनने कहे त्यां नहीं पधारे
भूख नहीं आवत नहीं अेम वचन उच्चारे ।२०।
क्रीडा मांहे थकी लहे मातानो नेह
वेग पधारे ते समय पोताने ग्रेह ।२१।
धुशराग श्री अंगसुं त्यां निकट पधारे
माता उरसुं चांपीने सर्वस्व ओवारे ।२२।
मुख कमल चुंबन देइ अंचलसुं पूछे
रज निरवारे नेहसुं अंग अंग अंगू छे ।२३।
माताजी अे भूमीना माने उपकार
शोभा ने रक्षा बेहु अे द्विविध प्रकार ।१२४।

मेदनीअे मनमां धर्युं रमणीक स्वरूप
द्रष्ट न लागे केहेनी अे परम अनूप ।१२५।
ते माटे रजसुं कर्युं अंगे आवरण
नहीं तो रज स्पर्शे नहीं जगत आभरण ।२६।
जगत सकल मोही रहे मोहक सुखदाता
ते स्वरूप अनुभव करे हितसुं अे माता ।२७।
नवरावे प्रेमे करी भोजन करवावे
पोढाडे उछंगे लेइ भूषण पहेरावे ।२८।
चांपीने चुंबन दइ परीताप नसावे
वात्सल्य अनेक प्रकारना करे जेम मन भावे ।२९।
कीये साधने महाप्रभु उछंगे राजे
अे साधन जे अे प्रभु अेहो घेर बिराजे ।३०।
अेवी मोटी वस्तुनो अनुभव करे नित्य
स्वतः प्रभु जे पर ढले त्यां सुं निमित्य ।३१।
पुत्रत्वे थईने जेहने सुखपान करावे
ते माताना भाग्यनो कोइ पार न पावे ।३२।
श्रीजीअे श्रीमुख थकी कही छे अे वात
हमसुं हेत करे बहु हमारी मात ।३३।
प्रेम सहित काकी करे हमकुं सनमान
सेज उपर सोवे त्यां राखे पकवान ।३४।
उठत ही पकवानमां अपनो कर मेले
दातणहुं वाहीसुं करे खाअे अरू खेले ।३५।
बाल्य अवस्था को कछु अे भिन्न प्रकार
अघायो जाने नहीं लेइ वारंवार ।३६।
धान बहुत होवे ज्यां मोशीको ग्राम
करीके पठवे चीवडा हमारे धाम ।३७।
तुरा समेत गगरी भरे वेसे इंडा आवे
कागदसों पतले भले सबके मन भावे ।३८।
पैसा भर वे चीवडा दूधमों भिंजैये
फूल कटोरामों धरे वाकुं हम लैये ।३९।
वाको स्वाद कहा कहुं और ब्होत सुवास
कोमल अति नवनीत ये ले ते सुखरास ।४०।
काकीने कबहुं नांहीं मोंहेंसुं रीस कीनी
बोहोत हेत मोंहे पर करे अरू रहे आधीन ।४१।
जब कबहुं हम लोंदुगी लरीकामों करीअे
आप परस्पर खेलमें जबही हम लडीअे ।४२।

तब काकी पायासुं कहे तुम मुखथे बोलो
आंख तुमारी तीसरी लरिका पर खोलो ।१४३।
काकी कछु बोले नांहीं पाया ही खीजे
जब हम जाओ भाजीके काकी मन रीझे ।४४।
नित्य करे हम लोंदगी प्रतीक्षणु बहुतेरी
काकीने मोंहें उपरे कबहुं दीठ न फेरी ।४५।
सुधा सिंधु श्रीमुख थकी वचनामृत जेह
वृष्टी हवी छे अती घणी क्यां लगी कहुं तेह ।४६।
अेम लीला पौगंडनी करे बहु प्रकार
प्रतिक्षणु नौतन वाधती तेहनो नहीं पार ।४७।
पौगंड पूरण करी कहुं लीला करी जेह
उपवीतनो अनुग्रह कर्यो आरंभ करूं तेह ।१४८।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित
प्रागट्य सिद्धांत लीला वर्णनो नाम
प्रथम तरंगे मांगल्य - चौदमुं - १४
संपूरणम् ।। समाप्तम् ।।

मांगल्य - १५ - पंदरमुं

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

राग धनाश्री : जात लौकिक धोलनी "पंच वरणीने कल्याणी पंच देशथी तेजण आणी"
अेणी जाते गवाशे

वर्णाश्रम उपवित अनुकर्ण तेहनुं कर्युं प्रभुअे अनुकर्ण ।१।
तेहनी लीला परम अगाध अनुभवता रहे न आध्ध ।२।
कांइ अेक कहुं सूचन मात्र सांभलजो सहु रस पात्र ।३।
लीला पौंगडने अनुसरता थयां सात वरस अेम करता ।४।
महा अदभुत सुंदर रूप चारू वरण प्रसन्न अनूप ।५।
अंग अंग अनंग रति वाधे ते जोतां पार न लाधे ।६।
अति चतुर चतुर वर राय ते कहेतां कह्युं न जाय ।७।
रस रूप सकल सर्वांग वाधे प्रतिक्षणुं नौतन रंग ।८।
प्रगटे लीलानी लहेरी दीसे सुक्ष्म ने गति गेहेरी ।९।
अंतर उनमत रस ते अखिल बाहेर दीसे परम सुशील ।१०।
वचनामृत मधुरा अे बोले को नहीं अेहने समतोल ।११।
सुख सुधा सिंधु होय वृष्टी तेणे सींचन थाअे सृष्टी ।१२।
गुण निधी गुणनो नहीं पार तेनो केम करीअे विस्तार ।१३।
अेवी लीला अडेलमां राजे देखी कोटिक मनमथ लाजे ।१४।
जोइ परम प्रिय सुख रास श्री गुंसाईजीने अति उल्लाश ।१५।
दीठे द्रष्टी ते शीतल थाअे तेनुं रूप कह्युं न जाय ।१६।
जोइ अति महासुंदर सार श्री गुंसाईजीअे कर्यो विचार ।१७।
समय उपवित केरो आव्यो ते सहु केने मन भाव्यो ।१८।
मुहुरत उपवितनुं लीजे वेगे शुभ कारज कीजे ।१९।
परिवार सहित हीत भेर बेठा श्री गुंसाईजी घेर ।२०।
शुभ दिन जोइ तेडयो जोशी आव्यो उलट भर संतोषी ।२१।
बेसाडयो देइ बहु पेरे मान मन हरख्यो महा भाग्यवान ।२२।
पूछयुं मुहुरत उतम दीजे उपवित बालकनुं कीजे ।२३।
सुणी जोतशी मनमां हरखे नयणे हरखांसुं वरखे ।२४।
करी दंडवत मुहुरत साध्युं अति आनंदे मन वाध्युं ।२५।
संवत सोल पंदर महासार चैत्र सुदी छठ शुक्रवार ।२६।
मुहुरत उपवितनुं लीधुं त्यां सहुनुं कारज सीधुं ।२७।
श्री गुंसाईजीअे उलट भर्या मनोरथ बहु पेरना कर्या ।२८।
पूछयुं श्रीगुंसाईजीअे घरमां श्री रूकमणीजीने उलट भरमां ।२९।
कह्युं सामग्रीनो साज शो शो अणावुं उपवित काज ।३०।

कह्युं हलदी अणावो बहु शुभ कारज थाशे सहु ।३१।
सुणी वचन अे मंगल कारी श्री गुंसाईजीने उलट भारी ।३२।
हरीवंशजी ने चांपोभाई अधिकारी वर सुखदाइ ।३३।
तेडया अतिशे उलट भेर कही उत्सवनी बहु पेर ।३४।
कह्युं सामग्री सिध्ध करजो सहु लेइ भंडारमां भरजो ।३५।
उतम उतम जे सहु रीत सिध्ध करजो करी बहु प्रीत ।३६।
हवे काज ने विलंब मालाओ तमो सहु कोइ वेगा थाओ ।३७।
सुणी वचन त्यां सिर नामी थया कारज महा सुख पामी ।३८।
वस्त्र भांती भांतीना जेह आण्या देश देशथी तेह ।३९।
साडी रंग सुंदर अनेक तेनो क्यां लगी कहुं विवेक ।४०।
पामरी चोरसा बहु रंग जरतारी पाग सुरंग ।४१।
सुंदर खासा मलमल बहु पट वस्त्रनो पार न लहुं ।४२।
रत्न जडित जडाव अमोल नहीं को अेहनी समतोल ।४३।
अेवा भूषणनो नहीं पार सिध्ध करी राख्या तेणीवार ।४४।
कालपीनी मिसरी जेह खांड अतिशे उतम तेह ।४५।
मेवा भांत भांतना बहु आण्या ततखेव ते सहु ।४६।
कण सामग्री धृत सार तेना भरी राख्या भंडार ।४७।
सोंधा मेद जवाद बरास अंबर अरगजा परम सुवास ।४८।
अतर कस्तुरी ने संतोष आण्या महा सौरभना कोष ।४९।
केशर अरगजा गुलाल अबीर जोइ न रहे केहेने धीर ।५०।
महा बावना चंदन लीधां उत्सव अर्थे सहु सिध्ध कीधां ।५१।
केवडेल चंपेल चमेली तेल सुगंध अे राय वेली ।५२।
बहु कुसुमे करी जे वास्या अेवा आण्या अनेक सुवास्या ।५३।
उतम शुभ मुहुरत जोइ ज्ञात कुटुंब तेडया सहु कोइ ।५४।
करे गान अनेक प्रकारना प्रथमे कर्या मंगला चार ।५५।
त्यां चार सोहासणी आणी सृंगार कराव्या जाणी ।५६।
हलदी पीसी बहु प्रीत पहेला मांगल्यनी अे रीत ।५७।
ढोलक आणीने बेसाडयो सोहासणी अे प्रथम वजाडयो ।५८।
मृतिका लेवाने जे काज कर्यो अक्षाणानो साज ।५९।
हलदी कुमकुममां मेली मांहे गोल तणी बे भीली ।६०।
गंधाक्षत दुर्वा मांहां वाजिंत्र सहित चाल्या त्यांहां ।६१।
ते स्थलनी पूजा कीधी पछे त्यांथी मृतिका लीधी ।६२।
गान करता उलट भेर आव्या श्री गुंसाईजीने घेर ।६३।
कुलदेवनुं स्थापन ज्यांहां मृतिका लेइ राखी त्यांहां ।६४।
पछे वेगे कढाई चढावी त्यां चार सोहासणी आवी ।६५।
पहेली कीधी उतम सेव भुंजी लीधी ते ततखेव ।६६।

अेणी रीते मुहुरत साध्युं	सहु केहेनुं मन अेथी वाध्युं	।६७।
वडी दे छे महा बडभागी	अति आनंदे अनुरागी	।६८।
तिल चांवली पतासां चार	गनोडा आप्या सहु नार	।६९।
वली भांत भांतना पकवान	तेनुं केम थाअे निर्माण	।७०।
जेने जोइने सर्व सराहे	तेनी उपमा कहीअ न जाय	।७१।
अेवा बहु विधीना कीधा	वेगा वेगा सिध्ध करी लीधा	।७२।
कर्यां मांगल्यना बहु साज	महा मंगल निधीने काज	।७३।
कर्यो उत्सवनो आरंभ	द्वारे रोप्या कदली स्थंभ	।७४।
धोल्या धवल धाम ते विचित्र	बेठकमां कर्या बहु चित्र	।७५।
काढया हाथी घोडा ने मोर	सेन सभा रची चहुं ओर	।७६।
चौद भवन ब्रह्मा ने इंद्र	लख्या सूरज ने वली चंद्र	।७७।
अे लख्या सत लोक समेत	अे मांहे छे बहु हेत	।७८।
लखी अपसरा करती नृत्य	जाणे दीसे छे सांप्रत्य	।७९।
लख्या बाग विविध मांहे हरण	दीसे तेह शुध्ध अनुकर्ण	।८०।
त्यांहां वृक्षलता मन उक्त	कुसुमित बहु फल संयुक्त	।८१।
अेम चित्र कर्या बहु जात	क्यां लगी कहुं नाना भांत	।८२।
समियाना मखमल केरा	बहु भांति विचित्र घणेरा	।८३।
ते बांध्या जे ज्यांहां सोहे	देखी सहु केहेना मन मोहे	।८४।
ठाडी बिछात समारी	त्यां भांति भांती कुंजर नारी	।८५।
जुलीचा बहु भांतना अमोल	बीजा नहीं कोइ अेहनी तोल	।८६।
जुलीचा बीछाव्या आंगणमां	जेवा ज्यां जोअे तेवा त्यांहां	।८७।
आण्या नौतन पत्र रसाल	बांध्या बारणे तोरण माल	।८८।
जे कोइ अे शोभाने देखे	कहे वैकुंठ क्यां लेखे	।८९।
जे कोइ वैष्नव देश परदेश	आव्या उत्सवने उदेश	।९०।
मित्र पंडित ने धनवान	तेना बहु कर्या सनमान	।९१।
कवि पूरोहित ब्राह्मण मात्र	आव्या दान तणा बहु पात्र	।९२।
मगद बंदीजन ने सूत	गायन गान करे अद्‌भुत	।९३।
वाजिंत्र अने नृत्यकारी	धर्मवान अने आचारी	।९४।
भिक्षुक गुणीजन नाम धराव्यां	सहु उलट भेर आव्या	।९५।
तेडया वण तेडया सहु कोइ	आव्या उपवित आनंद जोइ	।९६।
पोताना भाग्य सराहे	उलट उरमां न समाय	।९७।
भक्त जन्म धन्य करी जाणे	लौकिक अलौकिकने नहीं माने	।९८।
नेत्र सफल करी कहे धन्य	जाणे अम समान नहीं अन्य	।९९।
कोटि आवश्यक मुकीने आव्या	अनुरोध ते सहेजे नसाव्या	।१००।
वाहन विविध थई आरूढ	अभिप्राय सहित रस गूढ	।१।
वैष्णव जन कुटुंब संयुक्त	भावे भूषित अति अनुरक्त	।१०२।

लीला जोवाने अति अनुरागी	अेम आव्या भक्त बडभागी	।१०३।
विरहा ज्वर जनित जे ताप	हरवाने सहु संताप	।४।
अेवा मनोरथ बहु धरता	आव्या अंग अंग आनंद भरता	।५।
सर्वेंअे आवी दंडवत कीधा	श्री गुंसाईजीअे मानी लीधा	।६।
कर्या समाधान बहु पेर	अति पुलकित उलट भेर	।७।
जोया जीवन प्राण आधार	लीधा दुखडा वारंवार	।८।
जे को रस सबंधी तेमां	रस द्रष्टीअे सींचन कर्या त्यांह	।९।
तेणे भक्तना मननो जेह	रस गोप्य प्रगट कर्यो तेह	।१०।
अेवुं ईक्षण अति रस रीत	ज्यां रसनी नहीं परमीत	।११।
दीठे विवश थाअे तत्काल	रही नहीं देह संभाल	।१२।
नेत्र सायकनो जे धर्म	अेहनो जाणे नहीं कोइ मर्म	।१३।
अेवा प्रभुना धर्म सुदेश	धर्मींथी धर्म विशेष	।१४।
जेनो स्वरूपथी प्रबल धर्म	जे स्वरूपनो करे अतिक्रम	।१५।
अेवा धर्म रूपी अे राज	अे रसधर्म धर्मींमां विराजे	।१६।
हवे अेक मास आगमने	ते वरनागी करे सहु भवने	।१७।
त्यां प्रथम मोद महा भर्या	श्री गुंसाईजी पोते कर्या	।१८।
स्वस्ति वांचन कर्युं बहु प्रीत	कीधी लौकिकनी सहु रीत	।१९।
सहु ज्ञात ने पंडित बहु	उलट भेर आव्या सहु	।२०।
तेडया देइ देइ सहुने मान	बेसाडया करी करी सनमान	।२१।
पूर्या चोक चूनना त्यांहां	धरे कुल्हडी चिकुण मांह	।२२।
संकु वीटी सुत्रे जलशुं भरी	ते मांहे हलदी धरी	।२३।
मध्ये मांडी चोक सार	त्यां आवी सोहासणी चार	।२४।
अभ्यंग कर्या सुखकारी	त्यां गाअे सोहासणी नारी	।२५।
नवराव्या प्रभु करी प्रीत	जेम अेहोना घरनी रीत	।२६।
अंगुछो करी पधराव्या	आशीष दे सहुने मन भाव्या	।२७।
श्रीजीने श्रींगार करावे	जरतारी पाग धरावे	।२८।
उपर तुरो धर्यो बहु मूल	करी कनक कमलनुं फूल	।२९।
शुभ तिलक केसरनुं कर्युं	उपर कनिक जटितनो धर्युं	।३०।
धोती केशरी सुंदर धरी	अति उतम सोंधे भरी	।३१।
केसर अरगजे करी अंग राग	पहेर्यो चोलणो अति अनुराग	।३२।
स्वेत महेमुदी ने दुदामी	फीरती पहेरे समे पामी	।३३।
अे श्रीमुखे कहयुं मन रंगे	श्री गोपालनां विवाह प्रसंगे	।३४।
श्री गुंसाईजीअे मेरे उपवितकुं	अेसो वागो धरायो हे नितकुं	।३५।
अेह विसद कर्युं छे जेह	तेणे अनुसारे लख्युं अेह	।३६।
पटको कसबी करी धर्यो	छोगो महेली अंगी कर्यो	।३७।
वेसो मेउं कर्यो लरिकाकुं	श्री गुंसाईजीअे सराहयो जाकुं	।१३८।

पछी आरोग्या तंबोल तेणे रंगे रंग्या रंग रोल ।१३९।
मुख सुवास सुवासित सर्व सौरभ सकलनो टाल्यो गर्व ।४०।
कंठे तुलसी माल रसाल मुकतानी दुलरी माल ।४१।
रत्न जडित ने हेमनी न्यारी शोभा प्रगटी तेहनी भारी ।४२।
चौकी पदक ने पुष्पनो हार तेनी उपमानो नहीं पार ।४३।
उच्च हृदय विलासनी शोभा जोइ सहु केहेना मन लोभ्या ।४४।
सोंधे चरचित परम सुवास अेवुं उर महासुखनी रास ।४५।
उपमा सम करवा जोइ अेनी पटंतर नावे कोइ ।४६।
ते उपमा केनी दीजे सर्वस्व न्योछावर कीजे ।४७।
मोती हार हमेले सोहे के उर किंकणीअे मन मोहे ।४८।
रत्न जडित मुद्रीका सार तेनी सुंदरता नहीं पार ।४९।
बाजुबंध बेहेरखी चूडा अति अनुपम दीसे रूडा ।५०।
करणे मुक्ता फल राजे जोइ शोभा अलौकिक लाजे ।५१।
कटिमेखला घुघरू धमके त्यां नंग अपरमित चलके ।५२।
नेपूर पायलनो बहु राव नयणे काजलमां रस भाव ।५३।
सुंदर सुभगाअे रंज्या ते नयन अनुपम अंजया ।५४।
तेथी रूप अपरमित वाध्युं ते केणे जाणे न साध्युं ।५५।
शोभाजीअे सत्वरताअे कीधो रक्षानो उपाय ।५६।
करमां काज्जल लीधुं शोभा भर भ्रुअ उपर बिन्दु दीधुं ।५७।
अेम भांति भांति सृंगार नित नौतन बहु प्रकार ।५८।
महा मनोहर अति रमणीक सर्वोपर सोहे अधिक ।५९।
सात वर्ष सुशोभित दीसे जोइ जगतना मन हीसे ।६०।
अति सुंदर दीर्घ नयन बोल मधुर अमृतथी वेण ।६१।
स्निग्ध कुचित कच अति भ्राजे कला संपूर्ण मुख पर राजे ।६२।
सोहे अनुपम दीर्घ नासा अेने त्रीयामुख सौरभ आशा ।६३।
भृकुटी अति वंक सुठाणी शोभा केम करी जाय वखाणी ।६४।
लागे अेह सृंगारनुं रूप वली कर्यो सृंगार अनूप ।६५।
तेनी शोभानुं शुं मान जेको जुअे ते महा भाग्यवान ।६६।
जे को ज्ञातने ब्राह्मणमां आवी बेठा छे ते त्यांहां ।६७।
तेने बीडा दक्षिणा बहु आपी संतुष्ठ कीधा सहु ।६८।
शीषे सेहेरो मांडयो अति चलके त्यां लर मोतीनी ललके ।६९।
त्यां सोहासणी बे आवी थाले आरती पूरीने लावी ।७०।
करी तिलक बीडुं धर्युं हाथ ईंडी पींडी ओवारे माथ ।७१।
करी आरती आरत हरने निरखे छे सुंदर वरने ।७२।
सहु आशिष देइ मन हरखे अेवुं सुंदर श्रीमुख परखे ।७३।
गुरूजनने नामी शीष विजय कीधो श्री गोकुलाधीश ।१७४।

चकडोल समारी आण्यो	ते केम करी जाय वखाण्यो	।१७५।
कुंदन नंग जडया बहु मोती	शोभा ज्यां जोअे त्यां सोहती	।७६।
फीरती लर मोतीनी ललके	तेनी आभा अनुपम चलके	।७७।
मखमल जरतारी साज	जोइ हरखे सर्व समाज	।७८।
उपर कलस सोनेरी राजे	त्यां ध्वजा सुशोभित भ्राजे	।७९।
साज कीधो करी बहु प्रीत	धूप दीप कर्या बहु रीत	।८०।
वली भोग समर्प्यो त्यांह	करी आरती आनंद मांह	।८१।
करी वात्सल्यना बहु साज	बेसाडया श्री महाराज	।८२।
न्योछावरी नाना भांति	करी उरमां न समाती	।८३।
कर्यो विजय महा सुख रास	ढाले चमर त्यां चोहोंपास	।८४।
त्यांहां बाजे ताल मृदंग	संगीत तणा लेइ अंग	।८५।
करे गान ते विविध प्रकार	गाअे गुणनिधीना गुण सार	।८६।
नगाराना घोर ते धमके	नादेथी धरणी धमके	।८७।
उदघोष अति अभिराम	कोलाहल थाअे ठामे ठाम	।८८।
दशो दिश थयो जैजैकार	ते आनंद तणो नहीं पार	।८९।
शोभा जोइ अने शोभा हारी	रही पोतानुं सर्वस्व ओवारी	।९०।
जुअे जगत सोहाग सोहागी	रह्या आनंद रसमां पागी	।९१।
बाजे वाजिंत्रना निरघोष	सांभलता होअे संतोष	।९२।
आगल पाछल ने आसपास	दीवी प्रगटी जगत प्रकाश	।९३।
फूलेल तणी बहु तेह	अति अगणित नावे छेह	।९४।
फानुस चिराग मशाल	चार साखा दुषाष्या हलाल	।९५।
अेवी ज्योत जगत उद्योत	रवि राजे जेम खद्योत	।९६।
आगल हाथी महा मदझरता	मद जातिकनो मद हरता	।९७।
बहु चित्र कुंभ स्थले कर्या	बेहु पासे चमर लेइ धर्या	।९८।
दंत दीर्घ वंक बिराजे	जडया कुंडा अनुपम राजे	।९९।
सुढारडे निज उर छिरके	डग भरता अवनी ढरके	।२००।
उंचा अेवा परम अलोक	जाणे नभ मारग रहया रोकी	।१।
जेणे मारगे थई पलाअे	मद झरतो कीच मचाअे	।२।
पगे जडी अेने महा जंजीर	अति उनमतने शूर धीर	।३।
अटके त्यांथी नहीं हाले	चरखे गडदारे चाले	।४।
अेवा हाथी महा मत सार	चाले करता बहु चितकार	।५।
तेनी शोभा अपरमित राजे	जाणे मेघ महा धुनी गाजे	।६।
पगे बांधी छे मतवारी	सिद्ध राखी छे अधीचारी	।७।
अेवा उनमत रस भर्या	किरणी जूथे परवर्या	।८।
करतां चाले बहु रंग	सुंढे परसे छे सर्वांग	।९।
बिछावणा सुंदर अती सार	तेना रूप तणो नहीं पार	।२१०।

उक्त कमल बहु मोल	नहीं कोइ अेनी समतोल	।२११।
घंटा अनेक तणा बहु नाद	बोले शब्द ते वादोवाद	।१२।
बेठा महावत थईने प्रसन्न	पोताने माने धन्य धन्य	।१३।
झालर मोतीनी फिरती	ते अनुपम शोभा धरती	।१४।
फरहरे छे ते बहु प्रकार	दीसे ध्वजा तणे आकार	।१५।
सुनेरी छापे जेह छाप्या	त्यां सूर्य चंद्र करी स्थाप्या	।१६।
ते डांडी उपर सोहे	दीठे सुंदर नारना मन मोहे	।१७।
ते उपर लेइ बेठा भोइ	तेनी उपमाने नहीं कोइ	।१८।
केहेने अंबाडी अति सोहे	क्यांहुं वचे वचे मन मोहे	।१९।
केहेने मेघाडंबर छत्र	क्यांहुं सुरीया पान विचित्र	।२०।
क्यांहुं चमर ढले तेणीवार	क्यांहुं नाना विविध प्रकार	।२१।
लरिका सृंगार्या जेह	उपर बेसाडया छे तेह	।२२।
अेनी शोभानो नहीं पार	ते केम थाअे उच्चार	।२३।
अेवा बारणे द्रुमित माता	चाले आगल परम सोहाता	।२४।
में सत्य लख्युं छे अेह	अे मांहे नहीं संदेह	।२५।
अे अनुभव सिध्ध प्रमाण	तेना महेद भक्त छे जाण	।२६।
घोडारंग विरंग सुजाती	कीधा कोतल नाना भांति	।२७।
तोरंग वर बाजीराजी	सुंदर स्वरूप सुशोभित साज	।२८।
शुभ चाल सुखद शीघ्र गामी	वेगवंता ने बहु नामी	।२९।
नाचे कूदे फिरे बहु जातसुं	चंचल चमकणा म्रध्या गतिसुं	।३०।
रता मता तता महेमता	मजेली सरस सगुणवंता	।३१।
सुलक्षणा सुशील सुखदाइ	अेनी उपमा कही न जाय	।३२।
ताजी तुरकी ने जेह बुखारी	अैराकी अरबी तोखारी	।३३।
कच्छी वदक शानी सारांजी	केच मुकरान देशना ताजी	।३४।
गांधारी अने पंच वोडा	बाढे चितारी घोडा	।३५।
दरीआइ अने असमानी	अेने उपमा दीजे क्यांनी	।३६।
परवती उतर ने विलाती	काबीली छपरी बहु जाति	।३७।
अे वाद्यद्र नेढा गुण सार	दीसे छोटा ने गुण नहीं पार	।३८।
जेहरी मुंजनरा ने जे पटीना	दशो दिसना ने देवटीना	।३९।
शुद्ध नीला मेला नीला अंग	मढीआ जुजुआ रंग	।४०।
साहाक भेद कू मेद काजुरी	वो रस रंगतीतर रंगगारी	।४१।
स्थान कराने सुकोदर वरणां	मांकडा हांसला अने हरणा	।४२।
सादा नीला जरदा सारंगा	सोरंग बहु भवर बहु रंगा	।४३।
अबलख समद ने हरडा	कीरमजी मुसका ने करडा	।४४।
अबलख ने पंच कल्याण	जेना नरेन्द्र करे रे वखाण	।४५।
अबनुस अखना ने सुशीला	संजाब सुरस ने छबीला	।२४६।

अेवा अनेक जात बहु देशी आण्या अनेक रंगना केशी ।२४७।
तेनो कोण करे विस्तार जेनो जाणे नहीं को पार ।४८।
देशे जाते रंगे गुणे सार तेना नाम अनेक प्रकार ।४९।
चाले कमला मगावे दुगामा अेवी आ करता सुखमां ।५०।
तुरकी पाणीपंथा रहेवाल चाले चंचल चाल रसाल ।५१।
असवारी मांहेथी अंग न हाले सीघ्र नाव तणी गति चाले ।५२।
सोहे शीर लगाम सुनेरी पटा जटितनी भांति अनेरी ।५३।
कुंबा जटित फुंदण मफतूल बेहु पासे करणा अनुकूल ।५४।
बहु जुगत जलेल नेन कर ग्रहेता महा सुख देन ।५५।
मखमल खासा नीसारा किरमजी रंग रंगना न्यारा ।५६।
जेना जीन जडाव अमोल नहीं को तेनी समतोल ।५७।
हारने हाटिक जडीया नंग तेनी प्रगटे जोती रंग ।५८।
बेहु पागडे पांच पिरोजा उठे विविध रंग तणा मोजा ।५९।
पसबंध जेरबंध जुगता टांक्या दुमनीअे बहु भ्रगता ।६०।
सोहे सीकार बंध बहु रंग सुंदर पाट तणा ताण्या तंग ।६१।
पर चमर अने गज गाव चौरासी धमके बहु भाव ।६२।
गूंथी चोटी अने केसवाली ते दीसे परम रसाली ।६३।
मुख नयन करण उर चरण अंग अंग तणा आभरण ।६४।
दीसे सुंदर परम सुदेश चित्रथी अनुपम वेश ।६५।
जे को अेतद रसे पर भक्त क्षिती तल प्रगट्या अनुरक्त ।६६।
ते मनोरथ करी अवतर्या अलौकिक अभिलाखे भर्या ।६७।
प्रभु प्रागट्य समय विचारी अवतर्या रस अधिकारी ।६८।
ज्यारे प्रभु थाअे असवार सर्वस्व वारे तेणी वार ।६९।
स्पर्शे प्रीयनुं ज्यारे अंग प्रगटे अभिलाखा तरंग ।७०।
सवारीमां घुंघट केरे शीसे बेठाथी स्वार न दीशे ।७१।
जेम मयूर कला करी नाचे अेणी भांते स्वारने सांचे ।७२।
पीठे भद्रासन सिद्ध कर्युं शीर घुंघटनुं छत्र धर्युं ।७३।
पुंछे चमर करे चोंहोंपास पूरे मनोरथ मननी आश ।७४।
रसभाव भर्या संजोग आवे नित्य प्रभुने विनियोग ।७५।
सेवा योग्य अंग न विजाती करे पूजा प्रेमे रस राती ।७६।
रस मुक्ष समंधी जेह पूजा करी माने तेह ।७७।
जेओ ते सेवा हित अवतर्या ते सेवाना मनोरथ कर्या ।७८।
कुंडे करता मंडल भाशे खुरीअे होअे लीकनो आशे ।७९।
आसन मांहेथी अति थडके रंच इशारते पवनने झडके ।८०।
अति बलवंत धीरजवान जाणे मारगने करे थान ।८१।
खुरी डांड अचानक खरके खुरघा तेघरा अति धरके ।२८२।

धसता धरतीने पग झेले	हडीअे हाथीने ठेले	।२८३।
जे वयारने लागट ओजाडे	तेने चाबुक कोण देखाडे	।८४।
महा अति अमोल बहु ग्रथना	हय तुच्छ कर्या रवि रथना	।८५।
जेने नामे प्रभु प्रसन्न	अेवा भाग्यवान नहीं अन्य	।८६।
अेने करीअे को समतूले	जोइ अने नाम सुणे प्रभु फूले	।८७।
जेने नामे विवश व्हालो थाय	अति आतुर थई सराहे	।८८।
केने कहीअे अेनी समता	जे श्री गोकुलेश मन गमता	।८९।
अेवा कोतल कर्या अनेक	तेनो क्यां लगी कहुं विवेक	।९०।
पाछळ साबेला सहु सोहे	दीठे सहु केना मन मोहे	।९१।
लरिका सृंगार्या छे जेह	घोडे बेसाडया छे तेह	।९२।
नारी नरनो वेस धरावी	तेने अनेक शृंगार करावी	।९३।
पहेर्या वस्त्र विचित्र प्रकार	दीसे पुरूष तणो आकार	।९४।
तेनी शोभा अपरमित शोभे	जोतां धीरज केनु न थोभे	।९५।
पालखी सुखासन चकडोल	सुखपाल सुंदर बहु मोल	।९६।
अति नाना लरिका जेह	सणगारी बेसाडया तेह	।९७।
ते साबेला वीच सार	अेनी शोभानो नहीं पार	।९८।
सुखपाल सौभागी राजे	तेना भोइ जे अतिशे गाजे	।९९।
रूकमणीजी बेठा त्यांह	मध्ये चकडोल छे ज्यांह	।३००।
रत्नगर्भ रूकमणीजी प्रसन्न	पोताने माने धन्य धन्य	।१।
जोवा सुर नर उमाह	शोभा जस वैभव करे छाहया	।२।
अेना भाग्यनो पार न लहीअे	ते विसद करी क्यां लगी कहीअे	।३।
रथ वाहेणी बहु जात	ते अलौकिक नाना भांत	।४।
अति रंगित ने बहु चित्र	कर जोतज तणी ते विचित्र	।५।
त्यां साज सुनेहरी कर्या	परदा मखमलना धर्या	।६।
फीरती जाली ने मफतूल	ललके लर मोतीनी अमूल	।७।
दीसे फरावेज त्यां फीरती	ते अलौकिक शोभा धरती	।८।
जोडया बळद करी बहु कोड	जोइ महा सुंदर जोड	।९।
डोलीआ मारवाडी नागोडी	डंडया तिलंगी धोरी	।१०।
मालवी मेवाडया गुजराती	देसवाडी हेंडम मेवाती	।११।
कांकरेचिय अति बहु मोल	तेनी सम करवा न तोल	।१२।
अेहवा अनेक देश बहु जाति	आण्या रंग रंग नाना भांती	।१३।
मोहोरडा मखीआरडा अेहवा	जेवा जोइअे त्यां तेहवा	।१४।
पग धमके घुघर माल	बांध्या पान त्रिकुणा भाल	।१५।
अेवा साज अपरमित कर्या	जाणे व्योम मारग उतर्या	।१६।
त्यां बेठी सोहासणी नार	तेणे कीधां बहु श्रींगार	।१७।
देश देशना वस्त्र अमोल	चोली लेहेंगा ने पटकोल	।३१८।

अति सुंदर महा सुवेश	रसभाव जनित सुदेश	।३१९।
मुखमां भर्या तंबोल	अति अधर अरूण रंग रोल	।२०।
सुंदर सुभगा सुख रास	अंगे प्रगटे परम सुवास	।२१।
आनंदे अलिकुल लोभ्या	करे गुंजारव अति शोभ्या	।२२।
महागान करे गुण भरी	हृदय रूप अनुपम धरी	।२३।
बहु गुण चरित्र सुखकारी	ते गाअे अलौकिक नारी	।२४।
स्वर सुंदर परम सोहाअे	सुणी मधुर पीक संकुचाये	।२५।
अति पुलकित हरख न माय	रसावेसे रोमांचित थाय	।२६।
भावे भर्या अलौकिक रंग	चाले व्हालाने संग संग	।२७।
अेना मोद तणुं नहीं मान	बडभागी महा भाग्यवान	।२८।
रहे त्यां घुडवेहेल धमधमती	ते सहु केने मन गमती	।२९।
चाचा हरिवंशजीअे हित भरी	श्री गुंसाईजीने विनती करी	।३०।
राज घुडवेहेल बेसो आज	मारा मनोरथ केरे काज	।३१।
विनती अेहोनी उर आणी	कूल रीत न मनमां जाणी	।३२।
त्यां बेठा गुंसाईजी सोहे	अे उत्साहे मन मोहे	।३३।
हरखे अति हरख न माय	तेनुं रूप कह्युं नव जाय	।३४।
गिण वेहेल ने वेहेल पावे जाती	अेवी भांति भांति बहु जाती	।३५।
उंट मारवाडी ने बगदादी	तेणे आण्या नगारा लादी	।३६।
ते वाजे नगारा सुर धोर	दिश दिश सुणीअे चहुं ओर	।३७।
वाजिंत्री अनेक प्रकार	सहु घोडे थया असवार	।३८।
वाजे नोहोबत ने सहेदाना	ते जगमां प्रसिद्ध नहीं छाना	।३९।
क्यांहु ताल पखावज बाजे	नृतकारी अनुपम राजे	।४०।
क्यांहु नटुआ नवली पेर	नाचे छे ते उलट भेर	।४१।
क्यांहु भेष धर्या बहु रूप	तेना कौतुक परम अनूप	।४२।
क्यांहु ढोलक ने बहु नारी	दीसे अपसराने अनुहारी	।४३।
ते गान करे गुण भर्या	नाचे संगीतनी गति कर्या	।४४।
क्यांहुं भांति भांति होय नृत्य	सहु करे प्रभुनी कीर्ति	।४५।
क्यांहुं गुणीजन बहु जस गाअे	तेने हैये हरख न माये	।४६।
क्यांहुं पुतलीओ बहु वरण	वाजिंत्रना अनुकर्ण	।४७।
तेने शीष चढावी नाचे	ते जोइ जगत सहु राचे	।४८।
क्यांहुं कागलना कर्या वृक्ष	ते विचित्र नाना पक्ष	।४९।
कर्या रंग रंग अनेक प्रकारक	दीसे बाग तणा अनुहार	।५०।
बहु पत्र फूले संयुक्त	अे कीधां नौतन उक्त	।५१।
क्यांहुं फरे हैय बहु वरणा	उपर कलस धर्या सुवर्ण	।५२।
अेक फरहरता अेक फीरता	ते अनुपम शोभा धरता	।५३।
अेवा कौतुक ठामे ठाम	तेनां क्यां लगी कहीअे नाम	।३५४।

मध्ये महाप्रभुनो चकडोल त्यां आनंद परम कलोल ।३५५।
आव्या अनेक भांति नरनार जोवा जगत विमोहक प्रकार ।५६।
त्यां भक्त महारस माता साथे चाल्या अति रंगराता ।५७।
प्रतिक्षणु आरती उतारे व्हालाजी उपर वारे ।५८।
को सर्वस्व वारी नाखे पोतानुं कांइ न राखे ।५९।
को निरखे नयणा भरी तदपर रस भावे करी ।६०।
को रक्षा हिते रज ओवारे को आशिष दे वारे वारे ।६१।
करी न्योछावर बहु प्रीते अतिशे वात्सल्यनी रीते ।६२।
माला मुद्रिका भूषण सहु करे भेट पहेरामणी बहु ।६३।
रस भरना भाव रसाल तेनीकरे व्हालो संभाल ।६४।
अंगीकार करी दु:ख चूरे तेना मनना मनोरथ पूरे ।६५।
करे भाव तणुं सनमान नेत्र प्रति करे बहु दान ।६६।
अेवी चितवनी जे भुभ्रंग जीते अलौकिक अमीय तरंग ।६७।
मध्ये मुसकनी अति मन भावे आनंद सागर उपजावे ।६८।
ते शोभानो नहीं पार चौद लोक वारूं वारंवार ।६९।
केनुं रह्युं नहीं अनुसंधान करी सके न देह प्रमाण ।७०।
ईक्षण सुख निध्धीमां मग्न अेणी पेरे थया थया सहु लग्न ।७१।
अेक अेक अंगना जे रंग जेना अदभुत प्रगट तरंग ।७२।
ते साध्या केमे न जाअे अेक अेकमां मन लोभाअे ।७३।
अे स्वरूप अेवा अंगनुं आलय तेने सनमुख कोण निहाले ।७४।
स्वरूपात्मिक हास्य प्रकाश होअे महा सुखने सुखरास ।७५।
रूपामृत लावण्यामृत सोहे तेणे भक्त तणा मन मोहे ।७६।
रूप सामगरी संजोग ज्यारे भक्तने आवे भोग ।७७।
त्यारे प्रभु फलीतारथ आणे निज धर्म सकल करी जाणे ।७८।
अेवा अनेक उभयना भाव वचने नहीं थाय समाव ।७९।
रूप सुधा वृष्टि हो अे दान अेवा भक्त महा भाग्यवान ।८०।
ते जाणे अे रस भोगी के जाणे प्रभु भाव संजोगी ।८१।
अे महा दुर्लभ रस रम्य अहीं बीजा केनुं नहीं गम्य ।८२।
आगल आतस बाजी अनेक तेनो कांइ कहुं विवेक ।८३।
हतफूल हवाइ ने चरखी फूलझडीअे रहया फूल वरखी ।८४।
भोम चंपा भोमीने महा स्पर्शे तेना फूल आकाशे परसे ।८५।
फरी आवे अति उतकृष्ट जाणे दीपकनी होय वृष्टि ।८६।
छूटे नाल अवाजने धरके धमकती धरा अति थरके ।८७।
कोयल छछुंदर ने चंद्र ज्योति तेनी शोभा होय अण होती ।८८।
चंद्रमा सूरज आकाश जाणे ते अनुहार प्रकास ।८९।
कोक बाणने चंद्र बाण ते गाजे जेम महेरामण ।३९०।

गागर मांहें भेर बहु बाजी	ते छूटे अनेक आवाजी	।३९१।
तेना कौतुक अलगा शोभे	जोइ हसतां हांसी न थोभे	।९२।
अेक बतक करे बहु कलमां	ते तरती हींडे जलमां	।९३।
तेमां गति थई अग्नि वरसे	पण तेने जल नहीं स्पर्शे	।९४।
गुंज मांहे हवाइना गुंज	तेह उडे छे बहु पुंज	।९५।
तुंबडी अने वृक्ष फटाका	होय नौतन भांति छटाका	।९६।
ठठही अने मांहें मुनारा	तेना शब्द उठे न्यारा न्यारा	।९७।
कर्या राक्षस ने वली जोगी	ते अनेक भांति संजोगी	।९८।
वली हाथ होअे हथियार	को पाला ने को सवार	।९९।
सनमुख राखीने उडाडे	अेणी भांते करी रमाडे	।४००।
तेना कौतुकनो नहीं पार	ते जुअे प्राण आधार	।१।
हाथी हरण रोझ ने घोडा	मीठा सजु कर्या बहु जोडा	।२।
ते मांहोंमांह अकुलाय	स्वर्ग मार्गे वेग पलाय	।३।
वली नीचे आवे भोम्य	गरजे महीतल अने व्योम	।४।
दश दिश उध्धोष न माय	केणे डग भर्युं नव जाय	।५।
जाणे प्रलय वनाहक गाजे	अहींया महा सुखद थई राजे	।६।
अेवा अनेक प्रकार अनेरा	भांति भांतिना कौतुक केरा	।७।
वचने करी कहया नव जाअे	तेनुं वर्णन केम करी थाय	।८।
लौकिक मांहें दीसे जेह	वर्णन न करी शकीअे तेह	।९।
आतो अलौकिकनुं महासार	तेनो कोण करे विस्तार	।१०।
अे उत्साहे सुर मुनी हरख्या	कौतुक जोइ कुसुम वरख्या	।११।
वली भाग्य सराहे जेहना	क्षिती तल प्रगट्या छे तेहना	।१२।
तेना अनुभवने कहे धन्य	अेनी समताने नहीं अन्य	।१३।
सुर वधु सहित अे विचारे	अे उत्साह पर सर्वस्व वारे	।१४।
अेणी पेरे होय वरणागी	ते अनुभव अति अनुरागी	।१५।
कोटि परार्ध जीव जे जात	कृतार्थ कर्या नाना भांत	।१६।
लक्षण लक्ष शोभित साथे	दशो दिशनो विजय कर्यो नाथे	।१७।
सहु कोइ आनंद भरी	अेणी पेरे पधार्या फरी	।१८।
माता पिता बहेन समुदाइ	अेने मन फूल न माय	।१९।
अेना भाग्य तणुं शुं कहीअे	ते जोतां पार न लहीअे	।२०।
होअे जयजयकार दश दिशथी	दे छे आशीष बहु रस वसथी	।२१।
भामनंडा लेइ कर चटके	रूप जोता नयन न मटके	।२२।
जोवा सुंदरी चढी अटाली	जाणे रची अनुपम चित्रशाली	।२३।
सखी गण घेर घेरथी बहु	मंगल साज करी लाव्या सहु	।२४।
लाव्या आरती पूरी मोती थाल	जाणे अलौकिक थई दीपमाल	।२५।
केना हरख तणुं नहीं मान	प्रगट्यो आनंद निदान	।४२६।

तेह समयनुं वर्णन न थाय	बुद्धि वचने कहयुं न जाय	।४२७।
जेथी प्रगट थयो रस रम्य	तेने नहीं अेमां गम्य	।२८।
तो कोण करे विस्तार	अनुभवी अनुभवे सार	।२९।
वैभव विधि विधिनो नहीं पार	आव्या निजमंदिरने द्वार	।३०।
पधार्या अेणी रीते	महाभाग्य वाननी प्रीते	।३१।
आव्या रूकमणीजी अति हरख्या	अंग अंग आनंदे वरख्या	।३२।
द्वारे राख्या चकडोल	होअे रसना झाकम झोल	।३३।
त्यां रूक्ष्मणीजी पधार्या	वेगे राइ लुण उतार्या	।३४।
जोइ जोतां तृप्ती न पामे	मनमां प्रभुने शीर नामे	।३५।
श्री गुंसाईजी आव्या पास	पाम्या महा सुखनी रास	।३६।
बहु परिवारे परवर्या	अतिशे महा उलट भर्या	।३७।
जोइ रस भरी आव्या नयण	मुखथी नहीं बोले वयण	।३८।
पोताना भाग्य सराहे	अंग अंग उलट न समाये	।३९।
करी आरती वेगे लाव्या	त्यां मली सोहासणी आव्या	।४०।
बहु कनकफूल अने मोती	वधावे परम पनोती	।४१।
आरत जुत आरत हरने	वारे आरति सुंदर वरने	।४२।
वली न्योछावरी अनेक	बहु वात्सल्य कर्या विवेक	।४३।
जे को ब्राह्मण वैदिक ब्रह्मा	तेणे अक्षत लीधा करमां	।४४।
मंत्रोगति विधी परम सुदेश	सुणी सुणी कर्या अभिशेष	।४५।
अस्तु अस्तु सहु को कहे छे	भक्त भामनडां त्यां ले छे	।४६।
स्नेहजुत सहुने मन भाव्या	मंदिर भीतर लइ पधराव्या	।४७।
अे महा उत्सव रस रास	जोइ आनंद पाम्या दास	।४८।
अेणी पेरे वरणागी करीय	अतिशे महा उलट भरीय	।४९।
बीजे दिवसे बीजाने घेर	करे अधिक मनोरथ भेर	।५०।
ज्ञात कुटुंब वैश्नव श्रीमंत	करे अेक मास पर्यंत	।५१।
केहेने भाग दिवस नहीं आवे	मली अेकत्र थई चढावे	।५२।
अेम उत्सव सर्वे कीधां	सहु केहेना मनोरथ सीधां	।५३।
अेनुं वर्णन केम करी थाअे	अंजुलीमां उद्धी न माअे	।५४।
आगळ दिन मुहुरत साध्युं	वृध्ध करी कंकण बांध्युं	।५५।
नांदी मुख अंकुरार्पण सीधुं	कुल देवनुं स्थापन कीधुं	।५६।
शुभ कर्म आरंभ्या बहु	तेना मनोरथ पूर्या सहु	।५७।
उपवित दिन मंगल कारी	रूपवंत सोहासणी नारी	।५८।
पूर्या मंगल चोक विवेक	सोंहे साथीआ भांति अनेक	।५९।
महा मनोहर मंडप ज्यांहां	कर्या बिछाणा सहु त्यांहां	।६०।
ज्ञात वर्ग सगा सहु कोइ	उत्साहे रहया सहु को मोही	।६१।
तेहने गंधाक्षत कर्या	सहु बेठा उलट भर्या	।४६२।

बांध्या तोरण सघले द्वार	कर्या महा मंगल आचार	।४६३।
महा सुंदरी सहु घेर घेरथी	करी सृंगार उलट भरथी	।६४।
आव्या सुंदर करतां गान	भर्या उत्साहे भाग्यवान	।६५।
भावे पूरित परम रसाल	लेइ आव्या मंगल थाल	।६६।
वाजे वाजिंत्र अनेक प्रकार	तेनो क्यां लगी कहीअे पार	।६७।
मागद बंदीजन जश बोले	ते समयने नहीं को तोले	।६८।
केशर सोंधा तेल सुवास	व्हालो नवराव्या सुखरास	।६९।
सृंगार कर्यो बहु कोड	शीषे धर्यो कुसुमनो मोड	।७०।
तेणे आकर्ष्या मन सहुना	जे को जुअे छे ते बहुना	।७१।
आपी दंड मेखला हाथ	तेणे सोहे सुंदर नाथ	।७२।
पहेरी सुंदर पीत लंगोटी	दीसे धोती अति मोटी	।७३।
पधराव्या मंडप मांहें	कर्युं नमन गुंसाईजीने त्यांहें	।७४।
महा मंगल आसन सार	बेसाडया त्यां प्राण आधार	।७५।
पहेला पुन्याह वाचन कर्या	कर्यो होम ते आनंद भर्या	।७६।
तेडयो नापित देइ बहु मान	चौल कर्म करी कर्युं स्नान	।७७।
हलदी रंगी त्री सुत्रे	श्री गुंसाईजीअे वेद मंत्रे	।७८।
महा मुहुरत घटिका जोइ	महा प्रभुने दीधी जनोइ	।७९।
जै जै शब्द सहु केणे कर्या	विप्रवेद धुनी उचर्या	।८०।
जे को लरिका छे ब्रह्मचारी	ब्राह्मणनां शुद्ध आचारी	।८१।
सहु तेडया तेणी वारे	भोजनने लेइ पधारे	।८२।
पेली पतली अेहोने धरे	पछी पोते थाले पधारे	।८३।
माता सहित करे भोजन	पछी अचवे छे प्राण जीवन	।८४।
पिता मंत्रे करी चौल काज	अग्नी मुख खटपात्रना साज	।८५।
कदमन मुंजी धोती ने दंड	धरावी महा प्रभु प्रचंड	।८६।
कुश आसने बेठा सोहे	जोइ सहु केहेना मन मोहे	।८७।
श्री गुंसाईजीने मन रंग	लेइ बेसाडया उछरंग	।८८।
त्यां कर्यो मंत्र उपदेश	गायत्री करी सुदेश	।८९।
पुष्टी रूपा श्रुती जे सार	तेनो कर्यो अंगीकार	।९०।
अैसवीजर्य थई श्रीमुखथी	अति आनंदी अे सुखथी	।९१।
पछी उप नयना अंगभुत	कर्यो होम महा अदभुत	।९२।
कर्यो संध्यानो आरंभ	रक्षक मर्यादा स्थंभ	।९३।
सगा सहुको ननशाल आदि	करे पहेरामणी वादो वादे	।९४।
चुडा भूषण भांति अनेक	कीधा करी करी बहु विवेक	।९५।
श्री गुंसाईजीअे शिक्षा कीधी	जग शिक्षकने शीक्षा दीधी	।९६।
माताअे करवावी भीक्षा	नित विद्योगती केरी रक्षा	।९७।
लाडु चोखा सोनैयो आभर्ण	कर्युं भिक्षानुं अनुकर्ण	।४९८।

बंधु वरग ने मातुल प्रीत	सहुअे कीधी अे रीत	।४९९।
पुष्टी रक्षाने आवरण	मरीयादानुं अनुशरण	।५००।
सेवा सेवितनो जे धर्म	लेइ अने आपे अेवो मर्म	।१।
सहु अे महाप्रभुअे करवुं	सहुना हितनुं अनुसरवुं	।२।
सामग्री भीक्षानी जेह	उपाध्याने आपी तेह	।३।
आशीरवाद दे मंत्रे करी	वेद विधीसुं मंगल भरी	।४।
पछे कीधी पहेरामणी	महा स्नेह सहित घणी	।५।
शोभाजी जमुनाजी आव्या	थाल आरती पूरीने लाव्या	।६।
उतारे उलटे भरी	दे छे आशिष हित मन धरी	।७।
सहु कुटुंब वर्ग सनमान	घेर तेडया देइ देइ मान	।८।
तेने भूषण वस्त्र अनेक	आपी कीधां बहु विवेक	।९।
वली कुटुंब ज्ञात नर नार	अेम भोजन कर्युं दिन चार	।१०।
बीडां दक्षीणा नै पकवान	मागद जनने बहु दान	।११।
श्री गुंसाईजी अति मन हरख्या	दान मेघ तणी पेरे वरख्या	।१२।
सहुको दे छे आशिष	चिरंजीवो कोड वरीश	।१३।
अेम कही सहु कोइ घेर वलीया	फरी फरी जुअे मन रलीया	।१४।
थाओ उत्सव नित अेहो घेर	अमो आवीअे उलट भेर	।१५।
अेम कही कही नामे शीष	आशीष दे कहे जगदीश	।१६।
जोइ भाव सहुना वलीया	श्री गुंसाईजीना मनोरथ फलीया	।१७।
पछे पलास पूजा होम कीधो	ते वेद विधे मानी लीधो	।१८।
अेणी रीते उपवित कीधुं	सहु केहेनुं कारज सीधुं	।१९।
उप कर्म कर्यां उपरांत	शुभ मुहुरत लीधुं करी खांत	।२०।
करी तिलक आरती करी	वेदारंभ कर्यो मन धरी	।२१।
को पूर्व पक्ष करसे जेह	ते अधिक वर्णन कर्युं अेह	।२२।
करी समाधान तेहने काज	सुणजो संदेह समाज	।२३।
अे तो महा अतुल प्रागट्य	राज राजेश्वर उदभट	।२४।
अेना वैभवनो जे अंश	सहु जगतमां अवतंश	।२५।
जेनी कणिकानो विस्तार	ब्रह्मादिक नव पामे पार	।२६।
त्यां मारूं मन गीध्युं	संक्षेपे अे सूचन कीधुं	।२७।
पछे रघुनाथजीने मुहुरत धरी	समय जोइने उपवित कर्युं	।२८।
आव्यो जदुनाथनो उपवित	श्री गुंसाईजीअे कीधी रीत	।२९।
अभिप्राय सहित मन व्रत्त्य	कर्युं श्री प्रभुनुं समाव्रत्य	।३०।
त्रण ब्रह्मचारी अेक घर नोहे	अेवी रीत सहुने सोहे	।३१।
समावर्तन रघुनाथजीनुं	न कर्युं कर्युं प्रभुजीनुं	।३२।
विवाह समावर्तन होय	समे कन्या मिली नहीं कोय	।३३।
अेक मिली तेतो सुंदर नोती	बीजी जोइ तेनी वरसे पोहोती	।५३४।

वात श्रीमुखे करी छे अेह	पायाने गमी नहीं तेह	।५३५।
लरिका सकुमार अति वल्लभ	कन्याने शुं करे परगल्लभ	।३६।
याते विलंब भयो विवाह केरो	समावर्तन कीधो मेरो	।३७।
श्री गुंसाईजी प्रमेय रस जाण	केम करे मर्यादा प्रमाण	।३८।
ब्रह्मचर्य केम करी राखे	नित नौतन रस अभिलाखे	।३९।
महा रसिकराय रस भोगी	अे आध्य मध्य संजोगी	।४०।
अेवुं जाणे श्री गुंसाईजी आश्चर्य	वेगी दूर कर्युं ब्रह्मचर्य	।४१।
पछे देखाडी आदर्श	बीडुं लेइ अने पाम्या हर्ष	।४२।
महा सुंदर पहेरी धोती	जोइ हरख्या परम पनोती	।४३।
अेवा महा सुंदर प्रभु राजे	श्री गुंसाईजीने घेर बिराजे	।४४।
नित्य निरखे भाग्यवान	करे महा सुखनुं रसपान	।४५।
लीला नित नौतन बहु थाय	तेह वचने केम कहेवाय	।४६।
आगे वेदनो आरंभ कीधो	तेथी तेनो सकल अर्थ सीधो	।४७।
ते लीला कहुं सुदेश	महा रसिक ने परम वरेश	।५४८।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अदभुत विचित्र रस

व्याराना गोपालदास विरचित

।। मांगल्य पंदरमुं समाप्तम् ।।